# सुजान-चरित्र

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थ-माला-३

सूदन कवि कृत

# सुजान-चरित्र

[ भरतपुर के राजा सुजानसिंह के युद्धों का वर्णन ]

सम्पादक—

श्री राधाकृष्णदास
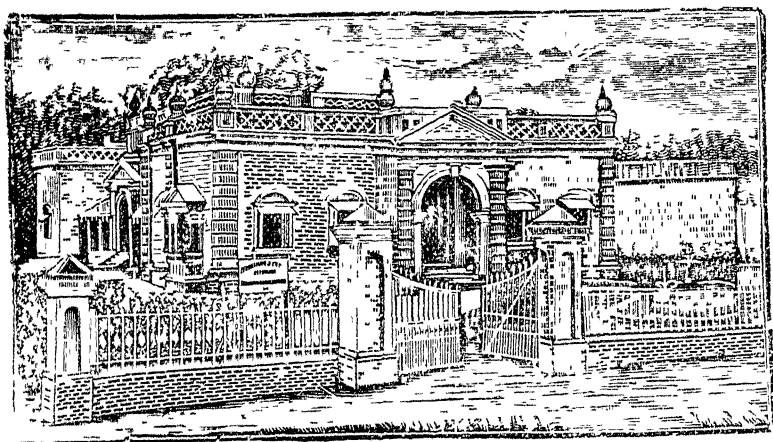
प्रकाशक—

काशी, नागरीप्रचारिणी सभा

सं० १९८०

दूसरा संस्करण ] [ मूल्य २)

गणपति कृष्ण गुर्जर द्वारा
श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस सिटी में मुद्रित ।

# प्रथम संस्करण की भूमिका

हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज्य के मित्र रूपी शत्रु प्रबल-प्रतापी औरंगज़ेब के सन् १७०७ ई० में मरने पर चारों ओर अराजकता फैल गई और मुसलमानी राज्य की जड़ में जो दीमक लग गए थे, उन्होंने प्रकट रूप से काट काटकर पछाड़ गिराना आरंभ कर दिया। पंजाब में सिक्ख, दक्षिण में महाराष्ट्र और राजपूताने में मेवाड़ी और मारवाड़ी क्षत्रिय तो ज़ोर पकड़ ही रहे थे, इधर दिल्ली के पड़ोस ही में भरतपुर से जाट जाति के एक साधारण ठाकुर ने दर्शन दिया और यहाँ तक अपना प्रताप बढ़ाया कि अनहोनी को होनी कर दिखाया। जिस दिल्ली की ओर आँख उठाकर देखने का भी किसी को साहस नहीं होता था, उसे इन लुटेरों ने लूटकर तहस नहस कर डाला और लूट के माल को अपने डीग के भवन में चिरकाल तक स्मारक रूप में स्थापित करके अपनी अचल कीर्ति दृढ़ कर दिया। इस ग्रंथ में उसी जाट वंश के आदि अभ्युदय का वृत्तांत वर्णित है। यह ग्रंथ दो कारणों से विशेष आदरणीय है। एक तो इसके ऐसे वीर रस के उत्तम काव्य हिंदी में विरले ही मिलते है। दूसरे यह कि कवि स्वयं इन वृत्तांतों को अपनी आँखों से देखकर लिखता है। उस पर भी विशेषता यह है कि यद्यपि कवि को चिर-प्रचलित प्रथा के अनुसार खुशामद से ग्रंथनायक की बहुत कुछ बड़ाई करनी पड़ी है, परंतु फिर भी उसने शत्रुओं के यथार्थ गुण वर्णन में कहीं त्रुटि नहीं की है; और कहीं कहीं अपने स्वामी की हेठाई की बात भी बहुत ही चतुरता से बचाकर कह गया है। उत्तम कवि होने के अतिरिक्त वह कई भाषाओं का जानकार और विशेष अनुभवी

मनुष्य था, जैसा कि उसके ग्रंथ के देखने से विदित होता है। उसने उस समय के प्रचलित अस्त्र, शस्त्र, कपड़े, गहने, बरतन, पशु, पक्षी, वाहन, मेवे, फल आदि यावत् पदार्थों के इतने नाम गिनाए हैं जिनका कुछ दिनों पीछे लोग नाम तक न जानेंगे। यदि स्वास्थ्य मुझे अवसर देगा तो मैं इस ग्रंथ में आए पदार्थों और शब्दों का एक छोटा सा कोष सा बनाकर पीछे से प्रकाशित करने की इच्छा रखता हूँ।

इस ग्रंथ की खोज मैंने मुसलमानी राज्य के अंतिम समय के प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता मिस्टर इर्विन साहब के लिये की थी। परंतु ग्रंथ मिलने पर मुझे ऐसा रुचा कि मैंने अकेले ही इसका स्वाद चखना उचित न समझा और ग्रंथमाला द्वारा अपने मित्रों को भी भेंट किया। इसकी कई प्रति मँगाई गईं, पर प्रायः सभी ऐसी अशुद्ध मिलीं कि पढ़ना और समझना कठिन था। बड़े परिश्रम से कई प्रति मिलाकर शोध कर मैंने इसे प्रकाशित किया। एक बेर यह ग्रंथ भरतपुर राज्य की ओर से लीथो में छपा भी था, परंतु अब उसका दर्शन भी नहीं मिलता और शुद्धता के विषय में वह अग्राम्य ही है।

मिस्टर ग्राउस साहब ने अपनी मथुरा नाम की पुस्तक में इस वंश का वृत्तांत यों लिखा है कि "इस वंश का स्थापनकर्त्ता चूड़ामणि नाम का एक लुटेरों का सर्दार था, जिसने डीग से कुछ दक्षिण थून और सिनसिनी गाँव में दो छोटे छोटे क़िले बनवाए थे। इन्हीं क़िलों से वह इधर उधर लूट मार मचाया करता था, यहाँ तक कि दक्षिण की चढ़ाई के समय उसने औरंगज़ेब की सेना को भी बढ़ने से रोक दिया था। थोड़े दिन पीछे जयपुर के महाराज जयसिंह चूड़ामणि से लड़ने के लिये भेजे गए, परंतु जैसी चाहिए, सफलता न प्राप्त हो सकी। कुछ दिनों के पीछे चूड़ामणि का भाई बदनसिंह

महाराज से आकर मिला। इसकी सहायता से चढ़ाई करके छः महीना लडकर जयसिंह ने थून के क़िले को ढाह दिया। चूड़ामणि अपने बेटे मुहकम के साथ भाग गया और बदनसिंह डीग में जाटों का सर्दार स्थापित हुआ और इसे ठाकुर का ख़िताब मिला। बदनसिंह को चूडामणि ने क़ैद कर लिया था, इसी से उसे क्रोध आया और क़ैद से भाग कर यह सर्वनाश किया।" इन्हीं बदनसिंह के बेटे सूरजमल्ल उपनाम सुजानसिंह थे जिनका चरित्र इस ग्रंथ में वर्णित है। सुजानसिंह पिता से अधिक पराक्रमी होने पर भी ऐसे आज्ञाकारी थे कि बिना उनकी आज्ञा कुछ न करते; और जब तक वह जीते रहे, आप राजगी का ख़िताब न लिया, उनके मरने पर राजा हुए। सुजानसिंह सन् १७६४ में शाहदरा में मुग़लों के हाथ से मारे गए, और उनके बड़े बेटे जवाहिरसिंह राजा हुए। परंतु इस ग्रंथ में पूरा वृत्तांत सूरजमल्ल का नहीं है। ग्रंथकर्त्ता ने केवल मरहट्टों से लडाई आरंभ होने के पहले का वृत्तांत दिया है और भगवान् से इनकी जय की प्रार्थना करते हुए ग्रंथ समाप्त कर दिया है। पर समाप्त करने पर भी उसने ग्रंथ की 'इति' नहीं की है, क्योंकि हर एक अंक के अंत में ग्रंथकर्त्ता ने "भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं" यह छंद लगाया है, परंतु अंत में न तो यह छंद ही लगाया है और न "इति श्री" ही लगाई है। इससे स्पष्ट जान पडता है कि कवि की इच्छा उस समय तक के वृत्तांत लिखकर फिर आगे के वृत्तांत लिखने की थी, जो किसी कारण से पूरी न हो सकी और ग्रंथ यहीं तक रह गया। जो हो, ग्रंथ इतिहास और काव्य दोनों दृष्टि से उत्तम हुआ है और आदरणीय है।

श्री राधाकृष्णदास।

# द्वितीय संस्करण की भूमिका

हिंदी साहित्य में आज सौ वर्ष से पहले के जो गद्य ग्रंथ उपलब्ध हैं, वे साधारण कोटि ही के हैं। उनमें इतिहास, विज्ञान आदि के ग्रंथ तो नाम को भी नहीं है। उस समय गद्य के लेख की तो प्रथा ही नहीं थी। कवि-समुदाय अपनी कविता कामिनी के माधुर्य-पाश में ऐसे बद्ध थे कि वे उसका एक पंक्ति गद्य लिखने मात्र के समय का भी विरह असह्य मानते थे। बड़े बड़े महात्मा भी इस कामिनी के फंदे से नहीं बचे थे। कवि-श्रेष्ठ महात्मा नंददास जी कोष लिखने बैठे तो उस समय भी वे इस कामिनी को कुछ समय के लिये न भुला सके। कहाँ तक कहा जाय, वे परब्रह्म परमेश्वर का ध्यान भी इसी को मध्यस्थ बनाकर करते थे।

कहा जा सकता है कि अभी तक इतिहास को हिंदी साहित्य में अच्छा स्थान नहीं मिला है। अन्य देशों के इतिहासों का तो कुछ कहना ही नहीं, स्वयं अपने ही देश के इतिहास पर गिनी-गिनाई कुछ पुस्तकें इधर लिखी गई हैं। ऐसी अवस्था में यदि कोई हिंदी इतिहास ग्रथ, जो अवश्य ही कविता की सरस धारा के रूप में होगा जिसमें मिलित वर्ण रूपी रोड़े अच्छी तरह लुढ़क रहे होंगे, प्राप्त हो तो वह जितना ही प्राचीन होगा, उसको उतना ही अधिक महत्व भी देना पड़ेगा। इस दृष्टि से सुजानचरित्र, जो पौने दो सौ वर्ष प्राचीन है और जिसमें कवि ने आँखों देखी घटनाओं का ठीक ठीक वर्णन किया है, बहुत महत्व का ग्रंथ है। इसी महत्व के कारण काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने इसे सं० १९५९ में अपनी नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला के तीसरे पुष्प के रूप में ग्रथित किया था। वह संस्करण लगभग बीस वर्ष में हिंदी जगत के इतिहास-

प्रेम को जाग्रत करता हुआ समाप्त हुआ जिससे इस दूसरे संस्करण की आवश्यकता हुई।

प्रथम संस्करण पू० भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र जी के फुफेरे भाई बा० राधाकृष्णदास द्वारा संपादित था और इस संबंध से वे मेरे भी पूज्य हुए। इसी लिये मैंने प्रेस में कापी भेजने के समय जहाँ तक हो सका है, देख ली है। इस संस्करण की विशेषता केवल इतनी ही है कि मैंने इसमें कवि-परिचय, सुजानसिंह का जीवनचरित्र और एक परिशिष्ट बढ़ा दिया है। सुजानसिंह के जीवनचरित्र में जहाँ अन्य इतिहासों से सहायता ली गई है, वहाँ उनका यथास्थान टिप्पणी में उल्लेख कर दिया गया है। पहले विचार था कि भरतपुर के वर्तमान समय तक के संक्षिप्त इतिहास का समावेश कर दिया जाय, पर समय की कमी तथा पुस्तक के प्रकाशन की जल्दी के कारण केवल सुजानसिंह के राज्यकाल के साथ ही उसे भी समाप्त करना पड़ा। अन्त में सुजानचरित्र में आए हुए केवल फारसी अरबी के शब्दों में शुद्ध रूप तथा अर्थ दिए गए हैं क्योंकि उनमें से बहुतों का प्रयोग अधिक बिगड़े हुए रूप में हुआ था।

प्रथम संस्करण में 'पूत नातीन कों' के स्थान पर 'पूतना तीनकों' के प्रकार की बहुत अशुद्धियाँ रह गई थीं जो शुद्ध की गई हैं। पर इस संस्करण में भी कुछ पुरानी अशुद्धियाँ तो रह ही गई हैं, कुछ नई भी हो गईं जैसे मीर बक्श के स्थान पर मीर बच्चा। अब यह ग्रंथ इस नवीन रूप में पाठकों के सामने उपस्थित किया गया है जिसे वे अपनाकर मेरे श्रम को सफल करेंगे।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ }  भवदीय
काशी }  व्रजरत्नदास

---

# विषय-सूची

## तृतीय जंग



## चतुर्थ जंग

## पंचम जंग

सप्तम जंग

# कवि-परिचय

सूदनजी ने ग्रन्थारंभ में मंगलाचरण के अनंतर पहले संस्कृत के प्रसिद्ध कवियों तथा महर्षियों का गुणगान करके तब हिंदी के एक सौ पचहत्तर कवियों का नामोल्लेख किया है। ये नाम समयानुक्रम से नहीं हैं। सूदन जी इन कवियों के परवर्त्ती या समकालीन थे। कवियों के नाम-कीर्तन के उपरांत इन्होंने केवल एक सोरठे में अपना परिचय दिया है, जो इस प्रकार हैः—

मथुरापुर सुभ धाम माथुर कुल उत्तपत्ति बर।
पिता बसंत सुनाम सूदन जानहु सकल कवि॥

इससे केवल यह पता चलता है कि ये माथुर ब्राह्मण थे और इनके पिता का नाम बसंत था। इन्होंने अपने जन्मस्थान के राजा व्रजाधिप बदनसिंह के वीर पुत्र सुजानसिंह ही की ख्याति को कविता में ढाला है। ये उनके आश्रित रहे होंगे तथा उनके वर्णन से ज्ञात होता है कि वे इन युद्धों में सम्मिलित भी रहते थे। सूदन जी ने अपना परिचय देने के अनंतर फिर एक छप्पय में चौबीस अवतारों तथा एक कवित्त में कृष्ण जी का गुणगान रूपी मंगलाचरण कर अपने चरित्र-नायक का वंश-वर्णन किया है। इन्हे मंगल-पाठ की धुन सी सवार थी जिससे प्रत्येक परिच्छेद के पहले इन्होंने नया मंगलाचरण दिया है। इस ग्रंथ में इन्होंने एक नवीन प्रथा यह भी की है कि प्रत्येक अंक के अंत में निम्नलिखित हरगीति छंद दिया है जिसके प्रथम तीन पद वही रहते है, पर चतुर्थ पद अध्याय की वर्णित कथा के अनुसार बदलता रहता हैः—

भुवपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं॥

ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइकैं।
कहि देव-ध्यान कवीस नृप-कुल प्रथम अंक सुनाइकैं॥

नृप-वंश-वर्णन में जब सूदन जी ने बदनसिंह के बड़े भाई चूड़ामणि का उल्लेख भी नहीं किया है, तब उनके विरुद्ध बदनसिंह का विभीषणवत् आचरण तथा उनके पुत्र मुहकमसिंह के राज्यापहरण का उल्लेख होना कब संभव था। सुजानचरित्र में सुजानसिंह उपनाम सूरजमल के सं० १८०२ से सं० १८१० तक के युद्धों का वर्णन है जिनकी तालिका इस प्रकार है:—

| संवत् | घटना |
|---|---|
| १८०२ | फतेहअली की सहायता कर असद खाँ को परास्त किया। |
| १८०४ | मराठों को परास्त करने में जयपुराधीश ईश्वरीसिंह को सहायता दी। |
| १८०५ | सलाबत खाँ बख्शी को परास्त किया। |
| १८०६ | पठानों को परास्त करने में सफ़दरजंग की सहायता की। |
| १८०९ | राव बहादुरसिंह बड़गूजर को परास्त किया। |
| १८१० | दिल्ली लूटने में सफ़दर जंग की सहायता की। |
| ” | बादशाही सेना की मराठों की सेना सहित भरतपुर पर चढ़ाई। |

मिश्र बंधु-विनोद में लिखा है—'जान पड़ता कि सं० १८१० के कुछ पीछे यह ग्रंथ बना और इसी कारण प्रारंभ से इसमें दिल्ली और दक्षिणी दलों की दुर्गत का वर्णन हर अध्याय में किया गया। इसमें लिखा है कि सूरजमल ने प्रथम मेवाड़ छीन लिया।' पहले मेवाड़ अशुद्ध है, मेवात चाहिए। दूसरे दिल्ली और दक्षिणी दलों की दुर्गति का जो चित्र सूदन जी ने खींचा है, वह बिलकुल ठीक फोटोग्राफ़िक कैमेरा की कृति सा है। इससे यह ग्रंथ सं० १८१० के बाद लिखा गया हो, सो नहीं कहा जा सकता। दूसरा कारण और भी है।

सुजानचरित्र में सप्तम जंग की घटना अधूरी दी गई है और सं० १८११ के आरंभ ही में उस युद्ध से सूरजमल एक प्रकार विजयी होकर निकले थे, जैसा उनके चरित्र में दिखलाया गया है। यदि सूदन जी ने यह ग्रंथ सं० १८१० के अनंतर लिखा होता तो वे इस घटना को बीच ही में न छोड़ देते। इस प्रकार यह ज्ञान पड़ता है कि मराठों तथा बादशाही सेना के चढ़ाई करने के अनंतर इनकी युद्ध में या अन्य प्रकार मृत्यु हो गई हो और ये ग्रंथ अपूर्ण छोड़ गए हों या इस ग्रंथ की पूर्ण प्रति कहीं छिपी पडी हो।

मिश्र बंधु विनोद में सूरजमल पर यह आक्षेप किया गया है कि 'उस समय वही मनुष्य बादशाह का बहुत जल्दी मित्र और शत्रु हो सकता था' पर यह कुछ भ्रमवश लिखा गया है। उस समय दिल्ली का बादशाह शतरंज का ऐसा बादशाह हो रहा था जिसे शह लग चुकी हो। प्रत्येक वज़ीर, बख़्शी या अमीरुल् उमरा उसे अपने हाथ का खिलौना बनाकर रखता था। उस समय के ऐतिहासिक रंगस्थल पर मराठे, राजपूत, जाट, रुहेले, पठान, अब्दाली आदि अनेक जातियाँ विचर रही थीं। उस समय कूट नीति ही का प्राबल्य था। ऐसे समय बादशाह के पक्ष या विपक्ष में रहने में कुछ सार नहीं था। सूरजमल ऐसे ही समय में अपनी दूरदर्शिता तथा नीतिज्ञता के कारण बराबर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहे। सूदन जी ने उनका स्वाभाविक चरित्र अत्युत्तम रूप से अंकित किया है। जब फतहअली शरण आया तब उसकी रक्षा की। सलाबत ख़ाँ ने युद्ध छेड़ा तब उसे परास्त किया। ईश्वरसिंह और सफदरजंग ने सहायता माँगी तो इन्होंने वचन देने पर अंत तक निबाहा। जिस ग़ाज़ी-उद्दीन ने मराठों को उभाड़कर इन पर चढ़ाई की थी, उसी के अब्दाली से भागकर शरण आने पर रक्षा की। तात्पर्य यह कि ये अहंता के कारण किसी से भिड़ नहीं जाते थे। पर ऐसे निर्भीक थे

कि प्रबल शत्रु से भी युद्ध करने में पीछे नहीं हटते थे। साथही इनकी पितृ-भक्ति का भी अच्छा वर्णन है। ये बदनसिंह से आज्ञा लेकर किसी युद्ध में जाते थे और विजय श्री प्राप्त करके ये पहले पिता के चरणों के दर्शन करना ही धर्म समझते थे।

सूदन जी ने इस ग्रंथ में विविध प्रकार के छंदों का प्रयोग कर अच्छी रोचकता ला दी है। दिल्ली की लूट, युद्ध की तैयारी तथा युद्ध का भी ऐसा अच्छा वर्णन किया है कि वे दृश्य वास्तव में सजीव प्रतिबिंब से ज्ञात होते हैं। इनके घटना-वर्णन की सत्यता के बारे में यह उल्लेखनीय है कि इन्होंने केवल अपने चरित्रनायक का ही यशःकीर्तन नहीं किया है, प्रत्युत् उनके शत्रुओं की वीरता, साहस तथा युद्ध-कौशल का भी उतना ही ओजपूर्ण वर्णन किया है। इन्होंने राजदूतों की बातचीत तथा सेनापतियों के प्रोत्साहन के व्याख्यानों का भी उत्कृष्ट नमूना दिया है। मुसलमानों की बातचीत में सूदन जी ने उस समय की दक्खिनी हिंदी या उर्दू तथा पंजाबी मिश्रित खड़ी बोली का भी प्रयोग किया है; जैसे—

(क) साहजहानाबाद मैं जद से यह आया।
तद सैं हुकुम हजूर दा नहिं एक बजाया।

( ख ) और कह्या है साहि ने सो भी सुन आना। इत्यादि।

सुजानचरित्र में फारसी अरबी के शब्द प्रचुरता से आए हैं, पर उनके रूप बहुत बिगाड़कर दिए गए हैं; जैसे खुस्याल ( खुशहाल ), चकत्ता ( चग़त्ताई ), तबाई ( तबाही ), सीन ( सीनः ) मामल ( मुआमिलः )।

सूदन जी ने 'निसान' शब्द का दो अर्थों में प्रयोग किया है— झंडा और डंका।

उदाहरण—बाजत निसाने फहराने हैं निसाने कैयों
सूरज ने माने ते न माने राइराने को॥

फारसी के गियासुल्लुग़ात आदि कोषों में इस शब्द के दो अर्थ दिए गए हैं—सेना का झंडा और बादशाहों का आज्ञापत्र। हिंदी शब्दसागर में इस शब्द को केवल फ़ारसी का ही मानकर निम्न-लिखित अर्थ दिए गए हैं—

( १ ) चिन्ह—सेनाओं के ऊँचे ऊँचे झंडे सैनिकों की पहचान ही के लिये रखे जाने की प्रथा थी और है जिससे मुहावरे में निशान का अर्थ लक्षण, चिह्न आदि लिया गया है। इसी से क्रिया बनाकर अनेक गौण अर्थ लिए जाते हैं, पर प्रधान वही है।

( २ ) ध्वजा, झंडा—यह अर्थ फारसी कोष का ही है।

( ३ ) नगाड़ा, धौंसा—फारसी के कोषों में यह अर्थ नहीं दिया गया है। शब्दसागर में जायसी की एक चौपाई उदाहरण में दी गई है—बीस सहस घुम्मरहिं निसाना। गुल कंचन फेरह असमाना॥ पर घुमरना शब्द के अर्थ में यह उदाहरण इस प्रकार दिया गया है-बीस सहस घुम्मरहिं निसाना। गुल कंचन फहरैं असमाना॥ एक और उदाहरण गोस्वामी जी का भी दिया गया है—निदरि घनहिं घुम्मरहिं निसाना। निज पराइ कछु सुनिय न काना। जायसी की चौपाई में निशान का अर्थ झंडा और घुम्मरहिं का घुमड़ाना अर्थात् फहराना अधिक उपयुक्त और ठीक है। गोस्वामी जी ने एक स्थल पर लिखा है-बजत निसान जुझाऊ बाजा। गोस्वामी जी की चौपाइओं में डंका और धौंसा ही अर्थ लग सकता है, झडे का नहीं। यह अर्थ फारसी शब्द 'निशान' का नहीं है। इससे संस्कृत के किसी शब्द के अपभ्रंश रूप से इसकी व्युत्पत्ति खोजनी चाहिए। यह भाषाविज्ञान के विद्वानों के विचार करने के योग्य है। एक विद्वान् का कथन है कि यह

संस्कृत शब्द 'निषाण' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ बड़ा बाजा है।

सूदन जी के ग्रंथ में वीर रस ही प्रधान है, परंतु करुणा और वीभत्स का भी कहीं कहीं पुट है। हास्य रस का एक उत्तम कवित्त तृतीय जंग का मंगलाचरण है। इन्होंने अपनी कविता में यमक अनुप्रास आदि की छटा नहीं दिखलाई है, पर ओज लाने के लिये मिलित वर्णों का बहुत प्रयोग किया है। इनकी कविता की भाषा में व्रजभाषा, मारवाड़ी, पंजाबी और खड़ी बोली का प्रयोग होना आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि इनका स्थान इन भाषाओं के केंद्र स्थानों की सीमा पर था। इन्होंने कविता में जु और सु की भरमार कर दी है; यहाँ तक कि एक शब्द के दो टुकड़े करके उनके बीच में इन्हें रख दिया है। यह शैथिल्य दोष से भिन्न नहीं कहा जा सकता, इससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उदाहरण के लिये कुछ शब्द लीजिए—फरुक जुसेर (फर्रुख़सिअर) किलेजुदार, सुदसोतरा, मीराँ जुसाहि, जुहिमाऊँ।

सुजानचरित्र वीर रस की कविता के लिये विशेष प्रशंसनीय है, पर साथ ही ऐतिहासिक दृष्टि से भी उसका महत्व उससे कम नहीं है।

# सुजानसिंह का जीवनचरित्र

भारतवर्ष की प्रसिद्ध जातियों में जाटों की भी गणना है जो पंजाब, सिंध, राजपूताने तथा संयुक्त प्रांत के कुछ भागों में बसे हुए हैं। भिन्न भिन्न प्रांतों मे इस जाति के भिन्न भिन्न नाम पाए जाते हैं। इनके आचार विचार राजपूतों से बहुत कुछ मिलते हैं और कर्नल टाड आदि इन्हें राजपूतों के ३६ वंशों के अंतर्गत मानते हैं। कहीं कहीं राजपूतों तथा जाटों में विवाह-संबंध भी होता है; पर कुछ स्थानों के जाटों में विधवा-विवाह और सगाई की प्रथा भी प्रचलित है। किसी का कथन है कि शिवजी की जटा से उत्पत्ति होने के कारण ये जाट कहलाए और किसी का मत है कि ये यदुवंशी थे तथा जदु या जादव से जाट शब्द की व्युत्पत्ति है। सुजानचरित्र के ग्रन्थकार सूदन जी भी अपने चरित्र-नायक को यदुवंशी लिखते हैं। जो कुछ हो, फ़ारसी के इतिहासों में इस जाति का उल्लेख पहले पहल शाहजहाँ के समय मिलता है जब मथुरा, महाबन तथा कामों का फ़ौजदार मुर्शिदकुली तुर्कमान इस जाति की बस्तियों पर आक्रमण करते समय मारा गया था। औरंगज़ेब के समय गोकुल जाट ने बहुत लूट-मार मचाई और मथुरा के पास सैदाबाद को जलाकर नष्ट कर दिया। जब वहाँ का फ़ौजदार अब्दुन्नबी ख़ाँ लड़ते समय मारा गया तब बादशाह ने हसनअली ख़ाँ को भारी सेना सहित भेजा जिससे युद्ध करते समय गोकुल अपने एक मित्र के साथ पकड़ा गया। बादशाही आज्ञानुसार वे दोनों मार डाले गए।*

---

* मआसिरुल्उमरा जि० १ पृ० ५४०।

औरंगज़ेब के दक्षिण जाने पर मौज़ा सिनसिन* के भज्जा (भावसिंह) जाट ने लूटमार आरंभ की† और धीरे धीरे अधिकार बढ़ाता रहा। इसका अत्याचार इतना बढ़ा कि अंत में बादशाह को दक्षिण से शाहज़ादा बेदारबख़्त तथा ख़ानजहाँ बहादुर ज़फ़रजंग को सेना सहित भेजना पड़ा। सं० १७४५ के युद्ध में राजाराम गोली से मारा गया और जाट दमन किए गए। दूसरे वर्ष सिनसिन पर अधिकार हो गया।‡ भज्जा के तीन पुत्र थे—चूड़ामणि, बदनसिंह और राजाराम।× भज्जा की मृत्यु पर चूडामणि ने लूटमार आरंभ की। सं० १७६२ तथा १७६४ में क्रमशः मुख़्तार ख़ाँ तथा रज़ा बहादुर ने सिनसिन पर चढ़ाई की थी। इसी समय औरंगज़ेब की मृत्यु पर जब शाहआलम और आज़म शाह में युद्ध हुआ, तब इन्होंने अपनी सेना दूर रखी तथा पराजित की सेना को अच्छी तरह लूटा। जब बहादुर शाह दक्षिण से लौटे, तब ये उनके मंसबदार बन गए। इसके अनंतर जब फिर बादशाहत में हेरफेर हुआ, तब ये फिर अपने पुराने प्रथानुसार बादशाही राज्य

---

* डीग और कुम्हेर के बीच का एक ग्राम।

† इलि० डाउ० जि० ८, पृ० ३६०।

‡ मआसिरुल्उमरा जि० १ पृ० ५४१।

× मआसिरुल्उमरा तथा मिस्टर अर्विन कृत 'दि लेटर मुगल्स' में भज्जा के स्थान पर जाटों के सरदार का नाम राजाराम दिया है। दूसरी पुस्तक में यह भी लिखा है कि इसके अनंतर चूड़ामणि के पिता भज्जा का नाम सुना जाता है जिसका स्थान सिनसिनी था।' मजमउल्अख़बार में भज्जा के तीन पुत्रों का नाम चूड़ामणि, बदनसिंह और राजाराम लिखा है और सुजानचरित्र में बदनसिंह के पिता का नाम भावसिंह लिखा है जिसका बिगड़ा रूप भज्जा है। इम्पीरिअल गज़ेटिअर जि० ७ पृ० ७५ में बृजराज नाम दिया है जो भज्जा ही का बिगड़ा हुआ रूप है। सुजान-चरित्र में "रूपसिंह तेरा चचा और सआदत खान' लिखा है जिससे बदनसिंह के एक भाई का नाम रूपसिंह भी ज्ञात होता है।

में लूटमार करने लगे। अंत में फर्रुख़सिअर ने बादशाह होने पर राजाधिराज सवाई जयसिंह को इन्हें दमन करने भेजा और सैयद ख़ानजहाँ को सहायतार्थ भेजा जो कुतुबुलमुल्क का मामा था। राजा ने जब एक वर्ष में इन्हें अच्छी तरह थून दुर्ग में घेरकर तंग किया, तब इन्होंने कुतुबुलमुल्क की शरण ली। राजा से तथा कुतुबुलमुल्क से मनोमालिन्य था और अंतिम के ही हाथ में साम्राज्य का सर्वाधिकार था, इससे बादशाह को अंत में राजा जयसिंह को बुला लेना पड़ा तथा चूड़ामणि को भारी मंसब भी प्रदान करना पड़ा। *

इसके अनंतर चूड़ामणि ने बारहा के सैयदों का ही पक्ष ग्रहण किया और मुहम्मद शाह तथा कुतबुलमुल्क के युद्ध में बादशाही सेना पर अच्छा धावा किया। जमुना जी के तट पर पूरा अधिकार कर इन्होंने शत्रु तथा मित्र दोनों को पक्षपात-रहित होकर तृष्णा नहीं बुझाने दी और एक पक्ष के पराजय के अनंतर भगैलों तथा सेनाओं के सामान आदि अपहरण कर उनके बोझ हलके कर दिए। इसके अनंतर अपने राज्य में जाकर ठहरे थे कि बादशाह ने इन्हें दंड देने के लिये राजा जयसिंह सवाई को अन्य सरदारों के साथ भेजा। चूड़ामणि ने यह देखकर कि पराजय निश्चित है, बारूदघर में आग लगा दी और उसी में जल मरे। †

---

* इलि० डाउ० जि० ८, पृ० ३६०-१। खफ़ी खाँ जि० २ पृ० ६६८-९।

† इलि० डाउ० जि० ८ पृ० ३६१। इम्पीरिअल गज़ेटियर में लिखा है कि 'सन् १७२२ में अपने पुत्र से झगड़कर चूड़ामणि ने हीरा खाकर आत्महत्या कर ली। मुहकमसिंह ने राजा होते ही अपने चचेरे भाई बदनसिंह को क़ैद कर लिया, पर जाटों के कहने पर छोड़ देना पड़ा। तब बदनसिंह ने जयसिंह को चढ़ाई करने के लिये उभाड़ा।' बदनसिंह मुहकमसिंह के चाचा थे। मआसिरुल्उमरा में लिखा है कि 'चूड़ामणि की मृत्यु पर मुहकमसिंह आदि पुत्रों ने बड़ा अत्याचार मचाया......बुर्हानुलमुल्क सआदत ख़ाँ जब कुछ न कर सके तब......राजा जयसिंह भेजे गए।'

राजा जयसिंह की प्रार्थना पर जाटों का राज्य बदनसिंह को मिल गया।* इन्होंने भरतपुर के दृढ़ दुर्ग को ऐसा बनवाया जो अजेय नहीं तो दुर्जय अवश्य हो गया। इसकी दीवार बहुत चौड़ी है तथा खाई भी खूब गहरी है। बदनसिंह ने दृष्टि कम हो जाने के कारण अपने योग्य पुत्र सूरजमल को राज्यप्रबंध का कुल भार सौंप दिया और स्वयं एकांतवास करते हुए शांतिपूर्वक सं० १८१२ में जीवन समाप्त कर दिया।

सूरजमल ने पहले डीग और कुंभेर दुर्गों को दृढ़ किया और फिर राज्य-विस्तार के प्रयत्न में लगे।†

सूरजमल ने मेवात तथा मालवा की राजधानी माँडू नगर पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। सं० १८०२ के अगहन महीने में ये यमुना नदी के तट पर आखेट करने गए थे। वहीं साबित ख़ाँ के पुत्र फ़तेहअली ख़ाँ ने असद ख़ाँ के विरुद्ध सहायता माँगने के लिये अपना एलची भेजा; पर सूरजमल के कहने पर स्वयं मिलने आया। अंत में सूरजमल सहायता देना स्वीकार कर कोल होते हुए ससैन्य चंडौस आए। यहीं दोनों ओर की सेनाओं का सामना हुआ। युद्ध में असद ख़ाँ गोली लगने से मारा गया और उसकी सेना परास्त होकर भाग गई।‡

सं० १८०४ के श्रावण महीने में सूरजमल ने जयपुर-नरेश ईश्वर-सिंह की सहायता कर मराठों को परास्त किया था। जयसिंह की मृत्यु पर ईश्वरसिंह राजा हुए, पर माधोसिंह ने राजगद्दी पर अधि-

* जयसिंह की इस कृपा का उल्लेख सूदन ने इस प्रकार किया है—ज्यौं जैसाहि नरेस करत कृपा तुव देस पैं (पृ० ४० सो० १५)

† इसके अनंतर सुजान-चरित्र का ऐतिहासिक वृत्तांत लिखा जाता है। अन्य इतिहास-ग्रंथों का उल्लेख टिप्पणी में किया जायगा।

‡ यह सुजान-चरित्र को प्रथम जंग का ऐतिहासिक सार है।

कार करने को मराठों को उभाड़ा और उन्हें जयपुर पर चढ़ा लाए।* ईश्वरसिंह ने सुजानसिंह से सहायता माँगी। ये चुनी हुई सेना के साथ कुँभेर से रवाना होकर जयपुर पहुँचे जहाँ इनका बड़ा स्वागत हुआ। यहाँ से दोनों सेनाएँ सम्मिलित होकर मराठों की ओर बढ़ीं और मोती डूँगरी में युद्ध हुआ। मराठे परास्त होकर बगरू महाल की ओर चले गए। जाटों तथा कछवाहों ने भी पीछा करके उन्हें वहाँ जा पकड़ा और कुछ दिन आराम करने पर एकाएक मराठों की सेना पर धावा कर दिया। इस युद्ध में भी मराठे परास्त हुए और इस प्रकार कई बार पराजित होने पर मल्हारराव ने संधि का प्रस्ताव किया। माधोसिंह को दो परगने देने की शर्त पर ईश्वरसिंह ने सधि स्वीकृत कर ली जिससे मराठे अपने देश को लौट गए।†

सं० १८०५ के पूस महीने में सूरजमल को समाचार मिला कि सलाबत ख़ाँ बख़्शी ने भारी सेना के साथ उसके देश पर चढ़ाई करने को दिल्ली से प्रस्थान किया है। तब ये भी सेना सहित अगवानी को आगे बढ़े और मेवात के नौगाँव में डेरा डाला। यहाँ से चुनी हुई छः सहस्र सवार सेना साथ लेकर पंद्रह कोस कूचकर ठहरे और वहाँ से अपनी सेना को विभाजित कर तथा सरदारों की अधीनता में देकर बख़्शी की सेना के चारों ओर चौकियाँ स्थापित कर उसे घेर लिया। युद्ध में सलाबतख़ाँ परास्त हुआ और उसके

---

* ईश्वरीसिंह महाराज जयसिंह के बड़े पुत्र थे, पर माधोसिंह छोटे होने पर भी मेवाड़ की राजकुमारी से उत्पन्न हुए थे। इससे राजगद्दी पर उनका भी संधि के अनुसार स्वत्व था। मेवाड़-नरेश ने भी अपने भांजे का पक्ष लिया। टॉड्स् राजस्थान जि० २ पृ० १२२५।

† द्वितीय जग का ऐतहासिक इतिवृत्त यहीं समाप्त होता है।

दो सरदार रुस्तम ख़ाँ तथा हकीम ख़ाँ मारे गए। तब सलाबत ख़ाँ ने संधि का प्रस्ताव किया जिसे सूरजमल ने मान लिया*।

सं० १८०६ में भादों महीने में सूरजमल ने वज़ीर सफ़दरजंग की सहायता कर पठानों का दर्प चूर्ण किया।† पठानों से लड़कर नवलराय के मारे जाने पर सफ़दरजंग ने क्रुद्ध होकर अहमद शाह की आज्ञा से उन पर चढ़ाई कर दी और दयानाथ नामक राजदूत को सूरजमल के पास सहायतार्थ बुलाने को भेजा। सूरजमल सहायता देना निश्चित कर ससैन्य कोल को गए जहाँ सफ़दरजंग ने डेरा डाला था। स्वागत के लिये वज़ीर ने इस्माइल ख़ाँ को भेजा और फिर अपने दरबार में बुलाया। इसके अनंतर स्वयं दूसरे दिन सूरजमल से मिलने के लिये उनके डेरे पर गया। नवाब के कथना-

* सफ़दरजंग ने वज़ीर होते ही सूरजमल तथा उनके संबंधी बलराम को फ़रीदाबाद छोड़ देने के लिये कड़े शब्दों में लिखा। फ़रीदाबाद दिल्ली से बारह कोस पर है जिस पर बलराम ने बादशाही अफ़सरों को मारकर अधिकार कर लिया था। यह स्थान दिल्ली के वज़ीरों की जागीर में पड़ता था। जब लिखा-पढ़ी से कुछ नहीं हुआ, तब सन् ११६० हि० (सं० १८०४–५) में दिल्ली से कूच कर फ़रीदाबाद पर अधिकार कर लिया। इसके अनंतर सूरजमल से लिखा-पढ़ी तथा युद्ध की तैयारी हो रही थी कि बंगश अफ़ग़ानों तथा रुहेलों में युद्ध हो गया जिसमें रुहेले विजयी हुए। तब सफ़दरजंग ने सूरजमल से संधि कर ली। (इलि० जि० ८ पृ० २१२–३) सुजान-चरित्र के सलाबत ख़ाँ बख़्शी इन्हीं के भेजे हुए थे। यहीं तृतीय जंग समाप्त होता है।

† महम्मद ख़ाँ बंगश का बड़ा पुत्र क़ायम ख़ाँ जब रुहेलों से लड़कर मारा गया, तब बादशाह के आज्ञानुसार सफ़दरजंग ने अफ़ग़ानों के कुल राज्य पर अधिकार कर लिया और राजा नवलराय को उसका प्रबंध दे दिया। यह अवध तथा इलाहाबाद प्रांत में नवाब के नायब थे। महम्मद ख़ाँ के अहमद ख़ाँ आदि अन्य पुत्रों के लिये थोड़ी जागीर छोड़ दी गई। (इलि० जि० ८ पृ० २१३) अहमद ख़ाँ ने रुस्तम ख़ाँ की सहायता से राजा नवलराय को युद्ध में परास्त किया जो युद्ध में मारे गए। (सवानिहाते-सलातीन-अवध जि० १, पृ० ४७)

नुसार पिता को लिखकर और सेना भी सहायता के लिये मँगवाई। इसके अनन्तर सम्मिलित सेना कूचकर कासगंज पहुँची और वहाँ कुछ दिन ठहरकर नौलखा आई।

इधर अहमद ख़ाँ बंगश ने भी पठानों की सेना एकत्र की और दस सहस्र रुहेलों की सहायक सेना साथ लेकर नवाब सफ़दरजंग की सेना के पाँच कोस इधर गंगाजी के कछार में मोरचा बाँधा। सुजानसिंह अपनी सेना के साथ आगे बढ़े और पठानों की सेना के सामने पहुँचकर युद्ध की तैयारी की। अहमद ख़ाँ ने भेदभाव उत्पन्न करने को सुजानसिंह के पास दूत भेजा, पर उनके कोरा उत्तर देने पर वह लौट गया। युद्धारंभ होने पर रुस्तम ख़ाँ पठान तथा सुजानसिंह से कड़ी लड़ाई हुई जिसमें अंततः रुस्तम ख़ाँ मारा गया, परंतु नवाब वज़ीर पहले ही ईसा ख़ाँ पठान से घोर युद्ध करने के अनंतर परास्त हो दिल्ली की ओर भाग गए थे, इससे ये भी अपने राज्य की ओर लौट गए।

नवाब सफ़दरजंग ने दिल्ली पहुँचकर मल्हारराव होलकर को सहायतार्थ बुलवाया जो पचास सहस्र सवार के साथ आ पहुँचे। मल्हारराव तथा सुजानसिंह को साथ लेकर नवाब ने पठानों पर फिर चढ़ाई की। पठानों ने परास्त होने पर मल्हारराव के द्वारा संधि कर ली। *

---

* नवाब सफ़दरजंग ने अफ़गानों पर चढ़ाई की, पर परास्त होकर दिल्ली लौट गए। अफ़ग़ानों का अवध प्रांत में अधिकार हो गया। पर लखनऊ के शेखज़ादों तथा अफ़गानों में झगड़ा हो गया जिसमें अफ़ग़ानों का बहुत कुछ दर्प चूर्ण हो गया। शेखज़ादों ने जब नवाब को बुलाया, तब वे राजा रामनारायण के द्वारा एक करोड़ रुपए देने का वचन देकर मराठों को चढ़ा लाए और अफ़ग़ानों को परास्त किया। अफ़ग़ानों ने मल्हारराव से मिलकर संधि कर ली जिससे दोआब के १६ महाल अहमद खाँ को मिले। ( सवा० सला० अवध जि० १, पृ० ४८ )

'जब सफ़दरजंग ने बंगश के युद्ध में विजय पाई तब सूरजमल को आगरा

सं० १८०६ में नवाब सफदरजंग के मंतव्यानुसार बादशाह की आज्ञा मिलने पर सुजानसिंह ने घासहरे के राव बहादुरसिंह बड़गूजर पर चढ़ाई की। इनके पुत्र जवाहरसिंह भी सहायता के लिये और सेना लेकर पिता के पास पहुँचे। राव ससैन्य दुर्ग के बाहर युद्धार्थ निकला, पर परास्त होने पर भीतर चला गया। सबके समझाने पर राव ने अंत में ज़ालिमसिंह को संधि के लिये भेजा, पर उनके यह निश्चित कर आने पर कि राव दस लाख रुपए और सब तोपें सुजानसिंह को दें, उन्होंने उस संधि को नहीं स्वीकार किया। इस प्रकार से अपनी बात जाती हुई देखकर ज़ालिमसिंह ने आत्महत्या कर ली। सुजानसिंह ने यह समाचार सुनकर अमरसिंह को पता लगाने के लिये भेजा। राव ने संधि के बहाने से अवसर मिलते ही बहुत माल पुत्र के पास दिल्ली भेज दिया जिसका पता मिलने पर सुजानसिंह ने क्रुद्ध होकर दुर्ग पर कड़ा धावा किया। राव को संधि करने के लिये लोगों ने बहुत समझाया, पर उसने एक न मानी। स्त्रियों ने अग्नि में प्राण विसर्जन कर दिए और राव ससैन्य दुर्ग से बाहर निकले। घोर युद्ध के अनतंर राव मारे गए और घासहरे का दुर्ग जीत लिया गया। *

सं० १८१० में सुजानसिंह ने नवाब सफ़दरजंग के सहायतार्थ दिल्ली पर चढ़ाई की थी। यहाँ कवि ने दिल्ली की राजावली का वर्णन किया है। राजा शांतनु से लेकर जनमेजय तक का वृत्तान्त

---

प्रांत मिला और मेवात तथा दिल्ली तक की भूमि उनके अधिकार में चली गई जिसकी आय दो करोड़ रुप थी।......एक लाख सवार और पैदल सेना में थे। इनकी प्रजा सुप्रबंध का सुख भोग रही थी।' मजमअल अखबार, इलि० जि० ८, पृ० ३६१) सूदन जी ने भी लिखा है 'कि एक लाख तलवार जो मिलसिलवार की'। इससे सैनिकों की संख्या ठीक ज्ञात होती है।

* यहाँ सुजान-चरित्र की पाँचवीं जंग समाप्त होती है।

देकर फिर चौहानवंशीय पृथ्वीराज तथा मुहम्मद गोरी के युद्धों का वर्णन किया है। इसके अनंतर पठानों के दो सौ वर्ष राज्य करने का उल्लेख करते हुए चग़त्ताई वंश के तैमूरलंग से अहमदशाह तक के बादशाहों का नाम तथा राज्य काल आदि दिया है। अहमदशाह के वज़ीर सफ़दरजंग और बख़्शी ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ में मनोमालिन्य था। ग़ाजीउद्दीन ने बादशाह को समझाकर वज़ीर को यह आज्ञा भेजवाई कि तुम अपने प्रांत को चले जाओ और अंत में उसे दिल्ली से निकलवा दिया †। वज़ीर ने बदला लेने की इच्छा से दिल्ली के बाहर डेरा डाला और सुजानसिंह आदि अपने पक्षपातियों को बुलाया। सुजानसिंह की सम्मति से औरंगज़ेब

---

* यह निज़ाम आसफ़जाह के बड़े पुत्र थे और इनकी मृत्यु पर दक्षिण के पैतृक राज्य पर अधिकार करने के लिये मराठों के साथ हैदराबाद गए; पर इनके छोटे भाई सलाबत जंग ने युद्ध की तैयारी की। दैवात् युद्ध के पहले ही ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ की मृत्यु हो गई। इनके पुत्र शहाबुद्दीन मुहम्मद ख़ाँ को नवाब सफ़दरजंग की कृपा से मीरबख़्शी का पद तथा अमीरुल्उमरा ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ इमादुलमुल्क की पदवी मिली। पर इन्होंने समय पर वज़ीर की सहायता नहीं की। सं० १८१७ में सूरजमल ने इन्हीं अपने शत्रु को अब्दाली की चढ़ाई के समय शरण दी थी।

† बादशाह अहमदशाह की माता कुदसिया बेगम की सहायता से जावेद ख़ाँ ने नवाब होकर साम्राज्य का कुल प्रबंध अपने हाथ लेना चाहा। यही वज़ीर सफदरजंग भी चाहते थे; इससे इन्होंने सूरजमल को मंत्रणा के बहाने दिल्ली बुलाया। २७ शव्वाल ११६५ हि० ( सं० १८०९ ) को सफ़दरजंग ने नवाब बहादुर जावेद ख़ाँ को कपट से घर पर निमंत्रित कर मरवा डाला जिससे बादशाह अहमद शाह उनसे घृणा करने लगे थे। सफ़दरजंग के एक पत्रवाहक को बादशाह की आज्ञा के बिना दुर्ग के अध्यक्ष ने भीतर बुला लिया जिसपर बादशाह ने क्रुद्ध होकर उसे तथा सफ़दरजंग के नियुक्त किए अन्य मनुष्यों को दुर्ग से बाहर निकलवा दिया। नवाब सफदरजंग ने बादशाह का कोप देखकर अपनी सूबेदारी अवध को लौट जाने की आज्ञा माँगी, जो तुरंत मिल गई। इस पर क्रुद्ध होकर नवाब ने दिल्ली लूटने का तथा बादशाह से बदला लेने का निश्चय किया।

के पुत्र कामबख़्श के पौत्र को वज़ीर ने बुलाकर अकबरशाह की पदवी सहित बादशाह बनाया * और दिल्ली के ओर बढ़े। दिल्ली के बाहर आसपास की बारह बस्तियों को लूट लिया और लूटमार करते लाल दरवाज़े तक पहुँचे। अहमदशाह ने ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ को वज़ीर और समसामुद्दौला को मीर बख़्शी की पदवी देकर युद्ध को भेजा †। घोर युद्ध पर लाल दरवाज़ा टूटा और बाज़ार लुटने लगा। यहाँ पर कवि ने अनेक जातियों की स्त्रियों का कलपना उन्हीं लोगों की अनेक भाषाओं में छंदोबद्ध किया है। बाज़ार का लुटना लिखते समय पशु-पत्ती, शस्त्र, बरतन, बाजा, कपड़े क,ी गहन, मिठाई, किराना आदि के नामों का छंदमय कोष ही तैयार कर डाला है।

इसके अनंतर लूट बंद कर दिल्ली और यमुना के बीच कोटरा में युद्ध आरंभ हुआ; पर अंत में यह देखकर कि दुर्ग की दृढ़ प्राचीर के रत्ता में प्रबल तोपख़ाने से केवल मनुष्य-हानि हो रही है, सुजान-सिंह ने वहाँ से सेना हटा ली। नवाब के दो सेनापतियों इसमाइल ख़ाँ और राजेंद्र गिरि ने सुजानसिंह के दो सेनापतियों के साथ दिल्ली पर अन्य स्थान से चढ़ाई की। इस युद्ध में राजद्रगिरि गोली से मारे गए ‡। तब नवाब ने उमरावगिरि और अनूप-

---

* सूरजमल तथा सलाबत खाँ जुलफ़िक़ार जग की सम्मति से हुआ। बयाने वक़ी में लिखा है कि सफ़दरजग ने एक युवक खोजे को जो ख़ूबसूरत था, और जिसे नवाब शुजाउद्दौला ने इधर ही क्रय किया था अकबरशाह के नाम से बादशाह बनाया।

† वज़ीर कमरुद्दीन के पुत्र इतज़ामुद्दौला वजीर तथा खानदौराँ के पुत्र हिसाम ख़ाँ समसामुद्दौला तोपखाने के मीर आतिश नियुक्त किए गए थे। ग़ाज़ी-उद्दीन खाँ पहले ही से अमीरुल्‌उमरा अर्थात् प्रधान सेनापति थे।

‡ 'कुछ दिन युद्ध कर नवाब सफ़दर जग ने नदी के तटस्थ मार्ग को शत्रु के दृढ़ मोरचे के कारण छोड़ दिया और लाल कटोरा की ओर से चढ़ाई की। यहाँ मृत्यु का नया नृत्य हुआ......युद्ध इतना घमासान था कि सफदरजंग का वीर सेनापति गोसाईं मारा गया।' बयाने वक़ी इलि० जि० ८, पृ० १३८।

गिरि को खिलअत देकर युद्धार्थ भेजा। यहाँ भी दोनों पक्ष के लोगों ने बड़ी वीरता दिखलाई और बहुत वीर मारे गए, पर दुर्ग न टूटा। तब सुजानसिंह ने वज़ीर की सम्मति से दिल्ली से कूच करने की आज्ञा दे दी। जब गाज़ीउद्दीन ख़ाँ ने सुना कि वज़ीर तथा सुजानसिंह तिलपत्ति को चले गए, तब बादशाह से आज्ञा लेकर वह ससैन्य रुहेलों की सहायता से पीछा करने चला। सुजानसिंह ने भी यह समाचार सुनकर गढ़ी के मैदान में युद्ध की तैयारी की और भीषण युद्ध के अनंतर ग़ाज़ीउद्दीन को परास्त कर भगा दिया।

कुछ दिन आराम कर वज़ीर तथा सुजानसिंह फिर दिल्ली पर चढ़ दौड़े। बादशाह ने भी युद्धार्थ सेना बाहर भेजी जिसमें कुछ मराठे भी सम्मिलित थे। बहुत देर तक युद्ध होता रहा, पर अंत में दिल्ली की सेना हारकर दिल्ली में घुस आई। वज़ीर तथा सुजानसिंह ने शत्रु को दुर्ग के बाहर लाने की इच्छा से अपनी सेनाओं को कूच करने की आज्ञा दे दी। यह समाचार सुनकर ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ फिर बीस सहस्र सवार और तोपखाना लेकर युद्ध के लिये चला; परंतु दिल्ली से आठ कोस पर युद्ध में परास्त हो लौट गया। तब उसने जयपुराधिपति माधोसिंह तथा मराठों को सहायता के लिये आने को लिखा और स्वयं भी युद्ध के लिये भारी आयोजन करने लगा। इसके अनंतर बादशाही सेना ने फ़रीदाबाद में डेरा डाला। सुजानसिंह ने दक्षिण से सहायता पहुँचने के पहले ही इस पर धावा कर दिया और उसे पूर्णतया परास्त कर भगा दिया। इसी समय जयपुर-नरेश भी दस सहस्र सवारों के साथ आ पहुँचे और उन्होंने समझा बुझाकर संधि करा दी*।

* जयपुर-नरेश माधोसिंह द्वारा संधि-स्थापन का समर्थन तारीख़े मुज़फ़्फ़री भी करती है। छः महीने तक यह युद्ध जारी रहा।

मराठों की सहायक सेना के पहुँचने पर ग़ाज़ीउद्दीन खाँ ने सुजानसिंह को दिल्ली लूटने तथा वज़ीर सफ़दरजंग का साथ देने के कारण दंड देना निश्चित किया और कुछ बादशाही सेना साथ देकर मल्हारराव को भरथपुर पर चढ़ाई करने भेजा। सुजानसिंह ने यह सुनकर रूपराम नामक एक पुरुष को भेद लेने के लिये मराठों की सेना में भेजा जिसने पहुँचते ही तुरंत पता लगाकर समाचार भेजा कि बल्लमगढ़ के दुर्गाध्यक्ष बल्लू चौधरी को महमूद आकबत* ने धोखा देकर मार डाला। इस पर सुजानसिंह ने अपने पुत्र जवाहिरसिंह को ससैन्य बरसाने भेजा। इधर मल्हारराव और आपाजी साठ सहस्र सेना के साथ जयपुर पहुँचे और राजस्थान के सभी राजाओं ने अपनी अपनी सेना भेजी। रूपराम मल्हारराव से मिले जिसने कहा कि यदि सुजानसिंह दो करोड़ रुपए यहीं न भेज देंगे तो उनके राज्य पर चढ़ाई की जायगी। रूपराम ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए व्रज-शोभा तथा कृष्ण लीला का वर्णन किया।

मल्हारराव ने अपने पुत्र खंडेराव को कुछ सेना के साथ व्रज पर आगे भेजा जिसने मेवात को लूटते हुए व्रज के पास डेरा डाला। पर मल्हारराव तथा सुजानसिंह दोनों ही ने अपने पुत्रों को युद्ध न करने का आज्ञा भेजी। दीघ दुर्ग में जाटों की काउंसिल ऑव् वार अर्थात् युद्ध समिति बैठी और युद्ध की तैयारी होने लगी। कुंभेर,

---

* मल्हारराव तथा जयापा के ६०००० सवारों के साथ पहुँचने पर ग़ाज़ीउद्दीन ने सूरजमल को दंड देना निश्चित किया। इंतजामुद्दौला वज़ीर ने सूरजमल से पचास लाख रुपए दंड लेकर क्षमा करना चाहा, पर ग़ाज़ीउद्दीन ने मराठों के उभाड़ने से नहीं माना और चढ़ाई कर दी।

† ग़ाज़ीउद्दीन का सेवक था जिसने अहमद शाह को गद्दी से उतारने और आलमगीर द्वितीय को बादशाह बनाने में सहायता दी थी। अंत में इसके बढ़ जाने पर ग़ाज़ीउद्दीन ने इसे मरवा डाला।

दीघ, भरतपुर आदि दुर्ग दृढ़ किए गए और उनमें युद्ध तथा भोजन के सामान भरे गए। मल्हारराव ने भी जयपुर से कूच किया और दो दिन की यात्रा के अनतर रूपराम को फिर बुलाकर अपनी सेना का आतंक प्रकट करते हुए कहा कि क्या इस सेना से दस गुनी सेना बुलाई जाय। इसपर रूपराम ने कालयवन तथा उसकी असंख्य सेना के नाश की कथा कहकर दिखलाया कि व्रजाधिप ( सुजानसिंह ) को असंख्य सेना भी नही परास्त कर सकती।*

मल्हारराव ने सूरजमल को कुंभेर दुर्ग में घेर लिया और दुर्गों को छोड़ उनके राज्य पर अधिकार कर लिया। तीन महीने के युद्ध में मल्हारराव के पुत्र तथा प्रसिद्ध अहल्याबाई के पति खडेराव मारे गए और कोई दुर्ग जीता न जा सका। एतमादुलमुल्क ग़ाज़ीउद्दीन खाँ ने दुर्ग विजय करने के लिये दिल्ली से बड़ा तोपखाना मँगवाया, पर इंतज़ामुद्दौला वज़ीर ने भेजना अस्वीकार कर दिया। स० १८११ के आरंभ में इंतज़ामुद्दौला ने स्वयं मराठों को उत्तरी भारत से निकालने के प्रयत्न में राजस्थान के राजाओं—माधोसिंह, रामसिंह—नवाब सफदरजंग और सूरजमल को मिलाया और निश्चित हुआ कि आगरे में बादशाही डेरा के पहुँचने पर सहायक सेनाएँ आकर सम्मिलित हों। बादशाह ससैन्य आगरे चले पर रास्ते में पता लगा कि मल्हारराव पचास सहस्र सेना सहित एक शाहज़ादे को लाने सलीमगढ़ गए हैं। बादशाह यह सुन, घबराए हुए थे कि इतने मराठों की सेना आ पहुँची और तोप आग उगलने लगी। बादशाह बिना किसी से राय लिए दिल्ली लौट गए और मल्हारराव भी पीछा करते हुए दिल्ली गए। जयापा ने अकेले कुंभेर विजय करना असंभव

---

* सुजान-चरित्र यहीं समाप्त होता है। इसके आगे का वृत्तांत फ़ारसी के इतिहासों से लिया गया है।

समझ घेरा उठा दिया। सूरजमल ने मराठों से संधि कर ली और अपने कुल राज्य पर अधिकार कर लिया।

सं० १८१४ में अहमदशाह अब्दाली ने सूरजमल पर चढ़ाई की और इनके दुर्ग बल्लमगढ़ पर अधिकार कर लिया जो दिल्ली से पंद्रह कोस पर है। इसके अनंतर उसने मथुरा लूटी और फिर अपने सेनापति जहाँ खाँ को जाट दुर्गों को लेने के लिये भेजा। पर इसी समय शाह की सेना में महामारी इतने वेग से फैली कि अंत में उसे यह प्रयत्न छोड़ना: पड़ा।

सं० १८१७ में जब पेशवा ने विश्वासराव तथा सदाशिवराव भाऊ की अधीनता में प्रबल सेना अब्दाली को परास्त करने के लिये भेजी और ये आगरे पहुँचे, तब मल्हारराव होल्कर तथा जंकोजी सूरजमल को लाने के लिये गए। जब सूरजमल आगरे पहुँचे, तब भाऊ ने एक कोस आगे बढ़कर स्वागत किया। युद्ध-समिति में इन्होंने सम्मति दी कि भारी तोपखाना, स्त्रियाँ, और सामान आदि झाँसी दुर्ग में रखे जायँ तथा एक ही घमासान युद्ध न करके मराठी चाल का युद्ध किया जाय। अन्य सभी सरदारों ने इसका समर्थन किया, पर अनुभव-हीन विश्वासराव ने यौवनोन्मत्त होने के कारण इसको नहीं माना। विश्वासराव ने यहाँ से कूच कर दिल्ली को घेर लिया और उस पर अधिकार कर वर्षा ऋतु वहीं व्यतीत की। सूरजमल ने मराठों का पराजित होना निश्चय समझकर अपने स्थान सराय बदरपुर से जो दिल्ली से छ कोस पर है, भाऊ से बिना कहे अपने दुर्ग बल्लमगढ़ में चले आए। इसी वर्ष इन्होंने आगरा दुर्ग पर अधिकार कर लिया था।

पानीपत के तृतीय युद्ध के अंत में सदाशिवराव भाऊ की स्त्री तथा शमशेर बहादुर भागकर डीग के दुर्ग में पहुँचे। यहाँ शमशेर बहादुर घावों के कारण मर गया और सूरजमल ने भाऊ की स्त्री

को प्रतिष्ठा के साथ दो तीन दिन आतिथ्य कर तथा योग्य रक्षक देकर दक्षिण पहुँचवा दिया।

सं० १८२१ में जब शाहआलम द्वितीय बादशाह, शाहजादा जवाँ बख़्त युवराज और नजीबुद्दौला रुहेला वजीर थे, तब सूरजमल ने दिल्ली विजय करने की इच्छा से उस पर चढ़ाई की। नजीबुद्दौला ने युद्ध का साहस न कर सकने पर संधि करने के लिये बहुत प्रार्थना की, पर इन्होंने नहीं माना। युद्धस्थल में विजय तथा पराजय होने के अनेक कारण होते हैं जिनमें एक प्रधान कारण वह है जो बलाबल या योग्यतर सेनापति की दूरदर्शिता पर भी निर्भर नहीं रहता। वह किसी अदृश्य कर्ता की कृति होती है जिसमे मनुष्य किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता। जब दोनों पक्षो की सेनाएँ युद्धार्थ तैयार थी, तब सूरजमल कुछ सैनिकों के साथ अपने एक तोपखाने का निरीक्षण करने सैन्य से कुछ दूर चले गए; और जिस समय वह गुप्त रूप से तोपखाने तथा शत्रु-सैन्य के बीच खड़े हुए अपनी सेना की कृति देख रहे थे जो नजीबुद्दौला को घेरने भेजी गई थी, उसी समय रुहेलों की एक टुकड़ी जो जाटों से लुटकर भाग रही थी एकाएक इन्हीं की ओर आ पड़ी। नजीब खाँ का एक जमादार इन्हें पहचानकर सौ रुहेलों के साथ इन पर टूट पड़ा और ये वीरतापूर्वक लड़कर वीरगति को प्राप्त हुए। इस दैवी दुर्घटना से जाटों की सेना भाग निकली और रुहेलों के हाथ बहुत लूट का माल आया।

सूरजमल की मृत्यु पर इनके बड़े पुत्र जवाहिर सिंह राजा हुए और पिता का बदला लेने को दिल्ली पर चढ़ाई की। अंत में मल्हारराव के मध्यस्थ होने पर संधि हो गई। सं० १८२३ में रघूजी ने जवाहिर-सिंह से कर माँगा, तब इन्होंने हिम्मत बहादुर और उमरावगिरि को बात चीत करने भेजा पर उन्होंने मराठों से धन लेकर जवाहिर-

सिंह को उनके हाथ में देने का विचार किया जिसका पता पाकर इन्होंने उन्हें पकड़ने को सेना भेजी, पर वे भाग गए। सं० १८२५ में जवाहिरसिंह ने जयपुर-नरेश महाराज माधोसिंह पर पुष्कर स्नान के बहाने चढ़ाई की, परंतु हरसुख राय खत्री के अधीनस्थ चुनी हुई राजपूत सेना के धावों से परास्त हो भागना पड़ा। आगरे में हाथियों का युद्ध देखते समय किसी घातक के हाथ से इनकी मृत्यु हुई। तब इनके भाई रतनसिंह राजा हुए।

# सुजान-चरित्र

## प्रथम जंग

छप्पय

प्रनत गिरा गिरिईस गवरि गौरी गिरिधारन।
गोकर गायत्री सुगोधरन तिय गोहारन॥
गंग गाइ गोमती गलौ ग्रहपति अरु सुरगिर।
गंध्रपेस गीर्वानु गुह्यपति गंधवाह गुर॥
गन गुड़ाकेस गांगेयहू, गगनचरहु सुनि लिज्जियै।
कर जोरि प्रनति सूदन करत, इक ग्रह गोपति किज्जियै॥ १॥

उसनाईस कबीस बहुरि बालमीक ब्यास मुनि।
पवनपूत बिधिपूत सूत सनकादि बहुरि गुनि॥
संकर अरु जयदेव दंडि जज्जट मम्मट नर।
कैयट भार्गव बिदित श्रीधररु कालिदास बर॥
बर बोपदेव श्रीहर्ष कहि माघ महोदधि जानि चित।
सुर नर मुनि सुर सब्द कवि प्रनति करतु सूदन सहित॥ २॥

दोहा

ज्यौं ज्यौं कलि उद्धत भयो त्यौं त्यौं घटि गई बुद्ध।
अब के कवि भाषा कहत तऊ न समझत सुद्ध॥ ३॥

कवित्त

केशव किशोर कासी कुलपति कालिदास
केहरि कल्यान कर्न कुंदन कविंद से।

कंचन कमंच कृष्ण केसौराय कनकसेन
    केवल करीम कविराइ कोकबंद से ।
कुँवर किदार खानखाना खगपति खेम
    गंगापति गंग गिरिधरन गयंद से ।
गोप गद्द गदाधर गोपीनाथ गदाधर
    गोरधन गोकुल गुलाब जी गुबिंद से ॥ ४ ॥

घन घनस्याम घासीराम नरहरि नैन
    नाइक नवल नंद निपट निहारे हैं ।
नित्यानंद नंदन नरोतम निहाल नेही
    नाहर निवाज नंद नाम अजवारे हैं ।
चंद बरदाई चंद चिंतामनि चेतन हैं
    चतुर चतुर चिरजीव चतुरारे हैं ।
छीतरु छबीले जदुनाथ जगनाथ जीव
    जयकृष्ण जसुवंत जगन बिचारे हैं ॥ ५ ॥

टीकाराम टोडर तुरत तारापति तेज
    तुलसी तिलोक देव दूलह दयाल से ।
दया देव देवीदास दूनाराइ दामोदर
    धीरधर धीर औ धुरंधर बिसाल से ।
पंडित प्रसिद्ध पुषी पीत पहलाद पाती
    प्रेम परमानंद परम प्रतपाल से ।
परबत प्रेमी परसोतम बिहारी बान
    बीरबर बीर बिजै बालकृष्ण बाल से ॥ ६ ॥

बलभद्र बल्लभरसिक बिंध (बृंद ?) बृंदाबन
    बंसीधर ब्रह्म औ बसंत बुद्ध रावरे ।
भूषन से भूधर मुकुंद मनिकंठ माधौ
    मतिराम मोहन मलूक मत बावरे ।

मंडन मुमारख मुनीस मकरंद मान
मुरली मदन मित्र मरजाद गाव रे।
अच्छर अनंत अग्र आलम अमर आदि
अहमद आजमखान अभिमान आव रे ॥ ७ ॥
इच्छाराम ईसुर उमापति उदय ऊधौ
उद्धत उदयनाथ आनँद अमाने हैं।
राधाकृष्ण रघुराइ रमापति रामकृष्ण
राम से रहीम रनछोर राइ राने हैं।
लीलाधर लीलकंठ लोकनाथ लीलापति
लोकमनि लाल लच्छ लछी लोक जाने हैं।
सूरदास सूर से सिरोमनि सदानंद से
सुंदर सभा से सुखदेव संत माने हैं ॥ ८ ॥
सामनाथ सूरज सनेही सेख स्यामलाल
साहिब सुमेरि सिवदास सिवराम हैं।
सेनापति सूरति सरबसुख सुखलाल
श्रीधर सुबलसिंह श्रीपति सुनाम हैं।
हरिपरसाद हरिदास हरिबंस हरी
हरिहर हीरा से हुसेनि हितराम हैं।
जस के जहाज जगदीस के परम मीत
सूदन कविंदन कौं मेरा परनाम हैं ॥ ९ ॥

सोरठा

मथुरापुर सुभधाम माथुर कुल उतपत्ति बर।
पिता बसंत सुनाम सूदन जानहु सकल कवि ॥१०॥

छप्पय

मच्छ कच्छ बाराह सिंहनर कपिल मन्वंतर।
बामन हरि दुजराम राम बलिराम धन्वंतर ॥

सनकादिक रिषदेव हंस मोहनी धुवच्छुर।
ब्यास जग्य दत्रेय वृद्ध नारद सुमुनीवर॥
नरनाराइन निकलंक प्रभु ए चौबीस सरूप लहि।
अवतार अवधि परब्रह्म की परमावधि ब्रजचंद कहि॥११॥

## कवित्त

अदिति असोक भरी सोक भरी दिति और
दोष भरी पूतना अदोष करी ओपिका।
कंस हियै भौ भरी अभौ भरी अंधवंस
पंडव कैं कीरति अकीरति की लोपिका।
लाज भरी द्रोपदी सुराज भरी ब्रजभूमि
*कूबरी इलाज सो अवाज करी कोपिका।
देवकी अनंद भरी ऊगें ब्रजचंद घरी
भाग भरी जसुदा सुहाग भरी गोपिका॥१२॥

## छंद अनुगीत

तिहिं बंस में परसंस लाइक नृपनु के अवतंस।
अरि कंस लौं निरबंस कीने तपत नभ ज्यों हंस॥
जग उदित उद्धत जदुकुलनु में भयौ भूरे भूप।
ताकौ भयौ सुत रौरिया सो रौरि ही के रूप॥
वह रौरिया अरि रौरिया रनबंस में उद्दोत।
परताप मेंटन भौ पचै परताप कौ सौ गोत॥
तिहिं पचै कैं सुंदर सचे ताकै मदू महिपाल।
मदुमर्दनौ महि के महीपनु साहि कौ उर साल॥
ताकें भये प्रथिराज सुत प्रथिराज के परवान।
पहिले प्रथीपति नाम दीनो पैज करि भगवान॥

---

* पाठांतर—कुबरी इलाज भरी साज सद सोपिका।

पुनि भयौ मकनि भुवाल भूपह भय बिनासन जोग।
जिन कियौ ससिकुल प्रगट भू पर निखिल बसुधा भोग ॥
सुत भयौ तिनकैं खानचंद अमंद चंद समान।
तिनि आपनी किरिवान सौं बसु कियौ सकल जहान ॥
ब्रजराज तिनके और तौ ब्रजराज के परताप।
जिनि साहि के दल गाहिकैं निज साहिबी करि थाप ॥
पुनि भयौ भूपति भावसिंह भुजान बल भरपूर।
रविबंस में ज्यौं करनु त्यौं ससिबंस कौ वह सूर ॥
ता भावसिंह भुवाल कें बदनेस नाम नरेस।
नहिं ता समान धनेसहू नखतेस और दिनेस ॥
हैं बदनसिंह महेंद्र महि पर धर्मधुरँधर धीर।
ताकौ कुवाँर सुजानसिंह सुकरै पर उर-पीर ॥
जिन जीति बसुधा नीति सौं कहुँ भीति राखी नाहिं।
इक प्रीति श्रीहरदेव को कै पिता के पद माहिं ॥
सुत प्रगटियौ तिनकै जवाहर जगत जाहर बीर।
जिनि साहि के दरबार माहिं सुकिये हुकमी मीर ॥
सुलतान अहमदसाहि आपु सराहि नौबत दीन।
और राजा राइ तें पदवी सवाई कीन ॥१३॥

दोहा

सूरजमल्ल कुवाँर कैं भयौ सहोदर बीर।
सिंहप्रताप प्रतापनिधि जाकौ जस गंभीर ॥१४॥
संग निजामुलमुलुक कौ गढ़ भूपाल मँझार।
जीत्यौ बाजीराव सौं सिंहप्रताप कुवाँर ॥१५॥
सो प्रताप सुर-लोक कौ बेधि गयौ परलोक।
रह्यौ बहादुर सिंह सुत राजनीति कौ ओक ॥१६॥
जोधसिंह जग-जोध पुनि देवीसिंह अमान।
दोइ सहोदर ए भए साहस-सीलनिधान ॥१७॥

दोइ सहोदर द्वै सुभ्र प मेदसिंह मरदान।
अनुज भवानीसिंह लघु नलकूबर परवान ॥१८॥
अषैसिंह अमनैत इक खलखण्डन बलवंड।
महाधीर गंभीर अति जाकी तेग प्रचंड ॥१९॥
सुलतानजु जाहर भयौ सो सुलतान कुवाँर।
सुतौ गयौ सुरलोक कौं सुत भौ छत्र बिदार ॥२०॥
सभाराम साहस भर्‍यौ सरस सील कौ धाम।
सोहति जाकौं साहिबी सुंदर सुहृद सुनाम ॥२१॥
सकल कला पूरन प्रबल राम सुबल इह नाम।
तेग धरैं त्रिपुरारि सौं कुद्ध जुद्ध के काम ॥२२॥
मानसिंह रन रंग में मानव-सिंह समान।
त्यौं गुमान गुरुवौ बहुरि फौवन पर के प्रान ॥२३॥
दिल दलेल दल दल-मदन सिंह दलेल कुवाँर।
जाके दिल की ना लहै समता सक्र उदार ॥२४॥
बीरनराइन बीर अति पीर हरन रनधीर।
गुनगाहकु दाहकु अरिनु बाहक सुजस गंभीर ॥२५॥
रामकृष्ण करोर नहिं बलिधारी बलराम।
सिंह खुस्याल खुस्याल मुख समर सुभट अभिराम॥२६॥
लालसिंह लाइक गुनतु लाजवंत जसवंत।
उदैसिंह लघु तनय के गुन जानत गुनवंत ॥२७॥
सबै बीर सब धीर अति सबै सुधारन काज।
हैं ब्रजेस के पूत बहु पै सुजान सिरताज ॥२८॥
त्यौंही सिंह सुजान कैं प्रथम जवाहर जान।
नाहर रतन उभै सु प नवलहरी बहुमान ॥२९॥

कवित्त

पाँच कुरपस के महेस के उभय भये
तैसही दिनेस के सुपक है निसेस के।

दोइ अलकेस के जदेस के प्रगट दोइ
सूदन गनेस के यहै अँदेस सेस के।
काहू अमृतेस के कपेस के जलेस हू के
राज काज पूरौ सूरौ सालतु दिगेस के।
भूमि के नरेस के सुरेस के भयो न होइ
जैसौ भयौ सूरज ब्रजेस बदनेस के ॥३०॥

दोहा

हुकुम मानि बदनेस कौ सूरजमल्ल कुवाँर।
प्रथम मारि मेवात कौं कियौ आप अधिकार ॥३१॥
पुनि माँड़ौगढ़ मालुवै जीत्यो सिंह सुजान।
कूरम की रच्छा करी निज कर गहि किरिवान ॥३२॥
पुनि कूरम सौं बिरझियौ छोड़त देखि म्रजाद।
बचन जीन तासौं भयौ सूरज आपु जवाद ॥३३॥

छंद हरगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जानैं दिली दल दक्खिनी, कीने महा कलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै।
कहि देव ध्यान कवीस नृप-कुल प्रथम अंक सुनाइ कै ॥३४॥

इति प्रथम अंक ॥ १ ॥

दोहा

ठारे सै रु दुहोतरा अगहन मास सुजान।
बैठि सजल गढ़ नौहि कै किय आखेट-बिधान ॥ १ ॥

छप्पय

कालिंदी तट दुग्ग उग्ग सरवर मन मोहत।
जलचर जलज अनेक तहाँ खग मृग बहु सोहत॥

करतु सरस जलकेलि कभू मीनहिं गहि लावतु ।
कबहूँ ह्वै असवार धाइ उद्धारु धुकावतु ॥
इहि भाँति रमत आखेट नित बदन पूत मजबूत मन ।
सब भाँति चैन दिन रैन सुख पै न परनि कल बिना रन ॥२॥

दोहा

एक दिवस दरबार करि बैठ्यो सिंह सुजान ।
आस पास भूपतिनु के बैठे तनय अमान ॥ ३ ॥

छंद रोला

ज्यौं पारस के बीज बिना, आरस रवि दरसै ।
उडुगन सहित मयंक सरद, पूरन दुति सरसै ॥
ज्यों गयंद गन मद्धि महा जूथप मद बरसै ।
सुरपति ज्यौ सुर-सभा इती, उपमा जा पर लै ॥
पौरि खड़े प्रतिहार रजत आसा चमकावत ।
राइरान नृप खान तहाँ सनमानहिं पावत ॥
तिनके बाजि दराज द्वार गजराज बिराजत ।
पाइक अरु पालकी सहस सहसनुही छाजत ॥
तुरकी ताजो कुही देस खंधारी बलकी ।
अरबी पेराखी रु पर्बती कच्छी थलकी ॥
काबुल के किलवाँक कच्छ दच्छी दरिआई ।
उम्मट के हबसान, जंगली जाति अलाई ॥
लीले लक्खी लक्ख बोज बादामी चीनी ।
चहरु गहरु अरु चाल चौधर रु चटक नवीनी ॥
सिरगा समँदा स्याह, सेलिया सूर सुरंगा ।
मुसकी पँचकल्यान कुमेता केहरि रंगा ॥
हरे हरदिया हंस खिंग गर्रा फुल [illegible]री ।
सुरखा अरु संजाब सुरमई अबलख [illegible]री ॥

जरदा जिरही जाँग सुनौंची ऊदे खंजन।
कर रकवाहे कवल गिलगिली गुलगुल रंजन॥
कारूनी संदली स्याह कनैंता रूनी।
तुकुरा और दुवाज बोरता है छवि दूनी॥
कंचन के तन जीन मीन मनि जटित जवाहर।
जलज गुहे कि सवार रहे जग मग से जाहर॥
नौने मौने नैन कान सोहत लघु चंचल।
जिनके रूपहिं देखि रहत फरकत जनु अंचल॥
जिनकी चाल बिलोकि चाल चुकि जात जु मन की।
को कुरंग खगराइ ताब नहिं पवन गवन की॥ ४॥

कवित्त

दंतन सौं दिग्गज दुरंतर दबाइ दीने
दीपति दराजु चारु घंटन के नद्द हैं।
सुंडनि झपट्टि कै उलट्टत उदग्गगिरि
पट्टत सुसद्दबल किमत बिहद्द है।
सूदन अनत सिंह सूरज तुम्हारे द्वार
झूमत रहत सदा ऊँचे बहु कद्द हैं।
रद्द करि कज्जल जलद्द से समद्द रूप
सोहत दुरद्द जे परद्दल दलद्द है॥ ५॥

छप्पय

यौं गज बाजि अपार द्वार दरबार मद्धि नर।
ज्यौं जयन्त सुरकन्त-तनय अरि अंत करन बर॥
तिही बार इक मीर आइकै खबर करइय।
साबितखाँ-सुत मोहि कुँवर के पास पठाइय॥
तब करि सलाम प्रतिहार ने दूत बचन जाहर कर्‍यो।
जँह नर सुजान मरदान मुख भट समूह उद्भट भर्‍यो॥ ६॥

### दोहा

आइसु दै प्रतिहार कौं लीनौ ताहि बुलाइ।
करि सलाम सनमुख भयौ बैठ्यौ आदर पाइ ॥ ७ ॥
सूरज कही नवाब के है आनंद सरीर *।
तब वकील बिनती करी कृपा पाइ जदुबीर ॥ ८ ॥

### सोरठा

तब तो वकील कर जोरि अरज करी कछु अरज की।
तब सुजान हग मोरि मसलति की सारति करी ॥ ९ ॥

### छंद हरगीत

तब तो वकील सितावही, कर जोरि कहिय सुजान सौं।
रहिहै नवाब फतेअली जौ राखि लेउ भुजान सौं ॥
निकस्यौ सुन्यौ पुरइंद्र तें जब, तें असदखाँ कोर कौं।
तब तें मुसाबितखान ने, निरखैं तिहारी ओर कौं ॥
दस सहस बाजि दराज साजैं अरु अराबौ संग लै।
दर कूँच आवतु है चल्यौ मन माँह जग उमंग लै ॥
पैहैं जितेक महाल ते सब भानुजा मधि गंग के।
इन मैं न एकौ छोड़िहैं वह असदखाँ बल जंग के ॥
क्या कोलटप्पर नौंह जेवर सहित ईखू लेइगा।
चंडौस खुरजा हाथ करि तब पाइ आगे देइगा ॥
इस वास्ते तुमसें अरज करि जोर कीजति है बली।
अब हाथ उस पर रक्खियै तौ जंग लेहि फ़तेअली ॥
यह सुनि सँदेस सुजान बुल्लिय मनहुँ फुल्लिय कंज है।
हमसौं नवाबु न साँचु राखत करत खातर रंज है ॥

---

* पाठांतर—सोरटा—तब वकील कर जोरि बिनती करी नवाब की। सूरज कही हित जोरि है आनंद नवाब कैं ॥

तुम जाइ कहहु नवाब सों जौ साँचु राखत जीय में।
तौ एक बार मिलै हमैं नहिं बात कहनी बीय में ॥ १० ॥

## दोहा

ऐसे बचन सुजान के सुनि वकील सुखकान।
फिर बोल्यौ हित स्वामि कौं करत बहुत सनमान ॥ ११ ॥

## छंद भुजंगी

महाराज बद्नेस भौ भाग पूरौ।
भयौ तासु के पूत पन्पाल रूरौ ॥
रहै भूप सोई तिहारौ कहावै।
सबै सुक्ख पावै सरन् ताकि आवै ॥
बसै बाँह की छाँह मैं छत्रधारी।
हिये साहि के साहि के संग पारी ॥
सबै राइरानैंनु अवलंबु लीनौ।
कियौ खान सुलतान कौ मान हीनो ॥
जबै इंद्र के नग्र कौ सेतु फूट्यौ।
तहाँ बीर तैंही जसै एक लूट्यौ ॥
हुते सत्रु जेते भये ते भिखारी।
मवासे मवासीनु की जौम झारी ॥
किते काम क्रोधी बिरोधी बिहंडे।
छिपे छुद्र छैला छली छिद्र खंडे ॥
चलाई सबै राह दिन राति माहीं।
बिना दोष के लोक कौं टेक नाहीं ॥
प्रजापाल जनपाल पनपाल होसौ।
भयो भूप बद्नेस सुत पाइ तो सौ ॥
करी कीर्ति ईरान तूरान ताँई।
फिरंगा तिलंगान हबसान गाई ॥

जिसै पाल लीने महीपाल औरौ।
तिसै आपनौ नाम की ओर दौरौ॥
करो आपनो ही फते हू अली कौ।
नहीं ढील कीजै बनै जौं भली कौ॥
महाराज की जो अबै सीख पाऊँ।
दिना दोइ कै तीन मैं लै मिलाऊँ॥
घरी चार को खेल आखेट साजैं।
महाराज हू आइ ईखू बिराजैं॥
फतेहू अली आइहै आप पासै।
करै वंदगी कौ यहै वाहि आसै॥१२॥

## दोहा

रुखसत पाइ सुजान तें सो वकील सिर नाइ।
आयौ जहाँ फतेअली कही सुकही बनाइ॥१३॥
जो कछु कही वकील ने फतेअली मन मानि।
सूरज सों मिलनौ भलौ तौ जीवन जिय जान॥१४॥
साइत सोधि सवार ह्वै करि सलाह सजि सैन।
सूरज हू आखेट मिस ईखू लयौ ससैन॥१५॥
फतेअली आयो उतै संग पाँच सै ज्वान।
जहाँ हुतौ सूरज बली बदन-पूत भुवमान॥१६॥

## सोरठा

फतेअली हय छोड़ सूरज पै आयो पगनि।
जैसे रवि की गोड़ ससि आवतु तप ताप तें॥१७॥
फतेअली सिर नाइ त्यों ही सूरज हू कियौ॥
मिले परस्पर धाइ दुहूँ अंक भरि अंक सौं॥१८॥
जिते संग सरदार तिन सौं मिल्यो फतेअली।
कुसल बूझि तिहिं बार बैठ गये दोऊ निकट॥१९॥

### छंद पवंगा

फिरि बदनेस कुवाँर बियौसु फतेअली।
बैठे इकले जाइ करन मसलति भली॥
घरी दोइ बतराइ दुहूँ के मन रले।
कौल बचन करि एक दोऊ डेरा चले॥२०॥

### दोहा

साबितखाँ सुत कोल में जबहीं पहुँच्यौ जाय।
सूरज हू आखेट करि आयौ सहज सुभाय॥२१॥

### छंद हरगीत

भूपाल-पालक-भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
सु फतेअली-सूरज-मिलन यौं अंक दुतिय सुगाइकै॥२२॥

इति द्वितीय अङ्क॥२॥

---

### छंद दुपई

असद खान खानजादौ हू ऐसे सुनिकै आयौ।
फतेअली रु कुँवर साहिब को ब्यौरौ बेगि पठायौ॥१॥
सुनत तुरत महराज-कुँवर ने, बकसी आपु बुलायौ।
तुम चंडौस जाहु नकदी लै, मोको जानो आयौ॥२
हुकुम पाइकै श्रीसुजान कौ दलपति निज सिर नायो।
बोलि नकीब कही सरदारन तुरतै कूँच करायौ॥३॥
भले भले सरदार सूर मिलि तनक न देर लगायौ।
चार्यौ बरन नरन में उद्धत निजु निजु पटह बजायो॥४॥

### कवित्त

कूरम रठौर गौड हाड़ा चहुँवान मौर,
तोमर चँदेल जादौं जंग जितवार हैं ।
पौरच पुँडीर परिहार औ पँवार बैस,
सेंगर सिसौदिया सुलकी दितवार हैं ।
सुरको बघेले खीची खीचर बुँदेले बाँके,
बारहे बनाफर सदा ही इतबार हैं ।
बीर बड़गूजर जसाउत सिकर वार,
होत असवार जे करत निरवार हैं ॥ ५ ॥

जाइस जघारे जूझा भाभरे भरत भीर,
धाकरे घघल धाये मानत अमाने कौ ।
मुगल पठान सेख सैयद भुजान भारे,
मेव मतवारे खानजादे बाँधि बाने कौ ।
गूजर अहीर मेना बरगी बलाहक से,
बाहक भुसुंडी ललचाने जंग ठाने कौ ।
बाजत निसाने फहराने हैं निसाने कैयौं,
सूरज ने माने ते न माने राइराने कौ ॥ ६ ॥

### दोहा

आयो मदति सुजान दलु फतेअली सुनि कान ।
कोस आठ चलि कोल तैं आयौ देतु निसान ॥ ७ ॥
सूरज बली फतेअली दोऊ एक निहारि ।
जिमींदार की रारि यह आयो राउ बिचारि ॥ ८ ॥
फतेअली ने फिर लिख्यो सुनि महराज-कुँवार ।
बिना आपुके आवने मोसों थँभै न रार ॥ ९ ॥
सुनत सँदेस नवाब कौ श्री सुजान बलवान ।
चारि तबेले संग लै ईषू लयौ पयान ॥ १० ॥

असद्खानहूँ कूँच करि आयौ कोस छु सात।
काहू की मानी नहीं समुझि बैर की बात ॥ ११ ॥
चारिहु ओर चडोस कै चारि तीनि द्वै कोस।
चाख्यौ सरदारन दये डेरा निज्जु निज्जु रोस ॥ १२ ॥

## छंद बत्तीसा कवित्त

उद्धत असद्खान कुद्ध कौ निधान जान,
लेन उनमान फतेअली ने पठायौ दूत।
कहियौ नवोब सौं सलाम मैं भी हाजर हौं,
जानत न कौल दरपुस्त यह मेरा कूत।
ईधर न आओ तौ मेहर फुरमाओ मुझै,
बदे हम साहि के हमेसा हमैं तुम्हें सूत।
खातिर न आवै तो सुबाही बंदा बंदगी मैं,
मौला जिसै देहिगा रहैगा खेत मजबूत ॥ १३ ॥

सुनी दूत बानी महामानो खानजादे जब,
हियै अहटानी हैं रिसानी देह ता समैं।
दूत कौं बुलाइ कही जाह तेरे आगा पास,
कोई रोज चाहै जान जाना तौ अवास में।
मुझै आया जाने जाया मानें तौ ठिकाने रहि,
फजर की गजर बजाऊँ तेरे पास में।
लाऊँ उसै रास मैं सभा समैं सबै सुनाइ,
तेग ही के त्रास में हुतास जैसें घास में ॥ १४ ॥

## छंद द्रुमला

ऊतरु यह देके दूत पठैकै असद्खान यह रोस भख्यो।
बोल्यौ सब बीरन कुल के धीरन जिन न चरन रन उलटि धख्यो ॥
तुम करौ तयारी सब इस बारी मैं दिल यह इतकाद कख्यौ।
मुझ को तो लरना देर न करना आइ साहि कौ काज पख्यो ॥१५॥

### छंद लच्छीधर

खानजादे सबै बीर बादे तहीं। आपु कीया सही होइगा सो वही ॥
पै इती बंदगी भी हमारी सुनो। रोज दो तीन मैं लै हरीफै धुनौ ॥
साहि के काज पै आपु आये चले। देर सौं काज कीयैं दिखाऔं भले ॥
फौज केती इतै और बैरी किते। सोधि लीए बिना जंग कोऊ जिते ॥
एक तौ जानते हौ फतेही अली। जट्ट दूजा हुआ सङ्ग ताके बली ॥
आपनी फौज तौ आवती है चली। होइ दूनी जबै जंग कीजै भली ॥
और कीजै इकट्ठे जिमीदार भी। जे तुमें चाहते पार भी वार भी ॥
तोपखाना दिया साहि का आयहै। ताहि आगै धरे जंग को पायहै ॥
हाल तो हस्त हज्जार घोड़े सही। तोपखाना कछू त्यार हूवा नहीं ॥
बीस हज्जार असवार दिन दोइ में। साथ हूएँ लरैं ताब है कोय मैं ॥
आप डेरा करौ एक कै दो दिना। जंग कोऊ करै जग कीये बिना ॥
यौं हमें बंदगी कौं बजाए बजा। और कीजै वही आपकी जो रजा ।१६।

### छंद दुपई

ऐसे अरज करी उमरावनु असदखान फुरमायौ।
तुम जो कही सही मैं कीनो दिल कौ दरद न पायौ ॥१७॥
जौ न लरौ हौं काल्हि उन्हौं सौं तौ दिल अंदर आनौ।
फतेअली सूरज के लोगौं घेरा कीया जानो ॥१८॥
अरु तुम कहत फौज का आवन सो आवन नहि पावै।
दाना घास घीव आटा जब रुपये सेर बिकावै ॥१९॥
अरु तुम सुनौं खानजादा हौ घेरा क्या जु करावै।
इस जीने से मरना भरना लरना ही बनि आवै ॥२०॥
जाना होइ जाउ सो डेरें मै भी इसमें राजी।
मेरा भी फरजंद चलैगा मेरा मानि कहा जी ॥२१॥

### चौबोला छंद

निसा साम जाइ सो जावै एक जाम जब साम रहै।
डंका दै असवार होहुगा बड़ी फजर समसेर बहै ॥२२॥

जो कोइ चला बिदा करि तिसकौं असदखान फुरमाइ उठ्यौ।
पहर राति सौं होहि नगारा ख्वाबगाह कौ गयौ रुठ्यौ ॥२३॥

दोहा

तीन पहर इतकाद सौं अपनो इष्ट मनाइ।
पहर राति रहते बखत डका दियौ बजाइ ॥२४॥
आपु गुसल करि सिलह करि हुवै नगारे दोइ।
देत नगारे तीसरे ह्वै सवार सब कोइ ॥२५॥

कड़खा छंद

होत असवार तिहँ बार हय नैन तें,
नीर छुट्यौ चढ़त तंग टूट्यौ।
कंक बाइस उलू गिद्ध सुर असुभ कहि,
बदन कौ रंग उहिं बार छूट्यौ।
पवन रूखो बह्यौ सबनु नाहीं कह्यौ,
कंठ मानौ किहूँ आन घूँट्यौ।
होत उनपात रन जात आनैं न उर,
काल-बस जंग ते नाहि हूट्यौ ॥२६॥
किते पखरैत बखतरनि साजैं चढ़े,
किते साधे कढ़े धनुषधारी।
किते निज बाज पर बाज पट्टे लिये,
किते कट्टेनु बरछी सम्हारी।
किते बंदूक बेचूक फरसा किते,
तेग तेगा सुधारी दुधारी।
मीरजादे सजे भानुजादे सही,
खानजादेन की सो सवारी ॥२७॥
देत डंके चढ़े ह्वै निसंके बढ़े,
सबै आयुध मढ़े तेह तत्ते।

मुच्छ पर हत्थ तन सुच्छ अंबर धरे,
तुच्छ नहिं बीर रसरंग रत्ते।
डुब्बही डुब्ब भट पुब्ब चाहत चल्यौ,
दुब्बि रहना नहीं यों उमत्ते।
साजि छ हजार असवार आये बली,
स्वामि के काम हित कहत फत्ते ॥२८॥
जाल जञ्जाल हयनाल गयनाल हू,
बान नीसान फहरान लागे।
सूर-मुख नूर सुर तूर जब पूरिया,
भेरि भभकार सुनि कूर भागे।
नदत दुंदुभि ढका बदत मारू हका,
चलत लागत धका कहत आगे।
समर की चाह उच्छाह वह बाहिनी,
सुनत ही सोर चहुँ ओर जागे ॥ २९ ॥

### दोहा

असद्खान असवार ह्वै जबहीं कियौ पयान ॥
फतेअली के चर तबै खबर करी यह आनि ॥ ३० ॥
तबही सिंह सुजान के हलकारा ने दौर ॥
फतेअली सौं रारि है जो कछु करनी गौर ॥ ३१ ॥

### छन्द पद्धरी

तबहीं सवार ह्वै कै सुजान। कलि भारथ कौं मनु भीम आन ॥
चहुँ ओर घोर वज्जे निसान। गज्जे जलद मानो भयान ॥
फहरान धुजा मनु अस भानु। कै तड़ित चहूँ दिस तरतरान ॥
सज्जे हयंद जे भरे सान। गज्जे सुभट्ट लै लै दवान ॥
चहुँवान चंड चंदेल गौर। कूरम बघेल राठौर मौर ॥
तोमर पँवार खीची खँगार। परिहार सुजादव कसि हथ्यार ॥

सेंगर सिसौदिया करि सिलाह । पौरच बड़गूजर सजे बाह ॥
जे भए बाहु तिहूँ लोक ईस । सज्जे सुजान सँग ते महीस ॥
जदुबंस जट्ट सज्जे सुभट्ट । सिनिसिनियवार गव्वर गरट्ट ॥
खूंटैल सुसोगरवार बीर । चाहर जग जाहर समरधीर ॥
सजि देस वार भौंगरे वाज । रुतवार और खिनवार साज ॥
तुहवारसु गोधेहगा चट्टि । भिनवार गूदरे कढ़िय बट्टि ॥
डागुर पछाँदरे धरि मरोर । बहु जट्ट ठट्ठ बट्टे सजोर ॥
सब आनि मान बदनेस-पूत । सजि सैन चलिय सरिता अभूत ॥
एक सहस बाजि साजै जुझौर । हैं आगैं गोकुल राम गौर ॥
सत सात तुरी कूरम प्रतापु । दाहिने रह्यौ पर दल उथापु ॥
ब्रजसिंह पाँच सत हय अमान । करि बाम बाहु रच्छक सुजान ॥
अरु रामचंद तोमर कुँवार । ठाकुर सुदास सेंगर उदार ॥
पुनि फतेसिंह बलवान बैस । वह समरसिंह चंदेल हैस ॥
है मेदसिंह चहुँवान वीर । सत पाँच तुरंगम ए गँभीर ॥
अपने अगार हरबल्लपिट्टि । ए श्रीसुजान सँग रहे दिट्ठि ॥
गजसिंह महामति समर धीर । सो तौ सुजान के रह्यौ तीर ॥
स्यौसिंह द्विजनु वरु उदैभान । राखे ब्रजेससुत सन्निधान ॥
हरिनाराइन लघु बैस चंड । सोहू सुजान आगैं प्रचंड ॥
अरु किते बीर चंदौल राखि । जिनके सुप्रीति परतीति साखि ॥
गति धीर धीर बह चली सैन । रजरंजित अंबर अक्क ऐन ॥
डंका निनद्द छाये अहद्द । रनसिंह तूर बेहद्द सद्द ॥
यह फतेअलीहू खबर पाइ । आयौ सहस्र द्वै हय बनाइ ॥
नौबत निसान बहुमान अग्ग । गज ऊपर बैठ्यौ धरि उमग्ग ॥
तिहि संग ठान ठानें पठान । बहु मुगल सेख सैयद्द अमान ॥
चंडौस खेत पग देत लेत । साजे सनाह आये सहेत ॥
इक ओर सहस हय राउ संग । ठाढ़ो बड़गूजर दुहूँ प्रसंग ॥

चाख्यौ निसान चाख्यौ दिसान । फहरावति आवति धरि धवान ॥
चढ़ि चार घटी असमान भान । सुत साबितखाँ अरु असद्खान ॥
दुहुँ दलन परस्पर भई दीठि । हथियार चमकि चहुँधा बसीठि ॥
छुट्टी जँजाल दुहुँघा कराल । बंदूकवान हयनाल जाल ॥
अरु लौहजंत्र जग्गे बिसाल । मनु गजतु घोर दुहुँ ओर काल॥३२॥

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक-भूमिहति बदनेसनंद सुजान हैं ।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै ।
दुहुँ सेन दरसन युद्ध परसन त्रितिय अंक सुनाइकै ॥३३॥

इति तृतीय अंक ॥ ३ ॥

---

## छप्पय

मिली परस्पर डीठि बीर पग्गिय रिस अग्गिय ।
जग्गिय जुद्ध बिरुद्ध, उद्ध पलचर खग खग्गिय ॥
भग्गिय सद्द शृगाल काल दै ताल उमग्गिय ।
लग्गिय प्रेत पिसाच पत्र जुग्गिनि लै नग्गिय ॥
रग्गिय सुरग्ग रंभादि गण रुद्र रहस आवज धमिय ।
सन्नाह करकि उच्छाह भट दुहुँ सिपाह जब झमझमिय॥१॥

## हरगीत छंद

झमझमत सिप्पर सेल साँगरु जिरह जेगा दीसियं ।
मनु सहित उडुगन नवग्रहनु मिलि जुद्ध रच्चि बरीसियं ॥
धमधमत धरनि धवानि धावत चंड हत्थ भुसंडियं ।
रनमंडियं भुवखंडियं हय छंडियं पर दंडिय ॥
सँ नँ मँ नँ नँ नँ नँ छुट्टियं सर जुट्टियं नहिं हुट्टियं ।
फँ मँ नँ नँ नँ नँ नँ तन फुट्टियं उर टुट्टियं भुव लुट्टियं ॥

खँ नँ नँ नँ नँ नँ नँ घुट्टियं लगि बान सौं असि मुट्टियं ।
धँ नँ नँ नँ नँ नँ नँ चुट्टियं भट मुट्टियं गर घुट्टियं ॥
दुहुँ पिलत आयुध एकरे फिरि एकरेसु अनेकरे ।
बद जे करे ते टे करे जे ने करे सु जुदे करे ॥
करके करे गहि टेकरे सुजुटेकरे इक एकरे ।
ले ले करे दे दे करे सुर एकरे सुअनेकरे ॥२॥

## कवित्त

अनी दोऊ बनी घनी लोह कोह सनी धनी
धर्मनु की मनी बान बीतत निषंग में ।
हाथी हटि जात साथी संगन थिरात औन
भारती में न्हात गंग कीरति तरंग में ।
भानु की सुता सी कवि सूदन निकारी तेग
बाहत सराहत कराहत न अंग में ।
बीर रस रंग में यौं आनँद उमंग में सो
पगु पगु प्राग होत जोधन कौं जंग में ॥३॥

## छंद लछमीधर

खानजादे इते मीरजादे दुऔ । खेत माहीं भिरे जुद्ध भारी हुवौ ॥
तेग तेगौ किते साँग साँगौ मिले । सेल सेलौ पटे हूल कीयें पिले ॥
बाँकडोरी फरस्सानि लै दाव कौं । खंगरौं पंजरौं मैं करैं घाव कौं ॥
बाढ़ दीनी कढ़े हाथ जमडाढ़ सौं । गाढ़ पारी भटौ बैर को चाढ़ सौं ॥
फूँकि दीनो किधूँ हूँकि बंदूक कौं । कूक कीनी किहूँ मारिकै मूँक कौं ॥
लूकि केते रहे धूकि केते गए । चूकि केते ढए सूकि केते चहे ॥
सीस कट्टे किहूँ रीस दे तेग कौं । साँग फैंकी बियै धारिकै बेग कौं ॥
बाहु छुट्टी किहूँ बाहि समसेर सौं । ढालही के ढका ढावहीं ढेर सौं ॥
एक हथ्थो बिना पाय मथ्थोकरै । लथ्थपथ्थौं किते बथ्थ बथ्थौं भरै ॥

बीर के सौ खुटे भीव भैसौं छुटे । कर्न नासा घुटे श्रौन धारौं जुटे ॥
इक्क मथ्थो बिना धाइ हत्थौं करै । बाज धक्काधुकें धम्म भूमी परै ॥
इक्क कंठौं गहे रत्त रत्तौं बहे । तेह तत्ते तनो लेह कत्ते कहे ॥
चंड चंडे करौं खंड खंडे हुवे । रुंड मुंडौं बिना बीर सेजौं सुवे ॥
तीर तीखे तने फोरि दीखैं परें । ब्यालछौना मनौ भीति तैं निक्करें॥
सेल सन्नाह कौं फोरि दोऊ बखा । चारि बाहौं लरैं रूप ऐसा लखा ॥
हक्क हक्का रटैं हथ्थ खग्गो खुटे । भक्क भक्का करें घाव बाहौं टुटे ॥
धूरि नैंना रुके तक्किसक्क नहीं । भूरि को हो भरे चोट चौटौं वही॥
खानजादे उतै साबिता कौं तने । मारु ऐसी करो वे नहीं सौंवने॥४॥

छप्पय

सैयद मुगल पठान सेखजादे खाँजादे ।
सूरज केहर बल्ल जट्ट तुपकन दे बादे ॥
असदखान करि हल्ल जंग दुहुँ ओर मचाइय ।
सनमुख ही अरि डट्टि सुभट बहु कट्टि हटाइय ॥
लखि चली फौज फत्तेअली तजि गयंद हय पर चढ़िय ।
चल बिचल सान नीसान मुख गहि क्रवान कर में कढ़िय ॥५॥
त्यौं लखि सिंह सुजान निकट गज सिंहहिं भाखी ।
असदखान करि जंग कछू यामैं नहि राखी ॥
और आपनी फौज रही इत उतही चाहति ।
जौं न गौर अब करौं तौब यह जाहि बृथा हति ॥
यों कहि हयंद हक्किय हरषि दंत चब्बि सेलहिं लहिय ।
पनपाल पिल्यौ जनपाल कौ ज्यौं गुपाल पथ्थहिं गहिय ॥६॥

छंद भुजंगी

गही एकही बार सब्बै बरच्छी । कही एकही एक है चोट अच्छी ॥
कही सो हयंदान सो दौर कच्छी । सही पौन के पूत हैं देत सच्छी ॥
मिले फौज दोऊ उभै मेघ मानो । तहाँ खानजादौ करै घोर बानौ ॥

परे एकहो बार दै दै दरेरे। हथों सैं हथी तोमरौ लै करेरे ॥
किते बीर रारे हलादै हँकारे। भका फौज फारे भुसुंडीन मारे ॥
किते सेल दैकैं तहीं तेग कढ्ढी। मनौं साँपिनी हथ्थ बेली सुचढ्ढी ॥
किहूँ दूरिही तें दए हूरि नेजा। बियै संग सौं फोरि डारे करेजा ॥
किहूँ दै कटारीन सौं थौंदि फारी। तहीं दूसरे आनिकैं सोस भारी ॥
किहूँ बान कौं कान लौं खैंचि मुट्ठी। किहूँ आनि दीनी करी मुट्ठि कुट्ठी ॥
उभै लै तुरी सौं तुरी जोर दीने। तिन्हैं खंजरौं के घने हथ्थ कीने ॥
हुवे खानजादे उतारे हकारे। तिन्हैं राजपूता जुटे जट्ट मारे ॥
खनंकै लगे तेग तनत्रान टुट्टैं। ठनंकै परै टोप पै बान हुट्टैं ॥
फनंकै जबै सेल सौं सेल जुट्टं। भनंकै कटैं कौंच सों भूमि छुट्टं ॥
भटक्कैं पटक्कैं कटक्कैं सुमथ्थं। सटक्कैं चलावैं अटक्कैं न तथ्थं ॥
लटक्कैं तही यौं हटक्कैं जु सथ्थं। चटक्कैं सुअस्तं परैं लथ्थपथ्थं ॥
बिना सीस के यौं भरे रोस उठ्ठं। फिरैं धावते यों मनो राहु रुठ्ठं ॥
बिना पग्ग के खग्गही लै फिरावैं। बिना हथ्थ के दंत ओठौ चबावैं ॥
महाधूरि की भूरि सौं होइ अंधे। किहूँ दौर के यौं कबंधे जु संधे ॥
परे सेल टूटे कहूँ खग्ग खूँटे। कहूँ बाजि स्यौ साज के जात बूटे* ॥
कहूँ खप्परें सूर सन्नाह कट्टे। कहूँ रुंड कहुँ मुंड भुजदंड पट्टे ॥
जहाँ मारु ही मारु यौं बीर बादे। तहाँ खानजादे लरैं होइ प्यादे ॥
महाधीर ब्रजबीर हू हुब्ब आछैं। रहे जंग जोरे मुरे नाहिं पाछैं ॥७॥

छप्पय

गौर सुगोकुल रामसिंह परताप कमठ कुल।
रामचंद्र कुल पांडु मेद चहुँवान खग्ग खुल ॥
सूरतराम प्रसिद्ध कुसल तन अरु पाखरिया।
पैमसिंह प्रथिसिंह अमर बाला सौगरिया ॥

---

* पाठांतर—कहूँ रुंड औ मुंड औ दंड पट्टे।

हरिनारायन सुकिसोर वै स्यामसिंह सब रोस मन।
औरौ उदग्ग कर खग्ग धरि अग्ग पग्ग धर धरिय रन ॥८॥

## छंद पद्धरी

धरि धरनि पाय धमकैत धीर। जहँ असदखान रन करिय बीर॥
सर सेल साँग समसेर चर्म। दुहुँ ओर सुभट किय घोर कर्म॥
इक देत सीस परि खग्ग घाइ। बिय लेत ढाल पर तिहिं बचाइ॥
इक साँग साँग संग्राम जुट्टि। बहु सेल सेल गए सीस फुट्टि॥
अरु किते बीर भालेनु भाल। जमडाढ़ काढ़ रन में कराल॥
इक चंड हथ्थ कोदंड संधि। तकि तीर देत तूनीर बंधि॥
इक खंजर पट्टे, अरु दुधार। बज्जंत परसपर, करि उधार॥
तन फसत अमिन तउ धसत जात। छुतजात जात तउ करत घात॥
चहुँ ओर भुसुंडिनु की अपार। अति अरध धुंधुवर संतसार॥
ज्यौं असदखान आवतु रिसान। त्यौं लगी आनि गोली भयान॥
वह लगत मान तजि प्रान सान। तजि या सरीर बैठ्यौ बिमान॥
लखि तासु बीर* अति भये कुद्ध। फरतैं अहुट्टिकर करिय जुद्ध॥
उड़ि मुंड परत कहुँ हय सु तुंड। कहुँ हथ्थ चरन कहुँ परिय डुंड॥
बिललात परे इक कटे गात। इक फटे सीस भू में घुमात॥
करि रुधिर गाढ़ बरषा सु कीच। खुदि मेद गूद फर भूमि बीच॥
कटि केस बेस मनु उई दूब। कर मुंड परे ज्यौं बेलि तूब॥
धर चरन सहत धर यौं लसंत। मनु भषत बाय अजगर असंत॥
कहुँ स्रौन छिच्छ अति लाल लाल। जनु इंदु-बधू करि रहिय जाल॥
बहु भूषन कंचन के दिपंत। जुगनू जमात चमकत छिपंत॥
कहुँ सेल परे उर फोरि पार। मनु नाग करत भू महिं बिहार॥
बद्दल उमद्द जैसें जलद्द। गोली बर बूँदें परि बिहद्द॥
कहुँ घाइ करत अति घोर सद्द। मनु दादुर बोलत हैं उमद्द॥

---

* पाठांतर—लखि ता सरीर।

कहुँ धीर धीर दुंदुभि धुकार। गज्जनि अपार बरसंतु सार॥
तड़ितान तूल तरिवार सोभ। सुरधनुष धनुष धुज*लहिय गोभ॥
पल-भषनहार पंच्छी अपार। गिलिगिलि बिहार करि डार डार॥
✓मारू मलार बहु होतु रागु। जुग्गिन रस भुग्गिनि गनिय भागु॥
वह भूमि भई भारी भयान। पावस निसि आँधी ज्यौं पयान॥
वे असदखान जूझे पछार। तिहँ सुभट करी इक† घरी मार॥९॥

## छप्पय

छत जु अंबु छिरकाइ कवच कटि फरस कराइय।
नर धर बर मसनंद सीस उस्सास धराइय॥
तहँ बैठिय नृप काल ताल दै जुग्गिन नच्चिय।
तेग झनक पंसूर घाइ मिरदंग सुरच्चिय॥
किलकार गीत सुनि मुदित ह्वै बीरसीस बकसीस किय।
करि अंगराग चरबी बसा अंतहार आभार दिय॥१०॥

## अरिल्ल

असदखान प्राननु करि बित्तिय। निरखि सेन स्वामी नहिं रित्तिय॥
⁄पट्टिय भूमि कट्टि नर बीरन। हट्टिय निट्ठि पिट्ठि धर धीरन॥
सस्त्रन डारि डारि कोउ बस्त्रन। काऊ देखि देत मुख में त्रन॥
सूरज के सूरन गहि लुट्टिय। तुपक तेग जज्जालन छुट्टिय॥
हय गय तोप रहकला लिन्निय। भूषन बसन असन गहि छिन्निय॥
चमू कोस चारिक लौं मारिय। असदखान कौ जीति निहारिय॥
फेरि फौज सूरज की आइय। श्रीहरिदेव जित्ति यह धाइय॥
सिंह सुजान फते यह पाइय। जित्त सेन सूरज ढिग आइय॥
तिनहिं देख सूरज उर भेटिय। जुद्ध क्रुद्ध श्रम सब कौ मेटिय॥११॥

---

* पाठांतर—लखि ता सरीर। † पाठान्तर—द्वै।

**कवित्त**

कोह कै असदखान लोह कै मचायौ रन
छोह सौं छुहायौ समुहायौ आयौ ता समैं।
कीनौ घमसान समसान फर मंडल मैं
घाइनु अघाइ अग्रवाए बीर वा समैं।
काटे तनत्रान निज प्रानन-पयान हेतु
सूरज ने भेज्यौ बैठ्यौ सूरज के पास मैं।
जस के उजास मैं अकास मैं प्रकासी तेग
गीरवान गनिका बिराजी आस पास में ॥१२॥

दोहा

असदखान कौं खाइ रन फतेअलीहि बचाइ।
हरनाकुस प्रहलाद की लीला करी बनाइ ॥१३॥
फतेअलो कौं कोल में तबही दियो पठाय।
आप आइ निज गढ़न में देखे पितु के पाय ॥१४॥
सदन सदन आनँद भये बदन बदन कें फूल।
सुत सुजान के बिरद गुन सुनत श्रवन सुखमूल ॥१५॥

कवित्त

कोप्यो मानौ काल सौ बदन महिपाल पूत
दीठि बाँकी करि कै निहारै ओर तू जा की।
तूही अवतार भुवभार के उतारन कौं
सार के सँभार नहिं ताब नर दूजा की।
सूदन समत्थ अरि रूदन कौं पत्थ सम
कीरति अकत्थ रत्नाकर लौं भूजा की।
दिल्ली दलदट्टन सुकट्टन मलेच्छ वंस
देस देस जाहर प्रचंड तेग सूजा की ॥१६॥

## छंद हरगीत

भुवपाल-पालक, भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
जाको चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइ कै।
रन असदखाँ कौ जीति सूरज अंक चौथौ आइ कै॥१७॥

इति चतुर्थ अंक॥ ४॥

सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज ब्रजेंद्र कुँवार सुजानसिंह हेतवे कवि सूदन विरचिते सुजानचरित्रे असदखान हतनो नाम प्रथम जंग समाप्तं॥

---

## द्वितीय जंग

### छप्पय

रुकम अचल बर भूमि सुभग सुरसरि जल बिलसत ।
त्रिबिध पवन जहँ गवन भवन दुति ससिकर मिलिसत ॥
सेनानी सुर देत ताल बेताल लगावत ।
गंग धरनि भषि भंग रंग सौं डँबरु बजावत ॥
गिरिसुता सहित आनंद सौं दै चुटकी थेइ थेइ कहत ।
गननाथ नचत तांडव रचत सुंड हलत बिघननु दहत ॥१॥

### दोहा

ठारै सै अरु चार मैं पावन सावन मास ॥
मद्दति करिय सुरेस की किय दखिनी दल नास ॥२॥
सुरपुर कौं जैसिंह गए बीते बहुत दिनान ॥
हुतौ भूप आमेर कौ ईसुरसिंह अजान ॥३॥
तासौं दक्खिन के दलनु रोपी आनि सुजंग ॥
माधौसिंहहि संग लै दियो देस मैं दंग ॥४॥

### सोरठा

देखि देस कौ चाल ईसुरसिंह भुवाल ने ॥
पत्र लिख्यौ तिहि काल बदनसिंह ब्रजपाल कौं ॥५॥

### दोहा

करी-काज जैसी करी गरुड़ध्वज महराज ॥
पत्र पुष्प के लेत ही त्यौं आयौ ब्रजराज ॥६॥
आयौ पत्र उताल सौं ताहि बाँचि ब्रजपस ॥
सुत सूरज सौं तब कह्यौ थाँभि ढुँढाहर देस ॥७॥

## छंद मरहठा

यह सुनिकै सूजा, पितु-पग पूजा, हरषानी सब देह ।
नृप दीनति भाखी, हम पर राखी, जग साखी जस लेह ॥
चित धरि पितु-बानी, सूरज मानी, कर जोरे करि लापु ।
आइसु तुव पाऊँ, नृपति छुड़ाऊँ, घर आऊँ हरि तापु ॥८॥

## दोहा

तबही सिंह सुजान कौं बिदा कियौ बदनेस ॥
सुभ नछत्र रवि ससि भले सोधि मुहूरत बेस ॥६॥

## छप्पय

दस हजार असवार सहस द्वै लै पदाति गन ।
रथ गयंद हरदन्द जिते चहियत अपने मन ॥
सहस दोइ बरछैत जे न कबहूँ मुख मोरत ।
जुद्ध जुरैं जम रूप दंति के दंतनु तोरत ॥
फहरैं निसान भुवभान दुति कटि कृपान आपुन कसिय ।
मंगल बिधान द्विज दान दै मंगल गज ऊपर लसिय ॥१०॥
बज्जे पटह प्रचंड तूर भरपूर गरज्जिय ।
भूरि भेरि भंकार दुवन भय भार लरज्जिय ॥
सुनि दुंदुभि धुंकार धराधर धर धर बुल्लिय ।
डिढन रहे डड्ढार बाघ बनचर बन डुल्लिय ॥
हिंसत हयंद गज्जत करी रज उमंडि अंबर मढ़िय ।
मानहुँ उदोत गिरि सिखर तें सूरज सौ सूरज चढ़िय ॥११॥
किते बिप्र कसि धनुष जंग रंगनु के जेता ।
किते रथनु असवार सुजस कीरति के देता ॥
किते पुरान प्रवीन किते जोतिस के जाता ।
किते बेदबिधि निपुन किते सुमृतन के ज्ञाता ॥

अप अपने कर्मन में निपुन जयति जयति बानी रढ़े ।
मघवान भान उपमान जब सेन साजि सूरज चढ़े ॥१२॥

## छंद संजुता

सँग चढ़े सिनसिनवार हैं। बहु जंग के जितवार हैं ॥
खल खंडने खूँटैल हैं। कबहूँ न ते मन भै लहैं ॥
चढ़ि चाइ चाहर टेर दै। दल दे सवार दरेर दै ॥
असवार होत अँबारिया। जिन किते बैरि बिदारिया ॥
डर डारि डागुर धाइयौ। बहु भैनवार सु आइयौ ॥
गुनवंत गूदर चड्ढियौ। सर सेल साँगन मड्ढियौ ॥
सजियौ प्रचंड सु भौंगरे। जितवार जंगनु के करे ॥
षिनवार गोधे बंक हैं। जिनि किये राजा रंक हैं ॥
सिरदार सौगरवार हैं। रन भूमि माँझ पहार हैं ॥
सरदार सोरह ते सजे। रन-काज ते रन लै गजे ॥
सजि नौहवार निसंक हैं। रुतवार रावत बंक हैं ॥
मुहि नाम याद इतेक हैं। बहु जाति जाट किते कहैं ॥
सबही सजे भट आगरे। सबही प्रतापु उजागरे ॥१३॥

## छंद पद्धरी

सज्जे प्रचंड कूरम कठोर। चहुँवान चढ़े उर धरि मरोर ॥
हाड़ा हुँकार हटके निधान। साजे भुजान कम्मान बान ॥
राठौर मौर चंदेल गौर। सजि सजि तुरंग चढ़ि करी दौर ॥
खीची पँवार खरहरे खूब। चढि चढ़ि चलाक हय दै हबूब ॥
जादौं जुझार जाहर जहान। सीसौदिया सु सज्जे अमान ॥
धंधेर धीर धाए धवान। धाकरे खीचरे कसि कृपान ॥
पौरच पुंडीर पखरैत चड्ढि। निकसे मजेज हिय हरषि बड्ढि ॥
बुंदेल बघेले बल अपार। उच्छलत तुरंगम ह्वै सवार ॥

सुरकी रु सुलंकी समर चाह। साजें हथ्थार बहु बेस नाह ॥
तोमर तुरीन चढ़िकै प्रचंड। तन तेज दिपत कर तेग चंड ॥
ऊमट अनेक अवनी निधान। अरबीन चढ़े आये अमान ॥
परिहार सार सम्हार हथ्थ। जे जंग रंग जानत समथ्थ ॥
जसवंत जु साँवत साजबाज। चड्ढे कि क्यान करि करि गराज ॥
बलबंत बैस सैंधव सपट्टि। आये चहुँ ओरन तें झपट्टि ॥
धाकरे भाभरे भरत भीर। बड़गूजर धाए बल गँभीर ॥
अरु सिकरवार करि करि सिलाह। ससि-भान बंस सब धरनिनाह ॥
गूजर गरूर गाढ़े गरज्जि। तीखे तुरंग चढ़ि चले सज्जि ॥
बेपीर बीर चल्ले अहीर। मै नाम लूक मदमंत धीर ॥१४॥

## छंद त्रिभंगी

केते मुगलाने सेख पठाने सैयद बाने बाँधि चढ़े।
काइथ खतरैटे लोह लपेटे देत चपेटे चाइ बढ़े ॥
पाइक जे लाइक परदल घाइक लै धनु साइक लोह मढ़े।
कोलाहल बड्डिय रवि रज-मड्डिय खल मन डड्डिय देखि कढ़े॥१५॥

## छंद छप्पय

पूरब परिय पुकार भूमि दिगपालन छंडिय।
पच्छिम तच्छिन गच्छि जमन ग्रह खलभल मंडिय ॥
उत्तर सकल उदास त्रास तें ग्रास न भावै।
दच्छिन पर्यौ भगान कहत सूरज कहुँ आवै ॥
आतंक मानि दब्बे दुवन देव दिगीसनु सुख बढ्यौ।
ब्रज चक्रवर्त्ति बदनेस-सुत श्रीसुजान जब्बहिं चढ्यौ ॥१६॥

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं ॥

ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइ कै।
वह पत्र-आवन दल-सजावन प्रथम अंक सुनाइ कै ॥१७॥

इति प्रथम अंक ॥ १ ॥

—:०:—

## दोहा

प्रथम कूँच कुंभेर तें करिके सिंह सुजान ॥
खान पान सेनहिं दियौ बहुख्यौ कियौ पयान ॥ १ ॥

## दुपई

तीन कूँच अरु द्वै मुकाम में जाइ सु जैपुर लीनौ ॥
जाने खबर करी ता नर कों नरपति बहु धन दीनौ ॥ २ ॥

## दोहा

प्रथम ईसुरीसिंह ने मंत्री दियौ पठाइ ॥
फेरि आपुही आइयौ सूरज पै चित चाइ ॥ ३ ॥
जथा जोग सनमान करि कीनो मंत्र बिचार ॥
ईसुर कही कि कुँवर जी हूजै आप अगार ॥ ४ ॥
ऐसे कहि कूरम नृपति गए आपने गेह ॥
आगे कौं सूरज तबै कियौ पयान सनेह ॥ ५ ॥
जलज अचल डेरा दए सिंह सुजान उमंडि ॥
निर्भै ह्वै कूरम नृपति पाछैं चल्यौ घुमंडि ॥ ६ ॥

## छंद भुजंगी

घुमंडे घने दंति घंटानवारे। उमंडे मनो सद्द ते मेघ कारे ॥
हयंदा परिंदानु के बेग लीने। खगाधीस मानौ घने रूप कीने ॥
सुतरनाल घुड़नाल हथनालवारे। मनो काल के बालकेई पधारे ॥
उदंडी भुसंडी लियैं हत्थ केते। चलें चाल उत्ताल आतंक देते ॥
घुरें घोर नीसान ढक्का ढमक्कैं। धुरैं दौरि दीने सुने सत्रु सक्कैं ॥

पताका किती है न ताका प्रमानैं । लताकित्ति की के पताके समानैं ॥
किते बान कम्मान अम्मान बाँधे । किते तेग तेगा धरें ढाल काँधे ॥
किते बीर तनत्रान कौ अंग साजै । किते ओपची ह्वै धरें ओप गाजै ॥
किते बान पट्टे फरस्सा फिरावैं । किते दाब डोरी सुदावैं बतावैं ॥
बढ़्यौ सद्द नर नद्द बेहद्द भारी । सजी चारिहू अंग की सेन रारी ॥
चढ़्यौ कोप आँमावती भूप ऐसे । कढ़्यौ दैत्य के नास जंभारि जैसे॥७॥

## दोहा

आगे सिंह सुजान दलु पाछे कूरम भूप ।
जुद्ध काज उद्धत भए धरे बीररस रूप ॥ ८ ॥
उते बिकल दल दक्खिनी सनमुख पहुँचे आय ।
जिनके त्रास न सोवहीं दिल्लीपति उमराय ॥ ९ ॥
कहि पठयो सूरज तबै कूरम सौं ता बार ।
हम इनको देखैं नृपति आप रहो पुठवार ॥ १० ॥
फेरि कह्यौ निज सेनपति और सूर जे संग ।
सावधान सनमुख लरौ ज्यौं नहिं बिगरै जंग ॥ ११ ॥
संभू अरु सुखराम कों आगे कियौ सुजान ।
जंग भार सब सौंपि कै जुद्ध हेत बलवान ॥ १२ ॥

## छप्पय

कुद्ध जुद्ध के काज दुहूँ भट भए सनम्मुख ।
सूरन के मुख नूर कायरनु सूखि गए मुख ॥
धरि धरि मुच्छनु हथ्थ सेलु साँगन पटतारत ।
लोह जंत्र जमडाढ़ बान किरवान सँभारत ॥
धरि अग्ग पग्ग फर मग्ग में खग्ग कढ़त जुग्गिन जगिय ।
दुहुँ स्वामि-काम संग्राम में बीर बीररस में पगिय ॥ १३ ॥

## छंद नाराच

दिसानि भूरि पूरि कै निसान घोर गज्जियौ ।
कुसान के समान छोड़ि थान थान भाज्जियौ ॥
किलक्कि कूदि कालिका उताल चाल आइयौ ।
कराल चंडमुंड के पिशाच पूत धाइयौ ॥
शिवा शृगाल गीध जाल कंक काक कूकहीं ।
करैं कलोल कोचरी उलूक उद्ध हूकहीं ॥
चलै कवान बान आसमान भू गरज्जियौ ।
धवान दै दवान की कृपान हीय सज्जियौ ॥
कितेक सेल साँग लै हयंद हक्कि अग्गईं ।
किनेक लंब ग्रीव चड्ढि लै जजाल दग्गईं ॥
* * * * * *
किते पदाति खग्ग घात लेत खेत पग्गईं ॥
कितेक लागि धक्कईं नहीं सम्हार सक्कईं ।
कितेक छाँड़ि सक्कईं सुसामुहे सरक्कईं ॥
कितेक धारि धारिकै अरीन ओर तक्कईं ।
कितेक ओट पाइकै उठाइ मुंड झक्कईं ॥
कितेक धीर बीर तीर-भीर-माँझ कड्ढिकै ।
लगाय चोट आपनी उछाह हीय बड्ढकै ॥
घरीक माँझ घोर सोर धूरि पूरि छाइयौ ।
महीस दीठि ना परै दुहूँ सरीस धाइयौ ॥१४॥

## दोहा

सहजराम सुखराम अरु सभू गोकुलराम ।
औरौ बीरन संग लै कियो घोर संग्राम ॥१५॥

## छंद त्रिभंगी

उत्थौं मरहट्टे भाले पट्टे लै लै कट्टे सरपट्टे ।
इत्थौं ब्रजवासी जे बलरासी हुवे हुलासी झरपट्टे ॥

हय सौं हय जुट्टे नेकु न छुट्टे तेगौं कुट्टे सिर फुट्टे ।
छोहौं भरि छुट्टे कैसौं खुट्टे झुट्टक झुट्टे भुव लुट्टे ॥१६॥
भुव लुट्टे उट्ठे जम ज्यौं रुट्ठे बाँधे मुट्ठे रोस भरैं ।
कंठौं रज घुट्टे लोचन खुट्टे मानौं झुट्टे भेष धरैं ॥
तीरों के चुट्टे अगनित गुट्टे लै लै सुट्टे रन बिफरैं ।
तारे जिमि टुट्टे साथ बिछुट्टे केई छुट्टे फिरि न फिरैं ॥१७॥
फिर फेरि झटक्कैं पकरि पटक्कैं साँग सटक्कैं मारु कहैं ।
इक इक्क हटक्कैं देन दड़क्कैं सेल तटक्कैं श्रौन बहैं ॥
बिन हत्थ भटक्कैं भरत बटक्कै मास गटक्कैं देखि रहैं ।
इक जात पटक्कै खग्ग खटक्कैं सीस कटक्कै दौर गहैं ॥१८॥
गहि दौरि दबावैं टेरि बुलावैं जो गहि पावैं समुहावैं ।
जमडाढ़े काढ़े रन में ठाढ़े गहि गहि गाढ़े करि घावैं ॥
बिनु पाइ सरक्कैं उठन भरक्कैं देत करक्कैं सरतावैं ।
सिर बिनु उठि धावैं षग्ग भिरावैं सनमुष आवैं भुव पावैं॥१९॥
पावैं नहिं जावैं भुजनि भुजावै मुंड भिरावैं सम्हरावैं ।
खंजरनु चलावै दंत चखावैं भौंह चढ़ावैं धर धावै ॥
ढालनु ढलकावैं ढकनु ढकावै डावत आवै भटभारे ।
इक श्रौन सपेटे धूरि धुरैटे काल चपेटे भूपारे ॥२०॥

छप्पय

धरि इक उद्धत जुद्ध चाल दखिनी दल खाइय ।
संभू अरु सुखराम जंग बहु रग मचाइय ॥
रहे खेत सत एक चेत बिनु मरहठ भज्जिय ।
निजु द्रगि लखि मल्लार हार अपने हिय लज्जिय ॥
बज्जत निसान बुल्लत फते श्री सुजान धन बरषियौ ।
यह खबर पाइ सूरज बली सहित देस कुल हरषियौ ॥२१॥

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
यह समर मोती डूँगरी कौ दुतिय अंक गनाइ कै॥२२॥

इति द्वितीय अंक॥ २॥

—:※:—

## दोहा

उसरि राउ मल्लार ने डेरा किए पछार॥
पाछेंही कूरम चल्यौ सूरज मल्ल अगार॥ १॥
बगरू महलनि पहुँच कै नरपति डेरा दीन॥
चहूँ ओर अपनी चमू सावधान करि लीन॥ २॥
सनमुख जंग न जोरहीं बरगी दिन दिन साँझ॥
चहूँ ओर चमकत फिरैं ज्यौं बिज्जुरी नभ माँझ॥ ३॥
एक दिना कूरम नृपति सूरज मल्ल कुँवार॥
मंत्र कियौ दोऊन मिलि लीजे धाइ मलार॥ ४॥
यहै मंत्र करि कटक कौं सावधान कहि दीन॥
जैसेहीं डेरा परत तैसे चलौ प्रवीन॥ ५॥

## छंद तोमर

जिहि भाँति मंत्र, डिढ़ाइ। तिहिं भाँति सैन, चढ़ाइ॥
इसुरेस ह्वै असवार। करि दुंदुभी धुधकार॥
जिमि है सुजान सपूत। करि निजु बलै मजबूत॥
धरिकें भयौ असवार। जितमें हुतौ मल्लार॥
बजियौ अनेक निसान। गजियौ सुभू असमान॥
फहरैं धुजा अति पीत। हरदेव की परतीत॥

गजगज्जही गिरि रूप। हय हैं जलद सरूप ॥
बलकैं सुऊँट कतार। तिनपै अनेक सवार ॥
ललकैं सुपाइक सथ्थ। पलकैं न राखत मथ्थ ॥
ढलकैं अनंत सुढाल। सलकैं सुसैल बिसाल ॥
झलकैं जिरह औ टोप। दलकैं सुबाढ़त ओप ॥
गलकैं सुसेली स्याम। बलकैं सुबचन उदाम ॥
छलकैं गयंदनु मद्द। मलकैं सरीर अहद्द ॥
हलकैं धरत धर पाइ। थलकैं अवतु जलु आइ ॥
नलकैं घुरत घन घंट। जलकैं करत उज्झंट ॥
धरिकैं सरीरनु जोस। भरिकैं सुनैननु रोस ॥
उमड़े सुभट्टनु ठट्ट। जितमें हुते मरहट्ट ॥
मिलियौ परस्पर दीठि। हथियार चमकि बसीठि ॥६॥

छंद छप्पय

बढ़ि बढ़ि निकसे बीर तीर तुपकनि कौं संधैं।
असि द्वै द्वै तूनीर तुंग तोमरि धरि कंधैं ॥
अनगन गोमुख तबल सबल बज्जत गल गज्जत।
तज्जत भीति अभीति तुरंगनु बेगहि सज्जत ॥
प्रभु हेत हेत जय देत पग नेत नेत बानी कहत।
अब लेत लेत अब लेत अब खेत खूँदि सम्मुख चहत ॥७॥

छंद मुक्तादाम

कढ़े मरहट्ट सुभट्ट सजोर। चढ़े हय चंचल देत मरोर ॥
बढ़े हय बाज दराजहि हथ्थ। रढ़ैं मुख मारहि मार समथ्थ ॥
उढ़ै मनु रूप लसैं इह रूप। गढ़े जिन कैयक है महिभूप ॥
मढ़े बहु कंचन भूषन अंग। जढ़े मनु पाहन पावक संग ॥
पढ़े रन रंग अभंग सुधीर। ठढ़े रन भूमि जहाँ जदुबीर ॥
भए मुखमेल दुहूँ दल सद्द। तए अति तेह करैं बहु नद्द ॥

धए धरि तेग सुधौट उदंड। छए रसबीर चलाइय चंड॥
दए इक इक्कनु कैं उर बान। गए छिन में तिनके कढ़ि प्रान॥
लए जब कोसनु तें कर खग्ग। हए हयै हंकि बियें फर मग्ग॥
खए लगि बाँह उसारि उसारि। भये इत उत्त जबै रिस धारि॥
ठए न ठए पठए जमलोक। ढए हय पिट्ठनु तैं करि ओक॥
नए न नए सनए मुखरत्त। बए मनु मुंड परे झलकत्त॥
रए रल ए सुभ ए घल मेल। झनंकत साँग करें धकपेल॥
खनंकत सेल बखत्तर तोर। छुनंकत तेग जँजीरनु मोर॥
टनंकत टोपनु पैं लगि बान। सनकत सिप्पर फूल दिसान॥
रनंकत हैं टुटिकें गरमाल। हनंकत हैं कटि सीस कराल॥
फनंकत साइक चारिहु ओर। भनंकत गोलिनु की घनघोर॥
ढनंकत मूठिनु लगि करबाल। टनंकत ढाय परें छुटि नाल॥
तन कितहूँ कितहूँ किय मुंड। सनंमुख मारु भए तउ रुंड॥
कटे कटि तें इक व्है दुव बट्ट। रटैं इक मारुहि मारु सुभट्ट॥
फटे इक सीस लगें असि घोर। हटे हरदूत लखैं मुख मोर॥
पटे पुहमी पर व्है बिनु मुंड। छुटे मनु बृच्छ परे फसि डुंड॥
जटे इक तीरन सौं बिललात। बटे हय टापनु सौं दबि गात॥
लटे तन जात किते छुत जात। डटे इक घाइ अघाइ घुमात॥
घटे नहिं कोह भरे उर छोह। नटे, ससहार धरे मन मोह॥
नचे करतालनु दै हरताल। मचे सुत भूतल के जहँ ख्याल॥
बचे सिर के करि कें कटताल। रचे जिनि तंडव नाच कराल॥
सचे सुर लेत सुमारुव राग। पचे करिबीन बजें कर खाग॥
भभक्कत घाइ हबक्कत साँग। घुमात खरे मनु खाइय भाँग॥
धमक्कत धिंग धरा पर आइ। भभक्कत श्रोनित कीचहि पाइ॥
उमंडि कितेकनु चोट चलाइ। भुसुंडिनु मारि दए अहुटाइ॥
भज्यौ दक्खिनी दलु यौं भहरात। गज्यौ सुनि इंद्र मराल सुजात॥८॥

## छंद छप्पय

श्रोनित सलिल सिवार केस बहु बेस परे जहँ।
मेद गूद करि पंक सूकि पंकज सम सिर तहँ॥
दादुर बोलत घाइ बेलि मुरझाइ परै कर।
मलिन मीन तरफरत धरत बहु रूप तहाँ धर॥
बहु गीध काग खग बसत जहँ लसत नहीं काहू घरिय।
सूरज-प्रताप के ताप भुव छीन सरोवर सम करिय॥९॥
बिजय पाइ दुंदुभि बजाइ आए सुजान भट।
बहुत भाइ सनमान पाइ बैठे सुजान तट॥
कहत जुद्ध बिरतंत अंत अरि कौ करि आइय।
श्रीहरिदेव प्रतापु आपु जस कीर्ति बढ़ाइय॥
यह खबर पाइ जयसाह सुत भर उछाह धनि धनि कहिय।
बदनेस-नंद व्रजचंद पर खल खंडन वर ते लहिय॥१०॥

## सोरठा

ऐसे कैऊ जुद्ध जीते सिंह सुजान ने।
तब मलार है सुद्ध कूरम सौं एकौ कियौ॥११॥

## दोहा

दोइ परगने लै दिए ईसुर सौं मल्लार।
माधव कौं समझाइ कै पठै दियौ ननसार॥१२॥
पनु जीत्यौ मल्लार कौ मनु जीत्यौ इसुरेस।
रन जीत्यो सूरज बली थाँभि ढुँढाहर देस॥१३॥

## छंद पवंगा

तब कूरम चित चाय सुजान बुलाइकै।
हय गय मुक्ताहार बसन पहराइकै॥

कियौ अधिक सनमान बिदा करि देस कौं।
कहियौ यह संदेस नृपति बदनेस कौं ॥१४॥

## सोरठा

ज्यौं जैसाहि नरेस करत कृपा तुव देस पैं।
त्यौं ब्रजेस बदनेस करत रहौ हम पर कृपा ॥१५॥
फिरि आए निजु गेह सहित नेह सब दह सौं।
जैसे भावतु मेह बहुत काल सूखा भएँ ॥१६॥

## दोहा

पग भेटे बदनेस के सूरज मन बच काइ।
तब उठाइ सिर सूँघिकै लीनो अंक लगाइ ॥१७॥
तब सूरज कर जोरिकै कहे जुद्ध बिरतंत।
महाराज परिताप तें करि आए अरि-अंत ॥१८॥
सुनि सँदेस बदनेस ने कियौ बहुत सनमान।
जथाजोग सब सूर कौं कीनो मान बखान ॥१९॥

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कळूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
यह जीति बगरू महल पाइय त्रितिय अंक सुभाइकै ॥२०॥

इति तृतीय अंक ॥३॥

सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज ब्रजेंद्र बदनेस-कुमार श्री
सुजानसिंह हेतवे कवि सूदन विरचिते सुजान
चरित्र बगरू महल डूँगरी जुद्ध विजय
वर्णन नाम द्वितीय जंग
संपूर्ण ॥

—:०:—

## तृतीय जंग

### कवित्त

बाप बिष चाखै भैया खट मुख राखै देखि
आसन मैं राखै बसबास जाकौ अचलै।
भूतनु के छैया आसपास के रखैया
और काली के नथैया हू के ध्यानहू ते न चलै।
बैल बाघ बाहन बसन कौं गयंद-खाल
भाँग कौं धतूरे कौं पसार देतु अचलै।
घर को हवालु यहै संकर की बाल कहै
लाज रहै कैसे पूत मोदक कौं मचलै॥ १॥

### दोहा

ठारौ सौ रु पचोनरा पूस मास सित पच्छ।
श्रीसुजान बिक्रम कियौ ताहि सुनौ नर दच्छ॥ २॥

### छंद अरिल्ल

बहुत दिना बीते निज देसहिं। तबहीं दूत कह्यौ संदेसहिं॥
दिल्लीपति बकसी इहि देसहिं। आवत तुम सौं करन कलेसहिं॥ ३
सहस तीस असवार संग गनि। पैदल पील फील बहुतै भनि॥
जोरैं तुरक सहस दस बीसहिं। आवत तुमसौं करि मन रीसहिं॥
अलीकुली रुस्तमखाँ संगहि। हकीमखाँ कुबरा हित जंगहि॥
फतेअली औरौ बहु मीरन। राजा राउ लयैं संग धीरन॥
इंद्र नगर दच्छिन दिस कढ्ढिय। निपट गरूर पूर हिय चढ्ढिय॥
कछू दिननु आवै मेवातहिं। करिहै तहाँ अधिक उतपातहिं॥
यातें बेगि करौ कछु घातहि। जातें वाकौ होइ निपातहिं॥

अब जौ नीक होइ सो कीजहि । याहि मारि जग में जस लीजहि ॥
यौं कहि दूत नाइ निज सीसहिं । सूरज आइ कह्यौ ब्रज-ईसहिं ॥
तुरक सहस जोरें दस बीसहिं । दिल्ली तें निकस्यौ धरि रीसहिं ॥
हम सौं जुद्ध करन मन राखतु । महाराज मैं हूँ अभिलाषतु ॥
आइसु ईस तुम्हारौ पाइय । तौ याकौं कछु हाथ लगाइय ॥
तब ब्रजेस सुनिकैं यह भाषिय । तात मतौ मो मन यह राखिय॥३॥

## सोरठा

दिल्ली तें कढ़ि दूरि जब आवै मैदान भुव ।
एक झपट करि सूर याकौ दूरि गरूर करि ॥ ४ ॥

## दोहा

मतौ मानि बदनेस कौ सूरज उदित प्रतापु ।
आइसु लै असवार ह्वै करि हरदेव सुजापु ॥ ५ ॥

## छंद पद्धरी

जब चढ्यौ सिंह सूरज अमान । बज्जे निसान घन के समान ॥
पीरे निसान सोभित दिसान । अरि गहन दहन मानहुँ कृसान ॥
सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ । जिनकै जँजीर झनझनत पाइ ॥
घनघनत घंट अरु घुघुर-माल । भनभनत भँवर मद पर रसाल ॥
छुनछुनत तुरंगम तरहदार । फनफनत बदन उच्छलत बार ॥
सनसनत सिमिटि जब करत दौर । गुन गिनत सु तिनके कवितु मौर ॥
सोहैं अनेक गज गाह वंत । चमकंत चारु कलगी अनंत ॥
झलकंत जिरह बखतर नवीन । तमकंत वीर रस भट प्रवीन ॥
टमकंत तबल टामक बिहद्द । ठमकंत टाप बिनु भुव गरद्द ॥
ढमकंत ढोल ढफला अगार । धमकत धरनि धौंसा धुँकार ॥
खमकंत बीर करि करि सुघोष । लमकंत तुरंगम पाइ पोष ॥
इमकंत चले पाइक अनेक । इक जंग रंग जानत बिबेक ॥

कोदंड चंड कर कटि निषंग। इक चंड भुसंडी लै तुफंग॥
इक सेल साँग समसेर चर्म। रनभूमि भेद जानत सुपर्म॥
सब चढ़े बड़े उच्छाह पूरि। छपि गयौ गगन रवि उड़िय धूरि॥
चतुरंग चमू सत रंग रूप। सजि चढ़्यौ सूर सूरज अनूप॥६॥

दोहा

कूँच कियौ डेरा दियौ नौगाएँ मेवात॥
तरन तनेने तेह सौं जुद्ध हेत ललचात॥७॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानैं दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
सजि सैन सूरज चढ्ढियौ कहि प्रथम अंक सुनाइकै॥८॥

इति प्रथम अंक॥ १॥

---

छंद पवंगा

सूरज चारि उपाय प्रवीन सुचित्तई।
साम दाम अरु भेद दंड धरि नित्तई॥
खल के मन की लैन बात करि सील की।
बिदा करी समुझाइ प्रवीन वकील की॥ १॥
देस काल बल ज्ञान लोभ करि हीन है।
स्वामि-काम मैं लीन सुसील कुलीन है॥
बहु बिधि बरने बानि हिये नहिं भै रहै।
पर-उर करै उदेग दूत ता सौं लहै॥ २॥
खान सलाबत पास वकील सु जाइकै।
करी सलाम कवाद अदाब बजाइकै॥

नैननु लई सलाम सलाबतखान ने।
कह्यौ कहा कहि बेग सुतोहि सुजान ने ॥ ३ ॥

## दोहा

कुँवर बहादुर ने प्रथम तुम कौं कह्यौ सलाम।
फेरि कही कि नवाब इत आए हैं किहि काम ॥ ४ ॥
करत चाकरी साह की हम पायो यह देस।
ताहि उजारत आप क्यौं तुमकों कह्यौ सँदेस ॥ ५ ॥
जो कछु तुम्हें दिलीस नैं कह्यौ ताहि कहि देउ।
ता माफिक हम सौं अबै आप चाकरी लेउ ॥ ६ ॥

## छंद निसानी

इसी गल्ल धरि कन्न में बकसी मुसक्याना।
हमनूँ बूझत हौ तुसी क्यौं किया पयाना ॥
असी आवने भेद नू अब लौं नहिं जाना।
साह अहम्मद ने मुझे अपना करि माना ॥
तखत आगरा ग्वालियर हिंडौंन बयाना।
होडिल पलवल अलवरौ मेवात सध्याना ॥
वार पार मथुरा तलक हूवा फरमाना।
बकसी की जागीर दै बकसी मैं ठाना ॥
इनमें ते जे तुझ तरै तहँ करि मो थाना।
दो करोर दै साहि नूँ सँग होहि सयाना ॥
होर कह्या है साहि ने सो भी सुन जाना।
असदखान सरकार दा चाकर क्यों भाना ॥
तैं अपने मन मैं गना बूड़ा तुरकाना।
कै एक गल्ल कबूल करिकै हो मरदाना ॥
जब यौं कह्यो नवाब ने सुन दूत अमाना।
मामल तिनहिं न होइसी दिल अंदर जाना ॥

तिसी घड़ी नव्वाब सें कर जोरि बखाना।
जेहा जिसनूँ लोड़िये तेहा फुरमाना॥
यह बंदा है साहि दा दरपुस्त पुराना।
दोनो तखतौं दै बिचौं तद ही ठहराना॥
जिसका नाउ सुजान है देसी नहिं आना।
जमी न अंगुल छोड़सी यह उस दा बाना॥
मैंनू रुखसद दीजिए नाहक बतराना।
हुए बंदा दुहुँ ओर दा बंदगी सुजाना॥
ये जुवाब नव्वाब सुनि दिल माहि रिसाना।
तद वकील सैं यौं कह्या करि जाहि पयाना॥
उसी बख्त सिर नाइकें सो हुवा रवाना।
आगे सिंह सुजान कौं भेजा परवाना॥
अवल आपनी बंदगी बकसी सतराना।
जसी कही तेई लिखी नहिं नेकु भुलाना॥
होर लिख्या इस तुरक नूँ तेहा अधिकाना।
जंग अखाड़े में इसे कीजै सनमाना* ॥ ७॥

## सोरठा

श्री ब्रजेस कौ नंद कागद बाँचि वकील को।
अंग अंग आनंद हरखि हिये हरदेव कहि ॥ ८॥
सूरज कियौ बिचार सब डेरा छाँई रहें।
चंचल हय असवार पाइक चलो चलाक सें॥ ९॥

## छंद तोटक

रथ ऊँट गयंद मुकाम कियं। तिन संग पदातिनि राखि दियं॥
छ हजार सवार तयार लियं। तिहिं संग सुजान हरष्षि हियं॥

---

* पाठांतर—फलकाना

रवि ऊगत बार पयान कियं। हय के असवारन और बियं ॥
कर लै किरवान निसान दियं। जिहि के सम सूर न और बियं ॥
तिहँ बार तुरंगम साजि घनं। असवार भयौ बदनेस तनं ॥
रन जीतन कौं मन राखि पनं। करि दुंदुभि दीह अवाज घनं ॥
जब कूँच कियौ रस बीर सनं। तब पीत पताकन सोभ बनं ॥
जनु चंचल दामिनि सोभ घनं। हय टापन सौं कहुँ होत ठनं ॥
वह सेनु दरेरनु देति चली। मनु सावन की सरिता उझली ॥
अहि सैल मनो मुख काढ़ि रहे। अरु ढालनु कच्छप रूप गहे ॥
जल जोरि तुरंगम देखि रहे। जनु मीन जहाँ धुज देह लहे ॥
द्रुम ज्यौं द्रुम ढाहति आवत है। इम सैन नदी सु कहावत है ॥
दस कोस सुभूमहिं पीठि दियं। तिहिं थान मुकाम सुजान लियं ॥
निस एक बसे परभात भयौ। तब आइसु सिंह सुजान दियौ ॥१०॥

## सोरठा

है नवाब दस कोस कोस पाँच औरौ चलैं।
दिखा दिखी कैं जोस रोस भरे लरिहैं भले ॥ ११ ॥
यौं कहि सिंह सुजान पाँच कोस कौ कूँच करि।
चौकी करी अमान सहस सहस असवार की ॥ १२ ॥

## छंद पद्धरी

सरदार सुगोकुलराम गौर। जिहिं संग सहस हय करत दौर ॥
तसु अनुज सु सूरतिराम संग। सत चार तुरीवर लेत जंग ॥
सत पाँच तुरी कूरम प्रताप। सँग लियैं जुद्ध पर-बल उथाप ॥
अरु एक सहस बलिराम बीर। हय हंकि हँकारत समर धीर ॥
सत चारि बाजि स्यौंसिंह धीर। इक सथ्थ हथ्थ बल करि गँभीर ॥
एक सहस बाजि कीने सनाह। वह धीर बीर महमद पनाह ॥
सत वेद किश्यानतु सहित जोर। रन भूमिसिंह राना कठोर ॥

सत एक हयंदनु लै उदग्ग । हरिनारायन जिहिं प्रबल खग्ग ॥
इहि भाँति और बलवान जोध । सब सत्रु हेत हिय धरत क्रोध ॥
इनके सुगोल किय चारि चंड । खलखंडन तिनकौ बल अखंड ॥
इनतैं जु अरध निजु राखि सथ्थ । जे हथ्थिनिह्रू सौं करत हथ्थ ॥
इहि भाँति पाँच चौकी बनाइ । यह कह्यौ बचन तिन सौं सुनाइ ॥
तुम जाउ चहूँ दिस तें मरद्द । परबलहि घेरि दीजै दरद्द ॥
जहँ खान पान पावै न जान । अरु जुद्ध बार सब सन्निधान॥१३॥

दोहा

ऐसें बचन सुजान के सबै सुभट उर धारि ।
बकसी की तकसी करन चले सेल पटतारि ॥ १४ ॥

छंद भुजंगप्रयात

चहूँ ओर धाए धरा धूमधारें । धमंकें धरें पाइ दै दै हँकारें ॥
सबै ओर तें धाइ कै धूम पारी । सुनैं सैद की फौज ने भीति धारी ॥
हुने फौज तें बाहरे ते डराने ।(कुल-स्त्री लगै ज्यौं पराए पियाने ॥)
किहूँ धाइकै धाइकै पील लीने । किहूँ फील पाठे पटकि* हाथ कीने ॥
किहूँ छैल ने बैल लै गैल चाही । किहूँ लै तुरी कौं घनी सैन गाही ॥
कहूँ फील फैले मनो हैं घटा ए । भुसुंडीन सों मारि काहू हटाए ॥
भए सैद के लोग सब्बै इकट्ठे । मनौं सिंह की संक सों रोझपट्ठे ॥
तहीं सोर बाढ्यो कहैं जट्ट आए । करौ सावधानी रहौ ठौर ठाए ॥
सबै सैद की फौज यौं खलभलानी । लगैं आगि के ज्यौं उठै औटि पानी ॥
कही दौरि काहू सुनी आप बकसी । लगी एकही बारही मे धमक सी ॥
घरी एक में चेत ह्वै बीर बोल्यौ । घणी बार लौं आपनो सीस डोल्यौ ॥
करौ बे करौ बेगही सावधानी । बुलाओ नकीबो नहीं बात मानी ॥ १५ ॥

तब नकीब सौं यौं कियौ हुकुम सलाबतखान ।
तोप बान अरु रहकला चौकस करौ दबान ॥१६॥

---

* पाठांतर—पने ।

कटक बीच में राखिकै इनसे यह कहि देउ।
आप आपने मोरचा सब चौकस करि लेउ ॥१७॥
लावदार रक्खो किएँ सबै अराबौ एहु।
ज्यौं हरीफ आवै नजरि तबै धड़ाधड़ देहु ॥१८॥
तबही सूरज के सुभट निकट मचायो दुंद।
निकसि सकै नहिं एकहू कस्यौ कटक मसमुंद ॥१९॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान है ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
बकसीहि बेढ़न सुभटसूरज दुतिय अंकहि धाइकै॥ २० ॥

इति द्वितीय अंक ॥ २ ॥

---

छप्पय

छुट्टन लगे उदंड चंड कोदंड भुसंडी।
जबर जंग घनघोर मारु गोलनु की मंडी ॥
आस पास ब्रज बीर भीर बहु मीरनु पारतु।
निकसि सकै नहिं कोई रैनि दिन जुद्ध बिचारतु ॥
इह भाँति कछुक बासर गएँ तब बकसी रोसहिं भर्‌यौ।
सरदार मद्धि दरबार जे तिनहिं आपु आइसु कर्‌यौ ॥१॥

दोहा

तुम सवार इस बार हो निकसौ सबै अगार।
मैं भी साइत देखिकै एक करौंगा मार ॥ २ ॥
खान सलाबत कौ हुकुम वे अमीर सुनि कान।
अपने अपने मन लगे जुद्ध हेत ललचान ॥ ३ ॥

रुस्तमखाँ सुहकीमखाँ अरु कुबरा अति चंड।
फतेअली सु अलीकुली साजी सैन उदंड ॥ ४ ॥

### छप्पय

उन्नत असित मतंग ललित कंचन अम्बारिय।
घन दामिनि के भेस गजनु घंटनु धुनि धारिय ॥
रुकम रजत बर बाजि साज साजे बहु रंगनि।
तंगन लिए पतंग मनौ इम भरत छुलंगनि ॥
अंगन अनूप कवचनि कसिय लसिय मनौ फनिधर खरे।
हयनाल हंकि हथनाल हुव सुतर्नाल सनमुख धरे ॥ ५ ॥
दै दै दिग्घ निसान बान नीसान अग्ग धरि।
चढ़े गयंदनु पिट्ठि दिट्ठि अति रोस रंग भरि ॥
चँवर चलत चहुँ ओर चारु सिप्पर चमकावत।
चलत चमू चतुरंग मनहुँ पावस घन धावत ॥
ठुक्कत तबल्ल इकगल्ल रव मल्ल भल्ल फेरत भले।
सूरज-प्रताप पावक निरखि मनु पतंग आवत चले ॥ ६ ॥

### पावकुलक छंद

जबहीं कटक निकट तें कढ्ढे। पाँचौ चपल गयंदनि चढ्ढे ॥
तबहि अग्र उतपात सुबढ्ढे। गिद्ध आइ सनमुख रव रढ्ढे ॥
लरत बिलाउ सामुहे आए। ग्रामसिंह श्रवननि फटकाए ॥
सिवा शृगाल सामुहें रोए। रजकु बस्त्र लायो बिनु धोए ॥
अगिन धुँधात मनुज कर लाए। मुकुलित केस जटिल दरसाए ॥
आनि उलूक धुजा पर बैठे। पल्लचर परत चमू मैं पैठे ॥
चलत गयंद अचानक धुक्कैं। अक्कसमात चाल कौं चुक्कैं ॥
आँकुस गिर्‍यौ महावत कर तें। गद्‌गद कंठ भए रन डर तें ॥
नैनन नीर बह्यौ तिहिं बेरें। उठे रोम मानौ जम घेरें ॥

भए इते उतपात महा ए। बस परि काल नहीं मन हाए ॥
मानौ जमपुर जात पलाए। पाँचौ चढ़े गयंदनि आए ॥
सहस दोइ दोई हय साजै। पैदल पील बहुत गल गाजैं ॥
भए आनि रनभूमि इकट्ठे। निकट सिंह के ज्यौं मृगपट्ठे ॥
कोर बाँधि पाँचौ भए ठाढ़े। आगै धरे जँजालनु गाढ़े ॥
हथनाल रु हयनाल उदंडी। तोप रहकला और भुसुंडी ॥
अपनौ कटक घेरिकै ठाढ़े। कोस दोइ डेढ़क भुव बाढ़े ॥७॥

## दोहा

तबही सिंह सुजान सों कही दूत ने धाइ।
आजु तुरक बाहर कढ़े सजे सैन बहु भाइ ॥ ८ ॥
रुस्तमखाँ सु हकीमखाँ कुबरा अरु बलधारि।
फतेअली सु अलीकुली निकसे जंग बिचारि ॥ ९ ॥

## सोरठा

सुनि तहँ सिंह सुजान चार्यौं चौकी दृढ़ करी।
सहस दोइ* लै ज्वान आपु चल्यो पुठवार कौ॥ १० ॥

## छंद अनुगीत

दुहुँ ओर धुंधिय धूरि रुंधिय चमक चुंधिय रुद्ध।
घनपटह बज्जिय गज गरज्जिय भीति भज्जिय कुद्ध ॥
हथनाल हंकिय तोप डंकिय धुनि धमंकिय चंड।
हयनाल छुंडिय तरु भुसुंडिय धरनि खडिय खंड ॥
दुदुभि धमंकिय भेरि भंकिय तूर सक्किय कूर।
अति घोर सोर भयान बढ्ढिय मारु रढ्ढिय सूर ॥
लखि दूर नद्दहिं कद्द बिहद्दहिं बदन बद्दहिं टेरो।
कुहकंत बान चलाइ चंडिय देत गोल बखेरि ॥

---

*पाठांतर-सहस दोइ परमान ज्वान संग निज लै चढ्यो।

धर धरत देत धवान कौं खरखरत बखतर अंग।
तरतरत तेहनु सौं भरे ढरढरत ढाल निषंग॥
कर करत धनुषन कौं खरे झरझरत बीर सुतीर।
धरधरत धद्ध डिहाव सौं नहिं टरत एकहुँ बीर॥
दुहुँ देखि दपटत हयन झपटत जाइ लपटत धाइ।
फिरि फेरि अहुटत चलत चुहटत दुहूँ पुहटत आइ॥
नहिं जमनि ठट्ट अहट्ट खाइय रहिय पाइ रुपाइ।
व्रज बीरहू रनधीर रुप्पिय जैति हेत लुभ्याइ॥ ११॥

छप्पय

या बिधि जुद्धहि करत दिवस बीतव जब लग्गिय।
तुपक तोप* जज्जाल चोट इनही की दग्गिय॥
यह सुनि सूरज कहिय आज ए जान न पावैं।
करिहैं श्री हरिदेव सोब करनौ कह तामैं॥
यौं बचन मानि सबही सुभट सनमुख धाइय रोस धरि।
इकबार सिमटि चहुँ ओर तें कहत देव हरिदेव हरि॥११२॥

## भुजंगी छंद

छुटे एकही बार सो जुद्ध काजै। जुटे जाइकै धाइकै छोह साजैं॥
खुटे खग्ग हथ्थौं अरब्बीनु चढ्ढे। हटैं नाहिं कोऊ सबै साथ बढ्ढे॥
चहूँ ओर सौं सोर यौं घोर छायौ। मनौ सिंधु सद्दे हवा कौं हलायौ॥
किहूँ सेल सम्भारिकै हाँक कीनी। बियै तेग सौं काटकै डारि दीनी॥
किहूँ बाढ़ के सेर समसेर वाही। किहूँ लै भुसुडीनु सौं देह दाही॥
तहाँ चड कोदड लै हथ्थ केते। धए सत्रु के सामुहें पग्ग देते॥
कहूँ लेहु रे लेहु रे लेहु सद्दै। कहूँ देहु रे देहु रे बीर बद्दैं॥
अहट्टैं भयौ सद्दना भूमि माहीं। तहाँ आपनी आपनी चोट वाहीं॥

---

* पाठांतर—तीर।

कहूँ सेल सन्नाह कौं फोरि बैठे। मनो भानुजा में फनी जात पैठे ॥
कहूँ साँग दुहुँ आँग कौं भेदि अच्छी। किधौं श्रौन पानी चली भाजि मच्छी ॥
लगे तीर तीखे कछू भाल* दीसैं। मनौ तीन नैना धरें ईसरी सें ॥
कहूँ तेग तेगौ झरैं झार उट्ठी। मनो जोर ज्वालामुखी जंग रुट्ठी ॥
किते भाल भालेनु सौं लाल कीने। मनौ फाग के ख्याल के रंग भीने ॥
भरें बत्थ सौं बत्थकैं लत्थपत्थैं। मुखौं मारुही मारु कौं बीर कत्थैं ॥
पलक एक ऐसे भई मारु भारी। लखैं दूरिही तैं हँसैं रैनचारी ॥
थए सूर के सूर दै पाइ अग्गें। डराने तहीं खान के लोग भग्गें ॥
जिन्हैं स्वामि के काम की लाज भारी। खड़े खेत खूनी नहीं संक धारी ॥१४

## दोहा

अलाकुली सु फतेअली कुबरा गए पलाइ।
रुस्तमखाँ रु हकीमखाँ ए पग रहे गड़ाइ ॥ १४ ॥

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
अति दुंद जुद्ध बिरुद्ध उद्धत तृतिय अंक सुनाइकै ॥१५॥
इति तृतीय अंक ॥ ३ ॥

---

## दोहा

दुहूँ गयंदन पैं चढ़े धनुष बान गहि हत्थ।
जम-किंकर जिमि कोह कै नरनु करत लथपत्थ ॥१॥

---

* पाठांतर—पार।

### छप्पय

तिनके जुद्धहिं देखि बहुत चरबीचर आइय ।
जुग्गिनि जोरि जमाति जहाँ जाहर जमुहाइय ॥
काली करत कलोल खलखलैं तहँ खबीस गन ।
भैरव भभर्‌यौ फिरत पिता के हार हेत रन ॥
जहँ ईस दूत जगदीस के गीरबान गनिका उमगि ।
जहँ रुस्तमखाँ रु हकीमखाँ स्वामि काम हित रहिय पगि ॥२॥

### संजुता छंद

रन तैं न पाइ चलाइयै । धनु बान लै समुहाइयै ॥
बलु आपनौ सब संग लै । बिफरे सुबीर उमंग लै ॥
तिहिं देखि जट्ट झपट्टिए । पल एक माहिँ दपट्टिए ॥
तहँ गौर गोकुलराम ने । बहु रंग जंग मचावने ॥
करि क्रुद्ध जुद्धहिँ पिल्लियौ । गहि सेल साँगनु भिल्लियौ ॥
तिहिं भ्रात सूरतिराम हैं । बहु सूरता कौ धाम हैं ॥
बलिराम बिक्रम-आगरौ । गहि तेग जुट्टि उजागरौ ॥
हरताप कूरम केहरी । बरसाइ बाननु की झरी ॥
सिवसिंह सार सम्हारिकै । भिलि गयौ फौजहिं फारिकै ॥
अरु मीर बीर बिहंडनौ । बहु रीति जुद्धहिँ मंडनौ ॥
लहि तेग तीरन जुट्टियौ । पर भूमि तैं नहिं छुट्टियौ ॥
सर स्यामसिंह सम्हारिकै । अरि मारियै ललकारिकै ॥
व्रजसिंह बीर महाबली । जिनि लै अनी अरि की दली ॥
पखरैत पाखरमल्ल हैं । करि धयौ पारतु हल्ल हैं ॥
अरु किसनसिंह दरेर दै । गहि दई साँग करेर दै ॥
बलवंड सिंभू कौ तनै । जिहिं नाम हरिनाराइनै ॥
अरु औरहू बहु सूर हैं । पर प्रान पीवन पूर हैं ॥

इतमें इते बलवान हैं। उत सेख मुगल पठान हैं ॥
तिन मैं मच्यौ घमसान है। सर सेल साँग कृपान है ॥
दुहुँ दट्टि दट्टि दबट्टहीं। अरि नाम लै लै रट्टहीं ॥
इक देत धाइ झटक्किकै। हय तें सुदेत पटक्किकै ॥
इक देत हूल हटक्किकै। इक एक परत लटक्किकै ॥
सुहकीमखाँ भुज-दंड तैं। अरु रुस्तमाँ बलवंड तैं ॥
ज्यौं कुपित सेही अंग तैं। त्यौं छुट्टत बान निषंग तैं ॥
तिहिं देखि सिंभू को बली। रिसज्वाल अंतर उच्छली* ॥
फटकार सेलहिं हथ्थ मैं। हय हंकियौ अरि गथ्थ मैं ॥
सुहकीमखाँ लखि आवतौ। जो हुतौ चाप नचावतौ ॥
तिहिं कान लौं कसि बान कौं। तकि दियौ ताकि भुजान कौं॥
सर सो लग्यौ उर आइकै। छत कर्‌यौ श्रौन बहाइकै ॥
वह बीर तीरहिं कढ्ढिकै। रस रुद्र रंगहि बढ्ढिकै ॥
हय हंकियौ गजदंत पै। मनु राखिकै अरि अंत पै ॥
ज्यौं सिंह गज मदमंत पै। हय लस्यौ यौं करि-दत पै ॥
फ़टकारि सेलहि उद्ध कौं। तकि आपुनो अरि सुद्ध कौं ॥
वह सेल गज अरु मेद कै। सुहकीमखाँ तनु छेद कै ॥
तब ही सुतीरन वुट्ठियौ। सु हकीमखाँ रन रुट्ठियौ ॥
इक दयौ सरकटि तक्किकै। वह लग्यौ हिरनहिं धक्किकै ॥
तब ही सुसिंभू पूत ने। गहि तेग बल मजबूत ने ॥
गज कुंभ दइय करक्किकै। मनु परिय बिज्जु तरक्किकै ॥
फिरि धाइ गज गद्दी दली। कसना बिदारिय भुजबली ॥
सु हकीमखाँ भुव पारियौ। गज पिट्ठि तें गहि डारियौ ॥
इमि गिरत लोग निहारियौ। मनु कन्ह कंस पछारियौ ॥
तबही सु सेल रु साँग की। बरषा भई चहुँ आँग की ॥

* पाठांतर-तिहिं देखि सिम्भू को तनै—रिस ज्वाल उर अन्तर सनै।

तबही सु औरन दौरिकै। लिए रुस्तमा झकझोरिकै ॥
करि एक एकहि चोट सौं। राख्यौ हकीमहिं जोट सौं ॥
तबही सु तिनके साथ के। करि एक एकहिं हाथ के ॥
सरदार जूझत खेत मैं। भजि गए बहुत अचेत मैं ॥
तजिकै हथ्यारनु पिट्ठि दै। धस गए लसकर निट्ठि दै ॥
व्रज-बीर हू तिन संगही। चलि गए कटक उमंगही ॥ ४ ॥

दोहा

तबही बकसी के कटक खलभल परी अपार।
आए आए सब कहै सूरज सुभट उदार ॥ ५ ॥
घरो चारि डेरा लुटे बुटे तुरक बेहाल।
जट्ट जट्ट कहते फिरै सबने जान्यौ काल ॥ ६ ॥
फेरि बगद व्रज-बीर सौं आए ताही खेत।
जहाँ परे रुस्तमबली अरु हकीमखाँ रेत ॥ ७ ॥

कवित्त

हुब्ब पै हकीमखाँ सुधक्कपक्क छोड़ि धायौ,
पग न डिगायौ भरि आयौ मन रीस नैं।
निपट भयान छिन मान रन थान कर्यौ,
सान धरै बाननु चलाइ दस बीस नैं।
रेत खेत भयौ तऊ सेत जस लेत रह्यौ,
नेत नेत गायौ कोटि तीन और तीस नैं।
जोगिनी रकत पायौ तन ताकौ प्रेतपून,
सीस पायौ ईस ने असीस व्रज ईस नैं ॥८॥
तोम तम छाए सुलतान दल आए, सो तौ
अमर भजाए उन्हें छाई है अचकसी।
काल कैसी रसना कराल करवाल तेरी,
व्याल भाल काढ़िकै करन लागी तकसी।

सूदन सुजान मरदान हरिनाराइन,
देव हरिदेव जंग जैति तोहिं बकसी।
जूझत हकीमखाँ अमीरनु कैं धक सी,
औ बकसी के जिय मैं परी है धकपक सी ॥९॥

चौंकतु चकत्ता जाके कत्ता की कराकनि सौं,
सेल की सराकनि न कोऊ जुरै जंग है।
कैयक अमीर मीर धीर तैं फकीर करै,
बीर बलबीर कौं सदाही सुभी सग है।
सूदन सकल देस देसन अदेस भयो,
भाजत दुवन ज्यौं लियैं तुरंग तंग है।
जैति कौं निधान तेज भान के समान मान,
आजु तौ जहान मैं सुजान मुख रंग है ॥१०॥

## सवैया

जुद्ध जुरैं न मुरैं ब्रजबीर सु सेलन सों धकपेल मचाए।
जुग्गिन खप्पर पूरि नची पर के सिर दौर हूरै पहराए॥
फेर फिरे तन श्रौन भरे मनु भोर के भान सुरंस पैं आए।
देखत सिंह सुजान अमान भुजान भरे उठि अंक लगाए॥११॥

## त्रिभंगी छंद

बाजे सहदाने सुजस पुराने तूर पुराने गुन गाने।
बकसी दल भाने मंगल माने यौं सुख साने हरषाने।
आए अतुराने बाँधे बाने जे मरदाने समुहाने।
ते कंठ लगाने दै बहु माने सूरज माने जग माने॥१२॥

## छंद हरगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानें दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥

ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
सु हकीम रुस्तम बित्तियौ रन अंक चौथो गाइकै ॥१३॥

इति चतुर्थ अंक ॥४॥

---

## तोमर छंद

तबही सलाबत खान। मन मै भयौ कलिकान ॥
हत जानि दोऊ बीर। अब को धरै रन धीर ॥
जबही सु साम उपाइ। अपने हियैं ठहराइ ॥
तबही वकील बुलाइ। कहियौ बहुत समुझाइ ॥
तू जा सुजानहिं पास। हमसौं करैं इखलास ॥
सब मुलक उसकौ देहुँ। अरु आपने सँग लेहुँ ॥
ज्यों बनैं त्यौं तू लाउ। करिहौं बडो उमराउ ॥
जब यौं कही नव्वाब। सु वकील दीन जुवाब ॥
ज्यौं कहत आपु नवाब। त्यौ कहौं जाइ सिताब ॥
वह है सुजान अमान। जो मानिहै बलवान ॥
कहि यौं उठ्यौ सिरनाइ। तिहिं बार आयौ धाइ ॥
जहँ हो ब्रजेस कुँवार। रनभूमि कौं जितवार ॥
तिहिं निकट पहुँच्यौ जाइ। करि राम राम बनाइ ॥
तिहिं देखि सिंह सुजान। कछु लग्यौ मृदु मुसिकान ॥१॥

## दोहा

कहि भेज्यौ सु नवाब ने सो सब सुनी सुजान।
कही कि कह्यौ नवाब कौं हम कौं सबै प्रमान ॥२॥
तब सूरज ने यों कह्यौ मंद मंद मुसिकाइ।
मेरौ जाय सलाम तू कहियौ सीस नवाइ ॥३॥

बेअदबी हमतें बनी ताहि न राखैं चित्त।
ज्यौं चाकर हम साहि के त्यौं नवाब के नित्त ॥४॥
बिनती एक नवाब सौं मेरी रुखसद देहिं।
लाला सिंह जवाहरै अपनो हरवल लेहिं ॥५॥
जैसी कही नवाब की मानी सिंह सुजान।
त्यौंहीं सूरज की कही करी सलाबतिखान ॥६॥
लाला सिंह जवाहरै लीनौ बेगि बुलाइ।
सब सेना ताकौं दई बकसी दियौ मिलाइ ॥७॥
श्रीसुजान के पूत कौ हरवलु लियौ नवाबु।
कूँच ढुँढाहर कौं कियौ दोउन गाँछ्यौ दाबु ॥८॥
मुस्तकीम लखि तनय कौं हिय हरिदेव मनाय।
धायो आयौ ब्याह कौ रैन दिना इक भाय ॥९॥
तीन कर्म में एकहू ज्यौं मथुरा में होइ।
फेरि न आवै जगत मैं यह बिचार चित टोइ ॥१०॥
दोइ कर्म परबस निरखि एक जान निज हाथ।
कर्‌यौ ब्याह मथुरा पुरिहिं कृपा पाइ यदुनाथ ॥११॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री ब्रजेंद्र बदनेस कुमार श्रीसुजान-
सिंह हेतवे कवि सूदन विरचिते सुजानचरित्र सलाबतखाँ
समर विजय वर्णनो नाम तृतीय जंग समाप्तम् ॥३॥

---

## चतुर्थ जंग

छप्पय

खुलित केस अधखुलित भेस लोचन दिनेस-सिसु ।
चंद्रभाल त्रयनैन ज्वालमाला कृपाल किसु ॥
कर कपाल नौगुन सुब्याल सँग स्वान माल-धर ।
असि त्रिशूल षड्वांग डमरु कर भस्म दिगंबर ॥
सिव सिवा नंद समसान गृह समर सुरापानहिं करहिं ।
जय बटुकनाथ जगनाथ जय भूत साथ जय उच्चरहिं ॥ १ ॥

दोहा

अष्टादश षट बरस रितु पावस भादौं मास* ।
सूरज है मनसूर सँग किय पठान दल नास ॥ २ ॥
नवल राय मार्यौ गयौ करि पठान सौं जुद्ध ।
सुनि वजीर मनसूर कैं तन मन उपज्यौ कुद्ध ॥ ३ ॥
तुरत अहम्मद साहि सौं अरज करी यह जाय ।
भाई काइमखान कैं अमल बिगार्यो आय ॥ ४ ॥
मुझ कौं रुखसद दीजियै ज्यौं न लगै कछु देर ।
हुकुम पाइ कैं साह कौं डारौं मऊ बखेर ॥ ५ ॥
सुनत साह दीनो हुकुम जो कछु चहियै लेउ ।
बे अदबी जोई करै तिसै जेर करि देउ ॥ ६ ॥
सिरोपाउ समसेर लै करि सलाम घर आइ ।
जिते रिसाले साह के ते सब लिए बुलाइ ॥ ७ ॥
जितौ अराबौ त्यार हौ सो सब लीनौ संग ।
उतरि पार डेरा दए ठठि पठान सौं जंग ॥ ८ ॥

---

* पाठांतर—अष्टादस सत बरस षट पावस भादौं मास ।

बाईसी सब साह की कियौ खजानौ हाथ।
कियौ कूँच मनसूर ने दस हजार हय साथ॥ ६॥

## तोमर छंद

इक कूँच एक मुकाम। चलतें लए बहु ग्राम॥
दस पाँच दिन के बीच। पहुँचे सु कोल नगीच॥
तिहँ थान कीन मुकाम। बहु सैनसाजि सकाम॥
दस सहस हैं असवार। दस दोइ पाइक त्यार॥
सत तीन कुंजर गुज। रथ ऊँट पुंजनि पुंज॥
तिहिं सैन नौबति आठ। सु निसान के बहु ठाठ॥
अरु जबर जंग अगार। सत एक बहुत जजार॥
यह सैन संग वजीर। धरि कोल बैठिय धीर॥
जिय जानिकै बलवान। वह राउ बुद्धि निधान॥
हय साजि दोइ हजार। वह पश्यौ आइ अगार॥
पौरच पुंडीर नरेस। सजि आइयौ यह बेस॥
गहिकै सुकलम नवाब। लिखियौ सुपत्र सिताब॥
ब्रजराज-कुँवर सुजान। तुझसा न हिंदू आन॥
यह देखतें फरवान। करना मुझै बलवान॥
इस बख़्त ढील न होइ। चढ़ि आवना सब कोइ॥
रब करैगा कछु खूब। यह जानियौ न हबूब॥
हमसैं तुम्हैं इखलास। दरपुस्त सैं यह रास॥
कछु खरच की नहिं ढील। हय लाउ पैदल पील॥
नहिं दूर का यह बख़्त। मुझ पै परी अब सख्त॥१०॥

## दोहा

यौं लिखिकै रुक्का दयौ दयानाथ के हाथ।
सुतरसवार चलाइदै तुझकौं रहना साथ॥ ११॥

यौं सुनि हुकुम वजीर कौ तब वकील सिर नाइ।
ड्यौढ़ी बाहिर आइकै दीनो डाँक चलाइ ॥ १२ ॥
सुतुरसवार सवार हो चल्यौ चाल उत्ताल।
पहुँच्यौ आइ सहार में जहाँ कुँवर ब्रजपाल ॥ १३ ॥
करि सलाम कागद दयौ अरज करी यह बोल।
सफदरजंग नवाब अब डेरा कीने कोल ॥ १४ ॥
मुझे आपके पास कौं रुखसद किया नवाब।
कुछ पठान की तरफ सें जाना होतु दबाब ॥१५॥
सफदरजंग वजीर कौ कागद बाँचि सुजान।
अरज करी बदनेस सौं तबही बुद्धिनिधान ॥१६॥
लिखि भेज्यौ मनसूर द्वै दीन बचन महाराज।
जु कछु आप आइसु करौ करनौ मोहि सुकाज ॥१७॥
सुनि ब्रजेस अज्ञा दई करनौ याकौ सग।
पै इन तुरकन सौं कछू बूझतु नहीं प्रसंग ॥१८॥
जौ यह भेज्यौ साह कौ चल्यौ पठाननु पास।
तौ तोहूकौं पहुँचनौ पै न करौ बिसवास ॥१९॥
आइसु लै बदनेस कौ सुभ दिन कियौ पयान।
ठौर ठौर की फौज कौं भेजि दए फरवान ॥२०॥
उतरि पार डेरा दए कालिंदी के तीर।
सुनि सुजान के बचन कौं आए सब ब्रज बीर ॥२१॥
भले भले सरदार जे ते सब पहुँचे आइ।
तौ लौं सफदरजंग कौ रुक्का आयौ धाइ ॥२२॥
बखत नहीं अब देर का सुनियै सिंह सुजान।
इस कागद के बाँचते करियौ बेग पयान ॥२३॥
देखत रुक्का कुँवरजी कही हरौलहिं बोल।
अब बहीर चलती करौ काल्हि पहुँचनो कोल ॥२४॥

हुकुम पाइ कुतवाल ने दई बहीर लदाइ।
सूरज सूरज उदित हो चल्यौ कोल कूँ धाइ ॥२५॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जानें दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं।
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
सजि सैन कोल पयान कीने प्रथम अंक सुनाइकै ॥२६॥

इति प्रथम अंक ॥ १ ॥

---

छप्पय

धमिय धमाधम बंब धमक धरनीधर धक्किय।
धाम धाम अरि धूम धरा धूरह धव रुक्किय* ॥
धावत धवनि हयंद गयदनि की बर रबकनि।
उग्गिय दुग्ग पताक ताकि दुसमन लिय दबकनि ॥
तूरिय अवाज पूरिय दिगनि सुनत जमन दरक्यौ हियौ।
ब्रजराज-पूत मजबूत मन जबहि कूँच कोलहि कियौ ॥१॥
बिप्र बरन बहु सीस बाहु अवनीस बाहु भव।
बनिक उरू अत्यंत चरन चय चरन भए सब ॥
सेल साँग सर रोम रजत अवतंस भुजा बर।
सूरज सूरज नैन चंद चमचमत छाह कर ॥
पूषन मयूष भूषन झमक बहै कहै कवि तेज-तपु।
गज बाजि कंध ब्रजराज बपु मानौ लसतु बिराट-बपु ॥२॥

---

* पाठांतर—धमिय धमाधम बब धमकि धरनी धुव रुक्किय।
धाम धाम अरि धूम धरा धरनी धर धुक्किय ॥

## छंद गाहा

सुनिय खबरि वजीरं बद्न-तनं आइय सह सूरं ।
इसमाइल तिहि अग्गं दिय पठाइ छाय सुखपूरं ॥३॥

## कुंडलिया

सूरज इसमाइल मिले दुहूँ परस्पर धाइ ।
ज्यौं सूरज भुवसुत मिलत एक रास में आइ ॥
एक रास मैं आइ दुहूँ आनद्न छाए ।
इसमाइल लै आइ मिसल डेरा करवाए ॥
करवाए सनमान भेज मीरन मन सूरज ।
भूरज राखनहार जबै आयौ सुनि सूरज ॥४॥

## सोरठा

सफदरजंग नवाब आयौ जान सुजान कौं ।
हियैं मिलन कौ चाव करि बैठ्यौ दीवान तब ॥५॥
खबरि भई तिहिं बार सूरजमल्ल कुँवार कौं ।
कही कि जौ दरबार तो चलि मिलौं नवाब सों ॥६॥
यों कहि सिंह सुजान त्यार भयौ दरबार कौं ।
जे निजु कृपानिधान तिनु सिरदारनु संग लै ॥७॥

## कवित्त

जीत रनजीत हठीसिंह औ अनूपसिंह
जैतसिंह बलू बलराम बीर बंका है ।
बड़ा चहुँवान मरदान मीर दुरजन
गोकुल सुराम सुखराम अनसंका है ।
रामचंद तोमर कटारिया सुरतिराम
पाखर सुमल्ल जौ करतु रन हंका है ।

उद्धत उदार सरदार दरबार काज
साज चढ़्यौ सूरनु* सुजान देत डंका है ।।८।।
आयौ सिंह सूजा हिंदू ता सम न दूजा और
सुनत वजीर न समात फूल्यौ रंग मैं ।
आगै उठि लीनो भरि मोद अक भीनो बहु
कीनौ सनमान सबही कौ परसंग मैं ।
बूझि कुसरात गहि हाथ सौ सुजान हाथ
बैठक बताइ इखलास के प्रसंग मैं ।
मीर उमरावन की भीर मै दिपत दोऊ
भानु भृगु सोहैं ज्यौं सुरासुर के संग मैं ।।९।।
हाथी हय हीरा सिरपेच जेगा चीरा संग
केते सरोपाव पासबान लै लै आए हैं ।
अतर गुलाब बीरा होत है पवन सीरा
लैकर नवाब सबही कौ पहराए हैं ।
सफदरजंग ने सुजान सनमान हित
सबै सरदारनु के कीने मन भाए हैं ।
रुखसद पाइ सुख पाइ चले ब्रज-बीर
ज्यौं धनेस धाम तैं सुरेस सुर धाए हैं ।।१०।।

### पवंगा छंद

दूजे दिन दरबार सुजान सु आइकै ।
देखत ही मनसूर महा सुख पाइकै ।।
खिलवति करी नवाब जताइ वकील सौं ।
मसलति बूझन काज सुजान सुसील सौं ।।११।।
तब वजीर मनसूर कुँवर बर बुज्झियौ ।
मेरा इस मैदान आवना सुज्झियौ ।।

---

* पाठांतर–सूरज ।

नाहक अहमद्खान पठान अरुझियौ ।
नवल राइ करि जंग तिन्हौंसैं जुझियौ ॥१२॥

दोहा

नवल राइ मार्यौ नहीं मार्यौ मोहि पठान ।
तौ लौं कल नहिं देंउगौ जौ लौं इस तन जान ॥१३॥

पवंगा छंद

जौं लौं इस तन जान पठान न रक्खिहौं ।
मऊ फरकाबाद खोदिकै नक्खिहौं ॥
बंगस बंस बिगारि नारि नहि छुडिहौं ।
बिन पठान करि भूमि फेरि घर मंडिहौं ॥१४॥
यही अरज मैं करी साह सौं जायकै ।
पाइ साह कौ हुकुम चल्यौ सुख पाइकै ॥
जु कछु अराबौ त्यार लयौ सुधराइकै ।
दस हजार असवार पार उतराइकै ॥१५॥

दोहा

रमजानी अरु इसाखाँ मीर बका ए साथ ।
आए जुजबी फौज सौं नहीं इन्हौं के साथ ॥१६॥

छंद पवंगा

नहीं इन्हौंके साथ रिसाले साह के ।
रेजा और अमीर न खातिरखाह के ॥
मेरा तौ इतकाद एक है तुज्झ सौं ।
अब करना सो कहौ कुँवरजी मुज्झ सौं ॥१७॥
केती लाए फौज और क्या आवनी ।
सो सब लेउ बुलाइ न देर लगावनी ॥
जो कोइ तेरे साथ मिलैगा आइकै ।
करनी तिसकी गौर मुझे सुख पाइकै ॥१८॥

## दोहा

यौं सुनिकै बदनेस-सुत ता वजीर के बैन ।
बोल्यौ तासौं अरि-दवन हियैं बढ़ावन चैन ॥१६॥
ठाकुर साहिब ने कह्यौ मो सौं चलती बार ।
जो कछु हुकुम नवाब कौ करनौ तुमकूँ सार ॥२०॥

## पवंगा छंद

करनो तुमकौं सार न देर लगाइयै ।
नवलराय कौ बैरु बेग बगदाइयै ॥
एक लाख तरवार जु सिंसिनवार की ।
सो नवाब के साथ पार औ वार की ॥२१॥

## दोहा

ठाकुर साहब की प्रकृति है सो सुनौ नवाब ।
जासौं पनु परि जातु है फिरै न कोटि दबाव ॥२२॥

## छंद पवंगा

फिरै न कोटि दबाव होंहिं जौ साह के ।
जासौ पनु परि जाइ रहै वे ताहि के ॥
मोसौं चलती बार कह्यौ उन टेरिकै ।
मेरौ धर्म थिराइ करौ सो हेरिके ॥२.॥

## दोहा

मैं आयौं ढिग आपके जो कछु अज्ञा देउ ।
ताकौं मैं हाजिर अबै करिहैं श्री हरिदेव ॥२४॥

## सवैया

जो कछु फौज रही ब्रज मै अब सो सब आपके पास बुलाऊँ ।
चाहन जो सरदार हमें निरधार तुम्हारे ही पास लगाऊँ ।

श्री बदनेस के आपु प्रताप तैं बंदगी में न कछू कम लाऊँ।
साह के काज की आपकौं लाज है राज के काज कौं मैं उठि धाऊँ ॥२५॥

### दोहा

ऐसे बचन सुजान के सुनि कै सफदरजंग।
बोल्यौ सब हिंदून मैं है ब्रजेंद्र मुख रंग ॥२६॥
रूपसिंह तेरा चचा और शहादतखान।
है सलूक दर पुस्त सै दूना किया सुजान ॥२७॥
यौं कहिकै मनसूर ने लै मोतिन की माल।
श्री सुजान के कंठ में डारी होत खुसाल ॥२८॥
श्री सुजान सिरु नाइकै करि सलाम कर जोरि।
अरज करी मनसूर सौं अपनी बुद्धि बटोरि ॥ २९ ॥

### छप्पय

जो नवाब की फौज रही पूरब में छाई।
लीजै बोलि सिताब ढील काहे जु लगाई॥
भूमि भदावर देस सिह हिम्मति है राजा।
तासौं लीजे काम गौर करि करियै ताजा॥
मैंडू जवादि खुरजादि के सबै सुभट आवत चले।
अरु जो न आइहैं या समैं जानि परै जु बुरे भले ॥३०॥

### कुंडलिया

ऐसें कही सुजान ने सुनि वजीर सुख पाइ।
तेरा आवन जो हुवा तौ क्या रही तबाइ॥
तौ क्या रही तबाइ करौ चारिकु मुकाम अब।
आइ इकट्ठे होइ लाग मेरे तेरे सब॥
सब सलूक हो जाइ आप करना है जैसे।
अब डेरे कूँ जाहु कही मनसूर सु ऐसे ॥ ३१ ॥

## सोरठा

तबही सिंह सुजान करि सलाम आयौ चल्यौ।
सहित मंद मुसिकान दाखिल निज डेरनु भयौ ॥ ३२ ॥

## तोमर छंद

दिन दूसरे मनसूर। इखलास राखन पूर ॥
करि आपनो दरबार। सब कौं कह्यौ तिहँ बार ॥
चलना मुझे इस बार। जु सुजान के दरबार ॥
इकु बोल कै प्रतिहार। करि पालकी अब त्यार ॥
अबही जु होतु सवार। करनी न मोहि अबार ॥
सुनि दूत ने ततकाल। करि खबरि सूरज माल ॥
इत आइ पालकि हाल। चढ़ियौ वजीर बिसाल ॥
चढ़ि आइयौ बड़ भाल। बदनेस कौं जहँ लाल ॥
लखि आवतौ मनसूर। उठि धाइ सूरज सूर ॥
करिकै अनेक सलाम। धरिकै नजरि बहु दाम ॥
गज बाजि साज ललाम। जिनके सुमोल उदाम ॥
अरु आपु अदबु बजाइ। दरबार गयौ लिवाइ ॥
मसनंद बैठि नवाब। जहँ और की नहिं ताब ॥
तब देख सफदरजंग। कहियौ जु सहित उमंग ॥
अब बैठि सिंह सुजान। हमसै तुम्हैं नहिं आन ॥
तबही अदाबु बजाइ। बैठ्यौ सुजान सुभाइ ॥
जब ही बिलोकिय बीर। लगिहौं न सीत समीर ॥
अरु आस पास खवास। बहु बेस बेस सुबास ॥
धरि हेम संपुट बीच। धरिकै सुगंध नगीच ॥
अरु पानदान अपार। भरिकै धरे सु अगार ॥
सु वजीर सौं कर जोर। कहियौ सुजान निहोर ॥ ३३ ॥

## कवित्त

हम जिमींदार सरदार किए आपु आइ
हमैं निरधार बंदगी में नित जानौगे।
राजा राना राय उमराय सब साहिब के
कहे एक बार के अनेक करि मानौगे।
सूदन सुजान कहै साहिब नवाब सुनौ
करनौ है मोहिं जोई मुख तैं बखानौगे।
चक्कवै चकत्ता जू के चोरनु कौं चूर* करि
चुगल चबाइन कौं चौकस कै भानौगे ॥ ३४ ॥

## दोहा

ऐसे बचन सुजान के सुनि वजीर मनसूर।
बोल्यौ जो हम तुम मिलैं तौ सब होइ जरूर ॥ ३५ ॥
यौं कहि सफदरजंग ने लीने पाँव उठाइ।
अपने डेरनु कूँ चल्यौ सूरज सौं सुख पाइ ॥ ३६ ॥
फेरि कह्यौ मनसूर ने करि मुकाम ह्वाँ दोइ।
लोग बाग की हाजरी कूँच आगिले होइ ॥ ३७ ॥

## रोला छंद

यौं कहिकै मनसूर आपने डेरनु आयौ।
सूरज निज दरबार बैठि आनंदहिं पायौ ॥
ठाकुर साहिब पास पत्र इक तबै पठायौ।
लिखि वजीर कौ मिलनु और डेरनु जो आयौ ॥
फेरि लिख्यौ महराज देस जो फौज रही है।
भेजौ करि ताकीद जंग की बात सही है ॥
दिना दोइ में कूँच होइ आगैं नवाब कौ।
तातैं ढील न होइ काम यह है सिताब कौ ॥ ३८ ॥

---

* पाठांतर—चून।

### छंद आभीर

यों लिखि सिंह सुजान। ब्रजपति चित सुखदान।
जाके उर नहि आन। श्रीहरिदेव समान ॥ ३९ ॥

### हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान है ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै।
मनसूर-सूरज कौ मिलनु कहि दुतिय अंक सुनाइ कै ॥४०॥

इति द्वितीय अंक ॥२॥

—:*:—

### दोहा

फिर बीते द्वै तीन दिन सफदरजंग नवाब।
कहि भेज्यौ नृप-कुँवर सौं करियै कूँच सिताब ॥१॥
यह सुनिकै सूरज कही अबही डंका देउ।
जित कौ कूँच नवाब कौ तित कौ पैंड़ो लेउ ॥२॥

### छप्पय

सफदर जग नवाब बीर बदनेस-तनय बर।
सेरजंग रमजान मीर बक्का उद्धत घर ॥
ईसखान कौं आदि और उमराव दिलीं के।
हिम्मतिसिंह नरिंद राव अरु रंग भली के ॥
औरौ भुवाल लघु हाल कै जिमींदार कहँ लगि गिनौं।
चालीस सहस हय कूँच किय सजल जलद धाए मनौं ॥३॥

### कवित्त

डंकनि के सोर चहुँ ओर महा घोर घुरे
मानो घन घोरि घोरि उठे भुव ओर तैं।

धवल पताका ते बलाका नील पीत स्याम
कैयौं रंग रंग के विहंग आदि मोर तैं।
मीन मनु दामिनि गयंद-मद नीर पाट
बाजत हयंद ज्यौं परतु जल जोर तैं।
पावस प्रकास कौं चढ़त पाकसासन ज्यौं
सफदर जंग ने पयानो कर्‌यौ कोर तैं ॥४॥

## पावककुलक छंद

सिंधुज गज देइकै पाछें। डेरा किए कटक लै आछें॥
कछुक दिननु मुकाम करवाए। पुनि धाए मारहरे आए॥
तहँ मुकाम कीये बहुतेरे। सूरज सुरट भए बहु भेरे॥
असी हजार हयंद इकट्टे। सफदर जंग संग भए पट्टे॥
पंद्रह सहस संग सूजा के। धरा धरा के धीर लड़ाके॥
ऊँट गयदनु की को बूझै। पैदल कौ जु अखैदल सूझै॥
रथ पालकि नालकी अहद्दे। चलत चाल भुव चाल जमद्दे॥
सफदर जंग जंग कौं काप्यौ। डेरा जाइ नदरई रोप्यौ॥
कारी नदी उतरि अतुरानौ। कासगंज पहुँच्यौ तररानौ॥
कासगंज दिन पाँचक बसि कै। श्रीसुजान राख्यो वह हँसि कै॥
फिर करि कूँच नौलखा लीनौ। तहाँ व्यूह-रचना कौ कीनौ॥
सफदरजंग बुद्धि करि नीकौ। जथा जोग्य दइ बाँटि अनी कौ॥५॥

## छप्पय

सेर जंग* भुज बाम तासु ढिग राउ बहादुर।
मीर बका इक ओर पुट्ठि रमजान खान पुर॥
ईस खान कर जोर अग्ग धरि हिम्मति राजा।
इसमाइल धरि पुट्ठि जंग रंगनि मैं ताजा॥

---

* पाठांतर—सिंह।

अरु आपु मद्धि सु अवद्धि है यौं नवाब निजु बल धरिय।
उद्धत उदंड भुजदंड बल श्री सुजान हरवल करिय ॥६॥

## छंद दुपई

यह सुनि अहमद खाँ पठान ने सब पठान सौं भाखी।
अब वजीर आयौ समुहायौ तुम क्या मसलति राखी ॥७॥
आवन कहत रुहेले ते भी आए कछू न आए।
जिसे तेग बाँधे को हिम्मति ते क्या रहैं दुराए ॥ ८ ॥
भाई काइम खाँ के भाई जेते बड़े कहाए।
ते सब कटैं हटै नही रन सैं सबही काम सु आए ॥ ९ ॥
अब बीबी साहिब ने मुझ कौं ए हथियार बँधाए।
जे भाई इस काज लाज पै मेरे जान खुदा ए ॥ १० ॥
रुस्तमखाँ भाई से कहना अब हरीफ चढ़ि आए।
मऊ पठान बारहे सैयद काहे बिरद कहाए ॥ ११ ॥
यौं सुनि अहमद खाँ का कहना सब पठान उठि धाए।
जौ पठान तिस कौ तौ लरना ऐसे बचन सुनाए ॥ १२ ॥

## कवित्त

बंगस की लाज मऊ खेत की अवाज यह
सुने ब्रजराज से पठान बीर बबके।
भाई अहमद खान सरन निदान जान
आयौ मनसूर तौ रहै न अब दबके।
चलना मुझै तो उठ खड़ा होना देर क्या है
बार बार कहे तें दरार सीने सब के।
चंड भुजदंड वारे हयन उदड वारे
कारे कारे डीलनु सँवारे होत रब के ॥१३॥

## छंद चौबोला

अहमद खाँ देखत ही देखत सब पठान बर बाजि चढ़े।
मनौ अदित-सुत कौ प्रताप सुनि दिति-तनूज धरि तेह कढ़े ॥ १४ ॥
तब काइम खाँ कौ लघु भाई दिल अंदर यह सोच चढ्यौ।
अब पठान मुरने न जंग सौं ह्वै सवार निज मंत्र पढ्यौ ॥ १५ ॥

## दोहा

चलत अहम्मद खान के जेती जाति पठान।
लरकं जोरू संग धरि आए बुद्धि-निधान ॥ १६ ॥

## छप्पय

कंचन कलित तुरंग बलित कंचन दुति भूषन।
बिसद बसन धनु बान धरिय मनु चंद मयूषन ॥
तेगा तीछन हथ्थ किने नेजान फिरावत।
ठुक्कत तबल निसान असित धावत फहरावत ॥
सित असित डढ्योरे दीह तन सजि सनेह रोसन सने।
बंगस सुभट्ट संघट्ट ह्वै करि उभट्ट चाहत रने ॥ १७ ॥

## छंद द्रुमिला

सुनि सफदरजंगै चित धरि जंगै करि सिलाह उच्छाह मढ़े।
दस सहस रुहेले सार सकेले गंग पार तें उतरि ठढ़े ॥
दै दुंदुभि डंके होत निसंके क्रूर ग्रह ज्यौं कोपि कढ़े।
अहमद खाँ संगै करत उमंगै ठानि अठान पठान चढ़े ॥ १८ ॥

## दोहा

सफदर जंग नवाब ते पाँच कोस के बीच।
गंगा खादर देखिकै डेरा किए नगीच ॥ १९ ॥
रुस्तमखाँ अरु हबस खाँ सुत सुजात करि टेक।
सुनिकै अहमद खान कौं आए सूर अनेक ॥ २० ॥

तनय महम्मदअली ने कहि भेज्यौ तिहँ बार।
मुझको आया जानियौ तुमसौं चलत हथ्यार ॥ २१ ॥
अहमद खाँ* सनमुख भयौ यह सुनि सफदर जंग।
मसलति करी सुजान सौं करनौ कहौ सुढंग ॥ २२ ॥

## सवैया

सुनि सूरज भूरज राखनहार बिचार यहै निरधार कह्यौ।
अब जंग कियैं बिन रंग नहीं वह गंग के तीर पठान रह्यौ ॥
तुम सैन सजैं पुठवार रहौ अब आयसु देहु न और सह्यौ।
हम जाय जुरें पहले उन सौं तुम गौर करौ लखि लोह बह्यौ ॥ २३ ॥

## सोरठा

यौं कहि सिंह सुजान करि सलाम मनसूर कौं।
पायौं बहु सनमान निज डेरनु कौं आइयौ ॥२४॥

## दोहा

पीछै कटक नवाब के निज बहीर कौ राखि।
सूरज कियौ बिचार चित जमींदार मति भाखि॥२५॥

## छंद संजुता

तबही नकीब बुलाइकै। कहियौ सु ताहि सुनाइकै ॥
सब सैन में अब जाइकै। कहि आउ यों समुझाइकै ॥
सुबहीर कौं लदवाइकै। मनसूर के ढिग जाइकै ॥
लखि ज्यौं रहौ सुख पाइकै। गजहू बहीर पठाइकै ॥
अरु है सवार हयंद के। सबही सुजात बिलंद के ॥
सजि आवही मो पास कौं। लघु रहै दाना घास कौं ॥
यह पाय आयसु धाइयो। कहियौ सुत्यौं कहि आइयौ ॥
तबही बहीर लदाइयौ। कुतवाल लै पहुँचाइयौ ॥

---

* पाठांतर—असदखान।

मनसूर डेरन पुट्ठि में । डेरा किया एक मुट्ठि में ॥
इकजात बाजिनु पै चढ़े । सर सेलु साँगन लै बढ़े ॥
अब आइ सूरज तीर कौं । करि राम राम सुधीर कौं ॥
लखि सो सबै दलु आइयौ । तबही हयंदु मँगाईयौ ॥
चढ़ि सूर बीरन सौं कही । बर जंग लीजति है सही ॥
कहियो चढ्यौ सूरज बली । सबही कही सुभली भली ॥
करिकै निसानन घोर कौ । पियरी धुजा चहुँ ओर कौं ॥२६॥

## कवित्त घनाक्षरी रूपक

जब होत असवार भुव भार के निवारक,
बंदी सरदार बदनेस को कुँवार ।
तब सिनसिनवार दै अवारिया अगार और,
खुँटैला जुझार बीर चाहर अपार ।
पुनि सोगरवार भिनवार नौहवार सूर,
सबै इकसार खिनवार रुतवार ।
सब साजे नर बार भीर भौंगरे उदार चढ़े,
गूदरे गुरार दै दरेर दै सवार ॥ २७ ॥

## हरगीत छंद

रनजीत जीत अनूपसिंहजु हठोसिह अवारिया ।
वह जैतसिंह अरिंग ठाकुर पाखरान सवारिया ॥
बलिराम अरु बलराम बल्लू बीर लालक चढ़ि्ढयौ ।
किसनेस गोकुल राम और प्रताप कूरम बढ़ि्ढयौ ॥
भट मीर मोहनसिंह सूरतिराम सूर कटारिया ।
बर रामचंद्र कुँवार ठाकुरदास सेंगर रारिया ॥
वह समरसिंह चँदेल जादौं सकल धनसिंह गौर हैं ।
अरु उदैभान सुभ्रात स्यौसिंह फतेसिंह जुझौर हैं ॥

वह मिसुर हरनागर उजागर सहित भ्रातन संग में।
चढ़ि कै उदोत अनूपसिंह सुद्विजनु द्विजवर जंग में ॥
अरु बीर लछमनदास पैमा पृथीसिंह उमंग मैं।
जयकृष्न मनसाराम स्यौसिंह लोकमन एक रंग मैं ॥
मतिवंत किरपाराम तोफाराम हरनाराइनौ।
अरु स्यामसिंह सु जैतसिंहहु जंग रंग मचावनौ ॥
औरौ अनेक सु एक मन करि संग सूरजु सोहियौ।
करि ग्वाल बालन संग में मन कृष्न कंसहि कोहियौ ॥२८॥

छप्पय

चंद्रभाल विष भू कराल सुरभोग मंद हँसि।
कंबु कंठ मद कोह रोग रिपु कृपाश्रीय ससि ॥
सुर गज गति सुर-बाजि चढ़िय सारंग धनुष लसि।
कामद गाइ सुकित्ति काम-द्रुम करहि वृषभवसि ॥
रंभादि सक्ति भूषहि प्रभा कौस्तुभ मनि उर उर बसिय।
यों भूरज राखन रतन-जुत सागर सम सूरज लसिय ॥२९॥

छंद अरिल्ल

तीन कोस सूरज भुव लिन्निय। घेरि पठान सबै इक किन्निय ॥
चारिहुँ ओर धूम करि दिन्निय। तऊ पठान रोस नहिं भिन्निय ॥
आस पास दलदल बहु पिक्खिय। यातें रार होत नहिं दिक्खिय ॥
कछू पठान बान दै बुट्टिय। इतहु बान दबान बहु छुट्टिय ॥
ऐसे दोइ तीन दिन बित्तिय। बंगस सुत भेदहि चित चिंत्तिय ॥
बोलि दूत तिहँ बार पठाइय। सूरज पास जाह तू भाइय ॥
मेरा अवल सलाम सुनाइय। पाछें कहना सो सुनि जाइय ॥३०॥

छंद नीसानी

भाई सूरजमल्ल सें कहना यह, भाई।
हम तुम बंदे साह के बुज्झे न लराई ॥

जो तुम संग वजीर कैं, तौ भी नहिं बुज्झै ।
 जमींदार सौं आइकै, जमिंदार न जुज्झै ॥
इस वज़ीर दा संग क्या करना था तुज्झै ।
 जिसकौं अपना गैर का कुछ सोच न सुज्झै ॥
अवल रुहेलौं सैं लरैं काइमखाँ मूवा ।
 तिसौ वख्त सुनि साह सैं यह रुखसद हूवा ॥
जबती करने आइया हम भी यह जानी ।
 बीबी साहब संग लै हूवे अगमानी ॥
जु कछु माल था सो दिया उसने कपठानी ।
 इस जमीन दे रक्खने गंगा बिच आनी ॥
तौ भी हम सैं ना टरा वह नेक बिचारा ।
 ओल दई हम साह कौं कीना निरवारा ॥
कसम खाइकै गंग की यह मुलक बताया ।
 तुमकौं बकस्या साह ने मैं भी फुरमाया ॥
तीप रहकला माल सब लै ओल सिधाया ।
 बैठि जहानाबाद मैं तौ भी न सिराया ॥
नवल राय मर्दूद कौ हम पै सिखलाया ।
 उसने चार्यौं ओर सैं यह मुलक छुड़ाया ॥
तब चारिक खंदे मिले वह मारि गिराया ।
 यह लोभी इस देस दा हम पै खुनसाया ॥
ओल हमारा साह सै लै जिभै कराया ।
 एते पै सब फौज लै देखौ चढ़ि आया ॥
अब इस्सै हमसैं वही जो रब्ब बनाया ।
 करिकै इस इतबार कौं कहि कौन सिराया ॥
हम तौ अच्छै आप सैं यौं कहि पठवाया ।
 तुमसैं हम नहिं लड़ैंगे क्यौं आन दबाया ॥

सफदर जंग नवाब सैं मेरा है दाया।
उसकौं आगैं दै लड़ौ कीजै मन भाया ॥३१॥

## दुपई छंद

अहमद खाँ समझाइ दूत कौं सूरज पास पठायौ।
अपनै स्वामि-काम के काजैं सो सूरज पै आयौ॥
जैसे कही अहंमदखाँ ने तैसे अरज करी है।
श्री सुजान यह सुनि कै भाखी अब तौ रारि खरी है ॥३२॥
अब तौ रारि बनेगी जैसे तैते लरनौ आयौ।
कालिह वजीर हरीफ तुमारो भोरहि आवै धायौ ॥३३॥
ऐसे ज्वाब पाइ सूरज सौं दूत जु निजु सिर नायौ।
करि सलाम अपने आगा कौं ज्यौं कौ त्यौं समझायौ॥
सुनत पठान यहै ठहरायौ जब वजीर कौं देखौ।
अपनी फौज त्यार करि रक्खौ नहीं और सौं लेखौ ॥३४॥

## दोहा

सूरज हू मनसूर सौं कहि भेज्यौ ता बार।
ए पठान मारे धरे जौ तुम होउ सवार ॥३५॥
सुनत कही मनसूर ने सुनियौ सिंह सुजान।
लरना इन पाजीन सैं मुझकौं क्या मैदान ॥३६॥
एती फौज करौ खड़ी जिसका यह उनमान।
घोड़ौं ही की लीद में मारौं आदि पठान ॥३७॥
हिम्मति गई वजीर की ऐसी कीनी बुद्धि।
होनहार जैसी कछू तैसीयै मन सुद्धि ॥३८॥

## सवैया

पुनि यौं सुनि सिंह सुजान बली मनसूर के पास रिसाय गयौ।
अब आप कहा फुरमावत हौ बिन जंग कहूँ अरि जेर भयौ।

अत तौ सब बीस हजारहि हैं फिर लाख जुरैं नहिं जाय हयौ ।
अरु जो तुमरे मन मैं यह बात तौ काहे कौं मोहि अगार दयौ ॥३६॥

दोहा

है मेरी मसलति यहै अब सवार तुम होहु ।
धीरज सौं ठाढ़े रहौ देखौ बजै सु लोहु ॥४०॥
ईसाखानहु यौं कह्यौ मसलति यही नवाब ।
जग बिना क्या मुद्दई मनैं और दबाव ॥४१॥
जे मरने कौं त्यार है तिसकौं फौज करोर ।
करि क्या रुके लड़े बिना चग ब्यार बिन डोर ॥४२॥
सुनि वजीर तैयार ह्वै कही कि होहु सवार ।
सबही लसकर मैं कहौ बाँधैं बेगि हथ्यार ॥४३॥
करि सलाम सूरज कही मोकौं रुखसद देउ ।
आप होहु असवार जब सब चौकस करि लेउ ॥४४॥
करि सलाम सूरज बली आगै कियौ पयान ।
जहाँ मोरचा आपनो आयौ ताही थान ॥४५॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं ।
जानैं दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै ।
मनसूर सूरज चढ़्ढियौ अहमद्दखाँ समुझाइकै ॥४६॥

इति तृतीय अंक ॥ ३ ॥

---

छंद संजुता

तब तो वजीर सितावही । सबकों सुमिसिल बतावही ॥
वह राउ संग अहीर लै । कहुँ सेरजंगहि मीर लै ॥

रमजान खाँ बकसी-तनै । सँग मीर बच्चा सैं सनैं ॥
ए पाँचहू भग आगरे । हो जबरदस्त उजागरे ॥
इसमाइलै बुलवाइकै । नृप हिम्मतै समझाइकै ॥
वह जेरदस्तहिं ओर कौ । रन रुप्पियौ कर जोर कौ ॥
अरु जे भुवालइ संग में । सब राखि पुस्त उमंग में ॥
अरु इसाखाँ पनपाल कौं । सनमुक्ख राखिय ढाल कौं ॥
तिहिंतै अगार जंजाल दै । हथनाल औ गयनाल दै ॥
धरि तासु अग्गय तोप कौं । करि कोप कौं अरि-लोप कौं ॥
सब तैं अगार सुजान हैं । वह जंग रंग निधान हैं ॥
अरु पुट्ठि राखि बहीर कौं । तिहँ संग रक्खिय धीर कौं ॥
बल यौं वजीर बनाइकै । गज पै चढ्यौ वह धाइकै ॥
बहुमान दुंदुभि बज्जियं । भर पूर तूर अवज्जियं ॥
तबही सुभट सब सज्जियं । असमान आस गरज्जियं ॥
फहरी अनत सुहै धुजा । सित स्याम रंग सिती कुजा ॥
मनसूर सूरनु लै चढ्यौ । कलिकाल कोपहि ज्यौं बढ्यौ ॥
इक लक्ख दल है संग मैं । बहु पील पैदल जंग में ॥
खुर थार धूरि उछल्लियं । गति धीर धीर सुचल्लियं ॥
लखि यौं वजीरहिं आवतो । मनु सिंधु भूमि छिपावतो ॥
तबही पठाननु-सैन मैं । करिकै सिलाह सचैन मैं ॥
अहमदखाँ सबसौं कही । ततबीर क्या तुमकौं सही ॥
तब यौं पठाननु भाषियौ । मरना हमैं दिल राखियौ ॥
सुनिकै सुवंग सपूत नै । तबही कह्यौ मजबूत नै ॥
मरना हमैं क्यौं मारना । किस रीति जंग बिचारना ॥१॥

छप्पय

तबहिं मंत्र यह कियौ सबै सरदार रारि हित ।
अलीमहम्मद पूत मीर बक्का लरना जित ॥

सादिल खाँ कौं जंग इसाखाँ सैं नहि टरना।
इसमाइल की तरफ हबसखाँ कौं धुकि परना॥
अरु तुम वजीर जितकौं रहौ रुस्तमखाँ सै यौं कहौ।
हज्जार हक्क पठ्ठान लै सूरज सैं तेगैं गहौ॥ २॥
यौं कहि उठे पठान बान करबान सँभारत।
मनौ रुठे जमदूत भीति भूतन कौं धारत॥
धरि धरि आयुध हत्थ गत्थ के गत्थ उछल्लिय।
दै दै दिघ्घ निसान करत आपुस मैं रल्लिय॥
चल्लिय उछल्लि चहुँ ओर तैं* घुमडि घना घनघोर से।
धरि असित अग्ग नीसान कौं वेई नाचत मोर से॥ ३॥

## दोहा

उत पठान अहमद्खाँ इत वजीर मनसूर।
उद्ध जुद्ध कौं कुद्धि कै रुपे खेत भरपूर॥ ४॥

## छंद हरगीत

भरपूर भेरिभयान भंकि सुनत संकिय कायरं।
दुहुँ ओर पटह प्रचंड बज्जिय मनहुँ गज्जिय सायरं॥
लखि दै निसाननु कुहक बाननु पंच आननके तनं।
हथनाल अरु हयनाल देत जँजाल कालनि के तनं॥
रव धुंधमाँक धमाक धुंधर धडड धुंकत धननन।
धर धूम धामधडाक धद्धर धूम उट्ठिय बननन॥
भभकार भम्भड भडडडं भंकार भग्गत भननन।
कहुँ सननन कहुँ खननन कहुँ भननन कहुँ ठननन॥
इकसार उड़त हजार गोला और गोली छार से।
कहुँ उठत धूम पहार से मनु काल भूजत भार से॥

---

* पाठांतर—अल्लिय कहत।

कुहकंत बान कुहक्कुहं कहुँ होत सद्द धरा धरा।
दिस धुंधरी चकचुंधरी मुसमुंधरी सुबसुंधरा॥
बेहद्द नद्द गरद्द मैं सुदुरद्द कट्टिय आरसी।
लगि गोल सौं गहि गोल फुट्टतु करतु जाम ज्यौं फारसी॥
तहँ जबर जंगनि अंग तें बहु कढ़ति धूम कराल सी।
धुनि काल सी विकराल सी भषु पाइ मीचु डकार सी॥ ५॥

## छंद भुजंगी

सुनें सद्दकौं जुग्गिनी जूह ठट्टे। धए प्रेतपूता लए बाँधि मुट्टे॥
तहीं कालिका काल लै संग धाई। सिवा ईस के धाम मैं यौं बधाई॥
खलं भच्छ गच्छे तजे ग्रेह अच्छे। तिहीं जुद्ध के उद्ध मैं लच्छ लच्छे॥
तहाँ स्याहुरी यौं फिरै ब्याहुली सी। शृगालीनु के हीय में चाहुली सी॥
किती जछ्छुनी गच्छुनी व्यौमरगा। महामींचु हूँ ने लई जागि जंभा॥
चिकारी चहूँ ओर तें चाइ चिल्हीं। धरौं काइरौं कैं सुने माइ ढिल्ही॥
उलू कांचरी टिट्टिभा और कौवा। फिरैं फूल फैले मनौ ए बधौवा॥
हरष्षी धरत्ती हियैं यौं उमाही। तहाँ तेग तेगीन की जंग चाही॥
हुतौ बीच मैं धीर ब्रज-बीर गाढ़ौ। मनौ स्वर्न के वर्न कौ खंभ ठाढ़ौ॥
कछू धीर धारे चले अग्ग बड्ढे। सबै सूर के सूर संग्राम रड्ढे॥
तबै दूत ने धाइ मनसूर पासैं। करी बीनती जोर आ ओर रासैं॥
रुहेले जिने जंग कौं मीर बक्का। इसाखान सौं सादला लेइ धक्का॥
तरफ दाहिनी कौं हबसखान आवै। तरफ आपकी कौं अहंमद्द गावै॥
कही रुस्तमा ने सुनौ बीर भाई। जहाँ सिंह सूजा तहाँ है लड़ाई॥
सुनें दूत को बात मनसूर मानी। तरफ दाहिनी को कमी फौज जानी॥६॥

## दोहा

तब वजीर वा दूत कौं दै इनामु कहि खूब।
जहाँ खड़ा सूरज बली तहाँ जाइया तूब॥७॥

करि सलाम वा दूत ने तबही कियौ पयान ।
धायौ आयौ नौन बस जा थल सिंह सुजान ॥८॥
जो कछु कही नवाब ने सो कहि दीनी दूत ।
सुनत दाहिनें कौं मुर्‍यौ सूरज पन मजबूत ॥९॥
वढ्यौ दाहिनी ओर कौं सूरजमल्ल कुमार ।
बलू बल्लभ गढपती राख्यौ आप अगार ॥१०॥
जैतसिंह और मेव सब दीने ताके संग ।
दै निसान ठाढ़े भए गाँव ओट लै जंग ॥११॥

छंद प्रमानिका

तहीं बलू हला कर्‍यौ । उठाइ शत्रु मैं पर्‍यौ ॥
जडाक दोइ तीन कै । दई कृपान बीनकै ॥
हयंद पाँच सात कौं । कियौ जु आप हाथ कौं ॥
फिर्‍यौ सुफेरि साथ कौं । फते निसान गाथ कौं ॥
सु आइ आपुने वलै । जताइ जुद्ध यौ थलै ॥
उही पठान कुद्धियौ । हियैं बिरुद्ध रुद्धियौ ॥
कही सु जाइ रुस्तमैं । रहे सु बैठि पुस्त मैं ॥
न देखते हवाल कौं । गहौ न तेग ढाल कौं ॥
लड़ौ कि भाग जाइयै । न आब कौं घटाइयै ॥
तबै सु रुस्तमा कही । कहौ सु मोहि है सही ॥
जबै पठान बुल्लियै । हियैं बिचार खुल्लियै ॥
मँगाइयै तुरंग कौं । चलौ चलौ सु जंग कौं ॥
सबै पठान अग्गही । लड़ैं सु साथ पग्गही ॥
पठान बीज होइकै । भजै सु आब खोइकै ॥
लडौ सु नाहि बा फिरै । तिसै सु जान काफरै ॥
जबै सुभाइ यों कही । किए सु रुस्तमा सही ॥
मँगाइ तब्ब पालकी । नहीं सुजंग चाल की ॥

गह्यौ कवान ढाल कौं। लियौ करै रुमाल कौं ॥
बदन्न कौं सुधारिकै। दुहूँ करौ उभारिकै ॥
सुमंत्र आपनौ पढ्यौ। तबै सु पालकी चढ्यौ ॥
कह्यौ सु बीर ता समै। सबै सुनाइ वा समै ॥१२॥

## दोहा

मैं मरने कौं त्यार हौं जो कोइ साथहिं देउ।
काम कहारौं का नहीं हाथ पालकी लेउ ॥१३॥
सुनत पाँच सौ ज्वान ने घोड़े दीने छोड़।
तिनमैं तैं दस बीस ने लई पालकी ओड ॥१४॥
तहाँ पाँच सत पैदरनु लिये हाथ मैं बान।
उनहूँतैं आगैं भये लै लै स्याम निसान ॥१५॥
पाँच हजार सवार ह्वै रहै पालकी पुट्ठि।
काढ़ि काढ़ि तेगान कौं चले जंग कौं रुट्ठि ॥१६॥

## छप्पय

उट्ठ्यौ रुस्तमखान रुठ्यौ पालकी चढ्यौ जब।
षट हज़ार पठान संग आगै पाछै सब ॥
चलिय बीर उच्छल्लि हल्लि करि युद्धहिं धुक्किय।
पाइक चंड चलाक धाइ बानन सब मुक्किय ॥
तिहि पुट्ठि तेग तेगा कढ़े तासु मद्धि रुस्तम लसिय।
मन सहस किरिनि ग्रीषम रितुहि दलबद्दल भीतर धसिय ॥१७॥

## छंद अरिल्ल

प्रथम बीर बल्लू सँग जुट्टिय। तहाँ दवान बान बहु छुट्टिय ॥
सेल साँग सर सररर बज्जिय। मारु मारु मुख तैं भट गज्जिय ॥
तेग तराक तराक तरक्किय। तोरि सनाह करक्कि फरक्किय ॥

तहाँ बीर बल्लू गहि सेलहिं। करिय रेल ह्वै कैं धकपेलहिं॥
तब ही चैन सिंह द्दग दिन्निय। करि उभट्ट आयौ रिस भिन्निय॥
लसि पठान केते भए चालन। तहाँ बीर हाल्यौ नहिं हालन॥
प्रथम सेल पुनि तेग सँभारिय। किते पठान भूमि गहि डारिय॥
स्वामि-हेतु आपुन सिर दिन्यहु। हर ने दौरि आप सिर लिन्यहु॥
तिहिं लखि साहिबराम उमंडिय। तात भ्रात पाछैं जब छंडिय॥
महाबीर रनधीर सपट्टिय। हय झपट्टि अरि ब्यूह लपट्टिय॥
इक्के सेल इक्क हिय पोहिय। साहिबराम रुद्र रस मोहिय॥
फेरि काढ़ि दूजे कै हाथर। लगत पठान लटक्किय ता थर॥
जबही सेल हबक्कन चाहिय। तबही सत्रु आनि सिर वाहिय॥
सेल छोड़ि खग्गहि करि लिन्निय। साहिबराम रोस रस भिन्निय॥
दई सीस अपनौ अरि तक्किय। गर तैं सिर भुव जाइ फरक्किय॥
तबही बान आन उर लग्गिय। तऊ बीर खग्गहि नहिं बग्गिय॥
तजत प्रान नहि आन निहारिय। गिरत गिरत एकहिं गहि मारिय॥
यौं लखिकै खुड्डावह बाभन। करिय एड़ आयौ चित चावन॥
कही साहिबा मो बिनि चल्लिय। आवतु साथ गथ्थ यह भल्लिय॥
यौं कहि बीर धुक्यौ अरि गथ्थहि। किते पठान किये लथपथ्थहि॥
तिनहूँ प्रान दिये तिन सथ्थहि। दुहूँ सूर-मंडल लिय पथ्थहि॥
तहाँ तिलोकसिंह वह तोमर। रुप्पयउ जंग खैंचिकै तोमर॥
निमिष इक्क खुंधार वरष्यिय। तबहीं जान बँदूक धरक्खिय॥
लगत मान गोली के छुट्टिय। परिय भूमि तउ प्रान न बुट्टिय॥
लखिय बीर बल्लू मन मोहिय। भ्रात पूत रन मैं परि सोहिय॥
गहि कर तेग दई अरि सीसहिं। देखैं तौ सँग सुभट न दीसहिं॥
तबही चित्त राज मत आइय। सूरज पास जंग यह ठाइय॥
जबहीं बीर बाग गहि मोरिय। सूरज दृष्टि दई तिहिं ओरिय॥
निकट देखि मातुल सुखरामहिं। तासौं हुकुम कियौ तिहिं ठामहिं॥१८॥

## दोहा

सूरज नै सुखराम सौं कही कि मामा बेग।
जाहु जहाँ हैं चौधरी उड़ी बहुत क्यों रेग ॥ १६ ॥

## सोरठा

यों सुनिकै सुखराम आगैं चल्यौ रवक्कि कै।
बिना सुभट संग्राम देख्यौ आवतु चौधरी ॥ २० ॥

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
जहँ खान रुस्तम भिक्खिबौ कहि अंक चौथौ गाइकै ॥ २१ ॥

इति चतुर्थ अंक ॥ ४ ॥

---

## दोहा

तबही अहमदखान पै खबरि गई प्रभु पाइ।
रुस्तमखाँ करि जंग कौं लीनी फौज उठाइ ॥ १ ॥

## छंद मुतियादाम

अहमद खान सुनी तिहिं बार। कहिय न बीर बजावहु सार॥
तबै सुनि सादलखाँ किय हल्ल। बड़े सरदार महाभट मल्ल॥
तहीं महमंद अली-सुत धाइ। हबस्सखुखान तुरंग दबाइ॥
करी जित दौरि सुबंगसपूत। हुतौ मनसूर जहाँ मजबूत॥
कुहक्किय चारिहुँ ओरन बान। चुहक्किय घामहु मीचु दिसान॥
मुहक्किय नद्द जुहक्किय बाज। लुहक्किय हत्थ हुहक्कि अवाज॥
उमंडिय कोह घुमंडिय धूरि। जुमंडिय रारि पटाननु भूरि॥
भुसंडिय और कुबंडिय साधि। परे दुहूँ ओरन तें भटआँ धि॥

रबक्कि इतै रु उतै धकपेल। बबक्कि बबक्कि भये घमसेल ॥
हबक्कि हबक्कि चलाइय साँग। जबक्किय बीर बियैं दुहूँ आँग ॥
दबक्किय सोइ न चक्किय कोइ। सबक्किय जीय तबक्किय खोइ ॥
जुटंत तहाँ इक इक्कन चंड। छुटंत सु साइक खैंचि कुबंड ॥
फुटंत कपाल कहूँ गज मुंड। तुटंत कहूँ तरिवारन तुंड ॥
कुटंत कितेक भए तन रुंड। भ्रुटंत मुटंत सुटंत निषुंड ॥
घुटंत गरे भट धूमनु भुंड। गुटत हुटंत बुटंत सु झुंड ॥
लराकनि आइ धरा कहि दीन। मरा कहिकै सुभ राँक जमीन ॥
जरा रहियौ बहुर्यौ रिस भीन। खरा कहि खजर मारिय सीन ॥
कराक कराक सनाह कढ़ंत। छराक छराक धरा सुपढ़ंत ॥
सराक सराक सरौ सननाइ। भराक भराक बिदारिय काइ ॥
पराक पराक परें भुज-दड। चराक चटक्कत हाड़ उदंड ॥ २ ॥

## छंद नीसानी

सान भरें फरसान लियैं घमसान करैं।
बान किते किरवान कटे तनत्रान परैं ॥
ठानत इक्क अठान पठाननु आनि भिरे।
खट्टिय खून उखट्टिय हट्टिय नाहिं घिरे ॥
कट्टिय सीस बिकट्टिय चट्टिय श्रौन भरे।
उट्टिय भूरि कबंध्र सुरुट्टिय अंध अरे ।
सक्कन सूर सरक्कत सक्कत लोह लियैं।
तक्कत आवत बक्कत रक्कत रंग कियै ॥
हक्कत हुब्ब हयंद हबक्कत संगर मैं।
चक्कन काइ उचक्कन जक्कन जंगर मै ॥
भुक्कत इक बिभुक्कत कुक्कत कोह सने।
मुक्कत सीसनु साँग सुरक्कत धुक्कि बने ॥

घाइन इक्क घुमाइ अघाइय रत्त बहे।
सत्त रहे नहिं गत्त तऊ तन ग्रीव गहे ॥
दब्बत लुत्थिनु अब्बत इक्क सुखब्बत से।
चब्बत लोह अचब्बत औनित गब्बत से ॥
चुट्टित खुट्टिन केस सुलुट्टित इक्क मही।
जुट्टित खुट्टित सीस सुफुट्टित तेग गही ॥
कुट्टित घुट्टित काइ बिछुट्टित प्रान सही।
छुट्टित आयुध हुट्टित गुट्टित देह दही ॥
अंतनि इक्क अरुझ्झिभ्भात दतनि पीस रहे।
हंतनगत मुरंत अनतन रीस गहे ॥
दंतिनु के गहि दंत चढ़े इक अंतक से।
रंतकि आइ धुरं तकि संत सुरंत कसे ॥
कद्दनि इक्क बिहद्दनि नद्दनि पूरि रहे।
बद्दनि बद्दिय इक्क दुरद्दनि इक्क गहे ॥
मद्दनि मूलि गरद्दनि हद्दनि नाह चहै।
गद्दनि गद्द उमट्टु जु सद्दनि सस्त्र बहे ॥
अंगन श्रोनित रंग किते उतमंग फटे।
तंग कटे भट भंग तुरंगनि टाप बटे ॥
पग परे इक लंगनि अंगनि तेग कटे।
तीर तुफंगनि खंग अरंगनि जंग पटे ॥ ३ ॥

छप्पय

घरी अद्ध अति उद्ध जुद्ध भट कुद्ध कुद्ध किय।
बज्झे सादल हबस बीर उद्गीर रुक्कि लिय ॥
महमदअली तनूज तबहि निज सेन हँकारिय।
तरफ आपुनी जबर जंग दुलकी क्यौं पारिय ॥

सब सुनत रुहेले रोस भरि सहस इक असि खैंचि लिय ।
चल्लिय उच्छ्लि अल्लिय कहत पर-दल्लिय भिल्लिय बल्लिय ॥ ४ ॥
निपट बिकट असिधार निकट उदभट भट आवत ।
दहन गहन बन कूप कूर डरकाइ छिपावत ॥
बाँधत शस्त्र अनेक उदर पालन हित सब कुल ।
सनमुष धाइ सुखाइ और नहिं सुकृत तासु तुल ॥
देही अनित्त मृतु नित्त है बिनु निबित्त परिहै न रन ।
लहि जित्ति कित्ति ज्यौं बित्ति है स्वामि-हित्त यह सूरपन ॥ ५ ॥
यह पन महमदअली तनय भट धरिय जग महँ ।
धाइय होत निसंक संक पारिय पर-दल कहँ ॥
तिहिं लग्गिय भग्गिय सेर जंग बक्का रमजानी ।
राउ बलोच अहीर पिट्ठि दिय तजि दग पानी ॥
लखि चलत चमू बिचलित कटक चकित उजीर सरोस हिय ।
रनधीर इसाखाँ बीर तहँ भीर चीर जंगहि लहिय ॥ ६ ॥

## सारंग छंद

नग्गौं गहैं खग्ग, अग्गो लखे बीर । भग्गो किते चाहि, खग्गो किते धीर ॥
रुप्प्यो इसाखानु कुप्प्यो लखै जंग । रंगे किते औन अंगे किते भंग ॥
हूवे सुभेले रुहेले महा चंड । ले ले कहे तेग रेले दिये दंड ॥
संनावते इक्क फंनावते बान । खंनावते खग्ग घनावते आन ॥
ढंनावते ढाल मनावते मुच्छ । ठंनावते मुंड गंनावते गुच्छ ॥
झंनावते साँग संनाह कौं तोरि । धनावते धिग बंदूक दै मोरि ॥
तनावते चाय घुम्मावते सेल । लनावते सूर हूवे घलामेल ॥
धक्के परे ते धुकाए धराधीर । झक्के करे फौज सक्के नहीं बीर ॥
पैठे रुहेले सकेले घनौ कोह । खग्यो इसाखान पग्यो महा छोह ॥
तेगा झरे झंन जेगानु पै ठन । लेगा कहैं एक देगा रटैं रंन ॥
जुट्टे झमाझम्म देते धमाधम्म । केते गमागम्म लेते दमादम्म ॥

बाजौं चढ़े नेज बाजौं खमाखम्म । लाजौं लपेटे दराजौं घमाघम्म ॥
तीरौं जटे इक्क बीरौं गहे खग्ग । खग्गें कटे धाइ तीरौं जुटे अग्ग ॥
धक्का धुके इक्क हक्का रटैं नीठि । सक्का भए औन भक्का अवैं पीठि ॥
चक्का दचक्का मचक्कान दे सूर । लक्कानु के रूप लेटे भये चूर ॥
खंडे कहूँ हत्थ हंडेनु से मुंड । डडेनु के भेस चडे भुजा झुंड ॥
कंधे टुटे इक्क अंधे फुटे नैन । चुंधे भये इक्क धुंधे रुकै रैन ॥
अंधे कबंधे दुरंधे करे अंग । संधे सुगंधेनु कौं पाइकै जंग ॥
फट्टे कहूँ पेट कट्टे कहूँ अंत । धट्टे किहू पग्ग कट्टे किहूँ दंत ॥
कट्टे सपट्टे लपट्टे हटे नाहि । रट्टे मुखौ मारु खट्टे खरे खाहि ॥
कत्तेन सौं देह लत्ते करे खेत । रत्ते रकत्ते लरत्ते बिना चेत ॥
तत्ते भये इक्क पत्ते कहैं जुद्ध । घत्ते किहू लत्त मत्ते महाकुद्ध ॥
सीसे सरीसे सुदीसे फुटे सीस । रीसे कहूँ दाँत पीसे कढ़े खीस ॥
जी से गये एक खीसे रहे डारि । तीसे तनौ इक वही से गए हारि ॥
पिल्ले रुहिल्ले सुभिल्ले करी पास । भिल्लयौ इसाखान भिल्लयो नहीं त्रास ।
खिल्ले खरे खग्ग गिल्ले भए रत्त । छिल्ले घनें गत्त बिल्ले नही मत्त ॥
बुल्ले कुजा हस्त इस बख्त मंसूर । बुल्लयौ इसाखान मन खेत में पूर ॥
यौं भाखते राखते ज्यौं कढ़ी ज्वाल । सब्बै रुहेले किये नैन यौं लाल ॥
त्यौंहीं इसाख्खानहूँ खैचि कमान । तानें घनें बान तानें धरें सान ॥
माने जने ते अमाने रहें संग । काने जने ते न जानें कहाँ जंग ॥
हथ्थी चढ़यौ हथ्थ हथ्थौं मड्यौं बीर । मथ्थी किती सेन सथ्थी कटे तीर
तब्बै रुहेलेनु लै लै करी रेल । खेलैं मनो फागु देले भये मेल ॥
कोई चढ्यौ दंति दै दंत पै पाउ । काहू गही पुच्छ की राह कै दाउ ॥
केती छुनाछुन्न बाजी तहाँ तेग । मानो महा मेघ मैं चंचला बेग ॥
किन्नो, इसाखान कौं मारिकै चूर । कट्टयो तऊ सीस हट्टयो नहीं सूर ॥
हाथी सुधां सब्ब हाथी पर्यो खेत । सग्राम मैं स्वामि के काम के हेत ॥
कुट्ट्यौ इसाखान लुट्ट्यौ धरा पिट्टि । बुट्ट्यौ लखै छुट्टि मंसूरहू निट्टि ॥

मंसूर कौ भागनौ सो कहै कौन। मानौ घटै गौन लागै महा पौन ॥
अस्सी सहस बाज छोड़ी सबै लाज। जैसे कुलंगा बुटैं देखते बाज ॥
जा खेत मंसूर भग्ग्यौ सु धाँ मीर। ता खेत सूजा रुप्यौ है महाधीर ॥७॥

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानें दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
जुज्झियौ इसखाँ भग्गियौ मनसूर पंचम गाइ कै ॥८॥

इति पंचम जंग ॥ ५ ॥

---

## चंचला छंद

तथ्थही समथ्थ सथ्थ रुस्तमाँ करी सुहल्ल।
सामुहें बिलोकियौ सुजान बीर है अटल्ल ॥
चल्लियौ वजीरहू तऊ न हल्लियौ सुजान।
रल्लियौ उठाइ बेगि दल्लियौ घनै पठान ॥
पल्लियौ ब्रजेस पैज मल्लियौ महो समान।
खिल्लियौ सबै सु खेल हल्लियौ खुमान खान ॥
खान रुस्तमाँ पठान भान सौ सुजान कुद्ध।
उद्ध जुद्ध कारने दुहूँ रहे बिरुद्ध रुद्ध ॥
काल से कराल बीर आवते उताल चाल।
ब्याल से करै क्रवाल घालते बिसाल भाल ॥
हाल से हवाल एक धावते धरन्नि पिट्ठि।
लाल नैन ज्वाल झाल सी झरी दुसाल दिट्ठि ॥
काढ़ि काढ़ि तेग कौं सबेग बीर धाइ धाइ।
सारि वाहि खेत गाहि पैठियौ सुबीच आइ ॥

जब्बही धसे पठान तब्बही कितेक बीर ।
दब्बही हयंद अग्ग नब्बही कमान तीर ॥
ता समैं हरी जु सिंह चैनसिंह सौं सुनाइ ।
सेल लै करी सुरेल सत्रु कौं दियौ घुमाइ ॥
एक कौं पटक्कि फेरि दोइ कौं झटक्कि दीन ।
त्यौं अचान बान लागि झट्ट दै पर्‌यौ जमीन ॥
ज्यौं मुहक्कमाँ अमान सार धार कौं सम्हारि ।
मारु मारु भाखियौ दवारि ज्यौं अरीनु जारि ॥
यौं अपार देत मार आइयौ पठान सब्ब ।
ता समैं कितेक अग्ग ह्वै गये कितेक गब्ब ॥
आगिले भये पछार पाछिले भये अगार ।
को हरौल को चँदौल ना रही कछू सम्हार ॥
भूरि धूरि धार मैं झमाझमी बजंति तेग ।
सेल साँग टूटही जु जूटही तजंत बेग ॥
इक्क सीस फुट्टिगे सु लुट्टिगे धरा धराक ।
तुट्टिगे चरन्न इक्क कुट्टिगे कराकराक ॥
बुट्टिगे कपूत धूत खुट्टिगे हथ्यार हथ्थ ।
घुट्टिगे सरीर भीर गुट्टिगे सुलथ्थ पथ्थ ॥
बज्जई क्रवाल ढाल गज्जई सुमारु मारु ।
तज्जई तुरीन सद्द सज्जई हथ्यार डार ॥
गज्जई गरूर सूर भज्जइ अनेक कूर ।
रज्जई कितेक घाइ व्है गये सुभूर चूर ॥ १ ॥

## कवित्त

गरद मसान किरवान बरछा बानन तें
रुस्तमखान घमसान घोर करतौ ।

कहूँ रहैं मुंड कहूँ तुंड भुजदंड झुंड
कहूँ पाइ काइ फर मंडल को भरतौ।
सेल साँग सिप्पर सनाह सर श्रौनित मैं
कोट काट डारे धर पाइ तौ सौ धरतौ।
हरतौ हरीफ मान तरतौ समुद्र जुद्ध
कुद्ध ज्वाल जरतौ अराकनि सौ अरतौ ॥ २ ॥
गरद गुबार मैं अपार तरवार धार
मानौं नीहार मैं किरनि भीर भान की।
कहरि लहरि प्रलै सिंधु मैं अधीर * मीन
मानौ धुरवान मैंत मक तड़ितान की।
दावानल † ज्वाल है कि ज्वाला कौ अचल चल
ऐसी जंग देखी तहाँ प्रबल पठान की।
भृकुटी भयान की भुजान की उभय सान
मंगल समान भई मूरति सुजान की ॥ ३ ॥

## दोहा

रुस्तमखाँ सनमुख लख्यौ करि सुजान दृग लाल।
कालजमन के काल कौं ज्यौं मुचकुंद भुवाल ॥ ४ ॥

## छप्पय

झलझलात रिस ज्वाल बदनसुत चहुँ दिसि चाहिय।
प्रलय करन त्रिपुरारि कुपित जनु गग उमाहिय ॥
तिहिं लखि सब ब्रज बीर उमड़ि गन जिमि रंगनिधरि।
अंगनि भरे उमंग जंग हित भुवभंगनि करि ॥

---

* पाठांतर—अधीन।

† पाठांतर—ज्योतिन को।

दै अग्ग पग्ग फरमग्ग मैं रग्ग बग्ग सायुध धइय ।
लै लै दवान मैदान मैं सब अमान सनमुख भइय ॥ ५ ॥
दै धमाँक धंनाक धूम धुंकार धराधर ।
धरधरात धरधाम धमक धुकि जात पराधर ॥
उठिय धूम अति प्रबल मनहुँ नीहार बितानिय ।
मनहूँ गुंग कौ मिलन सूरतनया तररानिय ॥
इमि घोर मारु चहुँ ओर दै फेरि सेल साँगहिं लहिय ।
सरसान सिरोही सिप्परनु सूरज के सूरनु गहिय ॥ ६ ॥

## पद्धरी छंद

गहि सेल साँग समसेर ढाल । धाए सुजान भट रन कराल ॥
बड़हत्थ बलू बलिराम बीर । महमद पनाह वह मीर धीर ॥
गहि गौर सुगोकुलराम सेल । परताप कमठ-कुल करिय रेल ॥
सूरत सुराम वह कुसल पूत । अर्जसिंह सिंह रन में सपूत ॥
सुखराम सँभरि सब सहित सूर । हरनाराइन सामंत पूर ॥
किय हल्ल सुपाखरमल्ल तथ्थ । अरु रामचद्र तोमर समथ्थ ॥
बाला सोगरिया सहित सथ्थ । गहि सेल सुतोफाराम हथ्थ ॥
जैकृष्न सुमंसाराम सग । रनसिंह सुधाइय रन अभंग ॥
हय दब्बिय ठाकुरदास जब्ब । धनसिंह गौर धाइय सुगब्ब ॥
अरु पेमसिंह पृथिसिंह धाइ । वह स्यामसिंह उठ्ठिय रिसाइ ॥
स्यौसिंह बीर हिय धारि क्रोध । पुनि स्यामसिंह बलवान जोध ॥
वह जैतसिंह सेवा तनूज । द्विज उदैभान स्यौसिंह-अनूज ॥
मतिवंतसिंह मोहन उदंड । हरनागर बहु बीरन प्रचड ॥
हुव माथुर कुल जाहर जहान । उद्धत अनूपसिंहहु अमान ॥
कुल कौ उदोत धाइय उदोत । जैसिंह सिंह सम कौन गोत ॥
प्रोहित प्रचंड घमँडी अमान । सुत चंदभान सम चंद्रभान ॥

अरि लोप करन वह लोकमन्नि । सुगरा सम्हारि साँगहि करन्नि ॥
किसनेस बीर पुहपा कुँवार । सुत सारदूल धाए उदार ॥
सावंत सूर औरौ अपार । सूरज अगार ह्वै करी मार ॥
लखि रुस्तमखाँ आवतु रिसान । उतमें पठान अति क्रोध ठान ॥
इत श्रीब्रजेस बीरहु अमान । तिन भई परस्पर जंग जान ॥
ज्यौं दैत्यदेव बलि इंद्र मान । सररात बान घर घोर धान ॥
फररात तीर अहिपूत मान । छररात गात तैं कढ़ि भयान ॥
खररात सेल बखतरन तोरि थररात तेग चिलतहनु मोरि ॥
ठहरात कोइ भहरात कोइ । हहरात इक्क झहरात जोइ ॥
कहुँ झरत बाहु तरवार सेल । झुकि परत कहूँ पर घाव झेल ॥
झटकंत इक्क गहि गहि भुजान । खटकत खग्ग बखतरनु भानि ॥
कटकंत सीस लटकत पुट्ठि । मनु केतु राहु सौं चलिय रुट्ठि ॥
हटकत हूल करि हूह सद्द । सटकंत सरोही बिय मरद्द ॥
पटकंत बीर गहि साँग जोर । अटकंत नही असि लागि घोर ॥
गटकंत रुधिर जे कटिय जाव । ठठकंत इक्क लगि मर्म घाव ॥
छुटकंत धरनि भट ह्वै अचेत । नटकत मनहुँ महि कला लेत ॥
चटकंत सुभट जे परिय टूटि । घटकत प्रान इक पेट फूटि ॥
झटकानि उड़त उतमंग उद्ध । नटबटा फिरावतु मनहुँ सुद्ध ॥
फटकान फटकि असि चलत घोर । मानहुँ अलात मंडल अछोर ॥
लटकान लेत घाइल सुमार । पटकानि पटक इक बिन हथ्यार ।
चटकानि भरत गटकानि लेत । घटकानि घटक श्रोनित समेत ॥
खटकानि करत सर सेल टोप । लटकानि भिरत भुव भरत ओप ॥
मटकानि सरिस मुंडनि बगाइ । सटकानि सटक भुज पाइ काइ ॥
कै देहु देहु भिय लेहु लेहु । बरसंत सार उर भरे तेहु ॥
सिविका सवार रुस्तम पठान । नरवाहन ज्यौं पुष्पकबिमान ॥
तिहँ संग बीर पलभच्छ जच्छ । करि घोर मार भुव परे दच्छ ॥

इक तीर पीरह्न वे गरक्क। कटि कटे इक्क धर पर फरक्क ॥
असि देत लेत ब्रज बीर धाइ। तहँ रुस्तमखाँ किय घोर घाइ ॥७॥

छंद त्रिभंगी

लखि रुस्तमखाँ कौ करि करि हाँकौ सब भट बाँकौ असि झारी।
पालकी बिदारी भुव पर पारी उनिवा ढारी कर धारी ॥
तबही पठनेटे लोह लपेटे देन चपेटे हथ्थ करे।
देते गनि झटके साँगनि सटके खंजर खटके रत्त भरे ॥८॥

छप्पय

कर्‌यौ जुद्ध अति उद्ध सुद्ध भट स्वामि-काम पर।
उट्ठिय भूरि कबंध लुट्टि केतेक धराधर ॥
बिना मथ्थ बिनु हथ्थ काइ बिनु पाइ फरक्किय।
कढ़ै दंत कहुँ अंत लुथ्थि पर लुथ्थि अरक्किय ॥
तिहिं देखि खान रुस्तम बली कूदि पालकी तैं परिय।
तहँ कछु पठान तिहि अग्ग ह्वै लहि खग्गहिं जंगहिं करिय ॥ ९ ॥

छप्पै अभिराम

गज्जिय भट बज्जिय कवाल तज्जिय पठान तन।
सज्जिय रिस भज्जिय न कोइ मज्जिय सुपाथ गन ॥
झरिय सार तिहिं पर, अपार मुख मारु मारु रर।
ज्यौं पहार पर जलद धार बरसंत साँग सर ॥
अटकेनु पटक झटकेन सौं, ब्रजबीरनु रन उद्धरिय।
उदभट पठान मैदान मैं, रुस्तमखाँ बिनु सिर करिय ॥ १० ॥

कवित्त

गेंदा से गुलफ गुलमेहँदी से अंत भार
कुणपकलित तास खोपरी सुभाल की।
नासा गुलबासा मुख सूरजमुखी से भुज
कलगा बधूक ओठ जीव दुति लाल की।

कोकनद कर ज्यौं करन गुलकोकन से
इंदीवर नैन बाल जाल अलि-माल की।
पानी किरवानी सौं हरवानी कर सूरज कै
पर-भूमि फूली फुलवारी मानौ काल की ॥ ११ ॥
एकै एक सरस अनेक जे निहारे तन
भारे लाज भारे स्वामि-काम प्रतपाल के।
चंग लौं उड़ायौ जिन दिल्ली कौ वजीर भीर
पारी बहु मीरनु किए हैं बेहवाल के।
सिंह बदनेस के सपूत श्रीसुजानसिंह
सिंह लौं झपटि नख दीने करबाल के
वेई पठनेटे सेलु साँगन खखेटे भूरि
धूरि सौं लपेटे लेटे भेटे महाकाल के ॥ १२ ॥

छंद त्रिभंगी

रुस्तमखाँ अंगे बिन उतमंगे लखि भट जंगे छोड़ि गए।
अति संकहि मानैं नहिं समुहाने तजि तजि बाने बिकल भए।
ज्यौं टूटत बंधैं जात कबंधैं क्यौं फिर संधैं खीन खए।
ब्रजबीर अवाने देत धवाने सब मरदाने पिट्ठि भए ॥ १३ ॥

दोहा

चढ़े पिट्ठि दस कोस लौं सब ब्रजबीर अवान।
फते पाइ सूरज बली ठाढ़ौ ता मैदान* ॥ १४ ॥
रुस्तमखाँ सुर मान सौं भाग्यौ जाही खेत।
दै असीस जदुबंस कौं ईस नच्यो गति लेत ॥ १५ ॥

सवैया

आइ परे सु उछाह भरे नहिं नेकु डरे रस बीर बिलासी।
खाइकै घाइ अघाइ गए तरवार की धार लही तिनुका सी।

---

* पाठांतर—खड़ौ खोलि नीसान

सूदन सोई सराह करै मुख तें उचरै धन रे ब्रजबासी।
तोहि असीसत सिंह सुजान पठान भए जे बिमान के बासी॥ १६ ॥

### सोरठा

यह अचरज की बात दोऊ जीते जग में।
उत पठान हरखात इत सुजान नरसिंह सौं॥ १७॥

### दोहा

रुस्तमखाँ तन दै छुट्यौ भाजि छुट्यौ मनसूर।
अहमदखाँ सूरज बली दुहूँ रहे मगरूर॥ १८॥

### छप्पय

जहाँ मीर मुगलान सेख सैयद पठानगन।
तहाँ खान सुलतान राउ राजा उद्धत मन॥
छोडि छोड़ि गज बाजि साज तजि लाजन भग्गिय।
सहित सैन मनसूर जात पलकौ नहि लग्गिय॥
लखि सनमुख प्रबल पठान कौं इक लक्ख हय पिट्ठि दिय।
तिहिं खेत खगिय सूरज बली जंग जित्ति जय पत्ति लिय॥१६॥

### दोहा

साठ सवारनु सौं खड़ौ रन में सूरज सूर।
तहाँ खबर पाई यहै भग्यौ कूर मनसूर॥ २०॥
भग्यौ सुन्यौ मनसूर जब सूरज मन रिस धारि।
फिर पठान सौं जंगहित चल्यौ सेल पटतारि॥२१॥
उद्धत जानि सुजान कौं जुद्ध हेत ब्रजबीर।
अरज करी कर जोरिकै ज्यौं समुझै रनधीर॥ २२॥

### सोरठा

सुनि महराज कुँवार ए पठान दस सहस हय।
इत मै साठ सवार कहा रारि कैसे बनै॥ २३॥

## छंद पद्धरी

अरु कहत बड़े लागहु प्रमान। है जुद्ध रीति दुहुँ बल समान॥
दस पाँचहु की बरनी सुजग। सत एक भिरैं यह नहिँ प्रसंग॥
अरु आप फौज पहुँची अगार। भग्गो पठान तिनके पछार॥
जब लग्गि सुभेले होइ सब्ब। तब लग्गि रहौ इक ओर अब्ब॥
इमि सुनत कुँवर बर नरनुनाह। बिरम्यौ पलास बन की सुछाँह॥
लखि पीत धुजा पुच्छिय पठान। इह खेत कौन खग्गिय अमान॥
तब कही दूत यह है सुजान। जिनि रुस्तमखाँ खाइय पठान॥
सा सुनत कही अहमंदखान। सनमुख न जाउ इसके पठान॥
इत सूरज तूरज कौं बजाइ। इक जाम तहाँ बिसराम पाइ॥
अपनी अनीक की राह देखि। यह कही सिंह सूरज बिसेखि॥
मम फौज कौन बिधि मिलै आइ। सोई उपाय कीजै बनाइ॥
तब अरज करी सबही सुनाइ। कालिंदी पै इकन कौ आइ॥
जो आह कही तौ कहत एहु। चलि कारो सरिता तटहिं लेहु॥
यौं सुनत सिंह सूरज गँभीर। कीनौ पयान गति धीर धीर॥
निसि एक बसे तिहि तीर पास। सत दोइ सुभट हुव निकट जास॥२४॥

## दोहा

तहाँ खबरि निज फौज की पाई सिंह सुजान।
कछूक मैंडू मैं रही कछूक मथुरा थान॥ २५॥
त्यौहीं सुनी वजीर नैं दिल्ली कियौ पयान।
तब आयौ निज देश कौं आपनु सिंह सुजान॥ २६॥

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान है।
जानैं दिल्ली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं

ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै।
रन माँझ बिजिय रुस्तमाँ छुट्यौ सु अंक सुनाइ कै ॥२७॥

इति षष्ठ अंक ॥ ६ ॥

---

## सोरठा

मुख गयंद सिर चंद दुति अमद वंदन धरें।
जयति जयति भवनंद दुख-निकद आनंदकर ॥ १ ॥

## दोहा

साहि जहानाबाद में जाइ फेरि मनसूर।
लिखि भेज्यौ मल्लार कौं आओ आप जरूर ॥ २ ॥
अर्ध लक्ख हय लै चल्यौ दच्छिन तैं मल्लार।
खबर पाइ मनसूर फिर डेरा कियो अगार ॥ ३ ॥

## मालती छंद

फिर्यौ मनसूर, कियौ बल पूर। कढ्यौ करि कोप धरें बहु तोप ॥
करै सनमान बुलाइ सुजान। कियौ बहु मान वजीरहिं आन ॥
लियौ सु अगार सुजान कुँवार। कियौ सुपयान दुहूँ बलवान ॥४॥

## आभीर छंद

पुनि उतरि पार जमुना अपार। उत में पठान हुव सावधान ॥५॥

## दोहा

एक ओर मल्लार दलु दूजैं सिंह सुजान।
उतहि रुहेले अग्ग धरि सनमुख भए पठान ॥ ६ ॥
चहूँ ओर धौसान के छाए सद्द अहद्द।
मनहुँ गंग के मिलन कौं आयौ सिंधु बिहद्द ॥ ७ ॥

दोइ जाम बीतन लगे खड़े सुभट बिनु जंग ।
तब सुजान के दलबलनु आगैं करी उमंग ॥ ८ ॥

## तोमर छंद

करिकै उमंग अगार । सरदार सिनिसिनवार ॥
गहि सेलु साँगनु हत्थ । लहिकै बँदूकनि सत्थ ॥
उततैं कुहक्किय बान । इत सेल साँग कृपान ॥
दल दक्खिनी इक ओर । बिय ओर जदु-कुल जोर ॥
तिन सौं रुपे बलवान । ठानै अठान पठान ॥
रव धुँधमाक धनाक । सर सेल साँग झमाक ॥
रस धूँधरी दिग चारु । मुख सद्द मारुहि मारु ॥
दल दक्खिनी करि रल्ल । भिलि गए लै भुज भल्ल ॥
झमकी झमाझम तेग । घन माँहि दामिनी बेग ॥
धरि मुच्छ गुच्छनि ताउ । इक लेत सीसनि घाउ ॥
इक तानि बान कमान । धरि कान के उनमान ॥
तकि देत सीस भुजान । तन-त्रान बेधत जान ॥
जुटि सक्ति सौं गहि सक्ति । तन फोरि बोरिय रक्ति ॥
असिवार सौं असिवार । निज वार सौं निज वार ॥
फरसानि सौं फरसानि । बरछानि सौं बरछानि ॥
करि चोट सिप्पर ओट । कहुँ होत लोट कपोट ॥
छुत जात गात अन्हात । भहरात फिर झुकि जात ॥
पुनि उट्ठि मुट्ठिय बंधि । असि देत रोसहिं अंध ॥
किलकार पार अपार । इक कहत डारि हथ्यार ॥
उचटंत चर्मनि फूल । तन तूल ही के तूल ॥
सननात सेल सनाह । खननात खग्ग सिलाह ॥
सर छोड़ि छोड़ि रटंत । इक ओड़ि ओड़ि हटंत ॥
करिकै महा घमसान । खगि रहे खेत पठान ॥ ९ ॥

## दोहा

उत तैं धायौ ताँतिया इत तैं सिंह सुजान।
दुहूँ दबटि दल मैं परे जिहिं थल रुपे पठान ॥ १० ॥

## छंद कंद

बली सिंह सूजा करी रौर जा ठौर।
जहाँ खेत खूनी पठानौं करी दौर ॥
कितेकौ धमंकी धमाधम्म बंदूक।
कितेकौ गए लूकि केते गए सूक ॥
किते बीर दै तीर चीरैं घनी भीर।
मिलै छीर मैं छीर ज्यौं नीर मैं नीर ॥
बजै दुंदुभी औ गजै मारुही मारु।
महा धूरि मैं सद्द मानौ भुजै भारु ॥
चलैं सेल साँगैं घलामेल है सूर।
भलैं रे भलैं रे रह्यौ सद्द यौं पूर ॥
झनक्कै झमाझम्म तेगा धरे सान।
ठनक्कै ठनाठन्न तनत्रान पै बान ॥
भरैं कोहलैं लोह धाए बिना मोह।
रँगे रक्त में गत्त बाढ़े महा छोह ॥
जुटै इक सौं इक औ दोइ सौं दोइ।
कहूँ सोट से लोटपोटौं रहे सोइ ॥
कटे झुंड झुंडा फुटे भाल सों लाल।
खुसी हाल ह्वैकै नच्यौ काल दै ताल ॥
कहूँ पाइकै धाइकै साइकै संधि।
परे आइकै चाइकै छाइकै अंधि ॥
खुटे खग्ग हथ्थौं जुटे बीर संग्राम।
लुटे स्वामि के काम संग्राम के धाम ॥

बहैं तेग तेगा सहैं सूर सावंत।
झरैं श्रौन धारा परैं पेट तैं अंत॥
कहूँ खंड खंडे भुजा दंड औ मुंड।
दुरे रुंड पै रुंड और डुंड पै डुंड॥
झरी फुलझरी सी झमाझम्म समसेर।
करी कौंचकी सी परी ढेर की ढेर॥
सपट्टे लपट्टे झपट्टे भरैं तेह।
परें बान किर्वान बरछुन्न के मेह॥
गहै हत्थ सौं हत्थ औ मत्थ सौं मत्थ।
भरै बत्थ सौं बत्थ लेटे लथापत्थ॥
रुहेले पठानो करी यौं घरी मारु।
बली बीर जट्टौं बजायौ घनौसार॥
कटे भू पटे सोहटे खेत पट्ठान।
जहाँ सिंह सूजा कर्यौ घोर घमसान॥
परे चारिहू ओर तैं दक्खिनी टूटि।
भजे खेत पट्ठान लीने कछू लूटि॥
फते पाइ सूजा खड़ौ खोलि नीसान।
नमै भानि ऊ औ महासान सौं भान॥ ११॥

दोहा

जंग जीति सूरज बली आयौ जहाँ नवाब।
तब वजीर पट्ठान पै आगैं कियौ दबाव॥ १२॥

कवित्त

सेलनु धकेला तें पठान मुख मैला होत
केते भट मेला हैं भजाए भ्रुव भंग मे।
तग के कसैं तैं तुरकानी सब तंग कीनी
दंग कीनी दिल्ली औ दुहाई देत बंग मे।

सूदन सराहत सुजान किरवान गहि
धायौ धीर धारि बीरताइ की उमग में।
दक्खिनी पछेला करि खेला तै अजब खेल
हेला मारि गंग मैं रुहेला मारे जंग में ॥ १३ ॥

छप्पय

है कलकान पठान समौं मन माँहिं बिचार्यौ।
करि मलार सौ संधि बखत आपनौ गुदार्यौ ॥
तीन भाग भुव करी एक मनसूरहि दीनी।
एक दई मल्लार एक अपनी करि लीनी ॥
उलट्यौ उजोर दिस पूर्व कौं गंग तीर की राह गहि।
पर-दल बिदारि परदस तै श्रीसुजान आयौ घरहि ॥ १४ ॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान है ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
पुनि गंगपार पठान मारिय अंक सप्तम गाइकै ॥ १५ ॥

इति सप्तम अंक ॥ ७ ॥

सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री ब्रजेंद्रकुमार सुजानसिंह
हेतवे कवि सूदनविरचिते सुजान-चरित्रे पठान युद्ध
उभय वर्णनो नाम
चतुर्थ जंग
समाप्त ॥४॥

# पंचम जंग

## छप्पय

अनकप- आनन अमल कमल-कर कोस-दोस हत ।
औषधीस सुभ सीस कोटि तैंतीस करत नत ॥
हंस अस-अवतंस-बंस भवभच्छि उजागर ।
एक दसन सुचि बसन रसन नवनिधि-सिधि-सागर ॥
जगमात-तात उतपातहर जगविख्यात मोदक असन ।
रवनीय रवन वानीवरद जयति जयति मूषक-लसन ॥ १ ॥

## दोहा

ब्रह्म सिद्धि धरि बिदु निधि बरष गतागत माह ।
घासहरे पैं कोप करि चढ्यौ सूर नरनाह ॥ २ ॥
हुतै नगरपुरहूत कै सूरज सफदरजग ।
दोउन मिलि मसलति करी करनौ जो जो ढग ॥ ३ ॥
तब वजीर मनसूर ने कही कि सिंह सुजान ।
जिन्हौं न मुझकौ तन दियो तिन्हैं करौं बिन जान ॥ ४ ॥
अवल मुझै बडगूजरै ताखत करना जानि ।
रफते रफते और भी रहे मुखालिफ भानि ॥ ५ ॥

## मल्लिका छंद

यौं कही वजीर, धीर । बुझियौ सुजान बीर ॥
जो कछू कहै नवाब । ताहि कीजियै सिताब ॥
साहि कौ हुकुम्म लेउ । आपुही मुहीम देउ ॥
सो वजीर चित्त धारि । साहि पै गयो बिचारि ॥
सीसु नाइ कै सलाम । भाषियौ अनेक काम ॥
साहि के हरामखोर । ते बढ़े मरोर जोर ॥

यौं सुनी दिलीस तब्ब । बोलियौ तबै सगब्ब ॥
चाहियै तुझै नवाब । ताहि कीजिये सिताब ॥
साह कौ हुकुम्म पाइ । आपने अवास आइ ॥
श्रीसुजान को बुलाइ । यौं नवाब ने सुनाइ ॥
साह ने तुझै सराहि । एक बंदगी सुचाहि ॥ ६ ॥

## दोहा

हुकुम साह कौ है यही तुम कौं सिंहसुजान ।
राउ बहादुरसिंह कौं ताखत करनौ जान ॥ ७ ॥
सरोपाव समसेर दै फुरमायौ मनसूर ।
घासहरे पै कुवर जी जाना तुमै जरूर ॥ ८ ॥

## चौपाई

हय गय सरोपाउ समसेर । लै सुजान कीनी नहिं देर ॥
करि सलाम निज डेरन आइ । कर्यौ कूच दुंदुभी बजाइ ॥
उतरि पार कालिंदी तीर । डेरा करै समौंगर बीर ॥
कोल माँझ बैठ्या सुनि राउ । ताकौ करन सुजान उपाउ ॥
ऐसौ कछू ब्यौंत चित धरिए । याहि घेरि घासहरैं करिए ॥
थोरी चमू आप ढिग देखि । लिख्यौ देस कौं पत्र बिसेखि ॥
श्रीब्रजराज राज सिरताज । अपने आप सुधारन काज ॥
देखत पत्र सीख दै लालै । सुन जवाहरै सहित रसालै ॥
और देस में जो कछु सैन । ताहि भेजियौ कहिकै बैन ॥
पत्र बचाइ तुरत ब्रजपाल । बोल्यौ सिंह जवाहर हाल ॥
सीख दई ब्रजपति ने जबै । सूजा पास जाहि तू अबै ॥
जौ कछु फौज देस की और । पीछै भेजौं तेरी गौर ॥ ९ ॥

## दोहा

सीख पाइ बदनेस तैं सिंह जवाहर बीर ।
करि सलाम ताही घरी साजी सैन गँभीर ॥ १० ॥

## कवित्त

कर रकवाहे किलबाकी कुही काबिल के
खुरासानी खंजरीट खजन खलक के।
गूढ़ गिलगिली गुलगुल से गुलाब रंग
चहर चगर चटकीले है बलक के।
अरदा औ जाँग जिरही से जग जाहर
जवाहर हुकुम सौं जवाहर झलक के।
मंगसी मुजन्नस सुनौंची स्यामकर्न स्याह
सिरगा सजाए जे न मदिर अलक के॥ ११ ॥

## छंद नाराच

सज्जियै तुरंग ते कुरंग गौंन गजनै।
परिंद-मान भंजने नरिंद-प्रानरंजनै॥
सुरंग स्याह से लिया दुरंग बोज केहरी।
कुमैत संदली दुवाज हैं सुरक्ख जेहरी॥
कुला समंद सूर से सजाव खिंग हैं हरे।
गरा गुलाब आननें अनेक रंग जे भरे॥
नवीन जीन कीनते अरीनु मान खंडनै।
दिगीस हीसके करैं ब्रजेस-ग्रेह मंडनै॥
किते पदाति जाति राति रूप तें भयावनैं।
कितेक लाल पोस आसपास के सुहावनैं॥
किते जलाल दार आबदार लावदार हो।
किते निसान बानसान के भरे तयार हो॥
अनंत रथ्थ सथ्थ ही मनौ सुचंद भान के।
भरे बिलंद सान मान ढाहने बिमान के॥
बिसाल लाल पालकी अनेक नालकी सजी।
चमू सुचारि रंग की अनेक रंग ह्वै गजी॥ १२ ॥

## छंद त्रिभंगी

गाढ़े गढ़-गजन सुर-गज-भंजन मानहुँ अंजन-गिरि राजैं।
जरकस की झूलनि रवि ससि तूलनि धावत हूलनि गल गाजैं॥
चरखिनु आकरषैं सद्‌जल बरषैं पर दल धरषैं भले भले।
पिलवान पुकारैं आँकुस झारैं कहि कहि हारैं दले दले॥
सिंदूर भुसंडे बहु बिधि मडे तिनपै झंडे फहराने।
दंतनु की सोभा है जनु गोभा दिस दिस लोभा दरराने॥
चरननु के धरते भरके परते दानव घरते मले मले।
पिलवान पुकारैं आँकुस झारैं कहि कहि हारैं दले दले॥ १३॥

## दोहा

सबै सैन तैयार हुव करि दुंदुभी धुकार।
सिंहजवाहर निकट हुव जै जै शब्द अपार॥ १४॥

## छंद अनुगीत

तिथि त्रोदसी सनमुख ससी रवि राहु कौ बल पाइ।
धरि ध्यान हिय मधि प्रीति सौं हरिदेव कौं सिर नाइ॥
सुभ लग्न में निरविघ्न चढ़ि्ढय तनय सिंह सुजान।
फहरान पीत निसान प्रबल प्रताप पावक मान॥
अति दीह दुदुभि बज्जियं मनु गज्जिय घनघोर।
बल सज्जियं गल गज्जिय चहुँ ओर ज्यौं पिक मोर॥
ढमकंत ढोल ढमाक डफला तबल ढामक जोर।
सहनाइ तुरही बंकिया भभकार भेरनु सोर॥
करि करि सिलाह सनाह चिलतह ओपची बरबाह।
भरि भरि उछाह सिपाह चढ़ि्ढय सहित सग उमाह॥
चहुँवान कूरम जादवा राठौर गौर बघेल।
पंमार अरु परिहारि सेंगर सोलँकी चन्देल॥

निर्वान सुरकी तोमर रु पुंडीर पौरच पूर।
सीसौदिया खीची खँगार जघार जाइस सूर॥
बर बैस पुनि बड़गूजरौ गहलोत सजिय बुँदेल।
चहुँ बरन उद्धत घरन के सँग चढ़्ढियौ करि रेल॥ १५॥

कवित्त

बखत बिलंद तेरो दुंदुभी धुकारन सौं
दुन्द दबि जात देस देस सुख जाही के।
दिन दिन दूनौ महि मंडलु प्रतापु होत
सूदन दूनी में ऐसे बखत न काही के।
उद्धत सुजान-सुत बुद्धि बलवान सुनि
दिल्ली के दरनि बाजै आवज उछाही के।
जाही के भरोसे अब तखत उमाही करै
पाही से खरे है जो सिपाही पातसाही के॥१६॥

दब्बत अदब्ब महि पब्बय से पीलनु सौं
गब्बर गरट्ट अरिठट्टनु निघट्ट कर।
बब्बर के बंस के अटब्बर के रच्छक हैं
तच्छक अलच्छन सुलच्छन से स्वच्छ घर।
जब्बर भुजब्बर सुभट्टनु सघट्ट हर
नट्टत न हट्टत न थक्कत न खग्ग धर।
उग्ग दुग्ग दंडन दरिद्र दुःख खंडन
प्रताप आप मंडन जवाहर तिहारे कर॥१७॥

छंद कड़खा

चलत उच्छलत हयबलित कंचन करनु
ललित मदकलित गजराज गाए।
झलित नीसान उज्झलित असमान लगि
खलित खल नारि धुधुकार पाए।

धूरि धारानि सौं पूरि ससि सूर कौं
चूरि बिटपीन भुवि पूरि छाए।
सुभट उद्भट लियै ओज दस दिस कियैं
सेन सजि सूर-सुत जबहिं धाए॥१८॥

## छंद पद्धरी

सो साहि करिय चारिक मुकाम। पुनि करहु कूचि अति ओज धाम॥
फिर उतरि पार जमुना अपार। पुनि दयो गोपपुर किय बिहार॥
यह खबरि पाइ कै श्री सुजान। किय कूँच समोगर तैं अमान॥
करि कूँच हुहूँ आए जवारि। लखि श्रीसुजान हिय हरख धारि॥
तब सिंह जवाहर पास आइ। किय राम राम निज सीस नाइ॥
सुत* कौं निहार बदनेस-नंद। आनंद पाइ उर मैं बिलंद॥
सब समाचार ए राउ पाइ। तजि कोल गयौ तट गंग धाइ॥
इत सूरज हू सुत सहित कोल। आए बजाय दुंदुभि अतोल॥
तब कही सिंह सूरज अमान। अब है बड़गूजर कौन थान॥
सुन कही दूत वह गंग तीर। यह खबर ठीक परिहै अधीर॥
यौं सोधु पाइ बदनेस पूत। किय हिय बिचार तबही अभूत॥
एक जाति बाजि बर साजि लेउ। अरु सब बहोरि ह्याँ थंभि देउ॥
मत यौं सुजान कौ सुनत बीर। करि करि सिलाह आए गंभीर॥
द्वै सहस हयंदनि सजिउ दंड। वह सिंह जवाहर बल अखंड॥
हय दोइ सहस सूरजहु संग। यौं चार सहस हय लै अभंग॥
करि करि निसान की घोर घोर। कीनौ पयान उर धरि मरोर॥
बड़गूजर हू यह खबर पाय। आगौ सुजान मेरे उपाय॥
लरनौ न बनै या भूमि मोहि। निज भूमि माँझ होनी सो होहि॥
बड़गूजर हू निज दुग्ग राह। तजि गंग-तीर सजिबे सनाह॥

---

*पाठान्तर = सब।

दस कोस भूमि के अंतराइ । दोऊ कलिंदनंदनि मझाइ ॥
आसहरैं दाखिल भयौ राउ । निज बिबर ब्याल कै करि उपाउ ॥१९॥

### छंद हरगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनद सुजान है ।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइ कै ।
करि फौज भेरिय राउ घेरिय प्रथम अंक सुनाइ कै॥२०॥

इति प्रथम अंक ॥१॥

---

### दोहा

उग्ग * दुग्ग बिबौर धसि ब्याल रूप, ह्वै राउ ।
ताकौं ढूँक्यौ आनिकै सूरज्ज ज्यौं खगराउ ॥१॥
रवि राका मकरद की सूरज रोपिय रारि ।
है-दल पैदल सग लै हल्ल करिय रिस धारि ॥२॥

### छप्पय

ठुक्किय दिग्घ निसान पुंज गिरवरगन गुंजिय ।
पीत केतु फहरानि देखि दुसमन मन मुंजिय ॥
चचल तुंग तुरंग जग हित भरत बलगनि ।
पाइक साइक संधि अगाहुब करत छलगनि ॥
इम सैन साजि सूरज चढ़िय जिहि सम सूर न भूमि बिय ।
बढि बीर बिकट तिहि दुग्ग तनु घार दृष्ट चहुँ ओर दिय ॥३॥
जोजन अर्ध अकार दुग्ग दुर्गम मधि सरवर ।
दच्छिन पच्छिम ओर प्रबल जग रह्यो पूरि जर ॥
बसु हजार नर सुभट रहे समुहाइ शस्त्र गहि ।
लोह-जंत्र चहुँ ओर तासु तट कौन सकै लहि ॥

---

* पाठान्तर = दुग्ग ।

लखि ताहि सूर सूरज बली सिंह जवाहर सौं कहिय।
तुम जंग धनद-दिस तैं लहौ पुब्ब द्वार आपुन गहिय ॥४॥

## तोटक छंद

यह आयसु पाइ सुजान-तनं। लहि सिंह जवाहर मोद घनं ॥
चहुँ सैनपतीनु बुलाइ लियं। तिन सौं यह आयसु आपु दियं ॥
इक सूरतिराम सुगौर-कुलं। बिय कूरम भर्थ बली अतुलं ॥
अरु दौलतराम सिलाह किय। पुनि गूजरराज हरिष्ष हियं ॥
लखि चारिहु सैनपतीनु बली। तिन सौं हित जग जताइ भली ॥
सुनि भर्थ सुदुग्गहि जंग लहौ। सिव की दिस तैं निज जोर गहो ॥
अरु राजहि गूजर सौं कहियौ। दिस वाइव तै गढ़ कौ गहियौ ॥
अरु सूरति दौलतराम दुऔ। गढ़ द्वारहि कौं बल पूर किऔ ॥
तिहिं अग्ग धरौ बहु पैदल कौं। पुठवार कह्यौ बहु है-दल कौं ॥
निज यौं बल राखि सुजान तनं। करि दुंदुभि दीह अवाज घनं ॥
उत सूरज हू ततबीर कियो। भट मीर पनाह अगार दियौ ॥
अरु गोकुलरामहिं बाम भुजा। रन जित्तन की जिहि हत्थ धुजा ॥
वह कूरमसिंह प्रतापु महा। गढ़ पूरब द्वारहिं कौं उमहा ॥
सिवसिंह तिहौं तट जोर गह्यो। हरिनागर तासु परैं उमह्यो ॥
सुखराम सुमातलु सौं कहियौ। तुम मीर की मद्दति मैं रहियौ ॥
अरु तोमरराम सुचंद बली। हरिनागर की पुठवार भली ॥
बलिराम सुबल्लभ दुग्गपती। सब सैन सजै सबकौ मद्दती ॥
अरु जे बरछैत बली तन के। तट सिंह सुजान महा मन के ॥
इमि सूरजसिंह जवाहर ने। बलु थापि कियौ आर ठाहर ने ॥
लखि ताहि बहादुरसिंह महा। उर कोह भयौ रन कौं उमहा ॥
दुति देखतु दीरघ भुंडन की। अति उन्नत देह बितुंडन की ॥
करि चौकस चारिहु डंडन की। मति मंडन की अरि खंडन की ॥
निज मातुल दच्छिन ओर धस्यौ। वह छत्रिय धर्म गरूर भस्यौ ॥

दिस उत्तर ओर जवाहर की। तहँ भीर भरी जुग नाहर की ॥
इक जालिमसिंह सुपेहल कौ। वह बीर महा भुव ठेहल कौ ॥
अरु देवियसिंह सुभ्रात बली। तिहिं के तट राखिय भाँति भली ॥
दिग पच्छिम हाथियराम धस्यौ। अरु मंधाता तट तासु कस्यौ ॥
धरि पूरब आपुन मत्रिन कौ। अरु आप रह्यौ सब जंत्रिन कौ ॥
भरि पाँच हजार बँदूकनि कौं। बहु तोप जजाल अचूकनि कौं ॥
पुनि छत्रिय धर्म सम्हार हियैं। गढ़ पुब्बहि द्वार बिचार कियैं ॥
हित जंग कस्यौ वह राउ तबै। सत सात तुरंगम साजि जबै ॥
सत बेद सुपाइक अग्ग धरे। बड़गूजर यौं रन कौं निकरे ॥
लखि सूरज सूरन हल्ल कियं। उत सिंह बहादुर कोह कियं ॥५॥

## दोहा

रन भुग्गिनि जुग्गिनि जगीं सुनि दुंदुभि धुंकार।
महा भयानक भुव भई खल भल दुग्ग अपार ॥ ६ ॥

## छंद तूफा

खलभल परी दुग्ग मँझार। दलबल दपट देखि अपार।
कलबल करत नर अरु नार। छलबल कोट ओट निहार ॥
दरबर धाइ सूरज सूर। अरबर पारियौ पर पूर।
हरबर कही राउ निहार। नर करौ सकल सम्हार ॥
झरभर होन लागी चोट। भर भर काँगुरन की ओट।
धर धर धुंधमाँ धमाक। घर घर घुँएवाक घनाक ॥
तरतर परत गोली घोर। करकर कै रही चहुँ ओर।
सरसर जबर जंगनि अंग। झरझर उठत ज्वाल उतंग ॥
गोला गोल में गन्नात। तोला लागतें मन्नात।
झोला बाइसौं फंफात। बोला काल ज्यौं हंकात ॥
चोला सुभट के ले जात। खोला ढोल ज्यौं दुर जात।
हाला होन लागै सैन। डोला डोल ज्यौं लागै न ॥

चार्‌यौं ओर मॉंची घोर। धूँवाँ धुंधरी गढ़ कोर।
सूजा देखि ऐसौ हाल। फूले नैन ज्यौं गुल्लाल॥
चाह्यौ * त्यौं जवाहर बीर। गाह्यौ † चहत जुद्ध गँभीर।
दै दै दुहूँ दिग्घ निसान। धाए दै हयर धवान॥
करि करि दुहूँ दिष्ट करूर। सूरज औ जवाहर सूर।
गढ़ के ईस को दिस ओर। निरख्यो मोरचौ अति घोर॥
तापर दबट मीर पनाह। पूरब सहित सूर सिपाह।
प्राची औ उदीची ओर। मॉंची रारि ऐसी घोर॥
कड़बड़ बजत टाप हयन्द। भड़भड़ होत शब्द बिलंद।
गड़बड़ भयौ चाहत सूर। झड़बड़ आयुधन की पूर॥
गोली भौंर सी भननात। पिक ज्यौं गाल कुहकत जात।
धूवाँ त्यौं पराग उड़ात। गंधक गंध सौरभ गात॥
टुट्टत तरवरन की डार। सोई होतु है पतझार।
देखै ए उदीपन साज। गढ़ ज्यौं सदन है रितुराज॥
तासौं ह्वै सकाम सरीर। धाए सामुहैं जदुबीर ‡।
गढ़ की भूमि सो नव नारि। भूषन बस्त्र शस्त्र बिचारि॥
बुरजैं उरज ही के भाइ। तिनकौं गह्यौ चाहतु धाइ॥ ७॥

## कुंडलिया

पुव्वहिं दरवाजैं सुन्यौ बड़गूजर बड़ हत्थ।
तहाँ चल्यौ सूरज बली रोक्यौ सुभट समत्थ॥
रोक्यो सुभट समत्थ तत्थ समुझाइ सुजानहिं।
परे बीर बहु धाइ हत्थ गहि गहि किरवानहिं॥
गहि गहि मौन गरूर पूर अपने हिय डुव्वहिं।
तहाँ उडत बहु सारु भारु ज्यौं भुनतु अपुव्वहिं॥ ८॥

---

* पाठांतर—चार्‌यो

† पाठांतर—गार्‌यौ

‡ पाठांतर—व्रजवीर

## चामर छंद

दै धवान धाइयौ घुमाइ सेल साँग कौं ।
लै कमान बान भान और दुग्ग आग कौं ॥
सूथियौ जहाँ सुराउ अक्खु सूर संग लै ।
है गए घलासुमेल जट्ट-जूह जंग लै ॥
लेहु लेहु नद्द को अहद्द सद्द बढ्ढियौ ।
मारु मारु उत्तहू अनेक बीर रढ्ढियौ ॥
बज्जई हथ्यार बेग सज्जई तुरंग कौं ।
गज्जई बँदूक अद्ध उद्ध प्रान-भंग कौ ॥
तज्जई न खेत देत लेत घोर घाउ कौं ।
भज्जइ अनेक दुग्ग प्रान के बचाउ कौं ॥
तथ्थई अजीतसिंह पथ्थ ही सुराउ तैं ।
बड्ढि बीर आइयौ पिता सु अग्ग चाउ तैं ॥
सक्कि कौं सम्हारि हथ्थ सत्रु पैं चलाइयौ ।
यौ हरष्षि राउ हू बरष्षि बान धाइयौ ॥
देखि सिंह जालिमा तुरंग हक्कि अग्ग ही ।
ता समै सुरामचंद लै हयंद बग्गही ॥
त्यौं अनेक सूरबीर आयुधौं उभारिकै ।
जुट्टियौ अरीनु जुद्ध उद्ध कुद्ध धारिकै ॥
छुट्टियौ इतै दवान सेल साँग संग ही ।
गुट्टियौ गयंद सेर जे सुरुद्र रंग ही ॥
फुट्टि रामचंद गौ दवान लग्गि जंग में ।
चुट्टि कै सुमारु भौ अजीतसिंह अंग में ॥
लग्गियौ बँदूक इक्क जालिमा सरीर में ।
इक्क आनि लग्गियौ सु राउ पाउ पीर में ॥
चुट्टि फुट्टि तुट्टिगे कितेक बार संग में ।

ताहि चाहि राउहू मलीन चित्त जंग में ॥
तात भ्रात गात पात न्हात श्रौन रंग मैं ।
दुग्ग कौ मुर्यौ सु राउ चाउ चित्त जंग में ॥ ९ ॥

दोहा

मुर्यौ देखि बन राउ को बकसराम गहि तेग ।
मानो गज मदमंत पर धायौ सिंह सवेग ॥ १० ॥

सोरठा

निकट जाइ नर-बीर नाम सुनायौ टेरिके ।
राउ महारनधीर एक खाइ एकै दई ॥ ११ ॥

छंद सवंगा

लयौ मोरचौ मारि मीर सुखराम ने ।
तुपक तीर तरवार जंग करि चाब ने ॥
बकसराम असि खाइ भिर्यौ फिर नीठ दै ।
रत्त रँग्यौ रन राउ धँस्यौ गढ़ पीठ दै ॥ १२ ॥

छप्पय

उत्तर दिसि गढ़ बिकट निकट जुट्टिय जग जाहर ।
सेनापति तिहिं चारि रारि हित सिंह जवाहर ॥
दै दवान किरबान बान धाइय तिहिं ठाहर ।
सहिय घोर घमसान तोप जंजाल हियाहर ॥
बहु तोरि फोरि मुरचान कौं मोरि सुभट अरि उग्ग हिय ।
पुर-द्वार रुक्कि ठाढ़ौ बली सबै दुग्ग मुसमुंद किय ॥ १३ ॥

छन्द पद्धरी

सो खबरि पाइ बदनेस-पूत । निजु तनय काम कीनौ अभूत ॥
तिहँ बार साँडिया दिय पठाय । यह कही वाहि समुझाइ धाइ ॥
सुत तोहिं सपथ मेरी अनेक । पग अग्ग देइ धरि हिय बिबेक ॥
यह बात कहा ता काज कोहु । कीजत इलेक बिन हेत लोहु ॥

मैं कही ताहि सुत मानि लेउ। या मसलति पै निज चित्त देउ ॥
जो जहाँ पहुँच्चिय सुभट जाइ। सो भूमि देउ ताकौं बताइ ॥
दिन कहौ लेइ ओटहिं बनाइ। निस देउ मोरचा बहु खुदाइ ॥
यौं जहाँ तहाँ करि सावधान। तू उसरि मोरचा दै सयान ॥
तुम जो न मानिहौ यह अमान। तौ मैंहूँ आवत तिहीं थान ॥
यौं कहि पठाइयौ श्रीसुजान। जहँ हुतौ जवाहर रन अमान ॥
उनि कह्यौ आइ वाही विधान। जब सुनिय जवाहरसिंह कान ॥
चित सोचि सोचि यह गुन निधान। तब कहो ताहि उद्धत भुजान ॥
यह तौ न बात इह समै मान। पै मोहिं कह्यौ उनकौ प्रमान ॥
पीतु-बानि मानि चिम करी सोइ। जो जहाँ हुतौ सो तहीं लोइ ॥
निज उसरि दुग्ग तैं तीर चार। लिय आप मोरचा हिय बिचार ॥
उत राउ गयो रन तैं सुमारु। लखि ताहि दुग्ग कलबल अपारु ॥
सब जान्यौ जो धुर-धरनहार। सो भयौ प्रथम रन मैं सुमारु ॥
सब छोड़ि कोट अरु प्रान आस। तजि तजि हथ्यार हुए उदास ॥
वह राउ महा धीरज-निधान। ह्वै घरी दोइ मैं सावधान ॥
तब कही बीर क्यौं सूनसान। कह पलटि गयौ गढ़ ते सुजान ॥
सो सुनत कहौ जो हुते तीर। है फौज जहाँ की तहाँ बीर ॥
रन संग तुमारे गए धीर। ते सब सच्छत देखे सरीर ॥
लखि तुम्हैं महा घाइल सुअंग। यौं भए मोरचन तैं सुभंग ॥
यह सुनत राउ चहुँघा निहारि। सुत भ्रात गात घाइल बिचारि ॥
धरि धीर उठ्यौ वह तिही तंत। चित चाहतु है परदल-सुअंत ॥१४॥

छप्पय

सस्त्ररु बस्त्र बँधाइ जान चढ्ढिय नरबाहन।
झलझलात रस रुद्र नैन मानौ कन दाहन ॥
धरिय मुच्छ पर हथ्थ तथ्थ सँधूहि घुराहिय।
दे निसान धुंकार सूर गोमुखहि पुराइय ॥

गुन गाइक गावत बिरद गिरद सुभट संघट्ट हुव ।
बल बढ़िय कढ़िय पुनि सदन तैं महा धीर हठि सिंह हुव ॥१५॥

## तारक छंद

निजु मंदिर तैं कढ़ि बाहिर आयो ।
लखि सैन सबै मन धीरज पायै ॥
गढ़ पूरब द्वार चल्यौ अतुरानौ ।
तहँ आइ कह्यौ यह बैन सयानौ ॥
एहि बार रहौ सब चौकस भाई ।
अरि कौं नहिं देखन देउ जु खाई ॥
समयौ वह धीरज ही धरिबे कौं ।
नर बीर पराक्रम के करिबे कौं ॥ १६ ॥

## दोहा

दुग्ग-द्वार चौकस रहौ गाढ़े करौ कपाट ।
रैन दिना जागत रहौ जानौ अरि ए जाट ॥ १७ ॥

## दीपक छंद

यौं कहत चहुँ ओर । फिर दुग्ग करि जोर ॥
वह राउ बुधवान । करि सूर सनमान ॥
जे जहाँ हैं ज्वान । तहँ थापि बलवान ॥
धरि और पुठवार । हिय जान सरदार * ॥
वह दुग्ग के द्वार । तहँ राखि बहु भार ॥
अरु तोप जज्जाल । हयनाल गयनाल ॥
करि दीन फिर त्यार । लगि होन बहु मार ॥
गहि कोट की ओट । बंदूक की चोट ॥
लगि होत कहुँ मोट । कहुँ लोट कहुँ पोट ॥
फिर देत भौ मारु । बरसाइ बहु सारु ॥

* पाठांतर—निरधार ।

अजबीरह्न भूमि । गहि रहे गढ़ भूमि ॥
करि घोर घमसान । भइ रैन छिपि भान ॥ १८ ॥

दोहा

टूटि फूटि बहु सुभट गे दिशा दिशी इत उत्त ।
रैनि भए भड़के भए जैसे अच्छर दुत्त ॥ १६ ॥
निसा जानि सूरज बली बेलदार बुलवाइ ।
सुभट हुते जे दुग्ग तट तिन पैं दए पठाइ ॥ २० ॥
जैसी पाई भूमि जिन तैसी ओट बनाइ ।
भुत्र खुदाइ परिखा निकट किए मोरचा जाइ ॥ २१ ॥

हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं ।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं ॥
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइ कै ।
रन दुग्ग घासहरौ प्रथम दिन दुतिय अंक सुनाइकै ॥ २२ ॥

इति द्वितीय अंक ॥ २ ॥

---

छंद दुपई

या बिधि बासर ईस समर दुहुँ ओर ।
जबर जंग जज्जाल परिय घन घोर ॥
चंडी चलत भुसंडी खंडी सैन ।
मंडी रारि उदंडी छंडी हैन ॥
तब चित माहिं बिचारिय बदन-कुमार ।
चहुँ दिसि गढ़हि निहारिय ह्वै असवार ॥
दच्छिन पच्छिम ओर हुतो जो नीर ।
सो कहुँ कहुँ गयो सूखि सुगढ़ के तीर ॥

ताहि बिलोकि बदन-तन सिंह सुजान ।
दुग्गहिं चहुँ दिस घेरन कियहु बिधान ॥
सुतहिं जान बलवान सुसमर प्रबीन ।
दुग्गहिं दच्छिन ओर मारचा दीन ॥
आपुन पच्छिम आस बिलासहिं कीन ।
सूरज सुबुधि समथ्थ समर किय पीन ॥
पितु को आइसु पाइ जवाहर तथ्थ ।
दुग्गहिं दच्छिन ओर दबटि किय हथ्थ ॥
भूरज राखनहार सु सूरज बीर ।
जथा जोग बल थापन कियहु गँभीर ॥ १ ॥

## छंद पद्धरी

दिसि चित्रभान हरबल सुभाल ।
थपि बैरि दुग्ग कौ चमूपाल ॥
धरि तासु पुब्ब दुरजन ससथ्थ ।
बलिराम तास तट थप समथ्थ ॥
पुनि थप्पिय तोमर रामचंद ।
सो जुद्ध बुद्धि में है * बिलंद ॥
पुनि तासु पुब्ब गढ़ पुब्ब द्वार ।
हरनागर थप्पिय बल अपार ॥
धरि निकट तासु उदभट समूह ।
दल्ला सुमेव चाहत फतूह ॥
पुनि रतनसिंह मैंडू—नरेस ।
थप्पिय सुजान तजि मन कलेस ॥
अरु पुहुपसिंह कुसलेस—नंद ।
वह मस्तराम गौतम बिलंद ॥

---

* पाठांतर—जानत ।

इक किसनसिंह उद्धत सुगात।
सादूल नंद थप्पिय सुभ्रात॥
सत पंच बीर थप्पि मीर संग।
महमद पनाह रुप्पिय उमंग॥
सुखराम सुमातुल बलनिधान।
थप्पिय सुजान उद्धत भुजान॥
धरि तासु भ्रात-नंदनहि सथ्थ।
हरि नाराइन जो रन-समथ्थ॥
दिगसिखा आदि तैं ईस लग्गि।
दिय जोर मोरचा गढ़हिं खग्गि॥
दिस बित्तपाल थप्प्यौ सुहाल।
किरपा सु राम गूजर गदाल॥
दै सुभट जाल थप्पिय कराल।
बलिराम सुबल्लभ दुग्गपाल॥
पुनि सहित सैन थपि जैतसिंह।
फौंदा—तनूज ठाकुर अरिग॥
पुनि रहित भीत रनजीत रक्खि।
रुप्पिय अमान दुग्गहिं धरक्खि॥
अरु तासु तटहि बहु गहिय जोर।
उद्धत अनूपसिंह रन कठोर।
वह हठीसिंह सब सहित सैन।
उत्तर दुवार गढ़ रुपिय लैन॥
तट तासु भर्थसिंहहिं समप्पि।
अति बिकट भूमि हिय जान थप्पि॥
गढ़ मरुन कौन थप्पिय सुजान।

* पाठांतर—जानत।

बहु बीर सुहरसै के अमान ॥
ईसान आदि लगि पवन आस ।
दिय मोरचान किय गढ़ उदास ॥
गढ़ बरन ओर प्रथमहिं गँभीर ।
खूँटैल बीर थप्पिय सुधीर ॥
स्यौसिंह बीर बहु सुभट जाल ।
परताप कमठकुल सैनपाल ॥
सत चार संग भट लै कराल ।
दिय मोरचानि गहि गहि सुढाल ॥
पुनि प्रबल बलहिं साजैं जुझौर ।
वह रुप्पिय गोकुलराम गौर ॥
ब्रजसिंह आदि चहुँवान बीर ।
सूरत्तिराम सुत कुसल धीर ॥
अरु स्यामसिंह पैंघौरवार ।
बिय स्यामसिंह थाना कुँवार ॥
जैकृष्ण सुमनसाराम दोइ ।
अरु पाखरिया हु सहित लोइ ॥
पुनि सहीराम रुप्पिय अदंद ।
अरु फतेराम ऊधमा-नंद ॥
कुलपूज राजकुल सावधान ।
घमँडी अमान-सुत चंद्रभान ॥
इमि किते बीर बरछैत संग ।
आपुन सुजान रुप्पिय अभंग ॥
गढ़ पूरब उत्तर बरनु ओर ।
यौं श्री सुजान किय घोर जोर ॥ २ ॥

## दोहा

देवीसिंह अरु अषैसिंह श्री अजेश-सुत धीर।
राखे सिंहसुजान दे दोऊ बीर सुतीर ॥ ३ * ॥
गढ़ नैऋत दच्छिन दिसा अति उद्भट भट सथ्थ।
दिए मोरचा जोर करि सूरज-सुत बड़ हथ्थ ॥ ४ ॥

## छन्द तोमर

दिस जानि नैऋत ओर। तहँ थप्पियौ कर जोरि ॥
बकसी सुमोहन राम। द्विज सज्जि सूर उदाम ॥
ढिग तासु राजाराम। अति सूरता कौ धाम ॥
धरि धीर बलका बीर। चहुँवान साहिब तीर ॥
धनसिंह ठाकुर दास। गढ़ निकट कीन निवास ॥
बल सहित दौलत राम। लगियौ करन संग्राम ॥
पुनि पैमसिंह जुझार। अरु पृथीसिंह पँवार ॥
नरराज सिंह अजीत। सब भ्रात सहित अभीत ॥
परसोतमा रुपि तथ्थ। सब भ्रात सहित समथ्थ ॥
तेहि संग हरिबल बिप्र। लगि गोल जुज्झिय छिप्र ॥
तहँ रुप्पियौ अति भीर। हठिसिंह है नर बीर ॥
वह मेदसिंह सजोर। बहुतै सुभट्ट कठोर ॥
गहि सेल साँग कृपान। गढ़ लेन कौं समुहान ॥
तिमतै सु दहिनी ओर। दिय मोरचा अति घोर ॥
बलवान सूरतिराम। सब सैनपाल उदाम ॥
तिहँ संग आदौ बीर। सुलतान समर गँभीर ॥
रनधीर तिरखाराम। रन सुद्ध भीखाराम ॥
औरौ अनेक सुभट्ट। रुपियौ सुगौर सघट्ट ॥

---

* यह दोहा दूसरी प्रति में नहीं है।

धरि तासु की पुठवार। वह मेदसिंह कुँवार ॥
अरु त्यौं भवानीसिंह। गढ़ लैन रुप्पिय धिंग ॥
पुनि श्री दलेल अमान। थपियौ महा बलवान ॥
तिहिं के अगार उदार। दै सुभट संग अपार ॥
वह उदैराम सुनंद। है सदाराम बिलद ॥
तिहिं तैं सुपच्छिम ओर। द्विज-उदैभान सजोर ॥
जहँ हुतौ गूजर पूत। रजराम रन साबूत ॥
तिहिं पुट्ठि धरि मजबूत। अबधूत ऊधम पूत ॥
तिहिं निकट सुभट अनेक। रुप्पिय धरैं रन टेक ॥
अरु आप सब पुठवार। सुत श्री सुजान कुँवार ॥५॥

छप्पय

बीरनराइन बलीराम बलसिंह खुस्यालहि।
मान गुमान अमान संग ए तात भ्रात गहि ॥
अमरसिंह श्रीराम चौधरी सिंह अजीतहि।
औरौ बहुत सुभट्ट लिए संघट्ट अभीतहि ॥
मतिवंत करन अरि अंत कौं गुर महन्त रच्छक रहिय।
सब मोरचान पुठवार ह्वै सिंह जवाहर रन लहिय ॥ ६ ॥

छन्द त्रिभंगी

धरि चारिहुँ ओरन पैदल घोरन देत मरोरन मुच्छन कौं।
बहु तोप जँजालन अरु हथनालन भरि घुरनालन गुच्छन कौं ॥
चहुँ कोनन घेरिय ज्यौं पग बेरिय गौंन निबेरिय दुग्ग रहा।
छुंडत बहु चंडिय जोर भुसंडिय धूम धुमंडिय घोर महा ॥ ७ ॥
लखि दुग्गहि घेरा निपटहिं नेरा साँझ सबेरा माँझ करैं।
बड़गूजर बंका तजि जिय संका दै दै डंका सार जरैं ॥
बलकैं रस बीरैं सुभटनु धीरैं फिर गढ़ तीरैं डार डरैं।
चौकस चहुँ डंडिनि करि बल मंडनि निज भुज दंडनि तेग धरैं ॥ ८ ॥

दुहुँघा बंदूकैं चलत न चूकैं उठत भभूकैं धुंकारैं।
छूटै जंजालैं होन दुसालैं मानौ कालै हुंकारैं॥
कड़कड़ धुनि छाई तत्ततड़ाई धध्धड़धाई धूम धरा।
धद्धर धर हालैं धूम करालै सद्द महा लै घूमि घरा॥ ९॥
चहुँघाँ झर गोला ज्यों जम बोला मानों श्रोला अररानैं।
मूड़ौ लै उड्डैं पेटौं बुड्डैं तोरै गुड्डै फररानैं॥
भुज दंडौं तोरैं मस्तक फोरैं यौं दुहुँ ओरै झकझोरैं।
करि काल कलोलैं इत उत डोलैं नहिं मुख बोलै टकटोरै॥१०॥
टकटोरैं काली खुसी कपाली दै दै ताली भूत नचैं।
धर श्रोनित आली परी निराली खैंच शृगाली भौंन सचैं॥
गिद्धागन कौवा भरै गलौवा तहीं चलौवा चंड भए।
षद्धंग खुलाने मुंड डुलानै कहूँ फुलाने खंड खए॥११॥

छंद मधुभार

दुहुँ ओर, उद्ध, किय घोर,† जुद्ध, गढ़ देखि रुद्ध, पुर लोग कुद्ध।
सब है उदास, गए राउ पास, अति त्रास धार, कहियौ पुकार॥
सुनि राउ बीर तुमकौं न पीर तुमतौ अभीत हम तौ * सभीत।
नृप की सुरीति करियै सुनीति लखि देस काल निज बुद्धिहाल॥
पुनि बलु बिचार करियै सुरारि अरु साम दाम है भेद काम।
करियै उपाय जब ना बसाय तब जुद्ध आइ नृप कौ उपाइ॥
तुम तौ प्रवीन हम हैं अधीन तजि रोस देउ गढ़ राखि लेउ।
पुर चहूँ ओर घिरियौ सुघोर नहिं है निकास लखि आस पास॥१२॥

दोहा

पुर परजा पतिनी तनय बचैं दिएहूँ बित्त†।
तौ सलाह करि राउ तू है सब ही के चित्त॥ १३॥

---

* पाठान्तर—ए हैं।

† पाठांतर—पुर परजा पतिनी दियै तनय और ग्रह बित्त।

### सवैया

दोस बिना रचि कोस धरै तजि कोस कभू सब देस बचावै।
देसहु त्यागत नग्र बचै तजि नग्रहु कौं परजा सुख ध्यावै॥
दै परजा पतिनी न तजै पतिनी हि तजै तनु जौ सचु पावै।
दुःख तजै सब कौ सुख तौ नृप देत सरीर घरी न लगावै॥१४॥

### दोहा

सब नीतिन की नोति यह राउ रंक सब कोइ।
समौ देखिकै अनुसरै अंत सुखी बहु होइ॥ १५॥

### सोरठा

या सुनि बोल्यौ राउ अब उपाय नहिं संधि कौ।
जौ सब करौ दबाउ तौ जालिम कौं भेजियै॥ १६॥
यह सुनिकै पुर लोग आए जालिमसिंह तट।
है अति * बाँकौ रोग सो कटिहै तुम तैं बली॥ १७॥

### दोहा

सब की मसलति जानिकै जालिमसिंह बिचार † ।
कौल बचन करि राउ सौं चल्यौ मिटावन रार॥ १८॥

### छंद दुपई

जालिमसिंह बैठि नरबाहन जब गढ़ बाहिर आयौ।
जाकौं देखि सिंहसूरज नै बहु सन्मान करायौ॥
जो कछु अरज करो जालिम ने सो सूरज ने मानी।
तुरत आइ सो कही राउ सौं जो कछु दैनि बखानी॥
तबही राउ कही जालिम सौं कहौ कहा करि आए।
कैसे करी सलाह कुँवर सौं तब जालिम समुझाए॥

---

* पाठांतर—यह।

† पाठांतर—कुमार।

कहे द्न दस लाख रुपैया तोप रहकला सब्बै।
जब ही ए पहुँचैं सुजान पै उठै मोरचा तब्बै॥
यह सुनि कही राउ मैं देहौं दस के द्वैहू औरौ।
तोप रहकला देउँ न एकौ स्यानो कहौ कि बौरौ॥१६॥

सोरठा

ये सुनि जालिम बैन महा हठीले राउ के।
फिर न दिखाए नैन तरफरात ही ज्यौं तज्यौ॥ २० ॥

दोहा

जालिमसिंह मर्‍यो जबै खबरि पाइ कै सूर।
जान्यौं अब ही राउ को घर्‍यौ न नेक गरूर॥ २१ ॥

छंद पावकुलक

जालिमसिंह जु मोपै आयो। ताको फेरि जुवाब न पायौ॥
तातै लेनौ सौंधौ याकौ। तब उपाव करिहौं मैं ताकौ॥
अमरसिंह मंझा सुत बोल्यौ। तासौं मत्र आपुनौं खोल्यौ॥
अब तुम जाउ राउ कै पासैं। देखौ वाके मन कौ आसै॥
अरु गढ़ कौ सौंधौ सब लैयौ। चौहाननहू कौं समुझैयौ॥
अमरसिंह सुनि सूरज बानी। चल्यौ दुग्ग कौं चतुर प्रमानी॥
घासहरे में कियौ पयानौ। सूर सुपूत सुसील सयानौ॥
अमरसिंह गढ़ मैं यौं पैठ्यो। मानौं सनि आठे घर बैठ्यो॥
बैठ्यो हुतौ राउ जहँ बंका। अमरा आयौ तहाँ निसंका॥
मिले परस्पर दोऊ त्यौंही। करि सनमान बिराजे ज्यौंही॥
कुसल बूझि दोउ बतराने। प्रथम राउ ए बैन बखाने॥
अमरसिंह तुमहू कछु जानी। सूरज क्यौं हमपै रिस ठानी॥
उमरावन सौं जो धर लीनी। सो सो तजि सूरज कौं दीनी॥
और जु है याके मन माहीं। मोपै सो बनि आवत नाहीं॥
एक बात मेरी सुनि लीजै। तापै अमरसिंह चित दीजै॥

असदखान मोकौं मति जानौ । सैरसलाबतहू मति मानौ ॥
रुस्तमखाँ आतुर हो माख्यो । धीरज सो जातौ नहिं टाख्यो ॥
सिकरबार गूजर मैं नाहीं । गढ़ी मढ़ी जिनकी तुम ढाहीं ॥
यही जानि मोपै चढ़ि आए । घने द्योस के सोच घटाए ॥
जानतु मैं तुम हौ बल पूरे । पै अचराँ आए नहिं सूरे ॥
जो दिन दम्म पहलै कहि देते । तौ यह भुव ऐसे नहि लेते ॥
अबहू हरी भूमि बिनु चाहे । दुग्ग न पैहौ रन अवगाहे ॥
है कन पानि दुग्ग में जौ लौं । तौ लौं गनौं न तुमसे सौ लौं ॥
जब बारूद अन्न बिति जैहै । तब होनी ह्वैहै सो ह्वैहै ॥
गहि कर खग्ग दुग्ग के द्वारैं । अपने कर्म धर्म उर धारैं ॥
मंगलमई भूमि करि दैहों । कीरती सुना रची गति पैहौं ॥२२॥

दोहा

धरनी धरनी नरन की बरनी है जो साथ ।
करि करनी भरनी दुओ फरनी प्रभु के हाथ ॥ २३ ॥

सोरठा

जो इन कौ करि भोग ह्वै बियोग जीवत रहै ।
तिन कौं फिरि न सँजोग गाम नाम आराम कौ ॥ २४ ॥
ऐसे बचन अनेक बड़गूजर बलक्यौ जबै ।
तब हिय धरे विवेक अमरसिंह नै यौ कह्यौ ॥ २५ ॥

कवित्त

करनी करै न अनकरनी * कहेई कूर
हठ अपजस कौ निधान वही खरु है ।
साँचो सीलवन्त सूर सरस सनेही सुचि
प्रभु सौं प्रतीति पनी पालक सु नरु है ॥

---

* पाठान्तर—अनकहनी ।

काम क्रोध लोभ मोह ईरखा न जाके मन
परदुख भजन दयालु ताकौ घरु है।
सूदन सबर सरबज्ञता सुघर सोई
अमर नरहू है अमर हू अमरु है॥
बौरे बड़गूजर बकतु कहा बार बार
ब्रज में ब्रजेस भयौ बदन प्रचंड है।
ताकौ सिंह सूजा सुत भूजा के अधीन सब
जाकौ तू बिरोधी रह्यौ चाहतु अदंड है।
जैसे जै बिजै जगदीस ते जनमु पाइ
जगत मैं जान्यौं त्यौंही तुहू भयौ चंड है।
जाकौ यह खंड चढ़ि आयौ बलवंड
सोई तोकौं धरि दंड महा उद्धत उदंड है॥२६॥

छंद वैतवै

कही तैं राव हम बिन दोष आही। करी तकसीर तेरी घनी ठाही॥
कहावै साथि ह्वै तैं तू हमारौ। कस्यो मल्लार सौं तैं क्यौंतु न्यारौ॥
दियौ तैं असद्खाँ की जंग टारौ। जुदाई करि भयौ मनसूर प्यारौ॥
कछू सोऊ न तौपै बनी भाई। वही मनसूर ताकौं दुक्खदाई॥
अभू तौ छोड़तौ नाहीं हठै तू। नही सरदार जान्यौ है सठै तू॥
पठायौ तौ तू जालिमसिंह काहे। कही ताको करी ना प्रान दाहे॥
कह्यौं मैं आइ तोसौं मीत नातें। लही दुरबुद्धि ऐसी कहि कहाँ तें॥
अरे ए हैं पिता पाँचौ समानै। जनम जो देइ दूजौ गुरु प्रमानै॥
नृपति जो आपनौ तीजौ सुजानै। महा भय तैं बचावै ताहि मानै॥
असन्न कौं देइ पाँचौ ए बखाने। बढ़े धन धर्म इन सौं हार माने॥
सु तू मन माँझ सोचै क्यौं न भाई। कहौ किनि भूमि तैं का पास पाई॥
पिता सौं पुत्र जो हठि जुद्ध चाहै। वही जसु किति खोवै दुःख गाहै॥
यहू मैं कहत तोसौं मूढ़ टेरें। गयौं गढ़ जानि आयो मैं जु तेरें॥

सुनी जब राव ने ये अमर-बानी । भरी छल की तबै हिय बुद्धि ठानी ॥
कही जब राव ने सुनि अमर भाई । सही तेरो कहो मो चित्त आई ॥
वही जो मामलति पहले चुकाई । करौ सो जाय तेरे हाथ भाई ॥
इती ततबीर करनी और भैया । जु मोपै माल तिनके करि रुपैया ॥
कछू जो चाहियै तौ आप लीजै । नहीं दिल्ली कौं तौ सब भेज दीजै ॥
पठै जन आप साहूकार कीजै । गिरौं धरि माल हुंडी हाथ लीजै ॥
घिर्यौ गढ़ जान कोऊ ना पतीजै । निसा ज्यौं होइ त्यौंही तोष कीजै ॥
निसा की सुनि सुबानी अमर मानी । सुजानै पास ज्यौं की त्यौं बखानी ॥
यही सुनिकै कही सूरज सु कीनी । नहीं तौ जर गई हम जान लीनी ॥
पठायो अमर वाकौ माल आछैं । निसा वाकी करौ हमरी सु पाछैं ॥२७

## छंद पद्धरी

साँचे बचन बिचार बदन-सुत के सबै ।
अमरसिंह सिर नाइ गयौ गढ़ मैं तबै ॥
माल सबै लदवाइ राव कौ तथ्थ ही ।
दिल्ली दियौ पठाइ मनुज निज सथ्थ ही ॥
छली बहादुरसिंह लिख्यौ निज पूत कौं ।
लीजो याहि सँहारि आपुने कूत कौं ॥
पोतदार जो आयौ इनकौ साथ है ।
ताकौं बाले देउ तुमारे हाथ है ॥२८॥

## दोहा

बाबूराय वकील सौं दीजौ ताहि मिलाइ ।
ताके हाथ पठाइकै दीजो वाहि बनाइ ॥२९॥
पितु कौ कागद बाँच कै सुत ने माल सम्हार ।
सूरज के अनुचरन सौं कीनौं ज्वाब बिचार ॥३०॥
खिमानंद ने जब करी अति तागीद जताइ ।
फतेसिंह तब यौं कही देहौं निसा कराइ ॥३१॥

बाबूराइ वकील पैं तबही गयौ लिवाइ।
करी हुती ताकीद सो दीनी ताहि सुनाइ ॥३२॥

सोरठा

सो सुनि बाबूराय खिमानंद सौं यौं कही।
हम पै पहुँचे आइ ये दस लाख सुजान के ॥३३॥
खिमानंद तुम जाउ कुँवर बहादुर सौं कहौ।
दीनौ तुम कौं राउ जो चाहौ सो कीजिये ॥३४॥

दुपई छंद

खिमानंद यौं ज्वाब पाइकै सूरज के ढिग आयौ।
जो कछु कौतुक भयौ दिली मैं सो सब आनि सुनायौ॥
सुनि सुजान मुसिकाइ राव की ए छल-बल की बातैं।
कही कहा जानतु मैं नाहीं बड़गूजर की घातैं॥
ज्यौं पयपान भुजंगै दीजै केवल बिष ही बाढ़ै।
पटल पेटि ज्यौं धरै दहन कन जहाँ परै तहँ डाढ़ै॥
ज्यौं खल सौं कीजै सज्जनता सज्जन सौं खलताई।
लहै न सिद्धि एकहू जग मैं कहा रंक कह राई ॥३५॥

दोहा

बदी करै तासौं बदी करत दोसु नहिं होइ।
अब याकौं हौं मारिहौं होनी होइ सु होइ ॥३६॥

छंद हरिगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै।
गढ़ घेरि थापि सलाह फेरि उथप्पनौ समुझाइ कै॥

॥ इति तृतीय अङ्क ॥

## दोहा

माधव बदि छठि भूमिसुत सूरज हिय निरधार।
दुग्ग लेन निजु दल बलन कहि भेज्यौ हित रार ॥१॥
आस पास वा दुग्ग कौं सुभट रहे जे घेरि।
कहि भेज्यौं तिन सौं गुपत आजु न करनी देर ॥२॥
एक जाम निस भोर कौं* सुनि टामक कौ सद्द।
चहूँ ओर तें दुग्ग पै हल्ला करौ मरद्द ॥३॥
सो सुजान की आन सुनि करि सलाह चहुँ कोद।
समौ निहारत जुद्ध कौ सूर मानि मन मोद ॥४॥
त्यौंहीं सिंहजवाहरैं कहि पठयौ ता बार।
घरी पाँच छः राति सौं लेहु दुग्ग ललकार ॥५॥

## सवंगा छंद

पितु कौ आइसु पाइ जवाहर चाह सौं।
फूल्यौ मुख ज्यौं कमल दरस दिननाह सौं॥
अति आनंदित हीय जुद्ध-उत्साह सौं।
रहौ आजु तैयार कह्यौ जु सिपाह सौं॥
तीन पहर निस गई भई वह बेर है।
सूरज कहि हरिदेव गही समसेर है॥
गढ़ के उत्तर ओर चल्यौ रिस धारि है।
मनौं त्रिपुर के नास भयौ त्रिपुरारि है॥
त्यौंहीं गोकुल रामसिंह परतापु है।
जैतसिंह हठिसिंह अनूप सु आपु है॥
रमजीतजु रनजीत सु बल्लू चौधरी।
मर्थसिंह सब अग्ग धयो जिहिं नौधरी॥

---

* पाठांतर—जब निसि रहै।

काइथ कुल नरसिंह और सुखराम हैं।
हरनाराइन बीर धस्यौ गढ़ सामुहैं॥
महा धीर रनबीर* गहैं कर खग्ग कौं।
मीर पनाह उछाह लयौ गढ़ मग्ग कौं॥
पुहुपसिंह किसनेसु नंद सादूंल के।
पुहुपसिंह सुत कुसल जवारि समूल के॥
मस्तराम द्विज मस्त दस्त गहि तेग कौं।
चंचल भोज तनूज संग ही वेद† कौं॥
अजमतिखाँ अति उद्ध सुदल्ला मेव है।
हरनागरु सैनेय बिप्र रनदेव‡ है॥
रामचंद्र कुल पांडु चंड ह्वै धाइयौ।
तब ही दुरजनसिंह दुग्ग समुहाइयौ॥
बली बीर बलराम बहुत भट संग हैं।
हरिबल दबट्यो बैरि चमूपति जंग है॥
जैतिसिंह जैकृष्ण सु मंसारामु हैं।
पाखरमल्ल प्रचंड सु सूरतिरामु हैं॥
तोफा अरु स्यौसिंह स्यामसिंह बीर हैं।
फतेराम सादूंल सु लछमन धीर हैं॥
स्यामसिंह ब्रजसिंह सुरजुवासंग है।
प्रोहित प्रबल अभंग घमंडी जंग है॥
देवीसिंह उदंड अखैसिंह बीर हैं।
ए सुजान के संग धए धरि धीर हैं॥ ६॥

---

* पाठांतर—महाबीर रनधीर।

† पाठांतर—जेग को।

‡ पाठांतर—नरदेव।

## दोहा

पूरब पच्छिम उत्तरौं तीन्यो दिसि तैं धाइ ।
घासहरे के दुग्ग पै सूरज दीने पाइ ॥ ७ ॥
दुग्ग दच्छिन दिस तच्छनौ हियैं धारि उत्साह ।
जाहर सिंह जवाहरौ धायौ सज्जि सिपाह ॥ ॥ ८ ॥

## छप्पय

पितु कौ आयसु मानि समौं पहचानि जुद्धहित ।
बहु सुभट्ट संघट्ट लिएउ गब्बर गरट्ट तित ॥
जिते हुते मुरचानि तिनहिं निजु हुकुम पठाइय ।
मैं आवतु तुम सथ्थ तथ्थ गढ़ करहु चढ़ाइय ॥
सुनि वेहु सब चौकस भए लए हथ्थ आयुध सबर ।
इत सिंह जवाहर सिलह करि गहिय ढाल तलवार कर ॥९॥
जुहै अग्ग मुरचानि सैन सरदार रारि हित ।
गौर सुसूरतिराम संग जादव जुझार मित ॥
दौलतराम सुभट्ट ठट्ट जब्बर सु भुजब्बर ।
सदाराम रन सिंह प्रेम प्रथिसिंह नाम नर ॥
द्विज उदैभान स्यौसिंह अरु हरीसिंह कहि जोध जुत ।
बलकासु राग साहिब सहित परसोतम श्रीराम सुत ॥१०॥
राजाराम सु नाम तीनि सत संत बीर धरि ।
किसुनसिंह औधूत बहादुर हठीसिंह भरि ॥
साकर खाँ* जैसिंह मेदसिंह बिजैराम गनि ।
चैनसिंह घनसिंह जंग ठाकुर सुदास मनि ॥
नर-राज सिंह रन रतनहू थानसिंह हठिसिंह बिय ।
द्विज मोहन नैऋत कौन तैं दुग्ग ओर सनमुख भइय ॥११॥

---

* पाठांतर—साकर खाँ जैकृष्ण मेदसिंह बिजैराम भनि ।

सिंहद्लेल कुँवार मेद अरु सिंह भवानी।
सिंह खुस्याल गुमान मान नृप-तनय अमानी॥
बीरनराइन बीर रामबल सभाराम नर।
सदाराम श्रीराम अमरसिंहहु अजीत बर॥
मतवन सत सुमहंतहूँ सिंह जवाहिर निकट हुव।
जैसे सुरेस सुत जीव सँग वृत्ति हेत किय क्रुद्ध भुव॥१२॥

दोहा

सब तैं स्याम निसान लै सीढ़ी जुल्यौ अगार।
पाइक कौ नाइक बली पर्यौ अंत ज्यौं भार॥१३॥

हरी छंद

दिसि बित्तपाल ओरैं। बहु सुर सुभट जोरैं॥
धायो सुतान धौरैं। गढ़ की सफील तोरैं॥
इत तैं तनूज आयौ। रस बीर बीर छायौ॥
गढ़ दच्छिन दिस धायौ। रवि-पूत ज्यौं छुहायौ॥
लहि सैन संग चंडी। सकतीर औ भुसंडी॥
कोदंड बान तानै। बरछानि बाँधि बानै॥
खजर कटार डोरी। खपुबानि मूठि जोरी॥
बिछुवा सुबाँक पट्टे। लट्टे उनुलेत कट्टे॥
फरसा दुधार भल्ले। बल्लम फिराइ चल्ले॥
तेगा असोल रोही। सिप्पर किंदो सिरोही॥
चिलतहनु अंग काछैं। सुर बार अंग राछैं॥
बहु टोप ओप भाछैं। कर देत मुच्छ आछैं॥
सजि सब्ब बीर बंके। चलि दुग्ग त्यौं निसंके॥
कछु भूमि मौन लीनी। फिर लेउ लेउ कीनी॥
गढ़ चारिहू दिसा कौं। खाई लई चलाकौं॥

यो सुनत सब्ब बानी। गढ़ भूमि खलभलानी॥
प्रेतादि पूत जग्गे। घर छोड़ि छोड़ि भग्गे॥
सिव सिवा बैल साज्यौ। भैरव भयान गाज्यौ॥
भयभीत भूरि बट्टी। तहँ मीचु डाढ़ कट्टी॥
बेहद्द नद्द बड्ढ्यौ। सुनि राव कोह मड्ढ्यौ॥
तबही तुरंग चड्ढ्यौ। निजु आलय तैं कड्ढ्यौ॥
फिर चारिहू दिसा कौ। यह कहि फिर्यौ लराकौ॥
अब देउ मार बीरौ। अरि आइ जुड़्यौ नीरौ॥
सब हौ मरद्द भाई। रहिहै यहै बडाई॥
लखि आप पास भाई। तिनसौं यही सुनाई॥
अब लेउ दुग्ग द्वारे। सब आपु मोरचा रे॥
यह सुनत राउ-बानी। सबही सुरारि ठानी॥
दागी कराल तोपैं। किलकारि काल कोपैं॥
जज्जाल जाल छुंडी। टेरी उदंड दंडी॥
हयनालहू धुँकारी। ज्यौं जोगिनी हुँकारी॥
फुक्की घनी भुसुंडी। रहकला धूम मंडी॥
अरराान गोल लग्गे। फरराान बान दग्गे॥
कर्राान धनुष सुन्नी। मर्राान बीर दुन्नी॥
धरराान कूर लागे। तरराान सूर आगे॥
चरराान बास उट्ठी। सरराान तीर मुट्ठी॥
भरराान भीर भारी। ढरराान ग्रीव सारी॥
करिकै अनंद* हाँ हाँ। लीनी चढ़ाय बाँहाँ॥
इत लेउ लेउ सद्दे। उत देउ देउ बद्दे॥
अति घोर सार उट्ठ्यौ। मनु सिंह सद्द रुट्ठ्यौ॥

---

* पाठांतर—अनंत।

घन धूम धाम माहीं। सुनवंत नाम नाहीं॥
गढ़ चारिहू दिसा कों। लखि जाट के हला कों॥
बड़गूजरहू कोह्यौ। पंचानन ज्यों छोह्यौ॥
गढ़ दच्छिन दिस आयौ। जहँ सूरज-सुत धायौ॥
तानै यही सुनाई। छत्री कहाइ भाई॥
अब हो तुम्हीं सहाई। अरि आनि लगे खाई॥१४॥

छंद भुजंगी

सुनें राउ बानी सबै सूर मानी। महा घोर घमसान की रार ठानी॥
इतै बीर सीदी हमीदौ उठायौ। धरें स्याम नीसान सों सूर धायौ॥
तबै गौर सूरतिहू राम पिल्यौ। लियै तीन सौ सूर सौं दुग्ग भिल्यौ॥
रुक्यौ गूजरौं मैं लिये बीर ताजा। तनैं दूदिया कौ महाबीर राजा॥
जुट्यौ पग्गही अग्गही षग्ग लिन्ने। जगी ज्वाल के झल्ल से नैन किन्ने॥
धयौ आपुने मोरचा तें छुहायौ। सजैं सूर दौलत्तिहूराम धायौ॥
उदैराम पूना सदाराम उट्ठ्यौ। तहाँ सामुहैं ठाकुरौदास रुट्ठ्यौ॥
बली बीर बल्का प्रथीसिंह पैमा। धरें धीर परसोतमौ बिप्र खैमा॥
इतै उत्त तैं बीर दोऊ हँकारे। चढ़े कोटबेरा धरा पै निहारे॥
उदंडी भुसंडीन के मेह पारे। धरा धावते आवते भुजि डारे॥
सही मारु धीरौं नहीं पाइ टारे। परे टूटिकै स्याम नीसानवारे॥
लई धाइ खाई महाबीर सीदी। कही जाहु रे भागिकै बेगि गीदी॥
लख्यौ राव ने स्याम नीसान खाई। सबै आपनी फौज कौं यौं सुनाई॥
कहूँ दुग्ग मेरे इसे बीर होते। घने जट्ट के ठट्ट या भूमि सोते॥
सुने राउ के सूर ऐराव बैना। कछू बीर कूदे भरे कोह नैना॥
कछू कोट की ओट तैं चोट भल्ली। भुसंडी सुहंडीन की ज्वाल झल्ली॥
इतै बीस के तीस सौ कूदि सीदी। उतै कोट कैं कूद कै चोट लीदी॥
धमाधम्म में यौं झमाझम्म बीती। छमाछम्म समसेर की मारु कीती॥
भभूकै उड़ैं यौं झबूके फुलंगा। मनो अग्निबैताल नच्चैं खुलंगा॥

जरैं ज्वाल की झाल कैं बीच जुट्टे । मनौं देव बारूद के ब्याह छुट्टे ॥
तरैं नीर यौं ऊपरैं अग्गि छाई । तहाँ बीर सीदी लड्यौ नाखि खाई ॥
अधौं ऊध कीयो दुहूँ मार माहीं । गयौ जूझि सीदी टर्यौ पाउ नाहीं ॥
कर्यौ देखि सीदी हर्यौ लोग केतौ । लख्यौ सूर के पूत ने आप तेतौ ॥
धयौ पग्गही अग्ग वा दुग्ग मग्गै । लियौ हथ्थ खग्गै हिये मैं उमग्गै ॥
चह्यौ आव तौ पुट्ठि पै आप स्वामी । तहाँ दौरि कै गौर ने सैन थामी ॥
कह्यौ वा समै पास जे सूर तासौं । अरे भाजिकै जोरिहौ नैन कासौं ॥
इती भाषिकै दुग्ग त्यौं बीर दौर्यौ । मृगाधीस ज्यौं मृग्ग कै जूह झौर्यौ ॥
यही जानकै दूदिया-नद कोह्यौ । गहै ढाल सम्सेर सौ सूर रोह्यौ ॥
दुहूँ आपने आपने गोल धक्के । तहाँ गोल गोली करैं बीर पक्के ॥
परैं बान किरवान बरछानु धारा । लरैं माँस माटी अनूठौ अखारा ॥
तजैं बीर हाँडी भरी ज्वाल-माला । मनौ होलिकाही भषै*भष्ष आला ॥
झरैं काँगुरै काँगुरैं फुलझरी सी । मनौं दीपमाला परै यौं ढरी सी ॥
कहूँ बान कूकैं उठैं यौं भभूकैं । किधौं आग बरसाइकै प्रेत धूकैं ॥
छुटै घोर हुक्का करै मारु भारी । धुवाँ मेघ तें ज्यौं परै बिज्जुरारी ॥
इसी मारुहु मैं धँसे फाँदि खाई । दुहूँ बीर बकसीनु की बीरताई ॥
गहैं काँगुरैं दुग्ग पै चट्टि चालैं । बली गोर सथ्थी सुपीथामहालैं ॥
बिना प्रान हूँ कैं परे खेत माहीं । जुटे जाइ जारौ निसंके तहाँहीं ॥
चढ्यो बीर राजा करै जोर रल्ला । फँद्यो धाइ खाई कर्यौ लेउ हल्ला ॥
तरैं काँगुरौं कैं जुटे सेनपत्ती । जहाँ सारधारा की ज्वाला झरत्ती ॥
इतै सेल साँगै बरच्छा बरच्छी । किहूँ बान किरबान कम्मान अच्छी ॥
उतै चंड कोदंड उद्दंड छुडै । घनै खंड झाटेनु की मारु मंडै ॥
सिला ढीम ढाहै इलाबीर बाहै । धडाधड्ड सद्दं भडाभड्ड ह्वाँहै ॥
जडाजड्ड बीती गडाबड्ड ऐसी । ढडाढड्ड लंका करी राम जैसी ॥
सनासन्न झनाझन्न छनाछन्न धुन्नी । भनाभन्न फनाफन्न ठनाठन्न दुन्नी ॥

* पाठांतर—भरें ।

महा घोर घमसान सम्सान फैल्यो। तहाँ सार असरार ज्वाला कि मैल्यो॥
किती छूटि हंडीनु की देह भंडी। किती बान की ज्वाल ते जारि खंडी॥
किते तीर की पीर सौं धीर धुक्के। किते पोटरी बारि बारूद फुक्के॥
किते ज्वाल हुक्केन सौं मारि मुक्के। तऊ बीर कुक्के न चुक्के न लुक्के॥
कहूँ भाल भाठेनु सौं लागि फाटे। कहूँ मारि लाठेन सौं भूमि पाटे॥
जरे कै मरे यौं परे सूर सोहैं। कटे मुंडहू की डटी बंक भौंहैं॥
घरी तीनि की राव यौं रारि ठानी। घरी एक ही रैनि में हार जानी॥
तहीं सिंह सूजा तनै आइ खाई। सबै आपने सूर कौं दै दिखाई॥
लखैं बीर कौं बीर दूने रबक्कें। रए दुग्ग पै पाउ सब्बै बबक्कै॥
भए काँगुरौ तेग तेगौं तमक्के। लखैं राउहू दुग्ग दूजैं चमक्के॥
जबै कोट पै सिंह कौ सिंह आयौ। तबै राउहू दूसरे दुग्ग धायौ॥१५॥

### छंद नीसानी

हथ्थौं सिंह जवाहरै लड़ि राउ हटाया।
उथ्थौं सिंह भरथ्थ ने देवीसिंह ढाया॥
मज्झौं मिलिया राव सैं मंसा रिस छाया।
उसने भी बदूक दै गढ़ राउ फस्याया॥
पुब्ब ओर गढ़ डुब्ब सैं बहु बीर उछल्ले।
तिस बेला सिभू-तनै चढ़िया गढ़ हल्ले॥
उस उप्पर * हथयार दे बैरी झरझल्ले।
उसनूँ श्रीहरिदेवजी रक्खा निजु पल्ले॥
हिक्क भट्टि सिर खाइकै गढ़ उप्पर चढ्ढे।
तिस कढ्ढा लखि खग्गनू नहिं बैरी वढ्ढे॥
तिथ्थौं मीर पनाह भी बकसी रनबंका।
हभ्भौं बीर हँकारिकै गढ़ चढ़ा निसंका॥

---

* पाठांतर—बेला

उत्थौं मारु घनी पड़ी सत्थी मुख मोड़े।
हंडी हुक्के अग्गि दे गढ़वालौं छोड़े॥
तिस बेला उस मीर ने सब से यौं अख्या।
नहीं भटौंदा कम्म जो पग पीछैं रख्या॥
खाइ धनी दै नोन नू एक ही नहिं किज्जै।
कित्ति बधे इस लोक मैं पग अग्गौं दिज्जै*॥
होरु जुद्धाली बंधनू फिर कोई बुज्झै।
बिन साँई दे हुकम सैं कोई रन जुज्झै॥
यौं कहि बीर उछ्लिया गहि सिप्पर कत्ती।
दिया पग्ग गढ़ उप्परां जहँ झार झरत्ती॥
इसी गल्ल सुनि मीर दी औरौ भट पिल्ले।
सेल साँग समसेर ले पग दै गढ़ भिल्ले॥
मारु मारु मुख अक्खिया चोयाँ उन नक्खी।
किसू तौर तरवार † दी रक्खी भी चक्खी॥
दुग्ग चढंते मीर नूँ गोली धड़ फोड़ा।
तौ भी सैयद बंकड़े नाहीं मुख मोड़ा॥
तिस बेला उस मीर ने एही गल अक्खी।
असी कम्म तौ कढ़ि गया दिल की दिल रक्खी॥
है कोई ऐसा साहिबौं मेरा दिल रक्खै।
तनक सहारा हत्थ दै गढ़ भीतर नक्खै॥
भाई बंदे भानजे सुनि सैयद गल्लाँ।
हम्भौं पास सुनाइयाँ गढ़ हम ले चल्लाँ॥
तहाँ लोह करि वे बली गढ़ लोक धरक्खा।
सैयदजादा मीर लै गढ़ ऊपर रक्खा॥

---

* पाठांतर—एदुहि किज्जै

† पाठांतर—किसतूगी तरवार दी

हेक बिरादर हौर भी तिस बेला झड़ियाँ ।
दोय बीर तिस नालही घायल हो पड़ियाँ ॥
अप्प अप्प दे मोरचौं तजि बीर हकाले ।
हब्भौं मारु घनी करी गढ़ करि करि आले ॥
किते पट्टे कट्टिए नट्टे गढ़वाले ।
चढ़े दुग्गभद सूरदे नहत मतवाले ॥
श्रीसुजानदे गोल* नूँ गढ़ ऊपर जाना ।
हुई खुसी उस मीर नूँ दिल तेह सिराना ॥
तेह गएँ उह मीर ने दिल व्याकुल जाना ।
कहा आपने सथ्थियौं मरना पहचाना ॥
सूरज मेरा साइयाँ तिससे यह अरजी ।
करि सलाम मुझ ओर सैं कहनी लै मरजी ॥
मीर तसदुक हो गया पहला गढ़ पाया ।
फिदवी के दिल में रही नहि बैरी ढाया ॥
तू साहिब ने सो रचा दिन ओज सवाया ।
बचै न दुसमन एक भी तुस्सैं करि दाया ॥
यौं सुनाइ सथ्थीनु सैं वह रुखसद हूवा ।
मीर स्वामि के काम पै घासहरैं मूवा ॥
फते हुवा गढ़ बाहला बहु लोक† बिलुन्ना ।
कोलाहल पुर‡ में पड़ा हाहा सुर सुन्ना ॥
जिसने लोह सम्हारिया जट्टौं ते कट्टे ।
हट्टे बट्टे पाड़िए घर घर दहबट्ट ॥

---

* पाठान्तर—लोग

† पाठान्तर—गढ़ लोग

‡ पाठान्तर—गढ़

कोट काँगुरो पुर गलो मरहट्ट लखाया ।
कहीं मुंड कहिं रुंड है कहि फट्टी काया ॥
कही भभूके अग्गि दै धूवाँ घुमडाया ।
कहिं निगर कुड़िए कही कहिं भाया जाया ॥
कहिं मामू कहिं भानजा कहि ससुरा साला ।
कही माइ कहिं पुत्त है बहुवा बिनु बाला ॥
जिसनूँ सूरज चंद दी उप्पम कवि टोही ।
तिसनूँ लाज जिहाज दी कुलकानि अमोही ॥
इभौं खड़े पुकारदे सूरज दी दोही ।
हुए रैयत हैं रावली करुणाचित जोही ॥
वह मतिमंदा राव था कर्माँ दा मारा ।
सूरजराज कुँवार सैं जिन दोष बिचारा ॥
असी हाल एहा हुवा रक्ख्यो निजु साया ।
जेहा जिसनूँ लोड़ियै तेहा फल पाया ॥ १६ ॥

## छंद सुंदरी

यौं पुर लोग पुकारत आरत बार फिकारत ठौर ठए ।
छोड़ि तिन्हैं ब्रजबीर बली अति उद्धत धामनु धाइ गए ॥
जीवत जानत राव बहादुर जासु लियैं भट भूरि हए ।
छुंडत चंड भुसंडिनु ठंड सुमंडित मोरचा फेरि गए ॥ १७ ॥

## इंद्रबज्र छंद

पैठ्यौ किले में तब *राव रास्यौ । मानौ कटी पूँछ फनी बिसास्यौ ॥
दीनौ मलीनौ लखि कोट टूट्यौ । भाई सहाई सुनि प्रान बूट्यौ ॥
फूट्यौ कि लूट्यौ निजु नग्र चाह्यौ । बेटा कि भाई बिनु चित्त दाह्यौ ॥
स्वासा लई आस तजी जिया की । नाहीं प्रिया की न सिसू सिया की ॥

---

* पाठांतर—रत

सम्हारिकै फेरि उठ्यौ छुहानो। मानौ रुठ्यौ प्रेत महाभयानौ ॥
बोल्यौ अरे बीरन हारि मानौ। छत्रीन कौ धर्म गहौ पुरानौ ॥
मरना हमैं बीस बिस्से बिचारौ। हैगी नफा शत्रु जु मारि डारौ ॥
यौं भाषिकै कोट फिर्‍यौ अमानौ। दूजे गढ़ै राउ घमसान ठान्यौ ॥१८॥

छंद हीरक

छुट्टत इत तोप टुट्टत पहहार से।
बुट्टत अधउद्ध धूम घुट्टत अँधियार से ॥
कुट्टत महि गोल गोल फुट्टत ह्वै छार से।
लुट्टत कहुँ हुट्टत नहिं मीचु के अहार से ॥
धुंकत जज्जाल जाल हुंकत भौचाल से।
फुकत बड़ूक व्याल फुंकते कराल से ॥
कुक्कत बहु कुहक बान मुक्कत दुहुँ ओर हैं।
झुक्कन गहि ओट कहूँ लुक्कत बिनु सोर है ॥
झरत झार परत सार लरत कोट ओर हैं।
अरत इक्क परत इक्क ढरत लोट पोट हैं ॥
धद्धद्धरभब्भब्भर झब्भझब्भझर बैरही।
कक्कक्कर पप्पप्पर तत्तत्तर ह्वै रही ॥१९॥

छंद मरहठा

पुर कोटहु टुट्टिय बहु भट कुट्टिय पुर लुट्टिय बेहाल।
सुत भ्रातहु कट्टिय भुव तैं हट्टिय घट्टिय तोप जँजाल ॥
जल अन्नहु बित्तिय दारू रित्तिय कित्तिय रन दिन तीनि।
धाइन अघवाइय औन बहाइय राउ समर अति पीनि ॥२०॥
तब भाई बदन बिकल बिलंदन समुझायो बहु राव।
पुर देस लुटायौ लोग कटायौ तऊ न आई आव ॥
पहलै गढ़ घेर्‍यौ अब अरि नेर्‍यौ तासौं नहीं बंचाव।
तबहीं नहिं मानी भई सुजानी करियै साम उपाव ॥२१॥

कछु है कुल बाकी पुर परजा की जीवनता की एहु।
मिलिबौ अभिलाषौ नरमी भाषौ राषौ रहनौ गेहु॥
जौ जीवत रहिहौ फिर बल गहिहौ लहिहौ बैरु सतेहु।
अब रारि थँभाओ लाजहि चाहौ जाहौ फेरि न छेहु॥२२॥

### छंद उल्लाला

यौं सुनत राउ सब के बचन अपनौ चित निहचै कर्यौ।
मिलनौ न मोहि मरनौ सही तबहिं बक्र बिधि उच्चर्यौ॥२३॥

### छंद दोधक

हौ सब सूर सहायक मेरे। जुद्ध करे तुमने बहुतेरे॥
हौ तुम जान अजान न कोई। लाज रहै करियै अब सोई॥
पै इतनौ मत मो सुनि लीजै। दीन भयैं अरि सौं बहु जीजै॥
सूरज सौं मिलबौ मत दीजै। जौ यह जानत तौ भल कीजै॥
भूमि यहै तुमकौं फिर देहै। औरन संग तुमैं भर लैहै॥
तोप जँजाल तुरंगम बाकी। ते हमपै रहिहै तुम ताकी॥
और यहू तुमरे मन भावै। बैरिनु सौं मिलि जीवतु आवै॥
जो कबहूँ हम जीवत छोड़ा। तौ करिहै अपनौ करि ओड़ा॥२४॥

### दोहा

साहब नौबत मैं भयौं पायौ राव खिताब।
बारगीर पदवी हु कौ तुम सब करत उपाव॥२५॥
सौ जुग रहि बैकुंठ में भोग पलक सम जाइ॥
निमिष एक नर्कहिं लहै कोटिन कल्प बिताइ॥२६॥
रिपु-प्रताप कानन सुनें राजसीनु दुख होइ॥
नैनन लखियै दीन है या सम नर्क न कोइ॥२७॥
और कहत परजा बचै पतिनी तनय सभ्रात॥
बिना आरबल भोग ए तजै न काऊ गात॥२८॥

गीता हू में यौं कह्यौ बेद पुरानन टोहि।
अनहोनी होनी नहीं होनी होइ सु होहि ॥२९॥
आब राखिहै मर्म छुन आब अन्न प्रिय देइ।
बिजै और नहिं होइ रन भजै न दीनति लेइ ॥३०॥
जे मानत जुग जुग जियैं तिनकौ सब सौं हेत।
ते जानत मृतु* रुचि है तिनकौं प्यारौ खेत ॥३१॥

## छंद दुपई

अब जो मिलाप सो होनहार है सो मैं तुम सौं भाखी† ।
अरु करौ सबै मिलि आपु सिताबी जो मसलति करि राखी ॥
जल बूड़त नाव राखिहै सोई जोई करिया पूरौ।
सब करौ सलाह देव जो माँगै मै कह तुमतैं दूरौ ॥
यह सुनत राउ के बचन सबन मिलि चलत अराबौ राख्यौ ॥
चढ़ि दुग्ग कुँवर सौं मिलन आइहै चहूँ ओर यों भाख्यौ ॥
अरु देउ पठाइ बेग रथ बहलैं कढ़ै कबीला जैसौ।
सब लोग बाग कौं लेउ काढ़िकै सहित लाज जिय ऐसौ ॥
बहु ए पुकार सुनि श्रीसुजान कहि यहू बात हम मानी।
अब ह्वैहैं कहा गरीबनु मारैं निकसौ करैं अमानी ॥
तब परे लोग खरराइ दुग्ग तैं सूरज की सुनि बानी।
ज्यौं जीरन जार तोरिकै भाजै मीन देखि ढिग पानी ॥
सब सस्त्र बस्त्र सौं जत्र तत्र ह्वै परे कूदि भयभीते।
मुख देत दुहाई श्रीसुजान की बिकल भए मुख पीते ॥
ते लिए राखि बदनेसनंद ने गढ़ खाली करि डार्‌यौ।
सब रहे पाँच सै मनुज राउ सँग सूने डंका चार्‌यौ ॥ ३२ ॥

---

* पाठांतर—निरय।

† पाठांतर—अभिलाषी

## छंद बिजोहा

देखि या हाल कौं दुग्ग के चाल कौं। राउ बोल्यौ जबै पास देखे सबै ॥
ढील क्यों है करी भाजिबे की घरी। प्रान राखौ धरे होहु मोतें परे ॥
खान पानौ दियौ भान* मानौ कियो। राखि या आस कौ जग के पास कौं ॥
आज सोही घरी भाजिबे की करी। सिंह देवी नहीं पूत जीता कहीं ॥
और चौहानहूँ जालिमःहू कहूँ। रामचँद सै बली जग जासौं भली ॥
भोज सेनापती जुद्ध का जो मती। मात भ्राता अबै प्रान दीने सबै ॥
आज वे जौ नहीं बात तौ मैं कही। यौं प्रलापै कियौ फेरि थंभ्यौ हियौ ॥
नैन रत्ते करे हत्थ मुच्छौं धरे। ओठ ओठौं पिसे दंत दंतौं घिसे ॥
राउ देख्यौ इसौ सिंह धायौ जिसौ। इक्क मीयाँ तहीं बोलि उट्ठ्यौ जहीं ॥
राउजी क्यों बकौ बख्त नाहीं तकौ। कै सु जानै मिलौ जग कौ कै पिलौ ॥
तैं बुलाया हमैं संग लीजै दमैं। देर कीजै नहीं सत्थ हैं सब्बही ॥३३॥

## छंद चौबोला

ऐसे बैन सुनत बड़गूजर उठ्यौ ढाल तलवार लियें ॥
गयौ तुरत ही भौन भीतरैं जंगरंग की राखि हियें ॥
क्रुद्ध दीठि सौं राउ गयौ घर लखि कादर मुख सूके गए ॥
तजे तुरंत† अग के आयुध टलाटली के धीन लए ॥
राउ चढ़ौ प्रासाद सैनिकै किये परिरंभन प्रानपिया ॥
मृदु मुसिकाइ मँगाइ बारुनी पान परसपर दिया लिया ॥३४॥

## छंद घनाच्छरी

बैठे एक आसन सुबासन के बासन मे
भूषन उजासनु प्रकास बहु कीनौ है।

---

* पठांतर—धाम
† पाठांतर—तजि हथियार

सरस बिलोकि फेरि करके परस भए
दरसि दरसि दोऊ रति मति कीनौ है।
भुजन उसारि लीनी उर सौं लगाइ प्यारी
अरस परस अधरामृत कौ लीनो है।
दोऊ जलजात मुख मानो मनजात जान
इंदु अरविंदु कौ मिलाप कर दीनौ है ॥ ३५ ॥

कवित्त

सैंन के सदन दोऊ राजत मदन भरे
बदन बिलोकि कै ललकि लपटाने हैं।
उर सौं उरज मिले अधर सुधरु चारु
चूमत कपोल लोल लोचन लजाने हैं।
हार उरझाने मुरझाने हैं कुसुम भार
अग मदसूदन तऊ न अरसाने हैं।
बैन तुतराने सतराने भौंह ताने रस
साने मुसिकाने ललचाने रतिमाने हैं ॥ ३६ ॥
जौलौं रह्यौ अंग मै अनंग तौलौं संग कीनो
रति रंग भीनो उठ्यौ जंग मनु कीनो है।
चुहटीं चिबुक चाँपि चूँ बिलोल लोइन कौं
रस मैं बिरस कह्यौ बचन मलीनो है।
मिलन हमारौ फिर ह्वैहै परलोक प्यारी
मन तैं न न्यारी प्रेम-पंथ पग दीनो है।
गहि भरि लीनौ कछू ऊतर न बाल दीनौ
हाल से हवाल राउ अंक भरि लीनौ है ॥ ३७ ॥

सोरठा

फेरि राउ धरि धीर कह्यौ बैन बर बाम सौं।
प्यारी होत अधीर शत्रु मारि फिरि आइहौं ॥३८॥

### छंद मुक्तादाम

कढ़्यौ रति-मंदिर तैं वह राउ। चढ़्यौ रन रंग दियो मुख ताउ॥
चल्यौ फिर नारि विवाहित गेह। हुती दुहिता रु बधू जिहि नेह॥
मिल्यौ इक सेवक मझि अवास। सुपुच्छिय ताहि बिलोकि उदास॥
अरे इत आइय क्यौं तुव धाइ। कही उन शत्रु चढ़े गढ़ आइ॥
इती सुनि राउ कही रनबीर। धसौ रनवास लहौ मति पीर॥
रहै मम लाज करौ वह काज। सबै मम गेह सँघारहु आज॥
कहे जब राउ सुने इमि बैन। भले कहि कैं जु चल्यो भरि नैन॥
बिलोकिय भौन पतिव्रत नारि। बधू दुहिता सँग राजकुँवार॥
कियौ उन जौहरु बीर भुलाइ। तिहूँ तिय के दिय सीस उड़ाइ॥
फिर्‌यौ वह बीर गहैं कर खग्ग। खड़ो जहँ राउ भयौ तिहिं अग्ग॥
कह्यौ महराज कर्‌यौ वह काज। कहा करौ ढील चढ़ौ अब बाज*॥
यही सुनि राउ कही हय लाउ। कहा अब ढोल निसान बजाउ॥
हुते हय तथ्थ तयार समथ्थ। चढ्‌यौ बडगूजर दै सिर हथ्थ॥
लख्यौ दृग फारि सुभट्टनु ओर। रहे सत डेढ़ चढ्‌यौ जब घोर॥३६॥

### छंद छप्पय

चढ़्यौ जंग कौं राउ रंग मनु उदित दिवाकर।
करिय दुग्ग परनाम फेरि कीरति तनया घर॥
कटि कृपान कम्मान बान आयुध कर लिन्निय।
धरि मुच्छन पर हथ्थ तथ्थ डंका करि दिन्निय॥
सुनिकैं निसान खलभल परिय लेहु लेहु चहुँ ओर भुअ।
गढ़ पै जवान ब्रजभान के आसमान मघवान हुअ॥ ४०॥
प्रथम चंड करि चंड बहुरि परचंड पवन चलि।
अंधधुंध भुवषंड उमड़ि घन धूम धूरि हलि॥

---

* पाठांतर—आज

तड़तड़ान तड़िता रु गज्ज मंडिय उदंड अति।
अद्ध उद्ध बेहद्द नद्द हुव प्रबल सिंधुगति ॥
झरझरिय बारि भरि भरि झटकि करि सिलाह दुग्गहिं मढ़िय।
सुरराज उद्ध व्रजराज अग जबहिं राउ रन कौं कढ़िय* ॥४१॥

छंद कंद

कढ्यौ दुग्ग तैं राउ दै घोर नीसान।
घरी तीन असमान में ज्यौं रह्यौ भान ॥
जु है डेढ़ सै में रहे एक सौ ज्वान।
चढ़े राउ के संग आसा तजै प्रान ॥
किलै पुब्ब द्वारैं पिल्यौ आइयौ बीर।
तहाँ सूर के सूर की ही भरी भीर ॥
तहाँ राउहू जंग कौं आन औसान।
लए हाथ टंकारि कम्मान औ बान ॥
चल्यौ मद ही मंद वैरीनु के फंद।
मनौं कार के बादरों में धँस्यो चंद ॥
चल्यौ गाहतौ चाहतौ जूह के जूह।
मनो पथ्थ के पूत पैठ्यौ चक्राव्यूह ॥
किधौं नीर गंभीर कौं चीरतौ ग्राहु।
सुराधीस की सैन मैं ज्यौं धँसै राहु ॥
चहूँ ओर तें आयुधौं के छए जाल।
परैं तीर बंदूक जज्जाल की झाल ॥
तरैं तेग तेगा घलामेल ह्वै सेल।
बरच्छी बरच्छान को है महारेल ॥
अनी सौं अनी यौं धनी सौं छुनी देह।
परैं तीर गोली अटा तैं घटा मेह ॥

---

* पाठान्तर—चढ़िय

सितारे निसानाथ के साथ तैं छूटि।
परैं राव के सूर यौं जंग मैं टूटि॥
चल्यौ आपने भौन तैं तीर के मान।
तहाँ मोरचा रोपि सिंभू-तनै आन॥
पस्यौ डीठि ताकी चलाकी करी बीर।
दई राव के अंग बंदूक की पीर॥
गई फोरि गोली तऊ ना धुक्यौ धीर।
कस्यौ तथ्थ संधान कम्मान मैं तीर॥
इती मारुहू कौ लियो ओड़िकें सारु।
मिल्यौ बीच त्यौंही प्रथीसिंह पंमारु॥
जुरी डीठि सौं डीठि दोऊ तकैं घाउ।
प्रथीसिंह बोल्यो कहाँ जाइहै राउ॥
रहे बीस कै तीस सथ्थी तिहीं सथ्थ।
कटे कै हटे भू पटे दुग्ग के पथ्थ॥
चितै रावहू ने कियो बान कौ घाउ।
दियो बान पंमारहू ने बच्यो राउ॥
गजै घोर आकास भू पै बजै सारु।
परै मेह दोऊ छयौ जोरु अध्यारु॥
टुटे कंध कंधा लुटैं के बुटे जात।
फुटे सीस के श्रौन धारान सौं न्हात॥
छुटैं बाज कै यौं खुटे हथ्थ हथ्यारु।
जुटेहू कुटे हू रटैं मारुही मारु॥
घनी भीर कौं चीर कैं सो कढ्यौ धीर।
रहे राव के संग में, पाँच ही बीर॥
फंद्यौ कोट खाई उठाई तहाँ बाग।
मनौं पौन प्राची लगै कढ्ढियौ नाग॥

कहैं चारिहू ओर तें लेउ रे लेउ।
कहूँ देउ रे देउ रे देउ रे देउ॥
तवै चित्त चित्यौ सुबड़गूजरौ नाहु।
लई काढ़ि समसेर धायौ महाबाहु॥
जिते में बदल्ला सुहल्ला कस्यौ तथ्थ।
जहीं तेग तेगा कढ़े एक ही सथ्थ॥
झमाझम्म बीती घमाघम्म ता ठौर।
झरी फुलझरी सी मनौ बिज्जु की झौर॥
जुट्यौ देखि रावै बुटे तीनि ता बार।
रह्यौ राव के संग मैं एक असवार॥ ४२॥

छप्पय

तवै मेव यह कही बीर ठाढ़ौ रहि ठाढ़ौ।
अब नहि जीवत जाइ लोह करिहौं रन गाढ़ौ॥
सुनत राव ह्वै क्रुद्ध जुद्ध मैं तेगहिं झारिय।
तहीं मेव गहि छेव तुरंगम तैं गहि डारिय॥
भू पारि परी ह्वै तीनि असि बड़गूजर के अंग पर।
लिय सीस काटि सथ्थी सहित राव रुंडु सोयौ समर॥४३॥

कवित्त

खेलना पनारौ पूना माँडौ गज नई ऊना
रनथंभौर जा सितारे हू कौ दुर की।
कालिंजर गोपाचल इंदौर महोबा कौन
काढी नरवर बैंड अलवर उर की।
बिंध्याचल निकट बकाई बड़गूजर की
घासैरैं बजाई गढ़पती राजु धर की।
अड़ राखी पैंड़ राखी मैंड रजपूती राखी
राउ रज राखि राह लीनी सुरपुर की॥ ४४॥

भटनि समूह उद्भटन सरीरबारे
तीरबारे तरल तुरंगम सजाइकै।
चंडकर कर से प्रचंड कर खग्ग धरि
अग्ग धरि पग्ग पल चरनि गजाइकै।
डंका दै निसंका बीर बंका श्री जवाहिर सु-
जाहिर ह्वै धायौ पर दलनु भजाइकै।
भूजर उपारिकै कहूँ जरनि राखी तिनि
ऊजर कर्‌यौ है बड़गूजर बजाइकै ॥ ४५ ॥

## छंद पद्धरी

बिन सीस पर्‌यौ वह राउ खेत। रन विजय शब्द सूरजहिं देत ॥
बज्जे सहदानै घोरि घोरि। बुल्लन फतूह सूरजहिं ओर ॥
पुनि श्री सुजान हूँ हरषि पाइ। भट भेटि जुद्ध श्रम दिय मिटाइ ॥
अरु सिंह जवाहर हू हरष्षि। निज सुभट भेटि मौजहि बिरष्षि॥
पुनि अमरसिंह भंभा सुनंद। निरष्यौ सुजान नै बुध्धि बिलंद ॥
घासहरैं थप्पिय सो अमान। बहु सुभट तानि सौंपिय सुजान॥
यौं सबै थान करि सावधान। पलट्यौ सुजान पुनि दै निसान ४६।

## कवित्त

दलन गनैया दीह देसन दबैया उग्ग
दुग्गन-दरैया खल-खंडन रह सूक्यौ सो।
छिति के छितीसनु की छाती छनि छार भई
पेषत प्रताप तेरो प्रबल भभूक्यौ सो।
सूदन सबल सिंह सूरज तिहारे धाक
धूमनु करत रहैं दक्खिनी बिभूक्यौ सो।
सहित अमीर पीर धीर न धरत उर
चौंकि चौंकि चाहत चकत्ता चित चूक्यौ सो ॥४७॥

## हरिगीत छंद

भूपाल पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जानैं दिलीदल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइके।
वह राउ मारिय गढ़ बिदारिय अंक चौथो आइकै॥४८॥

इति चतुर्थ अंक

इति श्री मन्महाराजाधिराज व्रजेंद्रनदन श्री सुजानसिंह हेतवे
कवि सूदन विरचित सुजान-चरित्र घासहरौ विजय
नाम षष्टमौ जंग समाप्तम्॥

---

## षष्ठ अंग

### छप्पय

धरि सत रज तम रूप स्रजति पालति संघारति ।
आरत लखि सुरराज बिपति असुरन कौं पारति ॥
धूम चंड अरु मुंड महिष रकता रज भंजति ।
सिंभु निसुंभु चबाइ चारु दस लोकन रंजति ॥
जाकी बिभूति परब्रह्म ह्व निरगुन तैं गुनमय बरनि ।
मुनि देव मनुज सूदन रटत जयति जययि शंकर-घरनि॥१॥

### दोहा

गत पुरान सत बरष दस मधु रितु माधव मास ।
सूरज हित मनहूर कै गह्यौ दिली पै गाँस ॥२॥

### छप्पय

सप्त दीप कौ दीप दीप जबू अति आगर ।
नव खडनु बर खंड भर्थ नृप खंड उजागर ॥
तासु मद्धि मधिदेस बेस देसनु की मनि गनि ।
मथुरामंडल निकट पाँच पथ महि अनूप भनि ॥
हैं द्वीप खंड अरु देव बहु तन मै ज्यौ तन सीस लहि ।
भाभोग नीति नर प्रीति जुत नागनगर सुर बेस कहि ॥३॥
तासु मद्धि परसिद्ध नागपुर संतन राजा ।
तनय तीन भए तासु भीष्म भुमि भारथ काजा ॥
तिहिं बिमात तें अनुज चित्रबपु बिय बिचित्र रज ।
जिहिं बालनु ते भए अध पांडुव सुबिदुर अज ॥

सत एक एक सुत अंध के पंडव कैं पाँचै भए।
वृषपूत भीम अर्जुन नकुल सहदेव देवनु दए ॥४॥

दोहा

पंडु मस्यो मुनि श्राप तैं रहे पाँच हू पूत।
अंध नृपति तिन कौं दए पंच पथ्थ मजबूत ॥५॥
पानीपथ सुनिपथ दुऔ बागपथ्थ तिलपथ्थ।
इंद्रपथ्थ पुर थप्पियौ पंडु पूत समरथ्थ ॥६॥
देवलोक ज्यौं गगन मैं बलिपुर ज्यौं पाताल।
इंद्रप्रस्थ त्यौं भूमि पै रच्यौ धर्म नरपाल ॥७॥
स्वारथ कौं भारथ रच्यो पारथ कृष्ण सहाइ।
अंध-बंस निरबंस करि गए हिमालय धाइ ॥८॥
अर्जुनसुत अभिमन्यु की पतिनी गर्भ मँझार।
कृष्ण-कृपा तै सो बच्यौ भयौ भूमि-भरतार ॥९॥
सो नृप तच्छुक ने डस्यौ श्रीशुक किया उधार।
जन्मेजय ताकौ तनय बैर बहोरन हार ॥१०॥
इंद्रपथ्थ यौं पंडुकुल भुगतीं बरष अनेक।
फिरि आई चौहान कैं बिलसी धरै बिबेक ॥११॥

छंद पद्धरी

चहुँवान कस्यौ बहु बरष राज। प्रथिराज जुद्ध कीने दराज ॥
लिय सात बार गोरी सुबंध। पुनि भयौ भूप तिय-नेह अंध ॥
बारह सै संबत अंत आइ। लीनी सहाब दिल्ली दबाइ ॥
रन पकरि प्रथीराजै सहाब। गजनई दुग्ग लैगौ सिताब ॥
तहँ गयौ भट्ट बरदाइ चंद। नृप सहित साहि कीनौ निकंद ॥
तब तैं सु बढ्यौ तुरकान घोर। रोजानिबाज भुव भई गोर ॥
पुनि भयौ साहि अल्लावदीन। दिल्ली-भतार कर्तार कीन ॥
सत दोइ बरष भुगती पठान। पुनि भयौ चकत्ता साह आन ॥

तूरान भूमि तैं षग्ग जोर। तैमूर साहि आयौ कठोर ॥
ताकौ किरान पद भयौ साहि। मीराँ जु साहि ताकौ सराहि ॥
सुलतान मुहम्मद पुनि दिलीस। तिहिं अबूसैद बलवंड ईस ॥
हुव उमर सेख पुनि साहि चंड। बब्बर जु साहि ताकौ उदंड ॥
ताकौ जु हिमाऊँ साहि हूअ। तासौं पठान सौं भयौ जूह ॥
लीनी पठान दिल्ली छिड़ाइ। वह साहि हिमाऊँ गौ पलाई ॥
पुनि भए दिलीपति सो पठान। दो सेर सलेमहु साहि जान ॥१२॥

## दोहा

प्रगट हिमाऊँ कैं भयौ अकबर साह उदंड।
तिन पठान मारे सबै राज कस्यौ अति चंड ॥१३॥

## छंद पद्धरी

वह भयौ चकत्ता अति अमान। जिन जीनी बसुधा निज कबान ॥
ईरान और तूरान लीन। अरु* फिरंगान सरहद्द कीन ॥
हबसान और खुरसान जीति। तिलँगान आपनी करी नीति ॥
किलवाँक साहि की आन मान। इसफाँह बजे जाके निसान ॥
बुगदाद जीतियौ बदकसान। अरबान और ईरान जान ॥
किय रूम साम आसाम जेर। डास्यौ कुसावहू कौं बखेर ॥
कसमीर जीति बहु† नीर देस। दिय कोह काफहू में कलेस ॥
कहकह दिवाल दहदह प्रतापु। मरहट्ठ ठट्ठ लिय साहि आपु ॥
मारू मलार सोरठ दबाइ। दच्छिन दिसाहि जीत्यौ बजाइ ॥
अंग बंग तिरलंग दाहि। अरु द्रविड़ देश लीनौ उमाहि ॥
वह आठ काठ अरु घोर घाट। बंगाल गौड़ मगधीस डाट ॥
करनाटक और लीनी बराट। नद ब्रह्मपुत्र मास्यौ उचाट ॥
परबती भूप करि आप हथ्थ। बरफान देस लीन्यो समथ्थ ॥

---

* पाठांतर—पुनि।

† पाठांतर—सब।

चौदह हजार भुव कौ समान। किय आन चकत्ता निज भुजान ॥
यौं कर्यौ राज अकबर उदंड। पंचास और द्वै बरसु चंड ॥
पुनि जहाँगीर हुव तासु पूत। दिल्ली जु साह उद्धत अभूत ॥
बाईस बरस बसुधाहि भोग। पंचत्तु पाइ हुव भूमि जोग ॥
सुत साहि जहाँ ताकौ दिलीस। तिन कियौ राज बरसै बतीस ॥
पुनि भयौ साहि औरंग साहि। जिन तुरक रीति कीनो उमाहि ॥
पंचास बरस किय राज घोर। दिसि दच्छिन जाकी भई गोर ॥
पुनि भयौ बहादुर साह उद्ध। जिनि गहि कृपान किय बहुत जुद्ध ॥
किय पाँच बरस बसुधा सुभोग। लाहौर तख्त हुव भूमि जोग ॥
सुत भयौ मौजदी पातसाहि। एक बरस भूमि करि भोग ताहि ॥
पुनि भयौ साहि फर्रुक जु सेर। छह बरस राज कीनो सुबेर ॥
पुनि भयो रफीदरजाति साहि। किय मास तीन प्रभुता धराहि ॥
पुनि साहजहाँ पतिसाह जान। वह चार मास भुव भोगमान ॥
पुनि भयौ साहि महमंद साहि। तिहि तीस बरस किय राज चाहि ॥
जब साहि महम्मद तजे प्रान। सुत साहि अहम्मद भौ जवान ॥ १४ ॥

## दोहा

पातसाहि अहमंद कैं भौ बजीर मनसूर।
पोता मलिक निजाम कौ बकसी भौ मगरूर ॥ १५ ॥
तूरानी बकसी भयौ ईरानी सुवजीर।
नाचाखी दोऊन मैं दिल्लीपति के तीर ॥ १६ ॥

## छंद नीसानी

एक रोज पतसाह दी बकसी लै मरजी।
बिन वजीर दीवान मैं कीनी यह अरजी ॥
हजरत सफदर जंग मैं क्या अदब बजाया।
नाजर फिद्वी साहि का दै दगा खिपाया ॥

हो वजीर हिंदुवान दा यह इसम बढ़ाया।
नाहक उरझि पठान सैं भगना ठहराया॥
दौ मलाइ दखनीन कौं सब मुलक लुटाया।
साहिजिहानाबाद मैं जद सै यह आया॥
तद सैं हुकुम हजूर दा नहिं एक बजाया।
पोता मलिक निजाम दा जब यौं बतराया॥
सो सुनिकैं पतसाहि भी दिल में सब ल्याया।
तिसी बखत मनसूर सैं यौं कहि भिजवाया॥
जाना अपने मुलक कौं हजरत फुरमाया।
जद यौं सुना वजीर ने दिल में खुनसाया॥
तौ भी दिन दस बीस लौं दिल मैं नहिं लाया।
फेरि साहि मनसूर कौं अहदी लगवाया॥
साहिजिहानाबाद तैं तदही कढ़वाया।
तूरानी मिलि साहि सै यौं बैर बढ़ाया॥
ईरानी मनसूर कौं पुर सै कढ़वाया।
बडा कुँवर अरु काइदा मनसूर गँवाया॥
स्वासा लेत भुजंग ज्यौं उस रूप लखाया।
करि आपुस के बैर नूँ कहि कौन सिराया॥
जेहा खेलाखेल नूँ तेहा फल पाया।
दिल्ली सै बाहर हुवै मनसूर रिसाया॥
जुजबी फौज निहारि कैं पुर मैं मँडराया।
अहंकार दिल में चढ्या तद ब्यौंत उपाया॥
जे रफीक थे आपने तिन कौं बुलवाया।
पूरब सै निज फौज नूँ जलदी फुरमाया॥
चाकर मेरा है वही जो आवै धाया।
घासहरै कौ कुँवर भी फरचा करि आया॥

खबर पाइ मनसूर भी खुसियौ से छाया।
तिसी बख्त मनसूर ने फरमान लिखाया॥
रहमति दै कहि आफरी इलकाब बधाया।
कुँवर बहादुर आवना करि मेरा साया॥
तूरानी गलबा दिया मुझकौ अकुलाया।
इसी बख्त के वास्तै इखलास बधाया॥
चाहौ मैंड़ी जिदगी तौ आवौ धाया।
यौं लिख सफदरजंग ने फरमान पठाया॥
घासहरैं था कुँवर जो रनरंग अठाया।
तिस कागज के बाँचतैं सूरज मुसिक्याया॥
अपना बिरद सँभारिया दिल और न लाया।
अच्छी साइत देखिकैं डका लगवाया॥
सिह जवाहर संग लै तदही चढ़ि धाया।
पंद्रह सहस सवार लै पैदल बहु भाया॥
आनि फरीदाबाद मैं डेरा करवाया॥
फेरि कूँच करि दूसरा रविजा तट आया।
तहँ फरजंद वजीर कैं मिलना ठहराया॥ १७॥

## सोरठा

पुनि मिलि सिह सुजान सफदरजंग वजीर सौं।
डेरा किए अमान खिदरबाग रविजा-तटहिं॥ १८॥

## कलहंस छंद

दिन दूसरैं मनसूर सूरज पास कौं।
दरबार ह्वै असवार सो इखलास कौं॥
लखिकैं वजीर सुजान हू सनमान कौं।
बहु भाइ अदबु बजाइ दै बहु मान कौं॥

ढिग देखि सफदरजंग सिंह सुजान कौं।
सब पूछियौ बिरतंत आवन जान कौं॥
फिरि आपनो सुहवाल भाषि वजीर हू।
मुगलान जो कलकान की चहुँ वीर हू॥
भरि स्वास लेन उसास देखि अकास कौं।
बिसवास कै इक आस है तुव पास कौं॥
यह मैं मुकर्रर है किया तुम सैं कही।
अब तौ दिली दहबट्ट करनी है सही॥
इस वास्तै तुम कौं बुलाइय मैं बली।
करनी न देर सुजान मो दिल कौं भली॥
जब यौं कही मनसूर सूरज सौं सबै।
समुझाइयौ सुवजीर कौं बहुधा तबै॥
तुम हौ पनाह सनाह या हिंदुवान के।
नहिं आपु लाइक बात ए गुन आन के॥
गहि एक कैं सुबिगारि वालत देस कौं।
रहिहै यहै सुकलंक पेस हमेस कौं॥
अब तौ यही जु सलाह है मिलि साहि सौं।
करिकैं दिलीपति हाथ जंग जुनाहि सौं॥
सुनियैं जु सफरदरजंग बैन सुजान के।
मुरझाइ आनन नैन बैन बयान के॥ १६॥

महालच्छिमी छंद

फेरि मनसूर बोलयौ यही। सिंह सुजा कहा तैं कही॥
टेक तूरानियौं की रही। आब मेरी जिन्हौंने लही॥
साहि भो है उन्हौं का सही। होइगा क्यौं हमारा वही॥
आस मैं एक तेरी गही। आप उम्मेद मेरी दही॥
एक फर्जंद जल्लाल दीं। दौम बीबी उसैं पालदीं॥

आपने संग लीजै इन्हैं। जिंदगी चाहिये है जिन्हैं ॥
गांद ए होइ तेरो वली। सीख दीजै मुझै जो भली ॥
जंग कैहौं दिलीसैं करौं। नेस नाबूद बैरी करौं ॥
नाहिं तौ सीस टोपी धरौं। हाल ही जाइ मक्कैं मरौं ॥२०॥

## छंद मधुभार

मनसूर बैन सुन कै सचैन कहियौ सुजान करि सावधान
कहिहै नवाब करिहा सिताब पुर-सहित साहि हनिहौं जुवाहि
अबकैं दिलीस रहिहै न ईस* मुगलान सब्ब तजिहैं गरब्ब
पुर इंद्र जोर करिहौं निजोर तुव सत्रु मारि बकसी बिगारि
यह पातसाहि रहिहै न चाहि मुद्दई जितेक तितने अनेक
सबतें मिटाइ पुर कौ लुटाइ लहि तौ प्रतापु करिहौं सु आपु
तजियै सुछोहु गहियै सुलोहु मत एक एहु धरि चित्त लेहु
चकते सबंस नहि और अस इकु पातसाहि करियै सुचाहि
तखतै चढाइ धरि छत्र ताहि तब दै निसान चढ़ियौ अमान ॥२१॥

## दोहा

हम चाकर है तखत के सकती करी न जाइ।
यह उपाइ करिहौ अपुन तौ बलु सबै बसाइ ॥ २२ ॥
चार लाख बदनेस कै हैदल पैदल त्यार।
ते नवाब के जानियौ हुकम-बजावनहार ॥ २३ ॥
अब दिन द्वै में रामदलु आयौ जानौ पास।
श्रीहरिदेव भली करैं क्यों तुम होत उदास ॥ २४ ॥

## सोरठा

यह सुनिकै मनसूर दोऊ कर ऊँचे करे।
फिर मुख आयौ नूर कह्यौ बहादुर आफरीं ॥ २५ ॥

---

* पाठांतर—हीस

इस डाढ़ी की लाज कुँवर बहादुर है तुमैं।
है यह काज दराज होवैगा तुझ हाथ सैं ॥ २६ ॥
अब सवार तुम होउ जाइ माँदगी कटक की।
कालिह बजावैं लोहु साहि तख्त बैठारिकै ॥२७॥
लख्यौ सुदीन वजीर सूरज सबै कबूल किय।
ह्वै सवार रनधीर दिल्ली के सनमुष भयौ ॥ २८ ॥

सवंगा छंद

सूरज सफदरजंग जवाहर सग लै।
दै दै दिब्य निसान सैन बहु रंग लै ॥
प्रथम दिना पुरइंद्र दिखायौ साथ कौ।
ज्यौं किसान लहि सगुन करै कृषि हाथ कौं ॥२९॥

हरगीत छंद

भूपालपालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान है।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
मनसूर-सूरज-मिलन दिल्ली प्रथम अंक सुनाइकैं ॥३०॥

इति प्रथम अंक।

---

दोहा

फेरि आइ मनसूर ने कीनौ भेद उपाइ।
पोता काम जु बकस कौं लीनौ बेग मँगाइ* ॥१॥

छप्पय

ताहि तख्त बैठारि धारि सिर छत्र जटित जर।
चँवर मोरछल ढारि कियउ इतमाम आम घर ॥

---

* पाठांतर--लीनो गुपत बुलाइ।

अरुन बरन नीसान तानियौ अरुन बितानहिं ।
सहदाने घन घोरि दियौ उमरावनु मानहिं ॥
उद्धत हयंद सुगयंद नर बहु सुभट्ट हाजिर प्रबल ।
सूरज सहाइ मनसूर नैं थप्यौ साहि अकबर अदल ॥२॥

छंद पावकुलक

अकबर अदल साहि धरि आगैं । सफदरजंग जंग अनुरागैं ॥
अपनी चमू साजि गज चढ्यौ । तूरानिन पै अति रिस बढ्यौ ॥
इसमाइल राजेंद्र गुसाँई । सफदरजंग भए अगवाँई ॥
द्वादस सहस हयंद हँकारे । हे वजीर के सग तयारे ॥
तबही सूरजह्न ने डंका । सब तैं आइ चढ्यौ रनबंका ॥
तातैं अग्ग जवाहर धायौ । सजिकैं सैन दिलो समुहायौ ॥
पंद्रह सहस तुरगन वारे । ब्रजबासी चढ्ढे रन रारे ॥
अनगिनती पाइक ललकारे । दिल्ली के लूटन पग धारे ॥
सफदरजंग जोरि दल एतौ । चढ्यौ इंद्रपुर कौं भय देतौ ॥
जिते हयंद गयंदन वाले । ते सब रेती के पथ चाले ॥
पाइक लगी राह मन भाई । जो जाके सनमुख ही आई ॥
एक ओर तै लूट मचाई । करत किसान खेत ज्यौं लाई ॥
पुर बाहर जे हे पुर छोटे । ते सब भए उही दिन बांटे ॥
किसनदास* सरवर दै पाऊँ । बारह पुरा लूटियौ आऊँ ॥
लियौ तोपखानौ करि हल्ला । अरबसराइ मचाई अल्ला ॥
इतनो देखि वजीर खिहानो । फिर डेरनु कौं कियो पयानौ ॥३॥

मालती छंद

अहमदसाहि सुनै अकुलाहि रह्यौ दृग चाहि कछू न बसाहि ।
सबै उमराइ लए बुलाइ कह्यौ समुझाइ करौ सु उपाइ ।

---

* पाठांतर—किसनरास ।

गजद्दियखान तबै ढिग आन करी जु सलाम भख्यौ जहँ आम।
कह्यौ जु निहोर दुहूँ कर जोर हुवा मनसूर वजीर गरूर।
जथा उस नाम किया वह काम हुवा बदराह जु खातरखाह।
जिसैं फुरमाइ करौ सु बिदाइ वहै अब धाइ गहै उस जाइ।
कहौ अब रास जु है मुझ पास सु हाजर हाल सु जानहु माल ॥४॥

### दोहा

जान माल से साहि का फिद्‌वी हाजर हाल।
रजा होइ सुगुलाम कौं मनसूरा क्या माल ॥५॥

### छंद कुंडलिया

अरजी बकसी की सुनत साहि अहम्मद साहि।
पोता मलिक निजाम कौ कियौ वजीर सराहि * ॥
कियौ वजीर सराहि और यह मतौ उपायौ।
समसामुद्दौलाहि मीर बकसी ठहरायौ ॥
ठहरायौ सब दैन तोपखानौ रन गरजी।
सुनी अहम्मद साहि गाजदीखाँ की अरजी ॥६॥
तबही उन दोऊन कौं सरोपाव समसेर।
सादलखाँ सु नजीमखाँ जान पठान रुहेल ॥
जान पठान रुहेल साहि तब यौं फुरमायौ।
रेती के मैदान मोरचो तुम्हैं बतायौ ॥
तुम्हैं बतायौ सबै अराबौ लैकैं अबही।
उस हरीफ कौं लेउ जंग कौं आवै तबही ॥ ७ ॥

### छंद संखजारी

सुनै साहि बानी सबै मीर मानी, करी सावधानी चमू साजि आनी।
लयें तोपखाने मनो देव दाने रुपे जाइ रेती हुतीं तोप जेती।

---

* पाठांतर—बकसी कियो सराहिं।

किती हाथ बाहैं सुकोऊ अठाहैं कछू बील हथ्थी धरी एक सथ्थी।
सहस दोइ ऐसी भुजा मीचु कैसी किती अष्टधाती किती लोह-जाती।
कछू बाघ-मुक्खी किती मुक्ख रुक्खी धरी एक मोटी तहाँ दोइ छोटी।
करैयौं जजीरा बढ़े धीर धीरा सुतरनाल मंडी सुहथनाल चंडी।
तहाँ बानवारे हजारौ सँभारे कढ़ैं गोल गोला करैं तोल तोला।
भरैं एक दारू ररैं मारु मारू नकीबौं सुनाई चलौ अग्ग भाई।
यहै सद्द छायौ नहीं पारु पायौ सजे* बीर बानैं चढ़े लै निसानैं ॥८॥

## छंद तिलक

तब सादलखाँ सु नजीम जहाँ सु हरौल भए तन तेह छए।
अरु सैन पती इनकौ मदती पुठवार रह्यौ बहु जोर गह्यौ।
सु अमीर जिते सब संगति से बहु तोपन कौं अरि लोपन कौं।
धरि अग्ग धुके महि जात रुके बहु स्याम धुजा बहु रंग कुजा।
सित स्याम घनी बहु नील बनी इक जोजन लौं भुव छाइ दलौं।
सजि सैन चले सब बीर भले रिस बैन कहे रस बीर गहे।
मनसूर जहाँ गहि लेइँ तहाँ ॥ ६ ॥

## दोहा

निकट अहम्मद साहि के रह्यौ गाजदीखान।
बकसी तैं जु वजीर भौ जुद्ध हेत बलवान ॥ १० ॥

## छंद लीलावती

सुनि सफदरजंग उमंग अंग धरि जंग हेत तदबीर करी।
राजेंद्र गुसाँईं इसमाइलखाँ दुहुनि संग भटभीर भरी॥
बेकरि हरौल सनमुष हँकारिय जितहिं अराबौ घोरि धर्यौ।
गहि जमुना-तीर बीर धरि धारैं हय हंकिय नहिं बिलम कर्यौ ॥११॥

---

* पाठांतर—सरे।

पुनि श्री सुजान अरु सिंह जवाहर करि सिलाह धरि आइ बढ़े।
तै मसलत अकबर अदल वजीरहिं सहर पुराने चाइ* चढ़े॥
हैदल सब संग अग्ग धरि पैदल तिनहिं बीर यह हुकुम कियौ।
अब लेउ ईंट करि देउ ईंट सौं दिल्ली सहर हम तुमहि दियौ॥१२॥

छप्पय

जब सुजान नर कहिय तनय जाहर सु जवाहर।
तब सुनि सब ब्रजबीर हरखि हुंकिय ज्यौं नाहर॥
करिय हल्ल बहु मल्ल रल्ल पुर मद्धि मचाइय।
कहत देव हरिदेव देव-पति की जु दुहाइय॥
चहुँ ओर सोर अति घोर हुव तोरि फोरि भवननु भरिय।
दिल्ली दरयाव बहु आब जुत सूरज-दल दलदल करिय॥१३॥

छंद त्रिभंगी

करि करि ललकारे, गली गल्यारे, तोरि किवारे पुरवारे।
गहि करनि पनारे लहि उपरारे उच्च अटारे पग धारे॥
बज्जंत कुठारे लत्त लठारे पौरि दुआरे भुव पारे।
तारिनु झनकारे कहूँ कुसारे तिष्ष छुरारे पटतारे॥ १४॥
पटतारे तारे खुटे दुआरे फुटे तिबारे चौबारे।
भज्जे घर-वारे ज्यौं पषवारे बहु हटबारे भौभारे॥
केते हथियारे सीस फिकारे डारि झगारे डर डारे।
अटके लरिटारे भटके न्यारे होत अगारे हक्कारे॥१५॥
हक्कारे पारे जाटौं मारे मुगल महारे मनहारे।
आरे के आरे बारह द्वारे कछु न सम्हारे गहि डारे॥
ऊँचे घर-वारे खड़े पुकारे हुवा कहा रे करतारे।
रव हाहाकारे घोर महा रे बूढ़े बारे चिक्कारे॥ १६॥

---

* पाठांतर—जाइ।

चिकारनु पारे धावत रारे आरे जारे ले जारे।
लै कै तरवारे देत धवारे दिल्लीवारे बेजारे ॥
गए हकाबकारे लगत धकारे हैं बिकरारे गहि नारे।
ब्रजबासी प्यारे भरत सरारे साँझ सकारे असरारे ॥ १७ ॥

### छंद ललितपद

रारे लेह लेह करि धाए गेह गेह चढ़ि साजे ॥
सूरज सुभट कटकि पुर कटकनु थँभे लाल दरवाजे ॥ १८ ॥

### कवित्त

लाल दरवाजे पर सूरज सुभट गाजे
नाजे ताजे बीर हथ्थ आयुध दराजे हैं।
भाजे पुर लोगन कपाट दरवाजे दीने
ऊरध भुसंडिनु कैं उद्धत* अवाजे हैं।
कहूँ सर बाजे छुर बाजे लमछुर बाजे
बाजे बाजे भाठिनु सौं भोरे सिर साजे हैं।
जैंग के लराजे उभराजे लहि छाजे ओट
केते लोट पोट मिले आजे पर आजे हैं ॥ १९ ॥
पावत पराजे दरवाजे वारे भाजे देखि
केते लोट पोट कोट चोटन सुमार में।
टूटन किवार हाहाकार ता बजार परी
बार बार बिकल बिलंद भीर भार में।
आए आए कहत बगाए माल भौंहरेनु
जाएहू गँवाए नारि सहित अगार में।
माए कहूँ बाए बाल रटनि बुवाए ताए
लेहरी ददाए तो चचाए आए खार में ॥ २० ॥

---

* पाठांतर—उद्धत।

खारीं खतरानी कतरानी सतरानी फिरैं
बाँभनी बिन्यानी तुरकानी थररानी हैं ।
काइथी अरोरी थोरी बैसनि तमोरी गोरी
काछिनी किरानी औ भट्यानी भहरानी हैं ।
हीरी बहु कीरी नर नीरी तीरी पीरी भई
सूरज के तेज-चंद-कला ज्यौं परानी हैं ।
नूपुर वलय वलयानु रसनानु धुनि
मानहुँ प्रभात पछी बानी मँडरानी हैं ॥ २१ ॥
डोलती डरानी खतरानी बतरानी बेवे
कुड़िए न वेखी असी मो गुरुन पावाँहाँ ।
किथ्थे जला पेउ कित्थे उज्जले भिड़ाउ असी
तुसी कोलग्रीवाँ असी जिंदगी वचावाँहाँ ।
भट्ट ररा साहि हुवा चंदला बजीर वेखो
एहा हाल कीता वाह गुरू नूँ मनावाँहाँ ।
जाँवाँ किथ्थे जाँवाँ अम्मा बावे के ही पाँवाँ जली
एही गल्ल अष्षै लष्षौ लष्यौ गली जाँवाँहाँ ॥ २२ ॥
आव्या तमें आगल न ल्याव्या माटी कागलनै
डागला नड़ीटू को कठामरून लीध्यूँ छै ।
डीकरी न छैया साथैं मोकल्या न मामी हाथैं
घरणू न आथे भूड़ा पौतियौं न दीध्यूँ छै ।
हालरू हम्हारू बाट माहें जारे आवी जोयूँ
हहरू हमारूँ। पूठी पेला माहँ वीध्यूँ छै ।
चीधू छै न पाहै सीधू खावानै नहाहै हवै
सिव जी सहाहै जिनैं एवूँ हाल कीध्यूँ छै ॥ २३ ॥
के कराँ सभागी भीसू भाई भाग्यौ टापरे से
आपुरे षटाऊ ए लुटाऊ घर घाले हैं ।

पापरी नवापरी मुगोरो भाँडे घाली पड़ो
लोड़िये न के के लेके आप सासू लाले है।
काके पैर पाके मूनै आक लेन जाके भागे
नागे हू न छूटे फूटे ऐसे आनि ताले है।
केवे हुवा केवे लेवे देवे देवे देखि
वे वे ज्वाले माई अब तेरे हम बाले हैं॥ २४॥
कौठे रह्या ठाकराँ कि ठाकराँ पधास्या बीरा
चाकराँ न लारै म्हे उभारै पग धाँवाँ छाँ।
जाया काट्या जाटराँ जनायो छै जुलम ऐठें
ऊठैं टेठैं म्होंवीतो सवाई रा कहाँवाँ छाँ।
जिसी भालि बाजी निसी गली चली बाजी
म्होनो टारडा न टारडी अवार कोठ्याँ पावाँ छाँ।
काकाजी कागला का अगार ओजौ बाईजी थे
ल्याँवाँछाँ जी ल्यावाँ कोई आँवाँछाँ जी आवाँ छाँ॥२५॥
महलसराइ सैरवाने बूआ बूबू करौ।
मुझे अपसोस बड़ा बडी बीबी जानी का।
आलम में मालुम चकत्ता का घराना यारो
जिसका हवाल है तनैया जैसा तानी का।
खाने खाने बीच सै अमाने लोग जाने लगे
आफत ही जानो हुवा ओज दहकानी का।
रब की रजा है हमैं सहना बजा है बख्त
हिंदू का गजा है आया ओर तुरकानी का॥२६॥
बबुआ न आवा मोर भैयन न पावा याक
तुपक की न लावा गाँठि डीबू आन धावा है।
चाकरी की लकरी की फकरी बिहानी कीन्ह
मनई न कनई दिहाँन याँ बतावा है।

अस कस कीन्ह ख्वार दिल्ली का नवाब ख्वार
चीन्हत न सार मनसूर जट्ट ल्यावा है।
तुहिकाँ न मुहिकाँ कपीं लुहिकाँ रही न जाग
भाग कुल और तोपखान बाघ ब्यावा है ॥२७॥
इंघै चालि इंघैं ऊँघैं ऊँघैं के धस्यौ छै थारो
टालो भी न चाल्यौ छै चरैया घनौ पाला कौ।
बेटौ थाँभि बेटौ भौंडी लागिसै चपेटौ कणै
कूणकै लपेटो फेटो लाग्यौ घरघाला कौ।
गाड़ी एक पाडी दोइ नाडी तीन पीजनीन
नागला तुलावाचारि सूने सोच जाला कौ।
आला कौ रह्यौ सै आला जाला कौ न जाला चौंध्यौ
ताला न लाध्यौ सै भरोसौ कस्यौ माला कौ ॥२८॥
कैहाँ जैहौं कैहाँ जैहो तैंहाँ ते न ऐहाँ आओ
देखन न वैहौं क्यौं ललाजू उमरान हो।
अैयाँ वैयाँ गैयाँ लै लुगैयाँ लेयाँ पैयाँ चलो
वारौ न अथैयाँ कहूँ जाट खुभराने हो।
कैसी करी भैयाँ मोड़ा मोडी न कन्हैयाँ घरे
खान हैं लुचैयाँ कभू पेट न भराने हो।
चैयाँ चैयाँ गहौं चैयाँ नैयाँ नैयाँ ऐसे बोलो
बढि दैया करी दैया हमैं काहे छुभराने हो ॥२९॥
बरनौं कहाँ लौं भुवलोक में जहाँ लौं भई
दिल्ली में तहाँ लौं बानो सूरज प्रताप ते।
मुगल मलूकजादे सेख वेसलूक प्यादे
सैयद पठान अवसान भूले लापते।
आया रोज क्यामत मलामत सैं पाक हुवे
रहैगा सलामत खुदाई आप आपते।

जार जार रोती क्यौं बजार मीरजादी यारौं
जिनका छिपाउ महताब आफताब ते ॥३०॥

## छंद पद्धरी

यौं पर्यौ सोर दिल्ली अपार । पुरलोग पुकारत बार बार ॥
अजबीर हँकारत डार डार । फटकार खग्ग सेलनु उसार ॥
कलबल गलीनु खलभल बजार । छलबल सँभार भज्जत अगार ॥
इक तज्जत आयुध छोर छोर । इक लज्जत आनन मोर मोर ॥
इक गज्जत दामन फोरि फोरि । पुरगली गल्यारे तोरि तोरि ॥
भहरात फिरत नर खोरि खोरि । हाहा रटंत कर जोरि जोरि ॥
इक कहत धिक्क अहमद् साहि । नहिं देखतु या पुर की दसाहि ॥
जिहिं जियत इंद्रपुर यौं कुटंत । गज बाज ऊँट बृषभा लुटंत ॥
महिषी महिष्य गो लच्छ लच्छ । पडरादि बच्छ लूटै समच्छ ॥
अज अजा भेड़ मेढ़ा कुरंग । खच्चर सु गोरखर खर दुरंग ॥
बहु मोल स्वान पाले लवंग । बिल्ली बिलाव नहिं तजत अंग ॥
चीते सुरोझ सावर दबंग । गैंडा गलीनु डोलत अभंग ॥
अरु स्याहगोस बिश्रंग अंग । रिच्छादि खौरिहा छुटे अंग ॥
लुटियौ सु बाज जुर्रा बिहंग । जिनको सिकार कौवा कुलंग ॥
बहरी सु बेसरा कुही सग । जे गहत नीरचर बहुत खंग ॥
बहु लगर झगर पुनि चगर तंग । जे हनत सुसा बुज्जर उतंग ॥
बाँसा बटेर लव औ सिचान । धूती रु चिप्पका चटक भान ॥
दहियर सुतुरमति बगुलहान । सुरखाब आब के जीव आन ॥
जल मृगनि सहसरव कहनहार । तूती सूतीतरा बहु प्रकार ॥
बहु रंग देस के कीर बेस । जो सुनत बैन बोलत हमेस ॥
मैना मलूक कोइल कपोत । बगहंस और कलहंस गोत ॥
सारस चकोर खंजन अछोर । तमचोर लाल बुलबुल सुमोर ॥
चकई हरील पिद्दी अपार । खुमरी सु परेवा बहु प्रकार ॥३१॥

## छंद रोला

तुपक तीर तरवार तमंचा तेगा तीछन ।
तोमर तबल तुफग दाब लुट्टियौ तिहीं छन ॥
पट्टा पट्टी परस पासि बिछुवा बर बाँके ।
बल्लम बरछा बरछि धनुष लिय लूटि निसाँके ॥
बुगदा गुपती गुरज डाढ़ जमकील बतारी ।
सूल अकुसा छुरी सुधारी तिष्ष कुठारी ॥
सिप्पर सिरी सनाह सहसमेखी दस्तानैं ।
झिलम टोप जजीर जिरह लुट्टिय मस्तानैं ॥
पक्खर गक्खर लक्ख राग बागे रु निषंगा ।
आयुध और अनेक और चिलतह बहु अंगा ॥
पुनि बासन भर लुटिय देग देगचा रकाबा ।
चमचा चमची जाम तवा तंदूर गुलाबा ॥
चपनी लोटा चिलम पोस सरपोस जमावा ।
हुक्का हुक्की कली सुराही अरु अफताबा ॥
तँबिया कलसा कुंडि ततहरा बटली बटला ।
दुकरा और परात डिबा पीतर के चकला ॥
बेला बेली लुटैं तमहडी लुटिया झारी ।
अमृतबान अमृती रु थार रकेबी बहु थारी ॥
प्याली गंगाजली टोकनी गंगासागर ।
कुंजा जंबू डबा और ताँबे की गागर ॥
छलनी चलनो डोहि और करछी बहु करछा ।
पौंना झाँझर तई बिलाई परछी परछा ॥
करवा कौंपर पानदान चौघरा तबेला ।
अरघा संपुट धूप आरती लेत सकेला ॥

त्रष्टा अरु आधार भर्त के बहुत खिलौना।
परिया टमटी अतरदान रूपे के सौना॥
पीलसोज फानूस कुपी तिखटी सुमसालैं।
सँड़सी सुवादराँत डँढ़ारे कुसा सम्हालै॥
झाड़ दुसाखे झाम बसूला बरम हथौरा।
टाँको नहनी घनी अरा आरी सुमथौरा॥
कुदरा खुरपा बेल गुलसफ़ा छुरा कतरनी।
नहनी सौंहन परी डरी बहु भरना भरनी॥
पीढ़ा पलँग मचान दुसेजा तखत सरौटी।
खरसल स्यंदन बहल बहुत गाड़ी सुनबौटी॥
डोला अरु चंडोल घने म्याने सुपालकी।
कंचन-रंजित सुभग टुटीं अरु लुटीं नालकी॥ ३२॥

छप्पय

दुंदुभि पटह मृदंग ढोलकी डफला टामक।
मँदरा तबल सुमेरु खंजरी तबला धामक॥
जलतरंग कानून अमृतगुंडली सुबीना।
सारंगी रु रबाब सितारा महुवरि कीना॥
सहनाइ भेरि तुरही दरक बंसी गोमुख बाँकिया।
अलगोय ताल कठताल तर झालरि झाँझ निसाँ किया॥३३॥

दोहा

मदनभेरि अरु घूँघरा घंटा घनैं मतीस।
मुहचंगी कौं आदि दै आवज लुटे छतीस॥ ३४॥

सोरठा

तंबू पाल कनात सापबान सिरआइचे।
रावटिहु बहु भाँति पुनि कुंदरा कलंदरा॥३५॥

मसनद गद्दी उसीस सतरंजी जाजम जबर।
परदा चँदनी ईस कालीचा दुलिचा घने ॥३६॥
सीतलपाटी टाट लोई कबल ऊन के।
बची न एकौ हाट खेस निवारहिं आदि दै ॥३७॥

### छंद त्रिभंगी

रूमाल दुसाला पट्टू आला चूँनी जाला सोभ बनी।
मखमल बन्नातें अरु सकलातें भाँतिनु भाँतैं छींट घनी ॥
बहु रंग पटंबर पसमी कंबर धवल सुअंबर* कौन गनै।
जरदोज मुकेसी दाना केसी मसरू बेसी लेत बनैं ॥३८॥
बादला दरयाई नौरँग साई जरकस काई झिलमिल है।
ताफता कलंदर बाफ़तबंदर मुसजर सुंदर गिलमिल है ॥
थ्रीसकर बिलंद्री दूरियरंदी मानिकचंदी चौखानै।
किमखाब सुसालू खादी खालू चोलैं चालू जग जानै ॥३९॥

### छप्पय

नीमा जामा तिलक लबादा कुरती दगला।
दुतही नीमास्तीन कादरी चोला झगला ॥
तंबा सूथन सरो जाँघिया तनियाँ धवला।
पगरी चीरा ताजगोस बंदा सिर अगला ॥
दुपटा सु दुलाई चादरैं इकलाई कटिबंद बर।
कंचुकी कुलहैया ओढ़नी अंग बस्त्र धोती अबर ॥४०॥

### अरिल्ल

चोटी चुटिला सीसफूल बर। बैना बर्दी बँदनी सु बर ॥
बेसर नथ्थ बुलाक सु लटकन। जाट जूह लागे सब झटकन ॥
पीयर पर्न भुलमुली तरिवन। बहुखलेल भूमिका सुभरमन ॥

---

* पाठांतर—सुकंबर।

कर्नफूल खुटिला अरु खुंभिय। लोलक सौनसीकहूँ चुंभिय॥
गुलीबद पचमनियाँ चौसर। तीनलरी पचलरी सतौसर॥
चंपकली सु हुमेल हाँसवर। बीजनि बौरी उरबसीनु भर॥
विद्रुम मुक्तमाल मनिमालहु। कचन रजत रतन के जालहु॥
रसना क्षुद्रघटिका लिक्खिय। बटुवा कुथरी जान न दिक्खिय॥
बाजूबंद बराकर छिक्खिय। बँगुरी चूरा लेत न गिक्खिय॥
टाड पछेली छिन्न छिनाइय। चूरे चूरि चुरी चटकाइय॥
कंकन गुजरी पहुँची अनगन। दुहरी तिहरी जटित रतनगन॥
छल्ला घनी अँगूठी कंचन। आरसी रु जंजीर झमंकन॥
पाइल औ पगपान सु नूपुर। चुटकी फूल अनौट सु भू पर॥
तेहरि* झाँझन गुजरी टुट्टिय। बहु भूषन मैं एक न छुट्टिय॥४१॥

छप्पय

कलगी तुर्रा और जग सिरपेच सु कुडल।
मोती गुरदा और गोखरू रुद्राछ भल॥
तोरा कंठी माल रतन चौकी बहु साँकर:
वेढ़ा पहुँची कटक सुमरनी छाप सुभाकर॥
किंकिनी कौंधनी पैजनी हथ संकर झंकर खुटे।
आभरन नरन बहु भाँति के फुटे बुटे टूटे लुटे॥४२॥

पावकुलक छंद

कस्तूरी केसर कसमीरी। है कपूरकचरी सुकरीरी॥
कुटकी किटी कपूर कलाये। कट्टूकूठ कासिनी कबाये॥
कैछुक चूरकटोर करंजा। किसमिस कैथ कुलीजन कजा॥
काथ करौंजी कारी जीरी। काइफरो कुचिला कनकीरी॥
कुकरौंदा करहरी कतीरा। कनक कटाई कारी जीरा॥

---

* पाठांतर—जेहरि।

कुलथी कमलगटा सुकबेला। ककरासिंगी कढ़ सुकेला ॥
कमलमूल किरवार कसेरू। काचनून कर मूल कनेरू ॥
खिरनी बीजखरी खसजूरा। खार खोपरा बीज सुखीरा ॥
खूबानी खसखस के दानै। खंडखार खुभी खस जानैं ॥
गोरोचन गेरू गोगोली। गौंद गिलोइ गोखरू श्रोली ॥
गंधक गुजाफल गंगोला। गोपोचंदन लुख्यौ अतोला ॥
गुलगुलाल अरु गोरखमुंडी। घास घोमसा घाइल घुंडी ॥
नौजा नरियर नेतरबाला। नीम निसौत निर्विसी नाला* ॥
नीलाथोथा नील निर्मली। नागरमोथा नगद् न्रिलमिली ॥
चव चिराइता चित्रक चीता। चोक चोबचीनी चरलीता ॥
चंदन चूक चिरौंजी चपरा। चोख चॉवरी चंद्रकलपरा ॥
छारछबीलौ छिकनि छुहागी। जावित्री जंगाल जुरारी ॥
जाइफलौ सु जवाइन जीरा। जंडीजरी जलाँजर तीरा ॥
झकझोरो टकटोरी टोरी। ठौर ठौर डोरी गहि ढोरी ॥
तेजपत्र तज तालमखानै। तिबी तमाखू तुखमतरानैं ॥
तुलसी बाज तुरंज तुरंजन। देवदारु दंती दुखभजन ॥
ठुड्ढीदल दाड़िम के बकला। दूब दालचीनी द्रगदकला ॥
धना धमासा धूम सुधुंधी। धौर धौह की छाल धुरंधी ॥
पित्तपापरा पाह पतगी। पत्रजंपनी पीपर पंगी ॥
पथरसगा पचरंग पमारौ। पाडर† फूल पापराखारौ ॥
पोलपखान भेदपन पारा। परवरपाती पतर पचारा ॥
फली फिटकरी फूल हु फैंना। बादामी ब्रह्मी व चबैना ॥
बाइबिरंग बेल बालंगा। बीजबंद बालेसुर बंगा ॥
बेरजरी सुबिलैया बूटी। बरू बहेर बाबची लूटी ॥

---

* पाठांतर—आला।

† पाठांतर—पाजर।

बासौं बंसलोचनौ बंदा। बेलगिरी सुबहेर बिलंदा॥
बिही ब्रह्मदंडी बिसबेरा। भारंगी भिंडी सुभँगेरा॥
भैंसा-गूगल भंग भिलाए। भोडरभाह सुभेंट्ट भाए॥
मिरच मोचरस मैदा लकरी। मुरदासन मनसिल मिस मकरी॥
मलयागिर महँदी मुहलैठी। मस्तंगी मुहमूँदी * मैंठी॥
मैनफरौ मुंडी मधुमोथा। मूढ़मूसली दोऊ चौंथा॥
मोख मुनक्का मृत मुलतानी। मैंथी मालकाँगुनी सानी॥
मैद मैंडुकी मोध मिमाई। मदन मखाने मिसरी भाई॥
मोम महावर मूली-बीजा। अकरकरा अजमोद अलीजा॥
आलूबा अमिली अँबहलदी। आल आँवरा लाल अफलदी॥
असगॅंद अगर आविली अंडी। अर्क अतीस आँवला ठंडी॥
इसबगोल इंदरजौ जानौ। इंद्रानी इलाइची आनौ॥
ऊँटकटेरा एलुआ एला। रेवतचीनी राई रेला॥
रूमी रतनजोति रसवंती। रारे रॅंगमाटी रुद्वंती॥
लौंग लौंगचूरौ लगलाही। लोद लछमना लहसन काही॥
लाँफ लेखनी लोचनबाला। इसबँद सीतलचीनी आला॥
सोंठ सौंफ सालिम जु सुपारी। सौंध सनाइ सिलखरी सारी॥
सज्जी सौंचर सैंवर सोरा। साँखाहूली सीपसिकोरा॥
समुदफैन साबुनौ सुपैदा। सिंगरफ सैंदुर सारसमैदा॥
सौनमक्खि संखिया सुहागा। सूलसम्हालू सबरस सागा॥
हरद हींग हरतार हरीतौ। हरडा हाल्यौं हिरमिचहीतौ॥
हुलहुल हिल्ल हिमामहुदस्ता। फूलमूल कागद के दस्ता॥४३॥

## दोहा

अमल अफीमहिं आदि दै चोवा अतर फुलेल।
सीसी चीनी मीन के मुहरदराबी रेल॥४४॥

---

* पाठांतर—मुह मूँठी।

## छंद त्रोटक

लुटियौ लडुवा बहु भाँतिन के । नुकती अरु मोदक पाँतिन के ॥
कलकंद सुमैथिय मूँगदला । सिमईं सतसूत मगद्द भला ॥
सुठि सेव सु औरिहु गौंदगिरी । खुरमा मठरी भरि ली गठरी ॥
गुपचुप्प गुना गुलपापरियाँ । खजला सु खजूरि खडापरियाँ ॥
अमृती रु जलेबिनु पुंज लुटे । त्रिरसाद्र भिस्ति चुटे सुफुटे ॥
गुझिया गुलकंद गुलाबकरी । तिरकौंनु सुहारिन मोट भरी ॥
बहु घेवर बाबर मालपुवा । अरु सेव कचौरिन लेत हुवा ॥
हलुवा हिसमी बहु फेनिनु की । कलरी रसनासुख चैननु की ॥
कहुँ लेत निवात बतासन कौं । सु गिंदौरन ए रनवासिन कौं ॥
अरु खोत्रन ढेर बखेर दए । बहु खाँड खिलौनन लेत भए ॥
अरु लाइचदाननु गोद भरैं । दधि दूधन के परसाद करैं ॥
कुजतीतिल सक्कर रेवरियाँ । बहु पाक पुडार जु सेवरियाँ ॥
पकवान जथा रुचि और घना । बुहरी परमल्ल सुखोल चना ॥४५॥

## छप्पय

गेहूँ चावर चना उरद जव मूँग मौंठ तिल ।
चौरा मटर मसूर तुवर सरसौं मडुवा मिल ॥
सँवाँ पसाई मका काँगुनी कोदौं मकरा ।
चैना कूरीवटी सिंघारे कुलथी सकरा ॥
घृत तेल नौन गुड़ तूलरस मिले बिरस मौटन खुटे ।
पुरइंद्र अन्न कौ कूट ज्यौं सब रस कोटिन मन लुटे ॥४६॥
साम यजुर रिग निगम अथर्वन धर्म पतंजल ।
मीमाँसा वेदांत न्याय साहित्य तर्क भल ॥
विष्णु वायु शिव अग्नि गरुड़ नारद बलिरच्छक ।
मच्छ कच्छ बाराह पद्म हरनच्छक-तच्छक ॥

पुनि स्कंद मारकंडे भविष ब्रह्मबर्त्त ब्रह्मंडबर ।
भागवत मेव मघु रघु कुँवर पुनि किरात नैसध अवर ॥३७॥
छंद कोस व्याकर्न कर्म जोतिस निरुक्ति रस ।
मंत्र जोग धनु गान वैद्य स्रोदय गनती जस ॥
सामुद्रिक पुनि कोक सर्पबानी अरु भारथ ।
नाटक भासादेस यमनबानी ग्रन्थारथ ॥
लखिकैं अधर्म सु अनीति अति सब विद्यनु चलनौ रढ़िय ।
पुरइद्र छाड़ि व्रजबास कौं जवालिनु के कर चढ़िय ॥३८॥

## दोहा

देस देस तजि लच्छिमी दिल्ली कियौ निवास ।
अति अधर्म लखि लूट मिस चली करन व्रजबास ॥ ३९ ॥

## छंद भुजंगी

लुटै द्यौस दिल्ली निसाँ ज्वाल जारै । मनौ सूर कौ तेज पापै पजारै ॥
जरैं रंग रंगे घने काठ खंभा । हलै ज्वाल को झाल ज्यौं पात रंभा॥
टुटैं गोलमगोल टाडा सुहारी । मनो स्वर्न को खान तैं सोठ काटो ॥
जरैं बंगला बंगलो चित्रसाला । मनौ पेखने कौ रुप्यौ ख्याल आला॥
जरैं दारु की पुत्रिका यौं दुनो सी । मनौ श्राप को बाम ठाढ़ो सनी सी॥
कहूँ आँच सौं काँच के भौन फूटैं । महा तेज सौं ज्यौं बृथा तेज बूटैं ॥
जरी यौं दरीची लिबारी अटारी । सतौं मेरु को श्रृंग जैसी निहारी ॥
बरंगा बरंगो करी यौं जरी है । मनौ ज्वाल नैं बाहुलच्छी करी हैं ॥
जरी सोटि प्रासाद ते भू परी है । सिला मेरु के सीस तें ज्यौं ढरी है ॥
जरैं बाँस यौं काँस उड्डै फुलंगा । नचै भूमि कौ पूत कै कोटि अंगा ॥
कहूँ जाल के जाल मैं ज्वाल झोरैं । किधौं धाम धारा धरी बिज्जु दोरैं ॥
सिखा की सिखा तें धुवाँ व्योम धायौ । मजै तामसो राजसी ज्यौं सतायौ॥
किवारी किवारे उसारे पनारे । जरैं जालि पानैं करे भौन न्यारे ॥
उड़ैं खास सींगी धनैवान भारे । फिरैं आग लेती मनौ दे हँकारे ॥

फिरैं वायु के बेग सौं बाइ मीता । सुरेसापुरै आपुनै रूप कीता ॥
चहूँ ओर यौं ज्वाला माला निहारी । दुलहैया दिली बादलाज्यौं सिंगारी५०

कवित्त

धर्म-सुत-धाम जान जमुना निकट मान
सर्व मेद जज्ञ कौ बनायौ ब्यौंत पूर है ।
पत्र फल फूल सब औषध समूल रस
षट अनतूल धात धान धन भूर है ।
अंडज जरायुज औ स्वेदज उद्भिज हब्बि
कर्‌यौ पूरनाहुति चकत्ता कुल मूर है ।
औज की अगिन इंद्रपुर सौं अगिनकुंड
होता श्री सुजान जजमान मनसूर है ॥ ५१ ॥

दुपई छंद

कलिकी आदि कूर मघवा ने बृज पै कोपु जतायो है ।
वही अकस धरि श्री ब्रजेस-सुत इंद्र पुरहि लुटवायौ है ॥ ५२ ॥

हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमि-पति बदनेसनंद सुजान हैं ।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं ।
दिल्ली लुटाइय पुनि दहाइय दुतिय अंक सुनाइकैं ॥ ५३ ॥

---

छंद त्रिभंगी

सत सहसौं धावत अयुतौं आवत लच्छौं पावत भाल धर्‌यौ ।
सूरज-गुन गावत बिरद बुलावत जग ललचावत चाल पर्‌यौ ॥
सबही बिधि ताजा सकल [illegible]ाजा छिन मैं राजा रंक किए ।
ज्यौं धनपति धावै सुरग न पावै हाथ लड़्यावै हरष हिए ॥१॥

हिय संकत नाहीं आवत जाहीं खाली नाहीं मोद* भरे।
जैसी गति लंका करी अतंका रघुकुल-बंका आनि अरे॥
ज्यौं रच्छस खंडे यमन बिहंडे जदुकुल चंडे सुखरासी।
जलधर जिमि गज्जत बारिद बज्जत यौं धुनि सज्जत ब्रजबासी २
ब्रजवासी सगरे करि करि दगरे दिल्ली बगरे लूटि करैं।
मनसूर बिचारै अब को रारै याहि सँभारै संक भरैं॥
सूरजहिं बुलायौ कहि समझायौ सो दलु हायौ समुहायौ।
अब लूटहि थंभौ जंगहि रंभौ कह्यौ अचंभौ मन भायौ॥३॥

## दोहा

मन भायौ ह्वैहै सबै सूरज कही नवाब॥
अब मैं लूटहिं बंद करि लैहों जंग सिताब॥ ४॥

## छंद अनुगीत

यौं कहि सिताब सुजान उठ्ठिय मनहुं तुठ्ठिय ईस।
ढिग बोलि सिंह जवाहरै किय हुकुम बिस्वा बीस॥
अब फौज राखहु एकठी अरु करहु लूटहिं बंद।
सुत तो बिना यह को करै नहिं आन कौ परबंद॥
यह सुनत जाहर सुत जवाहर तात हुकुम बजाइ।
तिहिं बार ह्वै असवार धाइय दई लूट मिटाइ॥
ज्यौं बायु के बस बारि बाहक मंत्र के उतपात।
त्यौं सलभ साबर के प्रयोगहि छिनक में उड़ि जात॥
लखि ऊर्ज नाभी बदन तें है तार कौ बिस्तार।
त्यौं श्री जवाहर नै कियौ सब लूट कौ परिहार॥
पुनि सैन सज्जिय पटह बज्जिय गज गरज्जि हयंद।
यौं सुनतही मनसूर चढ्डिय दैन दिल्लिय दंड॥

---

* पाठांतर—गोद।

दुहु दल उमंडिय रज घुमंडिय भानुजा के तीर ।
सुत सहित सूरज सरपध्या सजि सुभट संग वजीर ॥
उत सादुला सु नजीमखाँ अरु खानदौराँ-पूत ।
धरकैं अराबौ अग्ग रुप्पिय कोठरा मजबूत ॥
इत सहर दिल्ली उतहिं जमुना मद्धि बड्ढिय भीर ।
कुरुखेत ज्यौं सुत अंध पंडव रचिय जुद्ध गँभीर ॥
तहँ तुमल नद्द गरद्द उड्डिय रुट्ठ बुट्टिय काल ।
हरष्यौ कपाली देत ताली हेत माल कपाल ॥
गंधर्व किन्नर अपछुरा भइ गगन में अति भीर ।
रसमसी चंडी कसमसी जग जुग्गिनी जुत बीर ॥
मसहार छाए नभ पुराए धरनि धाए स्यार ।
भुव भरभरानी भय दबानी खरखरानी ब्यार ॥
लगे कूर धरषन सूर हरषन दुहूँ परखन वार ।
दल प्रबल घोर घटा जुरी रस सार बरसन हार ॥
उत साहि अहमद सुभट रुप्पिय इतहि सफदर जंग ।
तिहिं संग सूरज अरु जवाहर ठठिय जंग अभंग* ॥
तहँ छुटत बान भयान सहसन रहकला हथनाल ।
जज्जाल पुनि घुरनाल अयुतन जबर जंग कराल ॥
अगगगग अगग अगगगं सगग सग गगसंन ।
धगगग धगगगग धगगगं धंमांक धुंकर धंन ॥
धधकार धधधधधधध धंधू धाइ धूमक धाइ ।
भभकंत भक्क भड़ाइ भंकत भडडडडंभं भाइ ॥
भंनात भद्द भड़ाक भड़ भड़ भभक भूरि भयान ।
भड़कंत भभकत भभभभंभट भेष भासत भान ॥

---

* पाठान्तर—उमंग

अति घोर घोष घुर्‌यौ जहाँ घरघरत जमुना नीर।
झरझरत गोली गोल ओला इंद्रपुर के तीर ॥ ५ ॥

## सारंग छंद

छायौ महा धूम धूली घटाघोर। उट्ठैं जहाँ रंजकै बिज्जु सी जोर ॥
पज्जैं घनी तोप गज्जै निरद्धार। देखैं दुहूँ सैन के जात आकार ॥
धुंधी धरा धूमली धूम गुब्बार। मानौ प्रलैकाल कौ घोर अँधियार ॥
ओलानु के भेस गोलानु के मेह। फोरैं घनै मुंड ढोरैं कहूँ देह ॥
बौछारि गोलीनु की चारिहूँ ओर। बानौंन की घोर मानौ उड़ैं मोर ॥
लुट्टैं कहूँ बाजि फुट्टैं कहूँ भाल। गोलानु की गेंद खेलैं मनौं काल ॥
सन्नात धन्नात फन्नात नासाँस। भासै नहीं भान और आस आकास ॥
तामैं घुर्‌यौं घोष ज्यौं गाज के पात। कै सेल के सीस पै बज्र को घात ॥
सद्दै सुन्यौ कै गरद्दै लखी नैन। भैचक्क से सूर ठाढ़े दुहूँ सैन ॥
नीचै तपै भूमि ऊपर तपै भान। भारी भयद्दान जारैं जगत प्रान ॥
या हाल को देखि सूजा भर्‌यौ तेह। बोल्यौ तज्यो बीर हो संक संदेह ॥
हैहै लिख्यौहाल गोपाल जो भाल। एतौ भयज्जाल है भूत के ख्याल ॥
हौ भाग पूरे सुदिल्ली लह्यौ खेत। है स्वामि कौ काम कालिंदरी-रेत ॥
यातैं गहौ खेत अग्गौं पगो देत। या तोपखाने घरी चार मैं लेत ॥
यौं भाखि सूज्या लख्यौ पूत की ओर। ठाढ़ौ हुतौ पास ज्यों भान है भोर ॥
भारथ्थ मैं भीम पारथ्थ के मान। कंसारि ज्यौं काम-बैरीन के जान ॥
दोऊ महावीर दिल्ली रुपे धीर। लंका खगे राम ज्यौं लछमना बीर ॥
सूजा कहे बैन सुन्ने सबै सैन। मुच्छौं धरे हथ्थ रत्ते किए नैन ॥
हथ्थैं गहे सेल लत्तों तुरी हंकि। जैसैं कपी-जूह लंका परें दंकि ॥
संका तजैं दोह डंकानु कौं देत। हंका करैं बीर बका दिलो हेत ॥६॥

## दोहा

सेल साँग समसेर सर गहै भुसंडी हथ्थ।
मसकि मसकि बानीनु कौं हल्ल करी इक सथ्थ ॥७॥

## छंद हनूफाल

सबते अग्ग गोकुल राम। कुंभानी प्रताप उदाम॥
सिंह भरत्थ सूरतिराम। धरि हिय स्वामि काम उदाम॥
ब्रजसिंह बंस कौ चहुँवान। स्यौसिंह है गदाल अमान॥
तिरखा जादवाँ सुलतान। भीखाराम सिंह गुमान॥
मोहनराम द्विज बलधाम। राजाराम दौलति राम॥
बल्लू और बाला बीर। हरि बलराम कृष्ण गँभीर॥
तिहिं की पुट्ठि धाइय छिप्र। हरि नागर चमूपति बिप्र॥
किरपा राम दानी राम। दुरजनसिंह मुहकम नाम॥
दबठ्यौ जोर सुभट समूह। वह बलिराम लेत फतूह॥
रनसिंह उदैसिंह खुस्याल। हरिबलिराम छत्तरसाल॥
मेदा जैतसिंह सतोष। पह्लोपा रतनसिंह सरोष॥
किरपा बिप्र लछमन दास। अरु जैकृष्ण मनसा पास॥
तोफा स्याम सिंह सुजोध। धीरज सिंह भीम अरोध॥
सकता और दाता दोर। पाखरमल्ल पारी रौर॥
उदभट सुभट लै इक सत्थ। हरनाराइनौ समरत्थ॥
तोमर रामचंद तिलोक। ठाकुरदास सैंगर थोक॥
धनसिंह गौर गंगाराम। फत्ते ऊधमासुत स्याम॥
हरसुख रतीराम अजीत। प्रोहित है घमंड अभीत॥
सेखावत उमेद प्रचंड। बल्लभ सिंह कमधुज चंड॥
स्यामह्नु सिंह थोनापूत। हरजी राम जी मजबूत॥
पैमा प्रथी सिंह पमार। मंगू सदा राम अपार॥
मंत्री सदा राम सुक्रुद्ध। राजू रतन सिंह अरुद्ध॥
नाथूराम खैमा बिप्र। बाला और गिरिधर छिप्र॥
हरि सिंह हठी सिंह अजीत। बकसीराम जंग अभीत॥

जैसिंह तुला हट्टी जोर। बलका अमरसिंह * कठोर ॥
साहिबराम जालिम जोत। रंनू सदाराम सुनीति ॥
दल्लामेव साकिरखान। गुलखाँ किते और पठान ॥
है पुरुषोत्तमौ श्रीराम। मेदा बिजै राम उदाम ॥
बहादुर सिंह औ औधूत। कन्हईराम बैदा † पूत ॥
साजैं सूर बहु सावत। श्रीगुरु ‡ रामकृष्ण महंत ॥
सुत कुसलेस सूरतिराम। मुहकमसिंह उद्धत नाम ॥
है सुखराम मातुल उद्ध। स्यौसिंह उदैभान समुद्ध ॥
देवीसिंह औ अखैसिंग। सूरज अनुज धाइयधिग ॥
तिनके मद्धि सिंह सुजान। नवग्रह जूह जैसे भान ॥
सिंह दलेल सिंह खुस्याल। मेदहु सिंह ब्रजपतलाल ॥
उद्भट सुभटसिंह भवान। बीरनराइनौ बलवान ॥
बंके मानसिंह गुमान। उद्धतराम बलमँतवान ॥
बुधिबल सभाराम बिलंद। ए बदनेस भूपतिनंद ॥
एते श्रीजवाहिर संग। षटमुख-सहित गन ज्यौं जंग ॥८॥

दोहा

सेरसिंह रनजीत अरु जैतसिंह हठिसिंग।
सिंह अनूप चँदौल किय भूप अवारि अरिंग ॥९॥
उतहि अहम्मदसाहि-दल इत मनसूर-सुजान।
इंद्रप्रस्थ जमुना-निकट कस्यौ घोर घमसान ॥१०॥

छंद सयुता

घमसान घोर जहाँ घुस्यौ। तिहि जुद्ध तैं भट ना मुस्यौ ॥
गति मंद मंद हयंद की। सुपदाति और गयंद की ॥

---

* पाठांतर—मभरसिंह ।
† पाठांतर—मैंणा ।
‡ पाठांतर—वह गुरु ।

सुधि धारि दिल्ली-कोट की। इत दिष्टि सूरज जोट की ॥
अति घोर मार जहाँ घुरी। दसहू दिसा भई धुंधरी ॥
धरधद्धरं धरधद्धरं। भड़भब्भरं भड़भब्भरं ॥
तड़ तत्तरं तड़ तत्तरं। कड़ कक्करं कड कक्करं ॥
घड़ घग्घरं घड़ घग्घरं। झरझब्भझरं झरझब्भझर ॥
अर र्रर्रं अर र्रर्रं। सर र्रर्रं सर र्रर्रं ॥
धर र्रर्रं धर र्रर्रं। ढर र्रर्रं ढर र्रर्रं ॥
खर र्रर्रं खर र्रर्रं। फर र्रर्रं फर र्रर्रं ॥
कड़ डड्डुड़ं कड डड्डुड़ं। सडडड्डुड़ं सड़डड्डुड़ं ॥
बहु सद्द कौं इक सद्द है। तम घोर धूम गरद्द है ॥
जग अंत कौ अँधियार सौ। रितु सीत कौ नीहार सौ ॥
छुटि बान भासत भासते। ग्रह पात जिमि आकास ते ॥
मष सर्व धूम महाल सी। मनु कालरात्रि कराल सी ॥
सर सैकरौं सर राहटे। लखि ब्याल ज्वाल उछाहटे ॥
नर बाजि कुंजर खाहटे। बिल पाइ मानहुँ चाहटे ॥
लगि गोल गोल घराहटे। लखि काइरौं थरराहटे ॥
मुखमर्द कै मरराहटे। भुजदंड होत फराहटे ॥
चहुँ ओर गोलिनु की झरी। छुटि मार की मनु फुलझरी ॥
करिधार कुंभकरी फिरै। पिलवान अकुल है गिरै ॥
लगियौ तुरगनि थरथरा। नथुनानि लग्गिय फरफरा ॥
इहि भाँति दुहुँ दल साँकरी। फर भूमि घोर निसाकरी ॥
भुजदंड खंडित उड्डियं। कहुँ जंघ ऊरू गुड्डियं ॥
कहुँ रुंड मुंडनु झुंड है। कहुँ कुंड है कहुँ डुंड है ॥
लगि गोल फूटत पेट हैं। मनु देत काल चपेट हैं ॥
महि होत श्रोनित लाल सी। फुटि जात रंग पखाल सी ॥
गज बाजि श्रोनित यौं झरैं। दुति ढाक फूलन की धरैं ॥

तिहिं बार राम सुचंद नैं। हय हंकि जुद्ध बिलंद नै ॥
धनु बान हथ्थ सँभारि कै। हित स्वामि कौ उर धारि कै ॥
निज खेत जान हरष्षियौ। सर-सार-धार बरष्षियौ ॥
तबही सुगोली लग्गियौ। उर फोरि श्रोनित जग्गियौ ॥
वह धीर बीरहि रंग तैं। नहिं बाग मोरिय जंग तैं ॥
सत दौरि सूरतिराम नै। किय हल्ल जुद्ध मचावनै ॥
गुल तासु गोली सौं फुटी। करकी न बाग तऊ छुटी ॥
तुलसी फुट्यो पपहेरिया। तिहिं जाय सुरपुर हेरिया ॥
बहुतै सुभट्ट जहाँ फुटे। गोली चुटे धरनी लुटे ॥
बहु होत लोटक पोटही। तउ जट्ट ठट्ट हटे नहीं ॥११॥

## कवित्त

श्रोनित अरघ ढारि लुत्थि जुत्थि पाँवड़े दे
दारू-धूम धूप दीप रंजक की ज्वालिका।
चरबी कौ चंदन पुहुप पल टूकनु के
अच्छुत अखंड गोला गोलिनु की चालिका।
नैबेद नीकौ साहि सहित दिल्ली कौ दल
कामना बिचारी मनसूर पन-पालिका।
कोटरा के निकट बिकट जंग जोरि* सूजा
भली बिधि पूजा कै प्रसन्न कीनी कालिका ॥१२॥

## छंद त्रोटक

तिहि औसर सिंह सुजान तनं। अति सिंह जवाहिर रोस मनं ॥
हय हंकि धमंकि उठाइ रनं। जिमि सिंह-छवा कढ़ि सैन बनं ॥
बरषा जहँ गोलिय गोलनु की। गरजै बहु बानन बोलनु की ॥
चमकै बरछा जिमि बिज्जु छटा। उमड़े पुरइंद्र सुभट्ट घटा ॥

---

* पाठांतर—अरि काटि

बरसा सरसार अचूकन की। बहु तोप जँजाल बँदूकन की॥
तित जाहर सिंह जवाहर भौ। तिहिं ठाहर जुद्ध अठाहर भौ॥
इत उत्त धमाधम खूब भई। कछु साहि चमू हहराइ गई॥
फुटमुंड अनेकनु रुंड गिरे। बहु गोलनु सौं गज बाजि खिरे॥
कहुँ अंग उड़े गति चंगनु की। लखि दाबहिं देह पतंगन की॥
कहुँ अंतन दंतन पाँति परी। मनु रेसम रंगनि सूकि धरी॥
बहु लुथ्थनि श्रोनित धार झरैं। मनु भारथ रूप अपार धरैं॥
अति उद्धत जुद्धत रुद्र रयौ। दुहुँ आकुल व्याकुल जोग भयौ॥१३॥

### कवित्त

तूरानी तरेर दैं दरेरनु सौं दिल्ली दाबि
प्रबल पठान नाहन उडायौ पोन पत्ता सौं।
कूरम रठौर हाडा खीची औ पँवार राना*
बाना डारि छूटे बाँधि कीनौ एक बत्ता सौं।
सूदन सपूत ससिबंस अवतंस बीर
ताही दिल्लीपति कौं लपेटि राख्यौ गत्ता सौं।
जाहर जगत्ता है जवाहर प्रताप तत्ता
जाके कर कत्ता सौं चकत्ता जात्यौ लत्ता सौं॥१४॥

### दोहा

प्रबल अराबौ साहि कौ बिकट सहर पुठवार।
बृथा जुद्ध करिबौ इहाँ होत सुभट संहार॥१५॥
यौं समुझाइ सुजान नैं आइ जवाहर पास।
घरी चारि दिन के रहत डेरनु कियौ निवास॥१६॥
जे सच्छत आए सुभट तिनकौ कियौ उपाय।
जिन पायौ पंचत्तु कौं ते जमुना पहुँचाय॥१७॥

---

* पाठांतर—खगार।

## हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनद सुजान है।
जानें दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिान है॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
रन कोटरा-तट करिय सूरज अक तृतिय अघाइकै॥१८॥

इति तृतीय अंक।

---

## छंद मंथान

सूजारु, मंसूर, भेले भूप सूर। बोल्यौं भरे ताप मसूर यौं आप॥
मेरा तुही अब्ब कै दूसरा रब्ब। कीना जु तै काम पाया बड़ा नाम॥
लीनी घनी जंग दिल्ली करी दंद। लूटा इता लोग छूटा नहीं रोग॥
दै तोप की ओट टूटा नहीं कोट। हैगी मुझै चोट कीया जिन्हैं खोट॥
लीयै तुझै जोट मारौं दिली कोट। करना कछू तोहि सो भाषियै मोहि॥
मंसूर के बैन सूजा सुने ऐन। कीनौ यही तंत दीनौ तबै मंत॥
रेती तजौ आपु ओस्यो घनौ तापु। लीजै अबै भील कीजै नहीं ढील॥
ह्याँ आइ है घोर कालिंदरी तोर। तासौं कहा जोर डारै दलै बोर॥
यातैं उतै मारु कीबौ हमैं सारु॥१॥

## दोहा

इतमैं लूटि चुके दिली उतमें रही अदग्ग।
ह्याँ वे बाहर आइहै तब ही बाजै खग्ग॥ २॥

## छंद हंद

सूरज, बानी सो, सब मानी। कूँच करायौ देर न लायौ॥
दुंदुभि, डंके देत असंके। ढोल दमामैं बाजत आमैं॥
गोमुष, गज्जै तूर गरज्जै। हत्थिय घोरैं पैदल थोरैं॥
उच्च पताका पार न ताका। यौं दलु उट्यौ ज्यौं घन तुट्यौ॥

देत हरेरैं भीलहि नेरैं। देरनु देकैं चौकस कैकैं॥
फेरि उमाह्यौ जुद्धहिं चाह्यौ। सूरज बंका देत अतंका॥३॥

घत्ता छंद

इसमाइल राजेंद्र गुसाँई है नवाब के हरवल चंड।
देसवार ह्वै जुटे दिली सौं सहस सहस हय लै बलवंड॥
सिंह सुजान सुभट सैनापति, सूरत गौर दयौ तिहिं सथ्थ।
हरसुख नाम द्विजन मैं दीरघ लियैं भुसंडी सेलनु हथ्थ॥
उत तैं आइ साहि अहमद भट रुप्पिय कुप्पि अराबो तथ्थ।
लागनि लगी परस्पर बीतनि गोगी गाल गथ्थ लथपथ्थ॥
हय हंकत संकत नहि हंकत चाख्यौ करत दिली तट दौर।
आयुध सजै बजै बहु डंका सुरपतिपुर पारी अति रौर॥४॥

छंद उद्धत

दुहुँ ओर बंदूक, जहँ चलत बेचूक, रव होत धुंधूक किलकार कहुँ कूक।
कहुँ धनुष टकार, जिहि बान भंकार, भट देत हुंकार संकार मुँह सूक॥
कहु देखि दपटंत, गज बाजि झपटंत, अरिव्यूह लपटंत रपटत कहुँ चूक।
समसेर सटकंत, सर सेल फटकंत, कहुँ आंत हटंकत लटकंत लगि भूक॥
हुव जाम जब दोइ, दुहुँ रुद्र रस मोइ, इमि जुद्ध जहँ होइ उहि कोइ अहुटंत।
उत साहि दल जोर, किय सस्त्र भर घोर, दिय रत्तरिस ओर चहुँ ओर
अहुटंत॥
तब गौर समरथ्थ सूरत्ति इक सथ्थ राजेंद्रगिरि तथ्थ बड़ हथ्थ चुहटंत।
लिय जंग गहि संग बहु अंग रन, रंग जहँ होत भट भंग उतमंग लुहटंत॥५॥

छप्पय

तिहिं फरमंडल बीच परिय गोलिय भर भरभर।
तहँ फुट्टिय कर गौर थौन छुट्टिय छुत छुर छुर॥
तऊ न चल्लिय धीर वीर अग्गहि हय हंकिय।
तथ्थहिं हरसुख बिप्र छिप्र धाइय अनसंकिय॥

तबही अचान राजेंद्रगिरि लगि गोली तन तैं छुट्यौ ।
वह सूर समर मधि स्वामि हित परमहंस गति कौ बुट्यौ॥६॥

दोहा

मर्यौ सुन्यौ राजेंद्रगिरि मन वजीर दुख पाइ ।
जुद्ध भूमि तैं सुभट सब डेरनु लिए बुलाइ ॥७॥

वसंत-तिलका

अत्यंत शोक मनसूरहिं चित्त छायौ । राजेंद्र आजु फरमंडल काम आयौ॥
त्यौंही नवाब उमराउगिरै बुलायौ । दैकै गयंद सिरपाउ गदी लसायौ॥८॥

दोहा

थपि गद्दी राजेंद्र की गिरि उमराउ अनूप ।
बिदा किए फिरि जुद्ध कौं इक तैं दोइ सरूप ॥९॥

छंद तोमर

तब सूर सिंह सुजान । बकसी महा बलवान ॥
कुल गौर गोकुलराम । चित चाहिकै संग्राम ॥
लखि भ्रात घाइल हथ्थ । हुव क्रोध के बस तथ्थ ॥
चढ़ियौ अनीक सजाइ । गहरौ निसान बजाइ ॥
लहि हुकुम सिंह सुजान । रन कौं चल्यौ बलवान ॥
पहुँच्यौ दिली तट धाइ । दिय धूम धाम मचाइ ॥
उत साहि सैंन सँघट्ट । गहि ओट तोप गरट्ट ॥
इत जट्ट ठट्ट अवट्ट । किय घोर सैन झपट्ट ॥
पर-हेत देत धवान । करि लावदार दवान ॥
कहुँ सिंधिवान कमान । धरि मुट्ठि हथ्थ कृपान ॥
इत उत्त चाहि अभीत । हित स्वामि प्रीत प्रतीत ॥
तहँ आइयो भट साहि । भुव बाढ़िकैं समुहाहि ॥
धरि अग्र स्याम निसान । कबची कितेक जवान ॥

कितने कि भालनबद्द । करहीं हयंद निछंद ॥
बरछी अनेकन साँग । सम्सेर सिप्पर आँग ॥
बढ़ियो सुखेत सओज । चढ़ियो कुमेत निवाज ॥
लखियै सु बकसी बीर । हुव रोस कै बस धीर ॥
कहियौ सुभट्टनु टेर । रन लेउ हाहि न फेर ॥१०॥

### छंद गंगोदक

यौ कही, गोकुला, दौकुला, सुद्ध सो,
मोकला सूर सामंत सौं ता घरी ।
देखि दिल्ली दलै दोह डकानु दै
दौर कीनी बली देत सस्त्रौं झरी ।
आपने आपने बाज ताते किए
नैंन राते मनौ भान की भाभरी ।
टाप ठन्नाहटे होत फन्नाहटे ।
गोलियौं आहटे रंजकौं की झरी ॥११॥
चंड कौदंड सौं बान संधैं किते
सेल सम्हारिकैं साँग ओजैं भटा ।
काढ़ि समसेर कौं बीर धाए घने
धूम धारा धरैं बिज्जु की सी छटा ।
धद्धरा धद्धरी बद्दरा से गजैं
लेउ रे लेउ दात्यूर के कीरटा ।
मास आसाढ़ की आपगा सी बढ़ी
सूर सैंना धइ तोरि दिल्ली तटा ॥ १२ ॥
धाइ जुट्टे बली देह फुट्टे किए
कोइ लुट्टे मही बाज लुट्टे जहीं ।
गौर की दौर की रौर भारी परी
मारि गोलीनु सौं साहि सेना दही ।

बान कम्मान दम्मान देते भए
सेल समसेर की चोट नाहीं वही।
जट्ट ठट्ठौं सही जित्ति कित्ती लही
दिट्ठि दिल्ली दलौं राह दिल्ली गही॥ १३॥
फेरि पाछै लग्यौ देखि बैरी भग्यौ
सेल साँगौं खग्यौ गौर नैं झौर की।
हंकि बाजी धयौ छोह कै उग्गयौ
सिंह रूपै भयौ मृग्ग पै दौर की।
चाहि वेऊ मुरे दै दवानौ जुरे
धम्म धम्मा घुरे चोर ज्यौं रौर की।
लागि गोली गिर्यौ गोकुला ज्यौं खिर्यौ
प्रान नाही धिर्यौ स्वर्ग मैं ठौर की॥ १४।

### दोहा

लगत भुसंडी मर्म छुत गौर कही यह बात।
ह्याँ तौ भाँडौ फूटि गौ थँभौ न बैरी जात॥ १५॥
बकसी कौ ऐसौ बचन* मेघराज रनधीर।
गौर उठाइ हयंद तैं धर्यौ गयंद सरीर॥ १६॥

### छंद गीतिका

इहि छे उपाइ दिलीस सैनहि जात बार न लग्गहीं।
गज बाजि पैदल छोड़िकै थल-जुद्ध तैं भल भग्गहीं॥
पुनि आइ सूरज के सुभट्टनु दिक्खि गोकुलराम कौं।
रनभूमि तैं धरि लै चले गज पाइ दुःख उदाम कौं॥
सुनि सिंह सूरज ता घरी रन जित्ति बकसी जुझ्झियौ।
मन लै उसास उदास दूतहिं फेरि बात न बुझ्झियौ॥

* पाठांतर—हुकम।

पुनि गौर कौं बर ठौर भेजिय सब्ब सूरन सथ्थ दै।
गति ध्याइकै परलोक की रविलोक की बिधि हथ्थ दै॥
ढिग आय सूरजमल्ल के मनसूर ने तब यौं कही।
अब कूँच ही करना सही इस खेत सैं न वफ़ा लही॥
नहिं चून घीव सबील ही तसदीह सबही की सही।
न हरीफ़ बाहर आवते जिस वासतै तुमने गही॥
मत मानिकैं मनसूर कौ बद्नेसनद कबूल कैं।
तिहिं बार कूँच कराइयौ सुचिराक दिल्ली कूल कैं॥
करि एक दोइ मुकाम दोउनि फेरिकै तिल पत्तिली।
तहँ ईत बढ्ढिय मेघ चढ्ढिय फेरि जंग सुमत्तिली॥ १७॥

## छंद उल्लाला

यह खबर गाजदीखान पैं साहि जहानाबाद हुव।
मनसूर-सहित सूरज बली उलटि गए तिलपत्ति धुव॥ १८॥

## छंद नीसानी

पोता मलिक निजाम दा, सुनि एही गल्लाँ।
हुकुम माँगिया साहि सैं, हुए अग्गैं चल्लाँ॥
फरमाया पतिसाहि भी अच्छी दिलजोई।
अग्ग अराबा ले चढ़ौ हरवल करि कोई॥
करि सलाम रुखसद हुआ गाजुद्दीं आया।
संग पठान रुहेल लै, पुर ही तट छाया॥
तद गाजद्दी खान जी, दंती मति ल्याया।
अग्गैं गड्डी मिदान दी * रूहेल पठाया॥
हुकम गाजदीखान दा रूहेलौं पाया।
हैदल पैदल सथ्थ लै तदही चढ़ि धाया॥

* पाठांतर--गढि मैदान दी।

एही फौज रूहेल दी फर रूप लखाया।
कालजमन करि कोह नूँ काबिल सैं धाया॥
यह सँदेस सूरज बली तिलपति मैं सुन्ना।
हरषि उगा सब अंग मैं रन काजैं दुन्ना॥
अद्धी निसा गई जबै बलिराम बुलाया।
बल्लू वाला दुरजनैं आगै भिजवाया॥
कूरम सिह प्रताप भी अरु गोकुल सैना।
सैंगर ठाकुरदास और हरनागर पैना॥
मोहन हरसुख स्यामसिह हरिवल स्यौसिंगा।
सूरतिराम कटारिया अरु धौंकल धिंगा॥
हरनाराइन पाखरा सुखराम असंका।
राजा गूजर भरथसिंह चढ़िया भट बंका*॥
सबै जवाहर सिंह दै भट सूरज भेजे।
सेल साँग बिंदूक सर हथ्थौं धरि नेजे॥
इम्मौ सुभट चढ़ाइया सूरज बिन डंका।
घरी चारि पीछू चढ्यौ आपुन अनसंका॥
देखि गढ़ी मैदान दी बैरी दल दिट्ठा।
जंग बिचारन लग्गिए चढ़ि बाजिनु पिट्ठा॥
तिस बेलाँ सूरज बली करिकै धकपेला।
उथ्थौं ही बहु सूर लै हूवा भट मेला॥२०॥

दोहा

निरषि रुहेले की चमू श्री सुजान भे क्रुद्ध।
दुष्ट दिष्ट आए भलैं कह्यौ चाहि चित जुद्ध॥ २१॥
देव देव हरिदेव की जाइ दुहाई लच्छ।
जो बिपच्छ नहिं तच्छ है गच्छत सच्छत अच्छ॥२२॥

---

* पाठांतर—दै डंका।

## छंद त्रिभंगी

सुनि सूरज बानी रिस-लपटानी धरनि सिहानी भूख भरी।
पलके आहारी ललके भारी अंबरचारी भीर करी॥
गिरि धूरिजटी के जुद्ध जुटी के मद्ध कुटी के रौर परी।
मारू सुर लीना आवज बीना नृत्यहिं कीना तेह घरी॥२३॥

## दोहा

तेह घरी असि कर करी सूरज परगन चाहि।
कही सूर सेनाधिपनु* सत्रु न जीवत जाहि॥ २४॥

## छंद भुजंगप्रयात

जहीं सूर के सूर लै सेल साँगैं। चहूँ ओर तैं घोर यौं सोर साजा।
सतौं संधि कै तीर कोदंड तानै सहस्रौं सरोही लिये हाँकि बाजा॥
किते तेग तेगा जु नव्बीनुवारे भुसंडीनु कौं छंडिकैं फेरि गाजा।
धरा लेहु रे लेहु रे लेहु छायौ कहूँ देहु रे देहु रे देहु बाजा॥२५॥
घलामेल ह्वैकै चला सेल साँगैं ढलामेल दीनौ नला बीच भाजा।
अलाकै हँकारे रुहेला सँभारे झलाबोल सारे डला औन ताजा॥
तरातर तरातर यहै सद्द सुंन्यौ धराधर धराधर परे स्वामि-काजा।
झमाझम झमाझम बजैं सार-धारा लखै जुद्ध कौं देवता दैत्य लाजा२६

## वृद्धिनाराच छंद

जुटे रुहेले जट्टही। न कोई वीर हट्टहीं॥
सुपक्क एक डट्टही। झपट्टहीं लपट्टहीं॥
अनेक अग्ग वाहहीं। कितेक मार छाँहहीं॥
किते परे कराहहीं। हकार सौं रपट्टही॥
कहूँक हथ्थ हथ्थहीं। भरै कहूँक† वथ्थहीं॥
परे सु लथ्थ पथ्थहीं। सपट्टिकैं चपट्टहीं॥

---

* पाठांतर—सेनापति।

† पाठांतर—कवथ्थ।

उताल चाल हाल सौं। धवंत कोह ज्वाल सौं ॥
गहैं कृवाल ढाल सौं। अरीनु कौं कपट्टहीं ॥
धमंकि धिंग धावही। तमंकि तेग आवहीं ॥
झमंकिकै चलावहीं। बुलावहीं बलक्किकैं ॥
कटंत कंध* कुंडला। छुटंत बाहु डुंडला ॥
फटंत पेट† रुंडला। डुलावहीं ढलक्कि कैं ॥
लरैं कहूँ छुराछुरी। परैं कवंध रातुरी ॥
कितेक टूटि जावुरी। हुलावहीं हलक्कि कैं ॥
भलक्कि भाल भालहीं। झलक्कि झाल झालहीं ॥
रलक्कि घाव घालहीं। घुलावहीं घलक्कि कैं ॥२८॥

## छंद नीसानी

उथ्थौं ठाकुरदास भी, सैंगर समुहाया।
हथ्थौं सक्कि सँभालिया वैरी बहु पाया ॥
फैंकि साँग रूहेल दे उर अंदर घत्ती।
देखी दूजैं आँव दी झारी कर कत्ती ॥
जिसी हथ्थ सैं सैंहथी छुट्टी दग डट्टी।
तिसी हथ्थ दे उप्परॉं रूहेले सट्टी ॥
करकट्टा जिस डुंड सैं सैगर यौं सोहा।
मनौ दंड लै काल भी रन-मंडल कोहा ॥
मार करी उस सथ्थ यौं मथ्थी पर सैना।
हुवा तथ्थ समसेर दा लैना कै दैना ॥
स्यामसिंह गहि सेल नूँ धसि जंग अखारे।
तन घत्ते रत्ते अरी फरमंडल पारे ॥

---

* पाठांतर—कंठ।
† पाठांतर—त्राहु।

इक घाव तिस जंघ * में रुहेलों कीता।
तौ भी बीर न हट्टिया अग्गैं पग दीता॥
हरिनाराइन तिस घडी बाजी करि तत्ता।
धसा कुरंगौं जूह मैं पंचानन मत्ता॥
किते रुहेले तिन किए कत्तौं सौं लत्ता।
घनैं मुंड फर पाड़िये धर थर फरकत्ता॥
हम्भौं बीरौं दी चली जहँ साँग सिरोही।
मारि रुहेलौं दी अनी कित्ती रंग लोही॥
हिक हिक दे हीय नूँ सर साँगौं फोड़ा।
हिक सीस भुज पाइ भी तरवारौं तोड़ा॥
कोइ कर्न बिहूनिया नासा बिन कोई।
भौंद फटे कोई पड़े स्वासा बिनु होई॥
कोई अस्यौं† फिराँवते हूवे रन रूते।
कोई प्रान गँवाइयाँ सुख-सेजौं सूते॥
कहीं अंत छुट्टे पड़े कहिं दंत उघारे।
कहूँ बिना हूँ मूँड़ ले सीने गहि फारे॥
मारु मारु मुख अक्खदे दे दे हक्कारे।
सेख रुहेले भागिए छुट्टा छक्का रे॥
गिरते पड़ते घत्तिये करि कत्ते कत्ते।
सूरज सूर पुकारदे सूरज दी फत्ते॥२६॥

## दोहा अमृतधुनि

कढ़ि कढ़ि अति श्रोनित उमगि गढ़ि गढ़ि अरिनु उदंड।
चढ़ि धाइय बदनेस-सुत खग्गग्गहि रनमंड॥

---

* पाठांतर—जग।

† पाठांतर—खग्ग।

खग्गग्गहि रनमंड समर उद्दंडद्दलनि ।
खंडकरि नित खंडत खलनि विमुंडद्धरनि ॥
झुंड झटिय समुंड फटिय चमुंड जय रढ़ि ।
तंडव करत उमडत धरनि वितुंड कढ़ि कढ़ि ॥३०॥

कवित्त

हेला देत आए बगमेला ज्यौं रुहेला बीर
मैदाँ गढ़ी के तीर सुभट महारथी ।
तेई काटि डारे रुंड मुंड झुंड ढारै दै
चमुंडनु अहारे भौ प्रसंग जुद्ध पारथी ।
रुधिर के धारे परे बीच असरारे पारे
रविजा-मिलाप कौं सुरेस भयौ सारथी ।
सूदन सुजानसिंह विक्रम-निधान महि
जान बान-गंगा कौं करी कवान भारथी ॥३१॥

छंद मालिनी

सुभट सिमटि आए । सूर के पास धाए ।
हरषनु हिय छाए । जंग की जैति पाए ॥
धन धन रव लाए । कंठ सौं लै लगाए ।
समर-श्रम मिटाए । मान सनमान पाए ॥ ३२ ॥

छंद हरगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं ।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं ।
रन मैं गढ़ी मैदान पाइय अंक चौथैं आइकैं ॥३३॥

इति चतुर्थ अंक ।

## छंद सादरा

दिन बीत दस, बोस पुनि धारि मन रीस।
सजि सैन भयदैन चढ़ि नंद, ब्रजईस॥
लिय साहि तुकलान गढ़ भूमि बलवान।
जहँ कालिका थान रन, देखि मरदान॥ १॥

## छंद निशिपालिका

सूर दल देखि उत साहि बल सज्जियौ।
बाजि गजराज गजि* तूर बहु बज्जियौ॥
केतु फहरान घहरान घन दुंदुभी।
सस्त्र खहरान ठहरान चकचुंधुभी॥
बान किरवान तन-त्रान धरि कढ्ढिये।
जान भरि सान मरदान बहु बढ्ढिये॥
होइ असवार तिहिं बार इक ओर तैं।
गोल करि गोल बहु मोल हय सोर तैं॥ २॥

## छंद रुचिरा

साहि-अनीक बिलोकि बदन-सुत, चरहिं बुलाइ कह्यौ तबही।
है इन मैं को को सेनापति, कहु दूत दुहूँ कर जोरि कही॥३॥

## छंद पावकुलक

ए जहँ स्याम निसानतुवारे। ते पठान ठाढ़े रन रारे॥
है जित धुजा नील सित चंडी। सो रुहेल की सैन घुमंडी॥
जहाँ भगोही उड़े पताका। तहाँ दक्खिनी जंग चलाका।
लाल सेत जहँ ए धुज ठाढ़ी। यहै सैन बकसी की बाढ़ी॥
जहाँ सेल साँगें बहु भाले। सो अंबरी रिसाले वाले॥
जिन के बाजि करत बहु छंदा। ते बालासाही मतिमंदा॥

---

* पाठांतर—सजि।

जिनके निकट गरूर सिपाही। वे जानौ सब आलासाही॥
लिए चारु बाजी बल पूरे। नीम बास ए हैं रन रूरे॥
जौ यह गोल अग्ग बढ़ि ठाढ़ौ। सो सरदार बदकसी गाढ़ौ॥
जो यह चमू फिरति है दौरी। सो सवार पाइक पेसौरी॥
जहाँ सद्द ढक्का धर धरवी। ब्रजपति-नंद जानिए अरबी॥
जो भुव स्याम घटा रहि दब सी। ठाढ़े तहाँ सुभट रन हबसी॥
जहाँ भुसंडिनु कौ भर भारी। ते इतबारी निपट हजारी॥
हैं जहँ लाल लाल खल कारे। नादिरसाही टोपीवारे॥
आस पास इनके भय दानौ। रुप्यौ तोपखानौ समसानौ॥
सब की पुट्टि छाइ दल चंडौ। दे रन दाखिल है बलवंडौ॥
नाम गाजदीखाँ बलवंडो। विक्रम बलित बुद्धि परचंडौ॥
श्री सुजान सुनिकै चर बानी। जुद्ध-बुद्धि-निहचै मन ठानी॥
अपने सेनापती बुलाए। जग हेत आगे रुपवाए॥
जोजन अर्ध अर्ज पर सैना। निरखि सूर बल थप्पि सचैना४॥

## छंद मुक्तदाम

करे इक ओर बलू बलिराम। रुपाइय बीर दुहूँ भुज बाम॥
हरवल बैरि चमूपनि तथ्थ। थप्यौ तिनके तटही समरथ्थ॥
रुप्यो तिहिं पुट्ठ* लियैं बल घोर। चमूपति है हरिनागर जोर॥
थप्यौ भुज दच्छिन ओर सुनाम। सुकूरमसिंह प्रताप उदाम।
जुहीं सिवसिंह कियौ बलवान। बली ब्रजसिंह रुप्यौ तिहिं थान॥
लियै किरपा सब नाहर सैन। ठढ़ौ तिनके तट हीरन लैन॥
सहस सवार लिए मनसूर। किए सुचँदौल सुजान गरूर॥
कियौ हिय अग्ग सुभट्ट समाज। घमंडिय प्रोहित राज सलाज॥
रह्यौ सबकी पुठवार सुजान। दिली दल दाबहि कान्ह प्रमान॥
रच्यौ अध जोजन व्यूह अनीक। बजाइय दुंदुभि मारुव ठीक॥५॥

---

* पाठांतर—पुव्व।

## छंद घनानंद

यौं थपि सिंह सुजान व्यूह अमान सकल सूर सेनाधिपति ।
सद्दिय पटह निसान तूर भयान समर हेत चलि मंद गति ॥६॥
फहरत पीत निसान तड़ित समान, कैं प्रताप ज्वाला लपट ।
परगन इंधन जान लखि ललचान लगि उछाह मारुत झपट ॥७॥
देत कवाद कमान भरत दवान जग हेत रस बीर लहि ।
करत हयंदन छंद सुभट बिलंद सेल साँग नेजान गहि ॥८॥

## छप्पय

इहि बिधि दुहुँ भट पिलिय खिलिय लखि कुंभ-सँघारनि ।
झटपट मनमथ-दहन गोसु तहँ लग्गिय झारनि ॥
स्वान-सवार सपट्टि एक रद तथ्थ मनाइय ।
बाम पुट्टि-सुखदानि आनि फेरमंडल छाइय ॥
पल-भषन-हार पुलके गगन प्रेतपूत कुद्दिय किलकि ।
सज्जिव विमान देवांगना हरषि बदन उट्टिय चिलकि ॥९॥

## दोहा

वासर के तीजे पहर साहि सुभट करि रल्ल ।
जुटे आइ स्योसिंह सह लै मरहट भुज भल्ल ॥१०॥

## छंद पद्धरी

उत साहि सुभट मरहट सजोर । धाए भुज भल्लनु दै झकोर ॥
हर हर हकार धर धर धवान । भर भर भराक इततैं दवान ॥
मुख जयति देव हरिदेव सद्द । झपटैं ब्रजेस बीरहु मरद्द ॥
कड़कंत धनुष कररी कवाद । सटकंत तीर छुट्टत जवाद ॥
गटकंत गड़ागड़ होत सेल । भड़कंत भुसंडी घाल मेल ॥
अड़कंत दुहूँ मिस स्वामि-काम । फड़कंत तुरंगम हू महाम ॥
झड़कंत झरत आयुध अनेक । खड़कंत अंग अस्तनि कितेक ॥

रड़कंत इक्क लगि हय चपेट। फड़कंत फरहिं भर पिट्टि पेट ॥
ठड़कंत देखि परके हयंद। धड़कंत नहीं जुट्टत सुछंद* ॥
तड़कंत तेग सिप्परनु लागि। चड़कंत अस्ति हय टाप भागि ॥
पड़कंत पड़े सेलनु अरक्कि। घड़कंत घाव श्रोनित सरक्कि ॥
तिहिं औसर गूजर सारदूल। नेजा उठाइ धाइय सफूल ॥
दिय सत्रु हिये मैं घाव घोर। पुनि काढ़ि तेग झारिय सजोर ॥
इक दबटि दक्खिनी ने उताल। किय गुलफ घाव नेजा दुसाल ॥
तहँ सेनपती स्यौसिंह धाइ। हय हंक सेल मेलिय घुमाइ ॥
ज्यौं छुधित बाज लखि गन कुलंग। चुंगल चपेट कर देत भंग† ॥
छुर इक्क दोइ हाथर-चलाइ। पर लथ्थ पथ्थ दीने गिराइ‡ ॥
तहँ एक दक्खिनी दग बचाइ। दिय जंघ माँझ भाला घुमाइ ॥
स्यौसिंह भयौ सौ सिंह रूप। हनि साहि सुभट मृग से अनूप ॥
हुव लाल लाल बसुधा कराल। श्रौनित्त जाल ज्यौं कोह ज्वाल ॥
जहँ सेल साँग समसेर ढाल। बंदूक बान जंजाल जाल ॥
गहि गहि सुजान भट चंड चाल। दिय घोर मार दिय लोह झाल ॥
मुख मारु मारु कै भरत सार। बिकरार भगे दखिनी अपार ॥
रन बिजय पाइ स्यौसिंह बीर। घाइल सुमार फर रुपिय धीर॥११॥

### दोहा

बिचल पाइ दखिनी निरखि कर्‌यौ सुदखनिनु जोर।
नीव बाँस सब संग लै परे घमंडी ओर ॥१२॥

### छंद भुजंगी

बजी चारिहू ओर तैं टापबाजी। मनौं मेह आसाढ़ की बुंद गाजी ॥
पुकारैं दुहूँ और के बीर हाँ हाँ। करी भौंह बाँकी चढ़ाई सु बाँहाँ ॥
छुटी वान कम्मान दम्मान भारी। किहूँ भाल भाले बरच्छी सँभारी ॥

---

* पाठांतर—धडकत नहीं रन छद हद। † पाठांतर—चुग।
‡ पाठांतर—पर लथ्थ पथ्थ हो सौं स्वबाइ।

इतै जट्ट जुट्टे उतै साहि-सैना। भिले जुद्ध कौं उद्ध कैं क्रुद्ध नैना ॥
कहूँ चाप टंकार हंकार पारी। कहूँ धूक बंदूक मैं ज्वाल भारी ॥
कहूँ लैस कत्ती धरत्ती घुमाई। कहूँ सैल की रेल हत्थौं चलाई ॥
तहाँ आपने आपने हत्थ किन्ने। तिन्हें देखिकैं अंबरी मोद भिन्ने ॥
टुटे सार सन्नाह भन्नाहटे सौं। परैं छूटिकैं भूमि खन्नाहटे सौं ॥
भुसंडीनु फुट्टे मही पिट्टि लुट्टे। छुरौं खाइ दुट्टे सरौं फेरि जुट्टे ॥
किते रत्त मत्ते उमत्ते घुमत्ते। तुरत्ते उठे फेरि लै हत्थ कत्ते ॥
लरत्ते परत्ते बदक्सी उमडे। दिसा पुब्ब के से जलद्दा घुमंडे ॥
लखैं यौं बदक्सी चमू माहिं पैठे। धए सूर सूरज्ज सब्बै इकैठे ॥
तहाँ यौं घमंडी गहैं सैल धायौ। मनौ द्रौन को पुत्त है छोह छायौ ॥
किधौं पूत जमदग्नि कौ जंग रुट्ट्यौ। बदक्सी सहसबाहु पै घाउ बुट्ट्यौ ॥
हनैं सैल सौं जाहि भू मैं पटक्कै। सहसबाहु की सी भुजा लै कटक्कै ॥
लखैं त्यौं बदक्सी भरे जी अचभे। लिखे चित्र के से रहे थान थंभे ॥
हुती एक पै त्यार बंदूक त्यौंही। दई फूँक कैं धूक मुठभेर ज्यौंही ॥
लगी आन नैंजाब औ जीभ खंडी। धुक्यौं बाजि तैं त्यौं धरा पै घमंडी ॥
गिर्यौ देखिकै शत्रु सब्बैं सपट्टे। लिए आपने आपने सस्त्र कट्टे ॥
पलक लागतैं बाजि चढ्ढ्यो घमंडी। ललक्कारिकैं तेग की जंग मंडी ॥
रंग्यौ रत्त सूँ हत्थ समसेर सोहै। मनौ देह धारैं रसैं जान कोहै ॥
फुटैं जावकैं जीभ यौं कढ्ढि आई। तहाँ देव नरसिंह की मोह पाई ॥
गहे तेग नंगी करी जंग चंगी। हनी साहि की सैन यौं श्रौन रंगी ॥
तहाँ नंद बदनेस कै दृष्टि दीनी। उदैभान की सी प्रभा अंग भीनी ॥
तुरी तेज कैसैं हथी हत्थ लिन्नी। हियैं देव हरिदेव की याद किन्नी ॥
मृगाधीस जैसें करी जूह दट्टे। षगाधीस ज्यौं ब्याल जाले झपट्टे ॥१३॥

## छंद त्रिभंगी

झपट्यौ करि हल्लनि लै भट भल्लनि अरि दल मल्लनि समुहायौ।
जित प्रोहित जुट्टयौ गोली फुट्ट्यौ श्रौनित छुट्ट्यौ दरसायौ ॥

सर साँगनु बुट्ट्यौ सेलनु तुट्ट्यौ घन सम उट्ठ्यौ बरसायौ।
धुनि धीर धमंकनि तेग झमंकनि बिज्जु चमंकनि सरसायौ ॥१४॥
सरसायौ जुद्धै बढ्ढि बिरुद्धै अहिधर कुद्धै ज्यौं रन मैं।
तिरसूल सकत्ती रत्तनि रत्ती ज्वाल झरत्ती अरि-गन मैं॥
करि खंडनि खंडे यमनि उदंडे धरनि बिहंडे परचंडे।
बहु रुंडनि मुंडनि ढुंडनि झुंडनि श्रोनित कुंडनि फरमंडे ॥१५॥
फरमंडे हथ्थौं लथ्थक पथ्थौं लुथ्थिनु जुथ्थौं काटि करे।
घन घाइ भभक्कत सेलह बक्कत कोइ दबक्कत जात टरे॥
बहु सस्त्रन बाहत कोह कराहत फिर फिर चाहत भूमि परे।
दे दे रव रट्टिय झट्टकपट्टिय डट्टिय कट्टिय भूमि भरे ॥१६॥
भरि बथ्थनि पटके दै दै झटके हय तै पटके श्रौन झरे।
अस्तिनु के चटके टापनु बटके अंतनि अटके जाइ परे॥
केते घट घटके आयुध कटके केते सटके संक भरे।
तिहिं सूरज बंका दै रन हंका करि अरि फंका दूरि करे ॥१७॥

दोहा

कटे फटे निबटे हटे लखे साह दल जंग।
फते पाइ सूरजबली लख्यौ सुप्रोहित अंग ॥१८॥

कवित्त

द्रोन अघवाई द्रोनी कृप अँचवाई ख्वाई-
सोई तें जगाइकैं बुझाई प्यास चंडी की।
ताही खेत प्रेतनु पलोके भट पीठिनु के
मुंडनु के बाट हाट आमिष उदंडी को॥
सूदन दिलीस दल चाहिकै समर गाहि
साहि की प्रतापानल खग्ग जल ठंडी को।
लागिक भुसुंडी जीभ जाव जुग खंडी तऊ
छंडी है न जंग भंडी किति यो घमंडी को ॥ १९ ॥

### सोरठा

प्रोहित लख्यौ सुमारु हय पै सिंह सुजान नैं।
ज्यौं तनु लहै करारु त्यौं तुम कौं मैं लै चलौं ॥ २० ॥
कछू भूमि चहि बाजि कछू खाट कछु पालकी।
लै प्रोहित ब्रजराज दाखिल निज डेरनु भयौ ॥ २१ ॥

### कवित्त

पाई गननाइक सौं तैंही गननाईकता
त्यौं ही दिगपाल दिगपालता प्रतीति की।
तेज पायौ रवि तैं मजेज सतमष पास
अवनी कौ भोगिबौ अधिक नाथ नीति की ॥
सीलताई ससि तैं पवित्रताई पावक तैं
लाज पाई सिंधु तैं सुनीति वेद रीति की।
सूदन अभीत सर्वज्ञता सुबुद्धि सूजा
दीनी जगदीस बिधि तोही जंग जीति की ॥२२॥

### छंद समानिका

बीति गे कछू दिना। जंग के किए बिना ॥
एक द्योस भोरहीं। दै निसान घोरहीं ॥
द्वै सवार तथ्थ ही। लै अभीर सथ्थ ही ॥
सो वजीर आइयौ। मंत्र कौं उपाइयौ ॥
श्रीसुजान पास कौं। कूच के प्रकास कौं ॥
थापि मत्र ता घरी। कूच की हियैं धरी ॥
तव्ब ही पयान कै। ईति भीति मान कै ॥२३॥

### तुंग छंद

उठत प्रबल सैना। कहत सुथल लैना ॥
मनहुँ जलद धाए। उमड़ि घुमड़ि आए ॥

हय गय रथ प्यादे । सुतर सुभर लादे ॥
गगन घन पताका । बहु बरन बलाका ॥
धम धमत दमामैं । पटह बजत आमैं ॥२४॥

### छंद मनहरण

पयान कस्यौ मनसूर सुजान निसान धुजानतु पैयतु पार ।
बिचार हियैं यह खेतहि देत कढ़ै मुदई कहुँ भूमि अगार ॥
तजी तिलपत्ति बजी तुरही सुरजी सब सैन बजावत सार ।
दियैं गढ़ बल्लभ कौं पुठवार किए भट भीरनु थान अपार ॥२५॥

### छंद मदनहरा

सो खबरि पाइ पोता निजाम कौ
अब वजीर मनसूर टस्यौ,
उत कूच कस्यौ ।
तबही सजाइ सादल नजीबखाँ
सकल अराबौ अग्ग धस्यौ
यह हुकम कस्यौ ।
तुम हरवल चलौ मीर बकसी लै
आज बदरपुर जाइ परौ
रन फजर करौ ।
मुझ कौं भी पास जानियौं अपने
निमक साह का दिलहिं धरौ
खतरा न डरौ* ॥२६॥
वे आइसु पाइ गाजदींखाँ कौं
सब अमीर भलभलहिं रढ़े
हिय हरषि बढ़े ।

---

* पाठांतर—करौ ।

सादल नजीब महमूद आखबत
जैता गूजर सहित कढ़े
रव जुद्ध पढ़े ॥
सब नीमवास दखिनी पेसौरी
संग मीर बकसीहि चढ़े
तन तेह उढ़े ।
दै दिग्घ निसान बान बहु गोमुष
तूर बाँकिया सद्द बढ़े
भुव गगन मढ़े ॥२७॥

### दोहा

हुकुम गाजदीखान कौ सब अमीर धरि सीस ।
बड़ौ अराबौ अग्ग धरि हय सहस्र चढ़ि बीस ॥२८॥
साह जहानाबाद तै द्वै जोजन भुव बढ्ढि ।
सब डेरनु चौकस करिय फेरि जुद्ध कौं चढ्ढि ॥२६॥

### छंद चर्चरी

सो सुनै मनसूर सूरज सूर बीरनु सज्जियं ।
बज्जियं बहु दीह दुंदुभि व्यौम भूमहिं गज्जियं ॥
ह्वै सवार न बार लग्गि रग्गि वग्गिय सायुधं ।
दै धवान जवान धाइय धुंध छाइय वायुधं ॥३०॥
बाजि कै गजराज पाइक संधि साइक चल्लियं ।
कोस चारि धरा लई भट जुद्ध कुद्धहि रल्लियं ॥
ह्वै हरौल सुजान बढ्ढिय सब्ब सूरनु संग लै ।
आस पास वजीर रुप्पिय जंग हेतु उमंग लै ॥३१॥
तत्थही छुन हत्थ आयुध सत्थि सो बलिराम है ।
गत्थ सौं सुखरामसिंह प्रताप कूरम नामु है ॥

जथ्थ जोरि बलू बली बलवड सूर कटारिया।
हत्थ साँग सम्हारि लछुमनदास पाखर रारिया ॥३२॥
बिप्र मोहन रुप्पियौ हरिनागरौ भट जूह लै।
मेदसिंह सिखावतौ* हरिबल्ल बैरि समूह लै॥
है बली व्रजसिंह किरपाराम नाहर को ममाँ।
दबिब भूमि खड़े भए लगि हौन जंग झमीझमाँ ॥३३॥

छप्पय

तावल तैं कढ्ढिय अमान चढ्ढिय हयद बर।
बढ्ढिय रस रढ्ढिय सुबीर हरिदेव नामगर॥
पढ्ढिय रन मढ्ढिय सुलोह डढ्ढिय अनीक पर।
डढ्ढिय दग गढ्ढिय भुजान लढ्ढिय कमान कर॥
धरि मुच्छ हथ्थ बड़ हथ्थ नर सथ्थ सहित सनमुष धइय।
अरिसाल सु बैरीसालसुत मुहझमपन मुहकम भइय ॥३४॥

छंद कंद

कढ्यौ सूर सैन तैं सूर ता बार।
अभिमन्यु ज्यौं जुद्ध कौं कुद्ध लै सार॥
मति गान के जुद्ध तैं बढ्ढि मातंग।
गनै नाहिं काहू घनै कै हनैं अंग॥
रुक्यौ नाहिं रोक्यौ धुक्यौ सामहै जुद्ध†।
चमू कंदरा तें मृगाधीस ज्यौं क्रुद्ध॥
कियौ तेज बाजी उमंगैं भर्यौ अंग।
महासूर के लच्छनै अच्छ लै रंग॥
गहै सेल समसेर समसेर है बीर।
लखी साहि सेना झखी ना लही धीर॥

* पाठांतर—सिखावती
† पाठांतर—सुद्द।

लख्यौ दीह दिल्ली दलौ ने बढ्यौ खेत।
कह्यौ कौन है कौन है रेफ ते लेत॥
सवाधान ह्वै कैं सतौं बीर दै हाँक।
कढ़े साहि की बाहनी तै भरे साँक* ॥
रटे लेउ रे लेउ पावै नहीं जान।
हटे फेर संकै करैगौ धनौ घान॥
बिलोकैं बकैं आपुसौं मैं भरे भीर।
नही जाउ रे या बलौ कै कहूँ तीर॥
तबै तीरु गोलीनु की चोट सभारि॥
सबै ठौर ठाढ़े रहे रोपियौ रारि॥
जबै सत्रु देखे बढ़े आपनी ओर।
तबै रोस कै रंग मैं आप कौं बोर॥
मुहक्कम्मह ह्वै मुहक्कम्म ता बार।
तहीं चित्त चित्यौ यही सार संसार॥
हियैं स्वामि के काम की बानि कौं आन।
मुखे देव हरदेव हरिदेव को गान॥
घुमाए सहथ्थी चल्यौ गोल पै धाइ।
उदंडी भुसंडी छुरी बीच ही काइ॥
लगैं मर्म गोली गिर्‍यौ भूमि गन्नाइ।
तिहीं बार सथ्थी गए भाज ज्यौं बाइ॥
निहार्‍यौ महीपै कही सत्रु ता बेर।
मर्‍यौ रे मर्‍यौ रे लहौ सीस कौं घेर॥
सुनै सद्द कौं धार्‍यौं सूर के सूर।
तै साहि-सैना सपट्टी मनौ हूर॥

* पाठांतर—चाँक।

हुते दूरि ए वे सुनीरे गए आइ।
परे पै करै सींग समसेर के घाइ॥
लटक्कै धरा तैं कटक्कै लयौ सीस।
पर्यौ ईस के हार मैं सो बिसे बीस॥
तहाँ बीर बलिराम आयौ गहे रीस।
महा छोह सौ ओठ दंतौं गए पीस॥
चले सीस सो काटि तेई लए दीस।
गही सेल साँगै दई बीस कै तीस॥
कुटे हू फुटे हू बुटे साहि के लोग।
लियै सीस पैठे चमू आपनी जोग॥
लख्यो खेत खाली सुबलिरामहू चाहि।
नहीं या चमू सौं चमू मैं धर्यो जाहि॥
बिचार्यौ सही जुद्ध कौं चित्त के माँझ।
हटी साहि की सैन भू पैं भई साँझ॥
मुहक्कम्म की ल्हास लै आइयौ तब्ब।
धर्यौ आपनी फौज मैं सो बिना गब्ब॥ ३५॥

## कवित्त

एक दस सौक मैं न सहस अयुत बीच
लच्छ दस कोट मैं न काहू नर दम है।
साहस समूह सूरबीरन कौ साहीदार
सनमुख धायौ कहा कलिहू मैं कम है।
सूरन समर साहि सैन तृन तूल गनी
हनी देह गोलिन न खाई खेत खम है।
तन मन पन रन ऐसे मुहकम होइ
जैसौ बैरीसाल-सुत जूझयौ मुहकम है॥ ३६॥

### सोरठा

यह सुनि सिंह सुजान निरखि साँझ मन मौन गहि ।
सहित वजीर अमान दाखिल निजु डेरनु भए ॥ ३७ ॥

### हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं ।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कैं ।
रनजित्ति एक सुवित्ति मुहकम अंक पंचम पाइकै ॥ ३८ ॥

इति पंचम अंक ।

---

### छंद पावकुलक

पुनि गाजद्दीं खान चिंतियौ चित्त मैं ।
माधौसिंह बुलाइ करौं निज हित्त मैं ॥
आपा और मलार बेग बुलवाइयै ।
आपुन हो पुठवार इन्हैं उरझाइयै ॥ १ ॥
तब फरमान लिखाइ बहुत इलकाब दै ।
भाईपनो जताइ तेग सिरपाव दै ॥
अकबर मान समान आप दिल मानियौ ।
इसू बख्त सैं सख्त और नहिं जानियौ ॥ २ ॥
हस्त रोज के बीच दस्त करि आवना ।
दस्त आपके पस्त हरीफ करावना ॥
यौं फरमान लिखाइ डाक चलवाइकैं ।
माधौसिंहहिं पास दयौ पठवाइकैं ॥ ३ ॥

### दोहा

फेरि दक्खिनिनु कौं लिख्यौ आपु गाजद्दीं खान ।
सूरज औ मनसूर मिलि किया तख्त कलकान ॥४॥

जद सै किबलेगाह कौं संग लै गए आप।
तद सै इन्हौं मुखालफी हम सैं रक्खी थाप ॥५॥
अवधि आगरा साहि नै तुमकौं दियौ बताइ।
नगद खर्च जो फौज का चामिल लैना आइ ॥६॥
एक चाँद के अंदरौं तुमैं आवना रास॥
यह लिखि सुतर सवार कौं भेज्यौ दखिनिनु पास ॥७॥

## छंद सुमुखी

पुनि दल सज्जिय घोर घनौ। पटह गरज्जिय मेघ मनौ॥
फहरत हैं सित स्याम धुजा। अरुन हरीत सुनील दुजा॥
चढ़त चमू चतुरंग महा। उड़ि रज अंबर भान गहा॥
सहित अराबहि कूच कियौ। तबहिं फरीदहिबाद लियौ ॥८॥

## छंद खंधा

साहि सुभट धरि, अग्ग अराबौ, आनि फरीदाबादहिं छाए।
सूरज सफदरजंग तुरंगन भेजि सवार अधिक अकुलाए॥
या बिधि बीति गए बहु बासर हय गय सुतुर घने हनि लाए।
वेऊ जबरजंग गहि ओटनु चोटनु देत कोस भुव आए॥
तौ लौं अंतरबेद जबत करि गंगा न्हाइ हुकुम पितु पायौ।
रविजा दरस परसु बृंदाबन सूरज पास जवाहर आयौ॥
सो सुनिकैं मनरसूर मुदित ह्वै फेरि समर कौ मत ठहरायौ।
हिम्मति बढ़ति सुभट कौं रन मैं ज्यौं हुकमी आयुध कर आयौ ॥९॥

## छंद मोदक

सूरजहू अपने चित सोचत। जंग बिना चित सोच न मोचत॥
माधव औ दखिनी जब आवहि। तौ इन सौं नहिं जंग रचावहिं॥
जौ लग वे नहिं आवन पावत। तौ लौं साहस एक उपावत॥
एक झपट्ट करौं बिनु संकहि। लै मनसूर हजूर सुबंकहिं॥

तोपनु ओट करैं बहु चोटनु । ते असि साँग हनौं अरि मोटनु ॥
यौं निहचौ करिकैं अपने मन । बोलि नवाब कह्यौ रन कौ पन ॥१०॥

छंद बैतवैं

सजे सब सैन कौं यारौ तहाँ मनसूर आया है ।
कहौ क्या है बहादुर दिल,सुजा नै यौं सुनाया है ॥
नहीं बद नेक कौं जानौं मुझै तौ दस्त साया है ।
भला जो होइ सो करना खुदा नै तो बताया है ॥
तबै मनसूर सौं सूजा दुहूँ कर जोरिकैं भाखी ।
हुकुम जो आपकौं पाऊँ सही करि जंग मैं राखी ॥
रहौ पुठवार पै ठाढ़े सु मुदई को डरावे कौं ।
उठायैं आज मैं बागैं निहारूँगा अराबे कौं ॥
भए षट मास संगर को घने भट फेरियौ याने ।
बिलोकैं ताहि क्यौं रहियै हियौ उनमान ना मानै ॥
सुनी मनसूर ए बातैं कही तौ देर क्या करना ।
कहौ जिस वोर सैं मुझकौं नहीं टरना सही लरना ॥
यही ठहराइकै दोऊ जवाहिर सौं जताया है ।
रहौ पुठवार सैं मुहकम तुमैं हम यौं बुलाया है ॥
रहौ चंदौल तुम गाढ़े करैं हम जंग तो आगै ।
तुमारे चारिहू बकसी उठावैं संग ही बागैं ॥
निसा इस ठौर सैं खातर वजीरै यौं सुनाया है ।
तुमारे लोग बागौं सैं हमैं इतकाद आया है ॥११॥

छंद आभीर

यह सुनि सूरज-पूत । अति रन पन मजबूत ॥
बोल्यौ बुद्धिनिधान । हाथ जोरि मुख बानि ॥
आपु करी बहु जंग । मैं जब न्हायौ गंग ॥

अब रहियै पुठवार। मोहि बतैयै रार ॥
कीजै अरज कबूल। जो चित चाहत फूल ॥१२॥

कवित्त

पूत मजबूत बानी सुनिकैं सुजान मानी
सोई बात जानी जासौं उर मैं छमा रहै।
जुद्ध-रीति जानौ मत भारत को मानौ
जैसो होइ पुठवार तातें ऊन अगमा रहै।
बाम और दच्छिन समान बलवान जान
कहत पुरान लोक-रीति यौं रमा रहै।
लाल जू समर घर दोउन की एकै बिधि
घर मै जमा रहै तौ खातर जमा रहै ॥१३॥

दोहा

मरजी पाइ सुजान की सिंह जवाहर बीर।
हुकुम मानिकैं बाप कौ भयौ चँदौल गँभीर ॥१४॥
भर्तसिंह अरु लाल जी राजा गूजर तत्थ।
सूरति सेना-जुत करे सदाराम के सत्थ ॥१५॥

छंद तोमर

तबही सुजान अमान। उठि जुद्ध कौं बलवान ॥
किय बाम ओर वजीर। तिहि संग सैन गँभीर ॥
पठयौ सुदच्छिन ओर। करि सदाराम सजोर ॥
पुनि बोलि सिंहप्रतापु। यह कह्यौ सूरज आपु ॥
धसि सामुहैं बड़हत्थ। तुव निकट सिंह भरत्थ ॥
तिहि पुब्ब बल्लू बीर। थपियौ सुजान सुधीर ॥
बलिराम सूरतिराम। सुखराम तोफाराम ॥
पुनि जैत सेवा पूत। अरु पाखरा मजबूत ॥
जैकृष्ण मनसाराम। वह स्यामसिंह सुनाम ॥

बिसनेस पुहपा बीर। सजि सैन चढ्ढिय धीर ॥
किरपा सुलछमन दास। हरिसुक्ख मोहन पास ॥
हरि नागरौ द्विज जोर। हरिबल कियौ इक ओर ॥
फतेसिंह ऊधम नंद। ब्रजसिंह बुद्धि बिलंद ॥
बहु और सूर समूह। रन-काज चढ्ढिय जूह ॥ १६ ॥

छप्पय

अखैसिंह अमनैत बीर बर हरिनाराइन। -
कुसल पूत मजबूत तथ्थ सूरति रन चाइन ॥
देवीसिंह कुँवार और बहु जट्ट ठट्ट गनि।
चारि बर्न असि धर्म सबै सरदार सार भनि ॥
दिन भाग चतुर्थम के समै उर उछाह सुभटन बढ्ढिय* ।
सूरज समान सूरज बली समर काज हय पर चढ्ढिय ॥ १७ ।

गगनंगन छंद

ठंडन दुर्दिन बिहंडन मंडन किय बलबंड है।
दंडन धरिय उदंडन सक्ति डंड परचंड है ॥
खंडन चहत बितुंडन कटि बंधिय किरवान है।
संकर मनहुँ भयंकर चढ्ढिय सिंह सुजान है ॥ १८ ॥

कुंडलिया

चढ्ढिय जब सूरज बली बढ्ढिय भूरि गरद्द।
मढ्ढिय अवनि अकास उड़ि रढ्ढिय निज मुख सद्द ॥
रढ्ढिय निज मुख सद्द आजु सब मो मत किज्जिय।
अनहौनी नहिं होइ तोपखानो अस दिज्जिय ॥
दिज्जिय अरिहिं न जान मास षट की रिस कढ्ढिय।
यौं कहिकैं तिहिं बार जंग हित सूरज चढ्ढिय ॥ १६ ॥

---

* पाठांतर—मढ्ढिय

## कवित्त

भूतनु सहित भूतनाथ मजबूत भए
पूतनु जगायौ सुनि चंडिका अवास मैं।
चरबी चरैयनु कैं घरवी रह्यौ न कोई
धरवी अधरवी घुमानै भूष त्रास मैं।
बीर बाम बिहँसि बिहँसि कैं बिमान चढ़ी
हरि मन हरषि बजायौ बीन हास मैं।
जा समैं समर-काज पास मैं सुनायौ सूर
वा समैं अनत मोद बाढ्यौ भू अकास मैं ॥ २० ॥

## छंद पद्धरी

जब्बै सुजान किन्नो पयान। सब्बै सुभट्ट दै दै निसान ॥
ज्यौं भीम भीम भारथ रिसान। तुरकान कौरवन करन घान ॥
आवज अनेक बज्जै भयान। अति उद्ध पताका फरहरान ॥
हहनंत हुब्ब हंकत किक्यान। ठहनत टाप लग्गत पषान ॥
ठहनंत ढाल ढक्कनि ढलान। खहनत कवच धावत धवान ॥
छुहनंत जंग हय घूघरान। भहनंत जिरह लग्गइ पमान ॥
ठहनंत सिप्परनु लगि कृपान। भहनंत भूरि भेरी भयान ॥
सहनंत सेल सरसर सरान। फहनन प्रबल पाइक अमान ॥
ढहनंत छोनि छूवत छवान। घहनत घट गजगति गरान ॥
दहनंत दाव जिमि दिष्ठि आन। धहनंत धिग धूमनु धवान ॥
करि लावदार दीरघ दवान। गहि सेल साँग हुव सावधान ॥
केतेक धीर संधी कमान। केतेन तेग राखी भुजान ॥
गुन गाइक किय वीरनु बखान। सैंधू सुर पूरिय तिहीं थान ॥
सुनि सूर-बदन जिम उओ भान। हुव मुच्छ केस मुख सिंह-मान ॥
मुख देव देव हरदेव आन। हिय स्वामि-काम पन किय जवान ॥
तहँ सदाराम सब सहित पान। बिय भर्तसिंह अरि-दुःखदान ॥

कूरम प्रताप बलिराम जान। सूरत कटारिया उर छुहान॥
हरिनाराइन रन चंडवान। लछिमन पाखरिया किय उठान॥
ए सब सुभट्ट झपटे हलान। समुहान दिष्ट करि तोपखान॥
घमसान हेत बड्ढे गुमान। आयुध अनेक अवसान आन॥
यह घोर कुलाहल तुरक कान। परियो अचान रिस झलझलान॥
जे तोपखान के पासबान। बहु मुगल सेख सैयद पठान॥
जे रुपे तोपखाने सयान। तिन लोह जंत्र झारिय कसान॥
जज्जाल भुसंडी रहकलान। हथनाल घोर घुरनाल तान॥
लँबछुर अनेक पल भष बचान। जहँ अप्रमान कुहके सुबान॥
तहँ जबरजंग गज्जिय गरान। ते लगि कसान झर झर झरान॥
कहुँ सरसरान कहुँ फरफरान। इमि सलक होति धर धरधरान॥
बन अचल अचानक अरअरान। वह प्रबल धूम चढ़ि आसमान॥
तिहँ कौन और उपमान आन। मनु विंध्यअचल पाइय पषान॥
मुनि-भीति चलिय उठि रतन-सान। कैसे सखास पावक प्रमान॥
गल के समान गोला बगान। फुंकार सद्द कलकान कान॥
इत जट्ट ठट्ट झपटे भिलान। हुअ गोल गोल बीचहिं मिलान॥
तिन कियौ सुभट बहु कचरघान। तउ सूर सूर नहिं बिलबिलान॥२१॥

छंद नाराच

कितेक टुट्टि सीस चुट्टि ग्रीव फुट्टि टुट्टियं।
कितेक खुट्टि पीठ पेट खेत माहिं लुट्टियं॥
कहूँक रुंड मुंड डुंड झुंड पाइ उड्डियं।
समेत बाहु डंड ढाल उड्डि जेम गुड्डियं॥
कहूँ कवाल अंतजाल लोह झाल बुड्डियं।
कहूँ कपाल बाल जाल ब्याल रूप छुड्डियं॥
कितेक बच्छ फूटि अच्छ कच्छ तच्छ गच्छियं।
कितेक लच्छ टूक ह्वै उड़ेत जेम पच्छियं॥

कितेक ख्याल ख्यालही कराल काल भच्छियं ।
कितेक फरफरंत रत्त नीर जेमि मच्छियं ॥
बरष्षि गोल गोलियं हरष्षि साहि के भटं ।
धरष्षि सूर सैन कौं कस्यौ ति भेष ज्यौं नटं ॥
तहाँ उदाम काम कौ सदासुराम रुट्ठियं ।
महाउताल उट्ठियं गहैं कवाल मुट्ठियं ॥
छुटी दवान अंधधुंध धुंधमाक धुंकरं ।
मनौ मलिंदयाचलै फनिंद ब्रंद फुंकरं ॥
इतै उतै धमाधमी भई जु सार छार की ।
बृषादि भान की समीर छार अंधकार की ॥
तहाँ सदासुराम कैं दवान घोर लग्गियं ।
फुटी सुबाख पिट्ठिह्व तऊ न बीर बग्गियं ॥
सुमार चोट खाइकैं दिवान खेत खग्गियं ।
अपार गोल चाल मैं चमू बिहाल दग्गियं ॥
छुते फटे बटे कटे हटे कितेक तारनं ।
बिलोकि श्रीसुजान नै थप्यौ सँधार कारनं ॥
हथौं सँभारि सैं हथी पसारि दिष्ठि कोह की ।
जहाँ खरी परै झरी असार गोल लोह की ॥
हयंद हंक्कि अग्गियं भयंद भेष धारियं ।
मनौ षड़ाननै चल्यौ क्रवंच पै सम्हारियं ॥
धमंकि धिंग धाइयौ खमंकि बाजि उद्ध कौं ।
मनौं दवागि पान कौं कस्यौं सुकान्ह कुद्ध कौं ॥
उठाय बाग उप्पस्यौ सुबिप्फस्यौ फराक मैं ।
महा अराक अड्डियौ धमाँक धुंधराक मैं ॥
तहाँ धरा धरी करी भराभरी भरभ्भरं ।
झराझरी झराझरी खराखरी खरभ्भरं ॥

धर्यौ असारु मारु मैं कुमार श्रीब्रजेस कौ।
घटा गुबार में भयौ प्रवेस ज्यौं दिनेस कौ ॥२२॥

### छप्पय

उहिं औसर सुखराम मान दीवान-तनय बर।
हय झपट्टि हुअ अग्ग सिंह सम जहँ सुजान नर ॥
कह्यौ तत्थ यह बचन महाराजा-कुँवार सुनि।
उग्ग दुग्ग रचि चार कहा यौं ही मरियै भुनि ॥
उत काठ लोह के अगनि झर इन मनुष्य-संहार हुव।
बिनि दिष्टि सत्रु आए करत नहिं साहस यह कुमति तुव॥२३॥
लखि बोल्यौ नृप कुंवर झलझलत झाल सुसाँगहि।
कै मुहि दै रन जान माहिं अब हनतु तोहि रहि ॥
पुनि भाषिय सुखराम काम लाइक भल किज्जहि।
मोहि मारि जब भग्ग पग्ग अग्गौं जब दिज्जहि ॥
सब देस दुग्ग दीरघ पिता सुत सोदर तुम मुख चहत।
दौं दाव कीट ज्यौं परत क्यौं निजु स्वारथ हमहूँ कहत ॥२४॥

### छंद भुजंगी

तहाँ बोलियौ रोसकैं फेरि सूजा। अरे सामुहै त परै क्यौं न तू जा ॥
जुरैं जुद्ध के दुग्ग औ देस कैसौ। कहा बाप बेटा सु भैया अनैसौ ॥
जुहै दार सौं कोस सौं देह नातौ। बँध्यौ नेह मनसूर सौं सो कहाँ तौ॥
बिना ताहि देखै नहीं बाग मोरौं। कितौ तोपखानैं तजौं देह तोरौं ॥
तिहीं काल बेहाल उत्ताल आयौ। हत्यौ खेत इसमाइलौ संक छायौ॥
लखै जाई सूजा खरौई रिसायौ। कह्यो धिक्कु रे धिक्कु तू भाजि आयौ ॥
गहैं संग मनसूर तोसे कपूतैं। लहै जित्ति कैसें सबै साथ धूतैं ॥
भख्यौ भीति सौं वाँ कछूवैं सुन्यौ ना। गयो भाजिकैं नैन पाछैं कर्यौ ना॥
तहीं खेत मैं पाखरीमल्ल आयौ। लख्यो सिंह सूजा महा छोह छायौ॥
तबै पाषरा बुद्धि जी मैं बिचारी। अड़्यौ जंग सूजा तहाँ यौं उचारी॥

चलौ साथ मेरे बजीरै दिखाऊँ। किती तोपखानै फते लै कराऊँ ॥
इती बानि सूजा सुनै बाजि हंक्यौ। चल्यौ पाखरा संगही ह्वै असक्यौ ॥
दई घोर अंध्यार मैं घोर धाई। कभूँ सामुहे दाहिनै बाम धाई ॥
घरी अद्ध मैं लै वजीरै दिखायौ। लिखै सूर मनसूर हू जोव पायौ ॥
कही आफरीं आफरीं सिंह सूजा। नहीं हिंद हिंदू सरी तोहि दूजा ॥
तहाँ नंद बदनेस कै फेरि भार्षी। लखौ जंग मेरी रहौ पुट्टि सार्षी॥२५

## छंद पद्धरी

सुनकैं सुजान बचननु वजीर। कहियौ हजार रहमति सुबीर ॥
तुझकौं न दोस मेरा कलाम। नहिं जंग काम हुइ निसा साम ॥
इस बख़्त सख़्त तैं की जु मार। सबही सिपाह हूई सुमार ॥
तिसका सुमार करना जरूर। अब अबस जग करना गरूर ॥
नहिं आफताब की रही जोत। अपना न गैर मालूम होत ॥
खुसबख़्त मुझे करना जु तोहि। तौ डेरनु दाखिल करौ मोहि ॥
अब बड़ी फजर जो हौनहार। रब की रजा सु करना विचार ॥
सूरज समझायौ यौं वजीर। पुनि डेरनु लायौ धीर धीर ॥२६॥

## दोहा

यौं तोपनु की जंग मैं सूरज कियौ अवाद।
ज्यों होरी झर बीच तैं हरि राख्यो प्रहलाद ॥२७॥

## छंद त्रोटक

पुनि भोर भयैं बहु तोप दगीं। इत उत्त धमाधम हौंन लगीं ॥
छिपि भान गयौ निस फेर भई। दुहुँ ओर झरी झर लोहमई ॥
पुनि ऊगत सूर मरथ्थ गयौ। उनि साहि कही रहि जाय लयौ ॥
गज ग्यारह ऊँट तुरंग घनै। हनि लावत भौ मजबूत मनै ॥
पुनि कीनिय दौर दिलीस दलं। गढ़ बल्लम पूरब ओर भलं ॥
दस खेत प्रमान रहे अबही। बलिरामहिं सूर कह्यौ तबही ॥

चढ़ि जाइ इन्हैं दबटाइ अरे। बढ़ि आवतु हैं चहुँ ओर खरे॥
यह आयसु सिंह सुजान दियं। उठियौ बलिराम हरषि हियं॥
असवार भयौ गढ़तैं कढ़ियं। जिमि सिंह छवाबन तैं बढ़ियं॥
तब छतरसाल संतोष हुवौ। अरु रामबली असवार हुवौ॥
पुनि जोधहु सिंह सवार हुवं। गढ़ बैरि रहा तिहिं अग्ग हुवं॥
अरु पाषरहू लछिमन्न महा। हय हंकि धमंकिय जोर गहा॥
सत अर्ध सवारनु लै दबस्यौ। झपस्यौ अति साहि दलै लबस्यौ॥
बस पाँच बँदूक तहाँ धमकीं। पुनि साँग कि सेल असै झमकीं॥
उतहू सरदार महा मनकौ। किय आनि असीलनु कौ झनकौ॥
इततैं बलिराम उठाइ हयं। कर सेल घुमाइ हरीफ हयं॥
उनहूँ असि झारिय रोस सनं। बिचही गहि काटिय सेल रनं॥
लखि जोधहुसिंह उठाइ परं। हिय सेल हबक्किय मीर मरं॥
हय तैं सुगिरयौ वह भुम्मि भरं। बलिराम दई एक तेग गरं॥
हनि तासु सिरै बलिराम बली। तिहि सैंनहिं धाइय देतु झली॥
सबही भट चोटनु देत भए। अपने अपने अरि बाँट लए॥
मरते परते भट साहि भजे। रन पाइ बिजय भट सूर गजे॥
बलिराम फिर्यौ ढिग सूरज कौं। सुबजाय बिजय रन तूरज कौं॥२८॥

दोहा

कछुक द्यौस बीते तहाँ आयौ माधव भूप।
दस हजार असवार को साजै सैन अनूप॥२९॥
प्रथम गाजदीखाँ मिल्यौ पुनि मनसूर सुजान।
मधुकर ने समझाइकैं मनौ संधि कौ ठान॥३०॥
तुम हम सेवक साहि के हुकम बजावनहार।
आपुस के अहँकार सों होतु दिली-संहार॥३१॥
या कहिकैं आमेरपति सबकौं दियौ मिलाइ।
साहि अहम्मद सौं दुहूँ दीने बिदा कराइ॥३२॥

चल्यौ अवध के मुलक कौं दर कूचन मनसूर।
सूरजहूँ कौं सीख दै पठयो ब्रजहि जरूर* ॥३३॥
सिंह जवाहर सों कह्यौ होडिल करहु मुकाम।
संग तुमारे हम लखैं श्रीब्रजेस यह काम ॥३४॥

कवित्त

मदन के जोरही सौं मदन कौं साध्यौ जिनि
थलन सँभार्यौ केलि जल के प्रवाह तैं।
घन के समान बड़े बन कौं बिहारी सब
जन की बिसारी सुधि तन के निबाह तैं।
सूदन उछाह तैं कहतु कवि राह तैं
सुचाहतैंई चाह तैं प्रबट बैरी थाह तैं।
दिल्ली नरनाह-गज ग्राह-मनसूर गह्यौ
माधव नै आइ ज्यौं छुड़ायौ गज ग्राह तैं ॥३५॥

छंद पवंगा

सिंह जवाहर संग चल्यौ कमठेसहू।
आए कामाँ तहाँ मिले बदनेसहू॥
लै आए पुर दीघ कियौ सनमान हैं।
मधुकर नेह जताइ गयौ निज थान हैं ॥३६॥

हरगीत छंद

भूपाल पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
किय संधि कूरम दुहुन की रचि अंक सतम आइकैं ॥३७॥

इति श्री मन्महाराजकुमार जदुकुलावतंस श्री सुजानसिंह हेतवे
कवि सूदन विरचिते सुजानचरित्रे दिल्ली-विध्वंसनो
नाम षष्ठमो जंग संपूर्णम् ॥

---

* पाठांतर—सूरजहू कौं संग लै ब्रज कौं चले जरूर।

# सप्तम जंग

## कवित्त

रारे द्रोण भीषम करारे जल जयद्द्रथ
गांधारी-तनय इदीवर सोभवारे है।
सल्य महाग्राह कृप प्रबल प्रवाह जहाँ
मिति के निबाह करन ही के कर भारे हैं।
घोर मच्छ कच्छ से बिकर्न असुथामा बीर
दुरजोधन भार ज्यौं भ्रम र से निहारे हैं।
सिंधु सो भयान सेन सरिता अमान तहाँ
करि या प्रमान हरि पंडव उतारे हैं ॥ १ ॥

## दोहा

ठारह सै सुद सोतरा हिम रितु महिना गोप।
दच्छिन-दल दिल्ली-दलनु कीनौ ब्रज पै कोप ॥ २ ॥
करि मिलाप बदनेस सौं कूरम सिंह सुजान।
देखि भर्थपुर देव कौ बहुर्यौ कियौ पयान ॥ ३ ॥

## करो छंद

चलत कही मधुकर भूपाल। दखिनी आवतु तुम पै हाल ॥
जो तुम करौ आपनी संध। तौ हम ताकौ करैं प्रबंध ॥
तब सुजान मधुकर सौं कही। हमें आपु करिहौ सो सही ॥
जो कछु पहल मामलति भई। सो महराज सबै सुनि लई ॥
वा माफिक वे मानैं आज। नाहीं तौ नाहीं महराज ॥
ये बातैं कूरम धरिकान। कीनौ अपने देस पयान ॥
पुनि सुजान बदनेस-कुमार। लग्यौ करन निज चित्त बिचार ॥

है वह चारि उपाइ उदंड। साम दान भेदहु पुनि दंड॥
तब ही रूपराम बुलवाइ। सोहू सब बिधि पूरन आइ॥
रूपराम सौं कही सुजान। दखिनिनु पास करो तुम जान॥
तिनके दल कौ सबै सुमारु। और जु उनके मन कौ सारु॥
वे जो कहैं सु धरिकैं कान। कीजौ ज्वाब महा बलवान॥
समाचार ये सबै सिताब। भेजतु रहो ज्वाब पै ज्वाब॥
ताकौं सबै भाँति समुझाइ। दीनौ दखिनिनु पास पठाइ॥४॥

## मनोरमा छंद

बीते कछू द्यौसही में जहाँ। आधो निसा डाँक आयौ तहाँ॥
दीने समाचार ताही घरी। मार्यौ दगा दै बलू चौधरी॥
सूजा कही कौन की रीति सौं। बोल्यौ तबै डाँक ता नीति सौं॥
भूपै लियें आप आए इहाँ। दिल्ली गयौ गाजदीखाँ तहाँ॥
नीरैं सुनै दक्खिनी आइयौ। सो गाजदी मोद सौं छाइयौ॥
भेज्यौ अतालीक ताही घरी। मार्यौ दगा दै बलू चौधरी॥
खाली करौ दुग्ग कौ द्वार सैं। मिलना मुझै बेगि मल्लार सैं॥५॥

## दुपई

सुनि महमूद आखबत ऐसे बल्लमगढ़ पै आयौ।
भेजि वकील चौधरी सौं उन बहु इखलास जतायौ॥ ६॥
मुझै गाजदीखाँ वजीर ने तेरे पास पठायौ।
चारिक बात करैं हम तुमसैं सबै काम बनि आयौ॥ ७॥
अगर करैं हम दगा तुम्हीं से तसबी खुदा बतायौ।
इस्सैं कसम और नहिं कोई भाई सै क्या दायौ॥ ८॥
यह सुनकैं गढ़ के भीतर तैं बलू बाहिर आयौ।
बेटा दोइ संग लै कढ़ियौ कालन औसर पायौ॥ ९॥
आवतु देखि चौधरी कौं महमूद आखबत तब्बै।
ठहरायौ मिलनौ खिलवति को गरकर राखे गब्बै॥ १०॥

तहाँ मिलाप चौधरी सौं करि कहि कहि मीठी बातैं।
पुनि सारति करि दई तिन्हैं जे दबकि रहे लगि घातैं॥ ११॥
तबही ताकि एक ने वाके पेसकबज गहि घूँसी।
दूजैं धाइ दूसरी घातै ग्रीव तेग सौं धूँसी॥ १२॥
दोऊ पूत सहित बल्लू के सीस काटि उठि धायौ।
तातैं घरी चारि पाछैं हौं चल्यौ आप पै आयौ॥ १३॥

## दोहा

दगा करै तासौं दगा निश्चै जानौ होइ।
जैसी गति वानै करी लहिहै तैसी सोइ॥ १४॥

## सोरठा

सो सुनि सिंह सुजान तुरत बोलि बलिराम कौं।
कह्यौ दीघ कौं जान लाला सौं जाहर करौ॥ १५॥
कहनी यहै सिताब सबै बरूथनि साजिकैं।
बरसाने कौं जाव मद्दति आगैं भेजियौ॥ १६॥
ह्वै सवार बलिराम आयौ दीरघ नगर कौं।
जो कछु करनो काम कह्यौ जवाहरसिंह सौं॥ १७॥

## सैनिका छंद

सो सुजान नंद सोचि वा घरी। आइयौ ब्रजेस पास ता घरी॥
सीख माँगि श्रीब्रजेस सौं तबै। दै निसान कूच कै चमू सबै॥१८॥

## दुपई छंद

तबै जवाहरसिंह कूच करि दै देरा बरसानैं।
चहूँ ओर की खबर लैन कौं तहाँ सैन सरसानैं॥ १९॥
तौ लौं सब बल्लू के बेटा सहित कुटुंबहिं आए।
तब महमूद आखबत हू नै आगैं पाउँ बढ़ाए॥ २०॥
इत मैं रूपराम हू पहुँच्यौ जहाँ दक्खिनी आवत।
रघ्घू औ आपा मलार मिलि रूपराम सुख पावत॥ २१॥

चलत चलत दखिनी बढि आए जैपुर डेरा दीने।
प्रथम भूप कूरम सौं करे ज्वाब स्वाल ए कीने ॥ २२ ॥
बाकी सहित दाम सब दीजै ब्रज कौ हरवल हूजै।
माधव कही कह्यौ सो करिहैं अब लोजै जो पूजै ॥ २३ ॥
जौ लौं साहिपुरा बूँदी कौ रूपनगर औ कोटा।
ए नृप रुजू भए दखिनी सौं नौकोठी कौ जोटा ॥ २४ ॥
राना कौ दीवान आइयौ ल्याँई सो पुर वारौ।
सब मिलि सामिल भए मलारै काहू रह्यौ न गारो ॥ २५ ॥
द्वादस लाख रुपैया दैकैं पुनि माधव नृप भाषी।
हरगोविंद होइ तुम सामिल जौ ब्रज कौ अभिलाषी ॥ २६ ॥
ये सब समाचार जैपुर तैं माधव औ दखिनी के।
रूपराम लिखियौ ब्रज-भूपै साठ हजार अनी के ॥ २७ ॥
और लिख्यौ सबकैं ए दखिनी तुम सौं जंगहि जोरैं।
आपुन सावधान ह्वै रहियौ देस ढुंढ की ओरैं ॥ २८ ॥

दोहा

जैपुर सौं फरचौ कह्यौ आपा औ मल्लार।
रूपराम बुलवाइकैं पूछ्यौ कहा बिचार ॥ २९ ॥

सोरठा

पुनि बोल्यो मल्लार दो करोर ह्याँ देउगे ॥
मै अब होत सवार रूपराम तुव देस पै ॥ ३० ॥

दोहा

अबकैं सूरजमल्ल नै लूटी दिल्ली खूब ॥
दो करोर क्या बहुत है लिखि भेजै किनि तूब ॥ ३१ ॥

सुगीतिका

तब दै असीस दुहून कौं द्विज राम परम प्रवीन।
सुनिए जुवाब मलार के तब बोलियो मृदु पीन ॥

बड़ भाग हैं तुम सैन के, ब्रज देखिहैं भरि नैन।
कछु लैन की बिधि ना बने तहँ देन को कछु भै न॥
यह आपके मन होइगी कछु दैन आइ न रूप।
हिय संक मानि पठाइयै हम पास श्री ब्रजभूप॥
इखलास राखनु आपसौं निज प्रोहितै पहिचान।
सुभ जानि दोउन कौं करैं हम ज्वाव स्वाल प्रमान॥
तुम सिंह श्री बदनेस सौं किय लैन दोइ करोर।
यह बात मोहि न सूझही वह देइगौ अनरौर॥
सत कोटि हैं उहिं भौन मैं गज बाजि ओर न छोर।
दस साहि के दल लूटिकैं दरबार ओढ़तु षोर*॥
यह तासु की निज टेउ जानत, सो बखानत राउ।
दबि दामहूँ नहिं देइगो उठि खर्च कोटिक जाउ॥
तुम तासु पै जुग कोटि चाहत मोहि है सु अँदेस।
मिलिहैं जु सारहि सोर सौं अब कैं मिटै न कलेस॥३२॥

## दोहा

उत इत के परताप तैं चारि लाख मो पास।
आतु लेउ सब कुसल सौं मोहि दुहुन की आस॥३३॥

## हरिपद

रूपराम के बचन कान धरि, यह बोल्यौ मल्लार।
खंडी लै प्रोहित के घर तैं बाढ़ै कुजस अपार॥३४॥

## छंद ललित पद

कोटि किलौ खाई घन भाई, जल बल जोर सु कहियै।
सो कितेक ब्रजराज-बदन कैं, सौ सब साँची लहियै॥ ३५॥

---

* पाठांतर—दस पातसाही लूटि के दरबार ओढ़त खोर।

## छंद भुजंगी

तबै रूप नै बात साँची उचारी । ब्रजाधीस के ठाठ की बात भारी ॥
असी चारि के कोस कौ कोट बाँकौ । किलेदार है साँवरौ चारि घाँकौ ॥
इतै बान गङ्गा उतै भानु-जाई । बिधाता बनाई चहूँ ओर खाई ॥
हवेली किलेदार की कोस नौ की । कलिंदी सुनौरैं प्रलै के न भौ की ॥
किले बीच पायौ तहाँ जन्म स्यामैं । किलेदार ता ठौर पायौ सुनामैं ॥
यहाँ तीनिही कोस पै बुर्ज ऐसौ । घने दुष्ट मारे तहीं नाम तैसौ ॥
अरिष्टा बकी औ तृनावर्त मोहा । तबै नाम ताकौ महाबन्न सोहा ॥
तहाँ गोकुलै जानियौं आव चित्तै । सुचित्तै सुचित्तै दुचित्तै दुचित्तै ॥
हवेली तरै तीनही कोस नीकौ । रच्यौ साँवरे ने वहै बाग जी कौ ॥
तहाँ तासुने दुष्ट ठोके घने हैं । अघा से बघा से बिधाता मने हैं ॥
हरे बाँस केसी नथ्यो काल काली । पियौ दाव कौ गोपिका प्रीति पाली ॥
थपी राखिबै ताहि वृंदा सुदेवी । धर्‍यौ नाम वृंदाबनं सिद्धि सेवी ॥
दिसा नीर की जो जनैं द्वै उरैहैं । गिराधीस ताकौं सुराहू भुरैहैं ॥
तहाँ मीत राखे अमीतै बिदार्‍यौ । वृषा दैत्य औ संखचूड़ै पछार्‍यौ ॥
हत्यौ धेनुका इंद्र कौ गर्व गार्‍यौ । जथा जोग्य सोतैं नहीं कान धार्‍यौ ३६

## छंद दाव

बरस सात के स्याम सिरोमनि खेलत घर घर डोलैं ।
माथैं मुकट पीतपट कटि मैं, पाइ पैंजनी बोलैं ॥
लोचन नील कमल से सोहैं भौंहैं अलि-अवली सी ।
जो ब्रजबधू निहारति उर मैं, सो रहि जात छली सी ॥३७॥
कानन लसत झूमका प्रभु के नाक बुलाक सुमोती ।
मनौ सुधानिधि बदन जान प्रभु रच्छक राख्यौ गोती ॥
चारु कपोल गोल गुदकारे अरु सुंदर सी ठोड़ी ।
परति धाइ कैं होड़ाहोड़ी सबकी डीठि निगोड़ी ॥ ३८ ॥

गुंजमाल बनमाल लाल के उर के बीच बिराजै।
मनौ स्याम घन मध्य समूरो सुरपति चाप सुराजै॥
सहित नाल कर-कंज मनोहर पहरैं रतन करूला।
मानौ रतनसान जुग कंदर उभै कोकनद फूला॥ ३६॥
पीपर पान समान उदर बर कोमल नवनीतहु तैं।
नाभि गँभीर तरंगन त्रिबली में बूड़तु अवगहुतैं॥
झनक मनक किंकिनि कटि गुंजति जब कितहू कौं दौरैं।
माँगत ग्वाल खेल के दावहि भजत नंद की पौरैं॥ ४०॥
छोटी सी कछुनी कौं काछैं कबहुँक बाछैं पाछैं।
निकसत नंद बबा के संगहि ग्वालनु देखत आछैं॥
तरवा अरुन स्याम सुंदर के जे मुनि मन के बासी।
भक्तन कौं बिसराम यही है उर राखति कमला सी॥ ४१॥
या बिधि सौं ब्रज माहिं रमत हैं नँद-नंदन सु कहावैं।
पौरि पौरि फिर ब्रज-बनितन की सबके हिये सिरावैं॥
एक दिना सब ब्रजबासिनु के पूजा इंद्र उछाही।
चौरासी कोसहिं ब्रजमंडल घर घर चढ़ी कराही॥ ४२॥
कृष्ण एक ग्वालिन कूँ पूछी तुमरें आजु कहा है।
तब उन कही हमारें लाला पूजा इंद्र महा है॥
यह सुनि कही गुपाललाल वह इंद्र सु कौन कहावै।
गोपी कही जाउ मनमोहन पूछौ अपने बावै॥ ४३॥
कछु रिस-रंजित नैन किए हरि नंदराय ढिग आए।
बाबा कहौ कौन के हित ये तुम पकवान कराए॥
तबहि नंदजू कही स्याम सौं हमरें सुरपति-पूजा।
गोधन गिरि पै वाहि चरचिहैं यह दैहैं मुख-पूजा॥ ४४॥
तब मघवा राजी है ब्रज मैं बरसैगो जल नीकैं।
बरस दिना कौं होइ सुचीते हम नृप ब्रज अवनी कैं॥

ऐसैं कही नंद ने जबही मोहन महा रिसाने।
को है इंद्र कौन की पूजा हम तौ वाहि न जानें॥ ४५॥
तुम सब लेउ बोलि ब्रजबासी मैं गिरि पै चलि बैठौं।
करिहौं गिरि गो द्विज की पूजा तौ तुम्हरे घर पैठौं॥
बहुत भाँति समझायौ सुत कौं पै एकौ नहिं मानी।
डरे नंद इकलौता बेटा कही कृष्ण की ठानी॥ ४६॥
चलौ पुत्र गिरि गोबर्धन पै आवैं सब ब्रजबासी।
करिहैं गिरि गो द्विज की पूजा क्यौं सुत होत उदासी॥
यौं कहि नंद स्याम सँग लीने गोबरधन पै आए।
पहुँच्यौ सुन्यौ नंद ब्रजपति कौं सब ब्रजबासी धाए॥ ४७॥
ठौर ठौर ब्रजबासिन गावत आवति लै पकवानैं।
बाजत ढोल मृदंग झाँझ डफ मंगल गीत बखानैं॥
कृष्ण जाइ बैठे गिरि ऊपर नंद-संग ब्रजबासी।
पूजन लगे मेरु-सँग स्यामैं गंध फूल सुखरासी॥ ४८॥
तब मोहनजू सिगरे ब्रज को घृत पकु भोग लगायौ।
आनि और यौं ब्रजरानी कौं अपनौ बचन सुनायौ॥
सब ब्रजबासी रहे चकित ह्वै बड़ो अचम्भौ मान्यौ।
तब वा मेरु सिषिर कौ नाम सु आनि और यह गान्यौ॥ ४९॥
यह सुरपति के दूत देखिकैं खबर इंन्द्र कौं कीनी॥
बलि जो देत तुम्हैं ब्रजबासी कृष्ण नंद सुत लीनी॥
सो सुनि इंद्र कही दूतन सौं कृष्ण कौन कौ छैया।
कैसो रूप वहिक्रम कैसो कौन बीर को भैया॥ ५०॥
तब उन दूत कही पुरहूतैं बलि कौ बीर सुनैया।
बरस सात कौ नरम गात कौ नंद गोप कौं छैया॥
यह सुनि इंद्र कही दूतन सौं ब्रज सब आजु बहाऊँ।
कृष्ण नंद बलिराम बोरिहौं तौ मैं इंद्र कहाऊँ॥ ५१॥

लए छानबै कोटि मेघ गए चढ़ि ऐरावति धायौ।
चौरासी कोसहि ब्रजमंडल घोर रूप दरसायौ॥
तड़ित लई तरवार ढाल घन ब्रज लोपनु चित धाय्यौ।
घोर सद्द चहुँ ओर पवन सौं इद्र काल किलकाय्यौ॥ ५२॥
मूसलधार अखंडित मंडित महा प्रलै जलु लायौ।
कड़कै तडित पवन झकझोरन कोरन वृच्छ ढहायौ॥
हाइ हाइ ब्रजबाल पुकारैं कहूँ बचाउ न पायौ।
गोपी गोप ग्वाल बालनु मिलि तब गुपाल-गुन गायौ॥ ५३॥
करुना लखि करुनानिधान नै मन यह मतौ उपायो।
बाम पानि की छगुनी ऊपर हँसिकै गिरि जु उठायौ॥
ताके तरैं आप मनमोहन बसो शब्द सुनायौ।
गाय गुवाल और ब्रज जीवन अपने पास बुलायौ॥ ५४॥
सात दिना दिन राति मूढमति इंद्र सलिल बरसायौ।
गिरिधारी गिरि राखि फूँक पर ब्रज कौ आप बचायौ॥
तब मघवा मन मारि हारिकै बडे सोच सौं छायौ।
भयौ कृष्ण अवतार भूमि पै मेरौ गर्ब गरायौ॥ ५५॥
कंपति जिय संकित सो सुरपति उठि चरननहीं धायौ।
सुरद्रुम कामधेनु ऐरावति चरन भेट लै आयौ॥
नारि नवाइ दुहूँ कर जोरै कृष्ण-चरन सिर नायौ।
दीनदयाल दीन लखि इंद्रहिं सुरपुर फेरि पठायौ॥ ५६॥
रूपराम आपा मलार कौं गिरिवर समौ सुनायौ।
झूठ नही यह साखि भागवत आप व्यास मुनि गायौ॥
ता कुल मैं बदनेस भूप* है तुम सुरपति-पद पायौ।
कलि की मद्धि स्यामजू ने फिर वही बनाउ बनायौ॥ ५७॥

---

* पाठांतर—नंद।

## दोहा

दच्छिन दिस गिरि-पूछ है उत्तर दिस मुख नैन ।
तहाँ सरोवर द्वै सरस राधाकृष्ण सुऐन ॥ ५८ ॥

## छंद काव्य ।

तहँ ते बाइब ओर डेढ़ जोजन के अंतर ।
रच्यौ बुर्ज सो स्याम ग्राम जो नंद निरंतर ॥
जोजन मंडल एक नद लै बसै स्यामघन ।
समौ कस को देखि रमैं लै ग्वाल बाल गन ॥
जहाँ कियौ जलपान पानि सो आपु कृष्ण वर ।
सो वह अबहू बन्यौ नाम है पानि सरोवर ॥
तातैं जोजन एक बुर्ज कामाँ सो कहियतु ।
वहै कोट कौ कौन वहाँ भोजन थलु लहियतु ॥
उरे कोस है च्यारि बुर्ज बरसानौ सुंदर ।
जहँ की गली बुहारि अजौं बिधि ईस पुरन्दर ॥
तहाँ स्याम की जोति आप राधा पटरानी ।
बसै तीनहू लोक वहै जाकी रजधानी ॥
बने दानथल मान खोरि साँकरी भनोषरि
ता प्रभाव कौ लहै सिधु सातौं सम पोखरि ॥
ह्वाँ गहवर कौं देखि राउ गह्वरही आवै ।
ऐसौ जग मैं कौन देखि सुनि सीस न नावै* ॥
दुहुँन बीच संकेत राधिका नंदकुँवर कौ ।
सो छिय को कहि सकै भेदु पिय-प्यारी घर कौ ॥
तासौं जोजन एक परम मंदिर जग जान्यौ ।
नंद और वृषभान दुहुनि के हित सरसान्यौ ॥

---

* पाठांतर—ऐसों को जग माहि देखि जु न सीस नवावै ।

अलख नंदसर तहाँ अलख अमरेस दगन कौं।
मुनि नर खग पुनि उरग दरसु नहिं भयौ मृगनु कौं ॥५८॥

## छंद भुजंगी

इतै की सफीलै किए बुर्ज आठौं। तिन्हों के सुनै राउजी नाम पाठौं ॥
किए कोस छः सात के अंतरा सौं। उभै जोजनों के बने गिर्द तासौं ॥
प्रथम सिसिनी कौंचहूँ चक्क जानैं। लह्यौ सिसनै वार नावैं अमानैं ॥
अजौं एकही कूखि के लाख भाई। तहाँ भूप बदनेस पाई बड़ाई ॥
वहै सिसिनी साहि ताकौं न पामैं। किते मीर उमराउ आए जु कामैं ॥
भखैं सातहू पातसाहौं लसी है। तहाँ लच्छमी देह धारैं बसी है ॥
तहाँ तैं उभै जोजनौ बीच दै कैं। रच्यौ बैरिनामैं सुबैरी बितै कैं ॥
बसै भूप के पूत कौ पूत बकौ। प्रतापी प्रतापा तनै सो निसंकौ ॥
प्रतापा कहौ कौन तौ मैं बताऊँ : लख्यौ दुग्ग भूपाल में जो अगाऊँ ॥
तहाँ राउ बाजी लखे हाथ वाके। फिर्‌यौ आइक बैरिही तीर ताके ॥
थप्यौ तासुतैं जोजनैं तीन पूरौ। धर्‌यौ नाम ताकौ भरथवासु रूरौ ॥
घनौही घनौ तासु के तीर छायौ। तहाँ चित्तहू नै नहीं गौन पायौ ॥
जटाजूट कौ सो जटाजूट फैल्यौ। फिरै नीर मंदाकिनो रूप रैल्यौ ॥
गिराधीस-धारी तहाँ थान कीनौ। रहै सिंह सूजा जहाँ मोद भीनौ ॥
तटै तासु के तीनही कोस गाढ़ौ। सुतौ सोगरै मोगरै बैर बाढ़ौ ॥
अवारै लखौ जो अपारै जुरारौ। उहाँ स्याम कौ चारिहू घाँ पसारौ ॥
निहारौ तहीं चार कोसैं अमानी। सही सौंक कासौं ठहै खून खानी ॥
बड़े डौर सों एक पै घौर सोहै। लख्यौ भूप बिसुनेस गो मानि लोहै॥
तिहीं खेत मैं बीर खेतै निहार्‌यौ। रच्यौ* लच्छमी घेर कुंभेर राख्यौ ॥
लसै भूप जामैं सुतौ दीघ नामैं। सुराधीस के धाम की सोभ तामैं ॥
भरे चारिहू ओर हैं नीर तामैं। अटव्वी सुश्रृंगी घरै एक धामैं ॥

---

* पाठांतर—लख्यो।

तहाँ कूप का सार बापी जु सूझै। सबै मानसर की प्रभा कौं न बूझै ॥
जहाँ आठहूँ भाँति के कंज फूलैं। मनौ नीर आकास तारे अडूलैं ॥
तहाँ हंस हंसी चकी चक्क डोलैं। किते अंड-जाती करै हैं कलोलैं ॥
तटैं बाग हैं राग के भौन मानौ। फुलैं फूल दैवी जिन्हैं जी सुहानौ ॥
बसैं चारिहू बर्न कर्माधिकारी। मनौ देव गंधर्व ही देहधारी ॥
तिन्हौं के धरा धाम धौरे हजारौं। रथै पालकी हैं करी बाजि द्वारौं ॥
बनी गौख वे जौख की मौख सौहैं। पताकानु केकी पिकी ही अरौहैं ॥
दरीची तिवारी दुवारी अटारी। लगी जाल जारी सरद मेघ भारी ॥
अलंकार धारी जरी तार सारी। फिरैं चंचला सी तहाँ गेह-वारी ॥
रहैं पूतना तीन सौं पूरि होई। बिना बीस बेटा नहीं जाट कोई ॥
फिरैं बालका काम के बालका से। सबै भूमि के तालका पालका से ॥
बड़ी हाट बाजार ब्यौहारवारे। धनाधीस के धाम के से घरारे ॥
जहाँ देखियै चोर तौ नैन कोरैं। ठगैं रूप जानौ परै डीठि भोरैं ॥
सदा बैल के कंध ही पै जुआ है। पिया प्रेम प्याला मदी सो हुआ है॥
जहाँ भूँट कौ भोजने अंत देखौ। महा मोह तौ साँवरे में सुपेखो ॥
बिना आपके नाँव कोधी न कोई। सदा जंग की जीति कौ लोभ होई ॥
इही भाँति सौं सब्बही कोट साजा। बजैं दुंदुभी बुर्ज बुर्जौ दराजा ॥
सबै अन्न धन्नौ दही दूध ताजा। जहाँ सत्रु के लोह कौं तोप बाजा ॥
कँगूरी कँगूरा भुसंडी समाजा। लसैं बीस बेटा बड़ौ सूर गाजा ॥
लखैं ताहि बैरी धरा को न भाजा। बली सूर के पूत पाँचौ अवाजा ॥
जवाहर बड़ौ साहिबी कौ समाजा। वही स्याम जाके करै कोर काजा ॥
सुराजै तहाँ सिंह बदनेस राजा। सुराधीस के धाम की सोभ साजा॥६०॥

### छप्पय

इंद्र इटायैं सहर अग्नि गोपाचल दुग्गहि।
दच्छिन पुरी कल्यान नैरितहिं नीमरान महि ॥

बरुन हथ्याने सीम मरुत दिस गढ़ मुकतेसुर।
उत्तर दिग गढ़ राम ईस सहपऊ परैं धर॥
इतनीक भूमि बसुदेव-सुत बदनसिंह भूपहिं दई।
तुरकान तेज परिहरि सकल आन पीतपट की भई॥ ६१॥

दोहा

तुम तारे नृप जे धरनि ते पारे ब्रजराज।
दस हजार भट आपसौं चाहत समर समाज॥ ६२॥
चारि लाख बदनेस कैं हैदल पैदल त्यार।
किलेदार गिरवर-धरन ताकी सैन अपार॥ ६३॥
कोट किलौ परिषा सुभट भाई श्रीय समाज।
मंत्री सिंह सुजान सुत ब्रजपति को जुवराज॥ ६४॥
ताहि तुम्हैं पर भूमि मैं बजी तेग कै वार।
कहा कहौं सो आपुही जानत राउ मलार॥ ६५॥

हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं॥
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
ब्रज-बरन-रूप मलारसौं किय प्रथम अंक गनाइकैं॥ ६६॥

इति प्रथम अंक।

---

दोहा

रूपराम के बचन सुनि बोल्यो राउ मलार।
सत्ति सत्ति तैंने कह्यौ ब्रजपति कौ ब्यौहार॥ १॥
जो धरनी बरनी जु तैं रूपराम सविलास।
ताहि देखिहैं नैन सौं सब दक्खिन तो पास॥ २॥

कछू उमाह्यौ हो हमैं कछू बुलाए साहि।
बड़गूजर को मारिबौ सुनि आए भुव गाहि॥ ३॥

कवित्त

गुज्ज भुज्ज द्रविड़ तिलंग बंग गौड़ गढ़ा
मंडला उड़ीसा लै बघेल औ बुंदेलखंड।
झारखंड मगध मलार गंगापार डाँग
ऊमट उचाट मालुया मैं न राख्यौ चंड।
हाड़ौती ढुँढाहर भदावरि दिलीपति के
सहित उजीर उमराई राय पाए* दंड।
सेवा संभा साऊ रामराजा के जलेबदार
एक ब्रज देश बदनेस ही रह्यौ अदंड॥ ४॥

संयुता छंद

पुनि यौं कह्यौ सु मलार नै। थल वै सबै सु निहारनै॥
लखि रूपराम विवेक कैं। बद जानि तू अब नेक कैं॥
यह मैं कहौं निज टेक कैं। ब्रज-भूमि दक्खिन एक कैं॥
तब दो करोरहि लेहिंगे। ब्रजराज दाम न देहिंगे॥
पटपीत की उन ओट है। इत आपु संकर जोट है॥
दुहुँ की धुजा फहराँइगी। रन दुंदुभी घहराँइगी॥
इतके उतै ठहराहिंगी। ठहराइकै भहराहिंगी॥
तब मामलति ह्वै जाइगी। जुरि जंग कै ठहराइगी॥
यह भाखि राउ मलार ने। पुनि बोलि आप कुँवार ने॥
ढिग देखि खंडू सौं कही। अब कूचही करनौ सही॥
सजि आपुनी सब बाहिनी। धरमेव की अवगाहिनी॥
मिलि जाहि सो करि आपनो। लहि दाम संगहि थापनौ॥

---

* पाठांतर—लीनौ।

अरु जो गहै हथियार कौं। पठवाइयौ जम-द्वार कौं ॥
दर कूच मैं बन खूँदिकैं। पुनि साधकी धरि रूँधिकैं ॥
मथुरा थकी करि आपनी। करि हाथ थापउ थापनी ॥
बहु द्यौस कौ नहिं काम है। ब्रजभूमि फेरि मुकाम है ॥
धरि सीस आयुस बाप कौं। दल साजि खंडू आप कौं ॥
असवार चार हजार सौं। किय कूच संग बहार सौं ॥
अति दीह डंकनु देन भौ। भुव मेव की पथ लेतु भौ ॥५॥

### छंद विद्रुनमाल

तब खंडू मेवात खूँदिकै चल्यौ साधिकौं आयो।
सो सुनि कै महमूद आखबत आगें मिलिबे धायो ॥६॥
खंडू सौं महमूद आखबत मिलिकै यह ठहरायो।
आपुन करौ कूच होड़िल पै मैं मेवन पर आयो ॥७॥

### छंद चपला

आवै है खंडू मेवातैं। रूपा ने भेजी ये बातैं ॥
मल्लारै आयो ही जानौ। ढीलै ना कीजौ जो ठानौ ॥८॥

### छंद सालिनी

खंडू धायौ भूमि मेवात आयौ। आयौ आयौ चारिहू ओर छायौ ॥
मानौ दावाग्नि डोलै रिसायौ। मार्यौ वार्यौ सामुहैं जाहि पायौ ॥
काहू गव्वै जाइ पव्वै बसायौ। दैकैं दामैं धाम काहू बचायौ ॥
लूट्यौ कूट्यौ मेव देसै भगायौ। ताके आगे दुग्गऊ दार खायौ ॥९॥

### दोहा

आयौ राउ मलार-सुत सुनि सुजान कौ नंद ॥
जुद्ध-काज उद्धत भयौ अंग अग आनंद ॥१०॥
यह सुनिकैं सूरज बली उतमैं राउ मलार ॥
दोउन कै चिंता बढ़ी जाने पूत जुझार ॥११॥

### छप्पय

दोऊ उमरि अराक दुहुन उनमाद रारि हित।
दोऊ जानत जीति हारि जानत न दुहूँ चित ॥
नहीं जीति या जीति हारि सौं होत हारिही।
दोऊ निजु निजु सुतनु लिख्यौ जलदी बिचारिही ॥
खंडू न जंग मो बिन रचहु सपथ लिखी मल्लार ने।
ह्याँ निसाँ करतु ब्रजराज की रूपराम इहि कारनै॥ १२ ॥

### कुंडलिया

त्यौंही सिंह जवाहरै लिखियौ सिंह सुजान।
सुत तुमकौं मो सीस की करनी सौंह प्रमान ॥
करनी सौंह प्रमान आन दादा की किज्जिय।
चारिहुगा ततबीर भीर मोही सिर दिज्जिय ॥
दिज्जै खंडू जान आनि मरिहै यह यौंहीं।
दीपक रीति पतंग हमैं हतनै यह त्यौंहीं ॥१३॥

### दोहा

तात सौंह सम मंत्र बस अंग सुजंग उमंग।
फिर्‍यौ जवाहरसिंह ज्यौं पंचानन रिस रंग ॥१४॥

### पवंगा

तबै जवाहर सिंह दीघ मैं आइयौ।
उततैं सिंह सुजान ब्रजेस बुलाइयौ ॥
ज्यौं असुरन के हतन जतन हित देवता।
मतौ करै जगदीस ईस बिधि सेवता ॥

### कवित्त

दीघ में दीरघ सभा कै चारि डूँगनु की
बैठ्यौ ब्रजराज बदनेस महाराज है।

पूरन पुरुष परिपूरन बिराजै साज
सूरन कौ मंडल अखंडित दराज है।
सनमुख सूरज जवाहर लसत दोऊ
मानौ गुन तीन देहधारी कौ समाज है।
कैधौं सिवलोचन निगम दुख-मोचन कौं
कैधौं तीन देवता बिचारैं सुरकाज है ॥१६॥

## छंद मुक्तादाम

सभा मधि यौं उचर्‌यौ ब्रजराज। मनौ मृगराज दराज गराज ॥
सुनौ तुम चारिहू डूँग उदंड। सबै बुधिवंत सबै बलवंड ॥
कियौ इत आवनु राउ मलार। कहौ कछु आपन चित्त बिचार ॥
कहौ कबहूँ तुमही कहि देउ। सुनौ मत मो चित कौ सुन लेउ ॥
दियौ हरिदेव हमैं यह राज। नहीं हिय हौंस रही ब्रज आज ॥
लरे उमरावन सौं बहु बार। किए पतिसाहिन के घर छार ॥
इते पर दुग्ग रचे हम चार। यही दिन चित्त बिचित्र बिचार ॥
गयौ लरिकापनु ज्वानिय जोर। जुरापन जंग करौं घनघोर ॥
मिलैं तिनसौं मोहि आवति लाज। बिना रन और रचौं न इलाज ॥
ब्रजेस बिचार सुन्यौ सब कान। कर्‌यौ वह चारिहू डूँग प्रमान ॥१७॥

## दोहा

तब सुजान बदनेस सौं अरज करी कर जोरि।
महाराज मेरी सुनौ बिनती सब हित होरि ॥१८॥
ज्यौं चूरामनि के मिलैं पहिले जाइ अगार*।
त्यौं काहू कैं जाइबो सो क्यौं करै अबार ॥१९॥

## सोरठा

सुनत कही बदनेस भख्यौ देस भैयानु सौं।
यह तो बड़ौ अँदेस को खोटौ को बेस है ॥२०॥

---

* पाठांतर—आगे जाय मलार।

### दोहा

यह आवन मल्लार कौ बेस कसोटी] मान।
कंचन से भैयानु की परख परैगी जान ॥२१॥
ज्यौं सब आप दक्खिनी त्यौं ता संगी जानि।
जो राखनि हरिदेव है तौ तिनुकी भै भानि ॥२२॥
यह बानी बदनेस की सुनत सबै सरदार।
सत्य सत्य सब कहि उठे महाराज निरधार ॥२३॥

### सोरठा

ताही सभा मँझार बोल्यौ भोपति भाट बर।
महाराज निरधार होनहार बानी सुनौ ॥२४॥

### कवित्त

हारे देखि हाड़ा मन मारे कमधुज बंस
कूरम पसारे पाइ सुनत नगारे के।
केते पुर जारे केते नृपति सँघारे तेई
जोरि दल भारे ब्रजभूमि पै हँकारे के।
रारे मधुसूदन सबारे बदनेस प्यारे
ब्रज-रखवारे निजु बंस अवधारे के।
होत ललकारे सूर सूरज प्रताप भारे
तारे से छिपैंगे सब सुभट सितारे के ॥ २५ ॥

### दुरद छंद

गजा चहुँवान मंत्री । सिरी बदनेस जंत्री ॥
कह्यौ करि जोरि वानै । यहै ता बेर तानै ॥
भली महराज ह्वैहै । बिजै हरिदेव दैहै ॥
करौ ततबीर सोई । नहीं अब ढील होई ॥
अबै चित सों बिचारौ । भरैं ज्यौं दुग्ग चारौ ॥

तहाँ सरदार राखौ। सिरीमुख तैं जु भाखौ ॥
रहै को आप पासै। कहौ चित माहिं भासै ॥२६॥

## मधुभार छंद

गर्जसिंह बैन सुनिकै सचैन। बदनेस तब्ब कहियौ सुजब्ब ॥२७॥

## छंद ताटंक

रहौ चित और ना भासै। जवाहरसिंह मो पासै ॥
रहै गर्जसिंह तू ह्याँई। करैंगे जंग ज्यौं चाही ॥
सुजानै सीख मैं दैयै। भरथपुर बैर कौं जैयै ॥
बहादुरसिंह करि गाढ़ौ। भयौ कुंभेर हो ठाढ़ौ ॥
जहाँ सरदार जो जानौं। तहाँई कौ तहाँ ठानौं ॥
कहौ तो ताहि जो यानौ। सबै बिधि तू महा स्यानौ ॥
पिता की सीख की बानी। सुनै सूजा सबै मानी ॥
कही तौ सीख है मोकौं। करौ गढ़ भीतरै थोकौं ॥
कृपा महराज की चाहौं। मलारै खेत मैं ढाहौं ॥
इती कहिकै बली सूजा। पिता के पाइ कौ पूजा ॥
तहाँ सिर नाइकै कढ़्यौ। तुरंगै ता समैं चढ़्यौ ॥
चल्यौ पुरुषार्थ कौं धायौ। महा मन मोद सों छायौ ॥२८॥

## छप्पय

पुनि महराजधिराज चित्त बदनेस बिचारिय।
मोदन मोदी बोलि ताहि निज बचन उचारिय ॥
कहौ किती तनबीर अन्न घृत तेल नोंन की।
सो साँची कहि देउ और बिधि करौ हौन की ॥
यौं सुनत सुगंगाराम सुत चारि लाख नर नित कही।
द्वै बरस लरौ मल्लार सौं खान पान मोपर सही ॥ २६ ॥
सो सुनिकैं ब्रजनाथ ताहि स्याबास सुनायौ।
फेरि दुग्ग दीवान निकट भज्जूहि बुलायौ ॥

कह्यौ बचन यह ताहि तयारी दारू गोला।
हाजर कहि सो मोहि तबै भज्जू यह बोला ॥
महराज लरौ निहचिंत ह्वै बरसन लौं मल्लार सौं।
जो जहाँ चाहियै सो जिनसि पहुँचै एक हुँकार सौं ॥ ३० ॥

दोहा

मोदी औ दीवान की अरज सुनत महराज।
रहौ जवाहर के निकट यहै तुमारौ काज ॥ ३१ ॥

पद्धरी छंद

यौं भाषि उठ्यौ ब्रज भूमि-नाथ। गजसिंह सुमंत्री गहैं हाथ ॥
लै निकट जवाहरसिंह आपु। गढ मोरचान कौ करन थापु ॥
नरवाहन चढ्ढिय श्री ब्रजेस। हयराज जवाहर चढ़िय बेस ॥
गजसिंह तुरंगहि ह्वै सवार। पहुँचे सुप्रथम जैपुर दुवार ॥
तहँ थप्पिय सब,चहुँवान सूर। गजसिंह सुभाइय बल सपूर ॥
पुनि राउर तन सब सहित सैन। सरदार थप्पे ब्रजराज ऐन ॥
लखि द्वार फेरि पाहार ताल। सुलतान और बहु सुभट जाल ॥
तहँ करिय सूर बहु रेल पेल। ब्रजराज-पूत थप्पिय दलेल ॥
पुनि तासु परैं थपि स्यामसिंग। जहँ थानसिंह सुत समर धिंग ॥
गढ़ नैरित दीरघ दिसा घोर। लखि बासु जहाँ टीकैत जोर ॥
वे उही थान थपियौ सपूत। अरु बीरनराइन आपु पूत ॥
पुर अचल द्वार भट भीर भार। थपियौ खुसालसिंह ही कुँवार ॥
पुनि बरई बचा की जुपौर। धरि मेव पुंज लाल जी गौर ॥
तिहँ निकट भवानीसिंह बीर। बड़नेस नंद रक्खिय सुधीर ॥
दरवाजैं कामा बरुन ओर। बल्लू सुत थप्पिय करि सजोर ॥
वे बिसनदास पुनि किसनदास। अरु रामसेवग हूए प्रकास ॥
पुनि बाइब दिस गढ़ बुर्ज गाढ़। तहँ जट्ट मेव गूजर सुबाढ़ ॥

उत्तर दुवार बरसान ओर। गूजर गदाल सुत सहित जोर ॥
द्विज रूपराम सुत तिहीं थान। मनसा अरु सूरत सहित पान ॥
सरदार सबन जे दिस धनेस। थपि जोधसिंह सुत श्री ब्रजेस ॥
गढ़ ईस कौन करि सावधान। बहु सैनपती थापे अमान ॥
गिरिराज द्वार दिसि इंद्र ओर। सुत दयाराम जाहर सजोर ॥
अरु अटलबिहारी सैनपाल। दौलत्तिराम बहु सुभट जाल ॥
सुत रामबलै तिहिं थान राखि। यह बचन ताहि ब्रजराज भाखि ॥
गिरिराज द्वार औ बिहजद्वार। रहि सावधान मो बचन पार ॥
पुनि बहज द्वार थपि जैतसिंग। फौंदा तनूज ठाकुर अरिंग ॥
थपि अग्नि दुग्ग दिसि सुभट जूह। अरु अऊ द्वार सरदार व्यूह ॥
गढ़ दच्छिन दिसि लखि धरनिजुद्ध। देबीजु सिंह सिरमौर उद्ध ॥
लखि दच्छिन दिग कौ थून द्वार। मंझासुत सब्बै बल अपार ॥
गिरि से सुभट्ट तेऊ सुराखि। तहँ कह्यौ सिरी ब्रजराज भाखि ॥
हैं सबै मोरचा तो सहाइ। यह जानि जवाहर चित्त लाइ ॥
तेरौ जु मोरचा यहै आइ। तुम लेउ ताहि आपुन बनाइ ॥
अरु अऊ द्वार मैं रहौ नित्त। तू जानि जवाहर आपु चित्त ॥
अरु रहे बाहरे मरहलानि। तहँ थापि आपने भट अमानि॥३२॥

## दोहा

हुकुम मानि बदनेस को सिंहजवाहर धीर।
सिखा दिसा के मरहला थपि जसवंत सुबीर ॥ ३३ ॥
अऊ द्वार जो मरहला जीवारामहिं थापि।
तृतिय मरहला नौलखा बिजैराम कौं आपि ॥ ३४ ॥
मेदसिंह ताही निकट सारदूल कौ नंद।
थाप्यौ चौथे मरहला सत्रुन करन निकंद ॥ ३५ ॥
रह्यौ मरहला पाँचयौ ताल पहारहिं तीर।
थप्यौ ऊधमा स्याम कौ जंग जुरैं जो बीर ॥ ३६ ॥

## मोइठा छंद

बुर्ज पुर्जों धरी तोप मोटी। एक मोटी तहाँ दोइ छोटी॥
जाल जज्जाल के कोट द्वारौं। बानवारे रुपाए हजारौं॥
भीर कीनी सफीलौं महाही। पैंड़ही पैंड़ पै द्वै सिपाही॥
काँगुरौं काँगुरौं मारु मंडी। रंध्र रंध्रौं उदंडी भुसंडी॥
अद्ध की उद्ध की मारु वंडी। दाहिनैं बाहिनैं चोट चंडी॥
तीर द्वै तीन लौ पार खाई। डौर दै मोरचा भू रखाई॥
दोइ हो दो हजारौ सवारौं। रोपियौ कोट के द्वार द्वारौं॥
वे रहैं बाज की पीठि चड्ढे। सेल समसेर तूनीर मड्ढे॥
और केते दवानै चलैया। पाइ चालाक प्यादे बलैया॥
यौं करी चौकसी चारि घॉ की। सत्रु के लोप कौं भौंह बाँकी॥
मंडिकैं सैन यौं चार डुंडा। सावधानी दिना राति मंडा॥
लाख बंदूक तौ लेख नीकी। त्यार जानौ अनी के बनी की॥
दुग्ग दीघै महाराज साज्यौ। बैठि दीवान मैं फेरि गाज्यौ॥३७॥

## छंद सारवती

जो इहिं दुग्गहिं आनि गहै। सो घृत अन्न बिना न रहै॥
जे नर चाकर हैं हमरे। ते मन बंछित लै बगरे॥
पूरब ओर अपूरब हैं। ते न किहूँ बिधि कष्ट लहैं॥
और सबै थल चौकस सौं। घास बरूदहिं कौ परसौं॥
दीठि परै पर दूतन कौं। पैठन देउ न धूतन कौं॥
यौं कहिकैं ब्रजराज बली। जाइ बिराजिय सैन थली॥
ता छिन सिंह जवाहर नै। चित्त कियौ गढ़ ठाहर ने॥
अस्त भयौ रवि राति परी। ह्वै असवार सुगस्त करी॥
दीरघ दुग्गहिं सोभ भरी। मानहुँ सिंधु सुता नगरी॥३८॥

### मानक्रीड़ा छंद

बदन-सुत चाइकै । भरथपुर जाइ कैं ॥
थपितु सरदार कौं । जतन हित रार कौं ॥३६॥

### छंद स्वागता

भाजि देस इत कौ उत आयौ । ताहि बास बन बीच बसायौ ॥
बीच बीच अटबी चहुँ घाँई । जोरि मोरचन बुर्ज बनाई ॥
रूख रूख तर हैं नर नारी । जोतिवंत मुख चद उजारी ॥
कुंज कुंज तर हाट बिराजै । ज्यौं सुरेस बन-देव-समाजै ॥
नग्र रूप सब कानन कीनौ । आस पास परिखा करि दीनौ ॥
फेरि दुग्ग सरदार सुथापे । थान थान तिनके करि आपे ॥
दै दिवान पद थापि सुचैना । धर्म पूत मनसा रन लैना ॥
है सिताब द्विजराज प्रमानौ । ताहि सौंप सब दुग्ग अमानौ ॥
रोपि तोप अरि लोपन-वारी । बुर्ज बुर्ज करिकैं भर भारी ॥
सूर पूर करियौ दरबाजैं । तूर दुंदुभिन होत अवाजैं ॥
देव देव हरिदेव जहाँ है । सत्रु भीति तिहिं ठौर कहाँ है ॥४०॥

### छंद कड़षा

फेरि नवबास गढ़ पास रच्छा करन थापि सिंभू-तनय रनहिं रूरे ।
पुब्ब पुर द्वारजुत दुब्ब हरि गोविंदहि चारि भैयान-जुत बलहिं सूरे ॥
चारिहू ओर बंदूक धरि घोर दीं काँगुरे काँगुरे भट सुपूरे ।
भरथपुर साजि जहँ अरथपुर राखियौ बिकट बनथान नहिं भै कछू रे॥४१॥

### दोहा

करि चौकस पुर भर्थ की कह्यौ ब्रजेस-कुँवार ।
लरनो मोहि अनेक थल रहनौ ह्याँ निरधार ॥४२॥

### कुंडलिया

लिखि पठयौ गढ़ बैरि कौं कागज सिंह सुजान ।
चौकस करि कुंभेर की मैं आवतु वा थान ॥

मैं आवतु वा थान दुग्ग की होइ तयारी।
करौ मोरचा सबै तोपखानौ सब जारी॥
सब जारी करि देउ सत्रु आवतु है अठयौ।
सिंह बहादुर पास साँडिया कौं लिखि पठयौ॥४३॥

## सवैया

तात-सम न सुजान कौ सासन मानि बहादुर सिंह बली नै।
बोलि सबै सरदारनु कौ गढ़ के चहुँ ओरन मोरचा दीनै॥
पाँचहू द्वार जँजालन के भर तोप जँबूरन चौकस कीनै।
बैरि सजाइ गजाइ सबै बिधि बैरिनु के बध के पनु लीने॥४४॥

## दोहा

अरज लिखी परताप सुत श्रीसुजान कौं फेरि।
हुकुम आपके सौं इहाँ को करि सकै अबेरि॥४५॥
समाचार लहि बैरि कै ब्रजपति कौ जुबराज।
कस्यौ कूँच कुंभेर कौं साजन सुभट समाज॥४६॥

## सोरठा

उततैं राउ मलार जैपुर तैं कूँचहि कियौ।
जैसें सलभ अपार उठै प्रजा संहार कौं॥४७॥

## कवित्त

सहस नगारे सहसनुही निसानवारे
सहस सहस जूथपतिन उमड की।
अवनि अवास देस दुग्गनु भै त्रास देत
बिकट निवासन उदासत घुमंड की।
सूदन सरित शृंगी कुपथ सुपथ कीने
मानौ बारिधारिनै मृजाद बेलि खंड की।
उद्धत उद्दड की मलार आपा चंड की यौं
आई सैन घोर कलिकाल बलवंड की॥४८॥

## छंद करहंची

जयपुर द्वारहिं उठत मलारहिं । असगुन मंडिय प्रबल प्रमंडिय ॥
गद्गद बानिय कढ़त गहानिय । बिनु अहलादहिं सब जन बादहिं ॥
गहबर आइय दृगजल न्हाइय । मुखरुचि उड्डिय चित जिम गुड्डिय ॥
दृग जब बामहिं फरक हिलावहिं । सब तन कंपिय उड रज झंडिय ॥
रजकु मलीनहिं बसननु लीनहिं । सनमुख आइय रज तिय-धाइय ॥
पवन भयानक चलि तिहि थानक । पलचर आवत सनमुख धावत ॥
गिध रव रड्डिय धुज पर चड्ढिय । हय गज धुक्कत गवनहिं चुक्कत ॥
गगनहिं चिल्हिय गन करि टिल्हिय । अगनि सधूमहिं लखत चमूमहिं ॥
जटिल सुतेलिय उखटत भेलिय । सगुन सुदच्छिन उलटि सुलच्छिन ॥
इन उतपातन गनिय सुजात न । सब अबहेलिय रन मद झेलिय ॥
बस परि कालहिं भँवत सुभालहिं ॥४६॥

## दोहा

अनु कन तें लख मन करै लख मन अनु सम होइ ।
यह इच्छा जगदीस की निजु मन घटती कोइ ॥५०॥

## छंद नील

डंकनि देत अतंकनि संकनि दूरि धरैं ।
गोमुख तूरनि पूर चहूँ दिसि भीति भरैं ॥
बाजि चढ़े गजराज दराजनु धावत भे ।
चावत तेज रचावत दुंद मचावत भे ॥
अंबर धूरि अडंबर कंबर पूरि दए ।
स्याम घटा सम रूप पटा कर बिज्जु लए ॥
पच्छय सब्बय दच्छि करे चहुँघाँ दगरे ।
कंदर कंदर अंदर बंदर से बगरे ॥

सुंदर मंदिर ढाइ बिलंद रसाल हरे।
तोरि महीरुह बोरि किते पुर राख करे॥
तक्कि तिन्हैं जिय सक्कि भए नर चक्कित से।
जक्कित से रु ससंकित से अति थक्कित से॥
भालनु फे अति जाल मनौ जलधार धरा।
भूप जवासिनु जारि उदारि उजारि करा॥
या बिधि सौं जुग कूच मलार दवार किये।
बारि उदारि उजारि किते पुर छाँडि दिये॥५१॥

सोरठा

तहाँ फेरि मल्लार रूपराम द्विज सौं कही।
तैं कछु कह्यौ सुमार या दल तैं दस गुन करौं॥५२॥

छंद हारी

आतंक बानी मल्लार गानी, रूपा सुजानी, सो चित्त आनी।
तासौं पुरानी, गाथा बषानी, ऐसौ गुमानी, संका न मानी॥
बोल्यौ मलारै ताही सुबारै॥५३॥

प्रमानिका

बड़ौ प्रतापु आपु कौ। उथाप भूमि थापु कौ॥
सवार चारि लाखहू। समेटि जंग भाखहू॥
तऊ न दुग्ग तोरिहौ। बृथा अनीक जोरिहौ॥
किलेजुदार या धरा। सुजग जीति कौ घरा॥
छु कोटि सैन कौ पती। करी जु तासु की गती॥
प्रसंग कान दै सुनौ। न झूठ ता समैं गनौ॥
मलार बोलि आमजू। कहौ सुरूपराम जू॥
सुरूपराम ता घरी। करी कथा उजागरी॥५४॥

## छंद पद्धरी

सतजुग्ग मद्धि मुचकुंद भूप। इछ्वाकु बंस उद्धत अनूप॥
तिन कियौ देवतनु को सहाय। करि जुद्ध दैत्य मारे अघाय॥
सब असुर बंस करि खंड खंड। सुर थान थान सुरराज मंड॥
तब सबै देवता ह्वै प्रसन्न। मुचकुंदहि भाखिय धन्न धन्न॥
बर माँगि भूप सो होइ चित्त। तैं करे बाहुबल हम सुचित्त॥
सुनि भूप कही बर एहि देहु। चित बासुदेव सों होइ नेहु॥
एक और माँगियतु बर दयाल। मो नैन बीच निद्रा कराल॥
मैं सोयो चाहत बहुत काल। निर्विघ्न कीजिए लखि हवाल॥
सुनिकै नरेश के ए सुबैन। बर दीनो देवन ह्वै सचैन॥
जुग तीन अंत लौं सेइ ईस। नहिं कोइ जगावै त्रिसैं बीस॥
अरु आनि जगावै जो भुवाल। तो दृष्टि पाइ पावै सुकाल॥
पुनि बासुदेव कौ दरस होइ। हो महाभागवत रहौ सोइ॥
यह देववृंद तैं बरहिं पाय। सिर नाइ फिर्यो मुचकुंद राय॥
लखि मथुरा तैं दच्छिन दिसाहि। चामिल तरंगिनी तट सराहि॥
तहँ अचल कंदरा लखि इकन। छितिकंत वहाँ सोयो सुखंत॥५५॥

### दोहा

सो नृप सोयौ कंदरा बहुत काल गए बीत।
या ब्रज की रच्छा करन प्रगटे कृष्ण अभीत॥५६॥
सोधि सोधि या धरनि में मारे असुर उदंड।
कालजमुन काबिल भयौ दैत्यराज परचंड॥५७॥
दिसा आठहू जोति कै जुद्ध अघानौ नाहिं।
बैठि मेरु की सिखर पै रन सोचत मन माहिं॥५८॥
तहाँ गगन मग आइयौ मगन कलह को रूप।
गान करत हरि के गुननु नारद भेष अनूप॥५९॥

## छंद त्रिभंगी

ससि अंस लटूरी चहुघाँ पूरी जोति समूरी भाल लस ।
दृगु-दुति झपकौंहीं भौंह बढ़ौंहीं नाक चढ़ौंहीं अधर हँसैं ॥
श्रुति हरि रस प्यासे कुंडल भासे रसना खासे बचन बसैं ।
कंबुक गल चंचल तुलसी संचल बकला अंचल फैंट कसैं ॥६०॥
कर कंधहि बीना तार नवीना गनि जति भीना धुनि करतौ ।
उर उदरु लस्यौ सो लंक छस्यौ सौ गति उचस्यौ सौ डग धरतौ ॥
दुति सरद घटा सी तिलक छटा सी जगत उदासी राग रयौ ।
रिषिराज पुरानौ हरि मन जानौ निपट सयानौ आइ गयौ ॥६१॥
लखि कालजमन नै चलि अगमन नै रोकि गमन नै बैन कह्यौ ।
तुम कौन कहाँते अति अतुराते कहौ सुहाँतैं गगन चह्यौ ॥
सुनिकै मुनि भाषी नारद आषी त्रिभुवन साषी फिरत रहौं ।
पाताल-निवासी व्योम-विलासी भूमि-प्रकासी साँचु कहौं ॥६२॥
सुनि असुर जुनोके बैन मुनी के वंदन नीकै चित्त कस्यौ ।
हे प्रभु सतनामी त्रिभुवन गामी मैं रन कामी यौं उचस्यौ ॥
तुम ने कहुँ चाह्यौ जगत सराह्यौ नृपति उमाह्यौ मोहि कहौ ।
तासौं रन मंडौं दंड उदंडौं निज बल खंडौं देखि रहौं ॥६३॥

### सोरठा

सुनि मुनि बोल्यो बैन कालजमन साँची कहौं ।
तो सम जुद्धहि दैन मथुरा मैं श्रीकृष्ण हैं ॥६४॥
यह कहिकै मुनि बात बात-रूप मग जात भौ ।
कालजमन के गात हरषि उठे रन लैन कौं ॥६५॥

### छप्पय

कालजमन तिहिं काल लाल लोचन कराल तन ।
अति उताल चलि चाल ढाल किरवाल धारि पन ॥

छह करोर गज बाजि जोरि मुच्छन मरोरि मुख।
किय पयान घन के समान नीसानु स्यामरुख ॥
दसहूँ दिसान खलभल परिय थल जल अल दल दल करिय।
वहुँ जमन जाल विकराल बल ज्यौं अकाल ज्वाला झरिय ॥६६॥

## छंद बगहंस

कालिजमन, जोरि जमन। साजि सबन धाइ धवन ॥
अचल सबल, खखल भखल। भवन भवन तेज तवन ॥
अक्क सक्क, धक्क पक्क। थरथरात अदित जात ॥
धूरि मगन, आस गगन। इद्र नगल छोड़ि बगल ॥
जमन राज, बल दराज। समर चाह अति उछाह ॥
चलत चाल, अति उताल। परवर पुर आइ असुर ॥
कृष्ण पास, तबहि दास। दिय पठाइ रन सुनाइ ॥६७॥

## दोहा

जमन-राज कौ जमन वह। मथुरा आयौ धाइ।
कालजमन कौ आइबौ कृष्णैं दियौ सुनाइ ॥६८॥
और कह्यौ जो हो कह्यौ जमनराज रन-काज।
घने दैत्य तैंने हने काढ़ौ बैर सुआज ॥६९॥

## हरि छंद

सुनि दूत-बचन बोले। व्रजचंद बैन खोले ॥
हम जुद्ध कौं न जानैं। नहिं सस्त्र हाथ ठानैं ॥
हम कौन असुर मार्यौ। तुमने जु रोस धार्यौ ॥
जो आपु हतन आवै। तातैं दई बचावै ॥
ताकौ कहा सुकीजै। हमकौं न दोस दीजै ॥
हम नंद गोप द्वारैं। बछरा सुगाइ चारैं ॥
दधि दूध माँगि पायौ। नवनीत चोरि खायौ ॥

कबहूँ न धाम धापे। गोपीनु भच्छ आपे॥
मुनि मात तात द्वारैं। हम आपु पेट पारैं॥
नहिं गाँउ ठाँउ कोऊ। कहियौ जु आपु सोऊ॥
तिनसौं सु जुद्ध कैहौ। जस कौन भूमि पैहौ॥
अरु जो न जमन मानै। तौ ठीलहू न ठानै॥
आए अतिथ्थ पासैं। कैसे करौं निरासैं॥
धरि कान कृष्ण-बानी। उन दैत्य सों बखानी॥
इत कृष्ण बूझि जामैं। लीला ललाम खामैं॥
सोई मतौ उपामैं। जन ज्यौं न खेद पामै॥
परिवार कौं बचावैं। अरु दुष्ट कौ खिपावैं॥
लरनौ बिचारु कैकै। बलिराम मंत्र दैकै॥
यह भाषि उठे दाऊ। लखि जग मों अगाऊ॥
जग कंत ह्वै इकंतैं। कीनौ बिदा अनंतैं॥
चित चिंत बिश्वकर्मा। लीनौ बुलाइ धर्मा॥
श्रीकृष्ण जो विचार्‍यौ। तासौं मतौ उचार्‍यौ॥
ततकाल सिंधु कूलै। मथुरा समान भू लै॥
रचि पुरी एक नीकी। मनिजटित हेम ही की॥
जा ओर धाम जाकौ। तैसौ बनाइ ताकौ॥
नहिं नून भाँति काहू। बीथी अगार ताहू॥
जमुना समान रंगै। रचि गोमती तरंगै॥
पल एक माहिं कीजै। फिर मोहि सोधु दीजै॥
सुनि विश्वनाथ-बानी। बिसुकर्म सोइ मानी॥७०॥

दोहा

आयुस लै श्रीकृष्ण कौ बिश्वकर्म ता बार।
इच्छा माफक रचि पुरी मथुरा की उनहार॥७१॥

सो सुनिकैं बसुदेव-सुत माया जोग सँभारि।
तासौं यह आज्ञा दई सर्ब जनै तहँ धारि ॥७२॥
हलै चलै कोऊ न जन खेद न पावैं रंच।
सब जादव ह्याँते उहाँ पहुँचैं बिना प्रपंच ॥७३॥
रजधानी जादवन की बिना मथुरिया लोग।
पहुँचाए द्वारावती छिन मैं माया जोग ॥७४॥
सोए ह्याँ जागे उहाँ जादव छप्पन कोट।
या ब्रज को भय हरन कौं रहे कृष्ण बलि जोट ॥७५॥

## मारु छंद

स्याम राम, सोइ दोइ। धाम धाम चैन होइ ॥७६॥

## निगालिका

प्रभात भौ, सुहात भौ। हली छली, जगे बली ॥
तिहीं घरी, उठे हरी। न देरहू कछू कही ॥७७॥

## कवित्त

ऐंठि बाँध्यौ मुकट समेटि घुँघरारे बार
कुंडल चढाए कान कलगी सुघट की।
जाँघिया जकरि कैं अकरि अंग राग करि
कटि मैं लपेटी कसि पेटी पीतपट की।
भृगु-पद-अंक ढाल सकति श्रिया कौ चिन्ह
सूदन सनाह बनमाल लाल टटकी।
कोटिन सुभट की निहारि मति सटकी
सुसुंदर गुपाल की धरनि भेप भटकी* ॥७८॥
मद भरे लोचन बिसद अंग आग चारु
लच्छ लच्छ हंस की सी सोभ अवतंस की।

---

* पाठांतर—नट की

ताल अंक उर पैं बिसाल नीलपट फैंट
सत्रु कीन संस संस सक अरि कंस की।
आयुध अनेक रेवती के कंत जू के तऊ
रायुध भए हैं हल मूसल प्रसंस की।
जमन के बंस की निबंस की बिचारि चित
बसुदेव अंस की है लाज जदुबंस की॥ ७६ ॥

## छंद नीसानी

सज्जि खड़े बसुदेव देव घर मंडन हारे।
कालजमन तिहि कालही आयो ललकारे॥
बरुन दिसा खुर खेह सों हूई घन अंधी।
स्याम निसानौं से छूई डंकौ धुनि बंधी॥
वेखि तिन्हें श्रीकृष्ण जी हलधर सें अक्खी।
इसदे लरने दी क्रिया अससी दिल रक्खी॥
अप्प रहो पुरद्वारनूं चौरुस चहुँ खडे।
हुण वेखाँ दल जनम दे केहे परचंडे॥
ए गल्लाँ करि स्याम जी परिपूरन साई।
हुवे पुरी सें नाहले जमनौं अगवाई॥
उस बेला दी स्याम दी भानै नौ पैठी।
कोटि कोटि मनमथ्थ दी गहि जौम अमैठी॥
पद्म पद्म प्रिय की प्रभा अवतंस प्रकासै।
नव नीरद घन तड़ित ज्यौं पीतांबर भासै॥
सुर-धनु सी गोपाल दी बनमाल बकौंही।
मुक्तावलि बगपंति सी सुभ्र दृगनि लगौंहीं॥
अंग अंग मनिजटित के भूषण जु प्रकासैं।
मोर-पच्छ सिरमौर ज्यौं निर्तन चहुँ घाँ सैं॥

भौहैं पिक सी चकि रही किंकिनि धुनि कूकैं।
सीत पवन मुसिकान की आनन्दित भूकैं॥
पांचजन्य धुनि सख की गज्जनि महि पूरी।
उथ्थौं गोमुख बाँकिया पटहा पन तूरी॥
कालजनम बिकराल ज्यौं ग्रीषम की तापैं।
ताहि बुझावन नूँ उठे घनस्याम सु आपैं॥
तिथ्थौ आया जमन भी बाजी करि तत्ता।
ज्यौं पंचानन-जूह लै पचानन मत्ता॥
वेखि जमन नूँ कृष्ण जी एही गल अक्खी।
रक्खु खड़ी इस सैन नूँ तन ज्यौं अमरक्खी॥
दुंद जुद्ध अस्सी तुसी भुज दंडी मंडै।
लरने आया तू बली लोकाँ क्यों खंडै॥
तेही जानति अग मै तेही जग जोहैं।
उतरि खड़ा हो खेत मै करु बिक्रम सोहैं।
ए गल्लाँ सुनि जनम के कोहानल उट्ठी।
तजि तुरग कुद्दा मही बंधे दृढ़ मुट्ठी॥
सरई अंगा अग मैं सिरताज कढौही।
असित रंग डाढी बड़ी करि अंड कढौहीं॥
अप्रमान हथ्थीन दा बिक्रम बड़ काया।
करि कुलाँट अंतक मनौ किलकार सुधाया॥
कोल आइ श्रीकष्ण कै ए बचन उघाड़े।
कंस मल्ल करि कुबलिया ते ही जु पछाड़े॥
वो बल तैंडा अज्ज मैं इस जंग अखाड़े।
कढ्ढौंगा इस हथ्थ से वेखे भट साडे॥
यौं कहिकैं गज्जा बली बारिद ज्यौं बज्जा।
तिसनूँ तिसी फराक मैं गिरिधरन तरज्जा॥

अरे जमन इस लोक मैं सो तन बल बट्टा ।
वो तू अज्ज उरज्झिहै अंतक की उट्टा ॥
अज्ज अप्प दे बिक्रमैं भठ कथ्थन वाले ।
जंग न जित्तैंगे कधी बिन फैंकै भाले ॥
आउ करै कथ्थन कहा मिजमान घली का ।
मधु मुर केसी कंस दा ले जाह सलीका ॥
इसी गल्ल धरि कन्न मै जमना हो तत्ता ।
मसकि ओठ दंतों तले दीदें के रत्ता ॥
हिक्क पग्ग धरि अग्ग नूँ कर मुक्क सम्हाला ।
तिस दे पैर धमक्क से भुवमंडल हाला ॥
हाहाकार लोकाँ पडा देवाँ घर सल्ले ।
वोहि वोहि देवी रटै साँई तुझ पल्ले ॥
कालजमन दे मुक्क नूँ श्रीकृष्ण चुकाया ।
दूध दही लुटि चक्खना आड़ा सो आया ॥
जमन हथ्थ खाली करा बलि जी के भाई ।
छल्ल सम्हालि उछल्लि के कीती चपलाई ॥
उस बेलाँ गोपाल जी दिल माँहि बिचाड़े ।
इसदा काल नहीं कहा बिधि हथ्थ असाड़े ॥
इसैं भक्त मुचकुंद दी लोचन दी झर सैं ।
भस्म करावा निमिष मैं चलना दरवर सैं ॥
होर असाडे दर सदा भुक्खा मुचकुंदा ।
हिक्क काज में दो करीं मेरा वो बंदा ॥
ऐसी चित्त बिचार के कर थाप सम्हाली ।
कालजमन के गाल पै असिनी सी घाली ॥
लखि गज्जे सुर सब्बही अच्छे जी अच्छे ।
असुर अंग कछू घुम्या गोपीपति गच्छे ॥

कालजमन पल हिक्क में मूरछ सैं चेता ।
वेखि भगा श्रीकृष्ण नूँ हो लेता देता ॥
बधै मुट्ठी बज्र सी भग्गति सम्राले ।
हँसि बोल्या तधि कान्ह जी आले वे आले ॥
जमन जोर कर धाइया तन भरत जकंदे ।
मानौ राहु लपट्टिया मच्छुन नूँ चंदे ॥
कही लपटदे झपटदे दोनों ही खुल्ले,
मुचकुंदा दे गोइ रे उड्डे जा लुल्ले ॥
सुत्ता था जिस मेरु दी कंदर दे अंदर ।
तिथ्थौ पैठे स्याम जी छलबली लुकंदर ॥
सुत्ता लखि मुचकन्द नूँ ढकि निजु पीतंबर ।
अलप अलष ही हो गए गहि रूप धरंबर ॥
उस ठाँ आया जमन भी अंबर लखि भरमा ।
नद लक्खाँ वो जादवाँ सूता ज्यों घर मा ॥
जुट्टि जंग में भग्गना निंद्रा तुझ केही ।
खेल न होवै जुज्झना सुष्याँदी देही ॥
यौं कहिकै मुचकंद कौं पैरौं से घत्ता ।
सो जग्गा दृग लाल सैं ज्यौं जवा भरत्ता ॥
तिसदी चाहन सै कढी दाहनि उस वेली ।
कालजमनि तिसनै किया खक्खा दी ढेली* ॥८०॥

दोहा

दरसन लहि गोविंद को महाभाग मुचकंद ।
करि प्रनाम लाग्यो करन अस्तुति बुद्धि निकंद ॥८१॥

---

* हस्त-लिखित प्रति में यही पर 'इति' है; परन्तु छापेखाने में इसके नीचे दिया हुआ दोहा और छप्पय भी है। यही छप्पय हाथ की लिखी पुस्तक के साथ लगी हुई मोतीराम रचित वंशावली में भी है।

### छप्पय

जै जै श्रीब्रजचंद नंदनंदन अनंद-निधि।
सगुन सच्चिदानंद छंद बंदन सुछंद विधि॥
वृंदारक वृंदनि बिलंद जयमंदिर दायक।
जै वृंदाबन तुलिन रचित लीला रुचि लायक॥
जगमगत सुजस चौदह भुवन सेवक को संकट हरन।
जै कीजै नृपति ब्रजेंद्र की* जै श्रीगोवर्धन-धरन॥८२॥

इति श्री संपूर्णम्

---

* पाठांतर—जै रमानाथ जदुनाथ जय जै जै गोवर्धन धरन।
(यह पाठ छापे की पुस्तक का है)